

HARVARD

ORIENTAL SERIES

EDITED

WITH THE COÖPERATION OF VARIOUS SCHOLARS

BY

CHARLES ROCKWELL LANMAN

PROFESSOR OF SANSKRIT IN HARVARD UNIVERSITY

VOLUME VI

CAMBRIDGE, MASSACHUSETTS
PUBLISHED BY HARVARD UNIVERSITY

THE BRHAD-DEVATĀ

ATTRIBUTED TO

ŚAUNAKA

A SUMMARY OF THE DEITIES AND MYTHS
OF THE RIG-PEDA

CRITICALLY EDITED IN THE ORIGINAL SANSKRIT WITH AN INTRODUCTION AND SEVEN APPENDICES, AND TRANSLATED INTO ENGLISH WITH CRITICAL AND ILLUSTRATIVE NOTES

ARTHUR ANTHONY MACDONELL

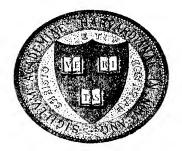
BODEN PROFESSOR OF SANSKRIT IN THE UNIVERSITY OF OXFORD AND FELLOW OF BALLIOL COLLEGE

PART II TRANSLATION AND NOTES

CAMBRIDGE, MASSACHUSETTS
PUBLISHED BY HARVARD UNIVERSITY



Cambridge, Mass., U.S.A. Publication Agent of Harvard University. Boston, New York, Chicago, San Francisco . Ginn and Company.



LONDON: GINN AND COMPANY 9 St. Martin's Street, Leicester Square.

LEIPZIG: OTTO HARRASSOWITZ Querstrasse, 14.

*** A copy of this volume, postage paid, may be obtained directly anywhere within the limits of the Universal Postal Union, by sending a Postal Order for the price as given below, to The Publication Agent of Harvard University, Cambridge, Massachusetts, United States of America.

The price of this volume is one dollar and fifty cents (\$1.50). According to the conversion-tables used in the United States money-order system as the basis of international money-orders, one dollar and fifty cents (\$1.50) = 6 shillings and 2 pence = 6 marks and 25 pfennigs = 7 francs or lire and 70 centimes = 5 kroner and 55 ore = 3 florins and 65 cents Netherlandish.

PRINTED FROM TYPE AT THE
UNIVERSITY PRESS, OXFORD, ENGLAND
BY HORACE HART, M.A.
PRINTER TO THE UNIVERSITY

First edition, 1904, One Thousand Copies

CONTENTS

ADHYĀYA I.

Introduction.

| VAR | | PAGE |
|-----|---|------|
| 1. | Importance of knowing the deities. The Vedic Triad | 1 |
| 2. | Prayer and praise | 2 |
| 3. | Different kinds of hymns | 3 |
| 4. | Hymn deities, stanza deities, incidental deities | 4 |
| 5. | Origin of names | . 5 |
| 6. | Saunaka's view: all names derived from action | 6 |
| 7. | Auspicious names. Different kinds of formulas | 7 |
| 8. | Different kinds of formulas and modes of expression | . 9 |
| 9. | Definition of noun and verb | 10 |
| 10- | -12. Examples of different kinds of formulas | 10 |
| | The Sun and Prajāpati as the source of all | 14 |
| 14. | The three forms of Agni | 15 |
| 15. | The Triad and the Atman. Three forms of Vac | 16 |
| 16. | The chief deity of a hymn | 17 |
| 17. | Names of deities enumerated | 18 |
| | Characteristics of hymns to Agni, Indra-Väyu, and Sürya | . 19 |
| | The three Agnis | 20 |
| 20. | Agni, Jātavedas, Vaišvanara: essentially identical, but distinguished | 21 |
| 21. | . The deities of the three worlds in the descending series | 22 |
| 22, | 23. The deities representing terrestrial Agni | 23 |
| 24. | Other deities associated with Agni | 26 |
| 25. | The groups of deities of the middle sphere belonging to Indra | 28 |
| 26. | Deities and deified objects belonging to Indra's sphere | 29 |
| | | |
| | | |
| | ADILYÂYA II. | |
| | Introduction (continued). | |
| 1. | Deities of Indra's sphere | . 31 |
| 2. | Deities of Sürya's sphere: his three wives | |
| 3. | Deities of Sūrya's sphere (concluded) | 34 |

| VARGA | | | | | PAGE |
|---|---------|-------|---------|------|--------------------|
| 4. Hymns revealed to Dirghatamas: RV. f. 140-156. | | | | | 129 |
| 5. Story of Dirghatamas (continued) | • | | • | | 130 |
| 6. Deities of RV. i. 157-163 | • | • | | | 132 |
| 7. Deities of RV. i. 164. The three Agnis. The year | | | | | 133 |
| 8. Account of the contents of RV. i. 164 (continued) . | | | | | 135 |
| 9. RV. i. 164 (concluded). RV. i. 165: Indra and the I | | | | | 136 |
| 10. Indra, the Maruts, and Agastya: RV. i. 169, 170. | | | | | 139 |
| 11. RV. i. 171-178. Agastya and Lopāmudrā: RV. i. 17 | - | | | | 140 |
| 12. Story of Agastya and Lopāmudrā (concluded): RV. i. | 180-19 | I | • | • | 141 |
| M andala ii. | | | | | |
| 13-15. Deities of RV. ii. 1-12. Story of Grtsamada, Ind. | ra, and | the I | Daityas | ч. | 143 |
| 16. Deities of RV. ii. 23-30 | | | , | | 146 |
| 17. Deities of RV. ii. 31-35 | | | | | 148 |
| 18. Deities of RV. ii. 36-43. Indra as a Kapinjala . | • | | | | 150 |
| M andala iii. | | | | | |
| 19. The seer Viśvāmitra. Deities of RV. iii. 1-6. | | | | _ | 151 |
| 20. Deities of RV. iii. 7-29 | | | | | 153 |
| 21. Deities of RV. iii. 30-33. Viśvāmitra, Sudās, and the | | | | | 154 |
| 22. RV. iii, 31: an adoptive daughter. Viśvāmitra and s | Šakti | | | | 156 |
| 23. Viśvāmitra and Vāc Sasarparī. Spells against the Va | | | | | 157 |
| 24. Deities of RV. iii. 54-60 | | | | | 158 |
| 25. Deities of RV. iii. 61, 62 | | | | • | 160 |
| M aṇdala iv. | | | | | |
| 26. Deities of RV. iv. 1–15 | | | | | 161 |
| 27, 28. RV. iv. 18-30. Indra's birth and fight with Vām | | | • | | 162 |
| 29. The steeds of the various gods | | | • | | 16 2 164 |
| 20. The bleeds of the fairous gods | • | • | • | • | 101 |
| ADHYĀYA V. | | | | | |
| Deities of RV. iv. 33-vii. 4 | 9. | | | | |
| 1, 2. Deities of RV. iv. 33-58 | • | | • | . : | 166 |
| Maṇḍala v. | | | | | |
| 3. Deities of RV. v. 1-28. Story of Tryaruna and Vrsa | Jāna | • 4. | | . : | 169 |
| 4. Story of Tryaruna (concluded) | | | | . : | 170 |
| 5. References to RV. v. 2. 2, 9 in other works. Deities | of RV. | v. 29 | -40 | . 3 | 171 |
| 6. Atri's Dānastuti | | | | . 1 | 173 |
| 7. Rnamcaya's gifts to Babhru. Deities of RV. v. 41-51 | | | | . ,1 | 174 |

| | (| CONTI | ENT | \mathbf{S} | | | | | | X1 |
|-----|--|-------------------|--------------------|--------------|-------|------------|---------|---|---|------|
| VAR | FA A TOYY | | | | | | | | | PAGE |
| | Detailed account of RV. v. 41- | | | | | | | | ٠ | 175 |
| 9. | Deities of RV. v. 43 (continued |), 44, 4 | 5 · | • | • | ٠ | ٠ | ٠ | • | 177 |
| 10. | Deitics of RV. v. 51-60 | • | • | • | • | • | • | • | • | 178 |
| 11- | 15. Story of Syavasva | | • | • | • | • | • | • | • | 179 |
| 16. | RV. v. 73-78. Story of Sapta | vaunri - g/::: | • | | | 4 3 | 1-1-21. | • | • | 186 |
| | Deities of RV. v. 79-87. The | | | | | | | | • | 187 |
| | The khilas of Prajavat and | | | | | | | | ٠ | 189 |
| 19. | Story of the birth of Bhrgu, Ar | igiras, a | na At | rı | • | • | • | • | • | 191 |
| | | Maṅḍa | la vi | | | | | | | |
| 20. | Origin of Bharadvāja. Deities | of RV. | vi. 1- | ·46 | | | | | | 192 |
| 21. | Deities of RV. vi. 37, 44, 45, 4 | 7 . | • | | • | | , | | | 193 |
| 22. | Deities of RV. vi. 47 (continued | l) and vi | . 48 | | | | | | | 195 |
| 23. | Deities of RV. vi. 49-62 Deities of RV. vi. 62 74 The | | • | | | | | | | 196 |
| 24. | Deities of RV. vi. 63-74. The | seven t | reasur | es | | | | | | 197 |
| | RV. vi. 75. Story of Abhyāva | | | | | | | | | 198 |
| | Deities of RV. vi. 75 in detail | | | | | | | | | 199 |
| | Detailed account of RV. vi. 75 | | | | | | | | | 200 |
| 28. | Story of Cāyamāna and Prastol | a (conc | luded) | | • | | | | | 201 |
| | 3 | Maņdal | la v ii | | | | | | | |
| 29. | Pedigree of Vasistha. Kasyapa | i's wives | 3. | | | | | | | 202 |
| | Story of Mitra-Varuna and Ur | | | | | | | | | 203 |
| | Birth of Agastya and Vasistha | | | | | | | | | 201 |
| | Vasistha and his descendants. | | | | | | | | • | 206 |
| | Deities of RV. vii. 33-38 . | | | | | | | | | 207 |
| | Deities of RV. vii. 38-43 | | | | | | | | • | 208 |
| | Deities of RV. vii. 44-49 | | | | | | | | | 210 |
| | 11 47 | | | | | | | | | |
| | Λ | DHYÂ | YA V | 7. | | | | | | |
| | Deities of | f RV. | vii. 5 | 0-x | . 17. | | | | | |
| 1. | Deities of RV. vii. 50-66 | | | | | | , | | | 211 |
| | Deities of RV. vii. 66-85 | | | | | | | | | 212 |
| | Vasistha and the dog of Varuna | | | | | | | | | 213 |
| | The second secon | | | • | | | | | | 214 |
| | Story of Nāhuṣa and Sarasvatī | : RV. v | ii. 95. | 96 | | | | | | 215 |
| | Deities of RV. vii. 97-104 . | | | | | | | | | 216 |
| | Detailed account of RV. vii. 10 | | | | | | | | | 218 |

CONTENTS

| | 1 | Manda] | la vii | i. | | | | | | |
|-----|-----------------------------------|-----------|-------------|---------|-------|-------|------------|---|---|-------------------|
| VAF | SGA. | • • | | | | | | | | PAGE |
| | Story of Kanva and Pragatha | • | • | • | • | • | • | • | • | 219 |
| | Deities of RV. viii. 1-21 | | • | | • | • | • | • | • | 2 20 |
| | V | | | | • | • | • | ٠ | • | 222 |
| | RV. viii. 19: praise of Trasada | | | | | | • | • | • | 22 3 |
| | The boons chosen by the seer. | | | | | | • | • | • | 224 |
| | Story of Sobhari and Citra (cor | | | | | | • | | • | 225 |
| | Deities of RV. viii. 26-31. RV | | | | | | | • | • | 227 |
| | Detailed account of RV. viii. 26 | | | | | | 2-34 | | • | 228 |
| | Indra and Vyamsa's sister. Do | eities of | RV. | viii. ; | 35–46 | , · | • | ٠ | | 230 |
| | Deities of RV. viii. 47-56 . | • | • | | • | | | | | 231 |
| | Deities of RV. viii. 60-67 . | • | • | | | • | • | | | 232 |
| | Deities of RV. viii. 68-75 . | | | | | | | | | 234 |
| 20. | Deities of RV. viii. 76–90 . | • | | | | | | | | 235 |
| | Story of Apala | | | | | | • | | | 236 |
| | Story of Apālā (concluded). D | | | | | | | | | 237 |
| 23, | 24. Story of Soma's flight from | the god | s. | | | | | | | 238 |
| | Details regarding RV. viii. 100 | | | | | | | | | 241 |
| | Details regarding the deities of | | | | | | | | | 242 |
| 28. | | | • | • | | | | | • | 243 245 246 |
| | | Maņda | la x. | | | | | | | |
| 30. | Deities of RV. x. 1-8. Triśiras | and In | dra | | | | | | | 940 |
| | Deities of RV. x. 9-14 | | | | • | • | • | • | • | 248 |
| | Deities of RV. x. 14 (concluded | | | | · A | :~ | • | • | • | 249 |
| | Story of Saranyū: RV. x. 17. | | | | | | • | • | • | 250 |
| | Story of Saranyu. Itv. X. 17, | • | • | • | • | • | • | • | • | 251 |
| | AD | HYĀY | A VI | 1. | | | | | | |
| | Deities | of R | r. x. 1 | 7-9 | 8. | | | | | |
| 1 | Story of Saraṇyū (continued) | | | | | | | | | 0.50 |
| | , | Deities | | | | • | • | ٠ | • | 252 |
| | Detailed account of the funeral l | hame D | 01 JtV W | . A. | 1.1 | • | • | • | • | 253 |
| | Formulas in which no deity is m | | | | | • | • | • | ٠ | 254 |
| | The test of The Transfer | | | • | ٠ | • | • | • | ٠ | 255 |
| | RV. x. 27 (continued). RV. x. | . 0 . D: | | | . 1 | | | • | ٠ | 257 |
| o. | IV. A. 27 ICOMBINGEOL. R.V. X. | 20: 17: | LIOCULE | וומי | nara | and 1 | James Izwe | | | 252 |

| | CONTENTS | | | xiii |
|-------|---|------------|---------------|---------------|
| V A R | GA C.D.Y. | | | PAGE |
| | Deities of RV. x. 30–33 | | • | 259 |
| | The hymn of Dice: RV. x. 34. Deities of RV. x. 35-44 | • | • | 260 |
| | Deities of RV. x. 45, 46. Story of Ghoṣā | | • | 262 |
| | Story of Ghoṣā (concluded) | | | 263 |
| | 12. Story of Indra Vaikuntha. | | | 264 |
| 13. | Story of Indra Vaikuntha (concluded). Story of Agui and I | | tners | |
| | RV. x. 51-53 | • , | | 266 |
| | Story of Agni's flight (continued) | • | | |
| | The meaning of pañca janāḥ | | • • | 268 |
| | Story of Agni's flight (continued) | • | | 270 |
| | Story of Agni's flight (concluded). RV. x. 54-57 | | • | 271 |
| | 19. Story of Subandhu | | • | 272 |
| | Detailed account of RV. x. 59, 60 | • | | 275 |
| | Story of Subandhu (concluded). Deities of RV. x. 61-66 | • | • | 276 |
| | Details of RV. x. 63-66. Deities of RV. x. 67-72. | • | • | 277 |
| | Detailed account of RV. x. 71 | • | • | . 279 |
| 24. | Details of RV. x. 72-84. Two khilas | • | • | . 280 |
| | | • | • | . 282 |
| | Account of the Süryā hymn (continued) | • | • | 283 |
| | Derivation of Candramas. Contents of RV. x. 85. 20-30 | • | • | . 284 |
| 28. | Contents of RV. x. 85. 31-43 | • | • | . 286 |
| 29. | Remarks on the Süryā hymn (concluded) | • | • | . 287 |
| | Deities of RV. x. 89-93. Story of Purūravas and Urvašī | | • | . 289 |
| | Story of Purūravas and Urvasī (concluded) | | • | . 2 90 |
| 32. | Deities of RV. x. 96, 97. Story of Devāpi: RV. x. 98. | • | | . 292 |
| | | | | |
| | ADHYĀYA VIII. | | | |
| | Deities of RV. x. 98-191 (1-98). Conclusion (9 | 9-14 | · O). | |
| 1. | Story of Devāpi (continued) | | | . 294 |
| | Story of Devāpi (concluded). Deities of RV. x. 99-101. | | | . 294 |
| | Deities of RV. x. 102, 103. The khila of Nakula . | | • | 296 |
| | Deities of RV. x. 104, 105. Bhūtāmśa Kaśyapa: RV. x. 106 | | • | 298 |
| | RV. x. 107. Story of Saramā and the Paņis: RV. x. 108 | , | | 299 |
| | 7. Story of Saramā and the Panis | • | • | . 300 |
| | Thisking of DW | • | • | 300. |
| | Deities of RV. x. 109-120 | · balou | · | |
| | 2007 | nuipe | egunn | 303 |
| 10 | The state of Total | • | | |
| | The khila 'Bhūmiḥ.' The deities of RV. x. 138-142. | • | • | 305 |
| 12 | Deities of RV. x. 143-154. Two khilas (Medhāsūktam and | ผู้ อภิต | | 306 308 |
| | Deities of DV | a sur | eunj. | 309 |
| | Delties of Kv. x. 155-150 | | , , | ื่อบบ |

XIV

CONTENTS

| VAR | | | | | | PAGE |
|-----|--|---------------|-------|------------------|-----|------|
| 14. | Deities of RV. x. 160-164. Khila (venas tat paśyat). | The | seer | \mathbf{K} apo | ta | |
| | Nairrta | | | | | 310 |
| 15. | Deities of RV. x. 165-174. Khila (yenedam) . | | | | | 312 |
| 16. | Deities of RV. x. 175-181 | | | | | 313 |
| 17. | Deities of RV. x. 182-184. Khila (nejamesa) . | | | | | 315 |
| 18. | Remarks on the khila 'Nejameşa.' Deities of RV. | x. 1 8 | 5-18 | 38 | | 316 |
| 19. | Deities of RV. x. 189, 190. The khila 'Samjñanam | ı, | | | | 318 |
| 20. | RV. x. 191. The two khilas 'Prādhvarāṇām,' | Nai | rhas | styan | 1.' | |
| | Mahānāmnī stanzas | | | | | 320 |
| 21. | The Mahānāmnīs do not constitute a hymn. Remarks | on | the . | Praisa | s, | |
| | Kuntāpa, &c | | | | | 321 |
| 22. | Deities of Nivids, Nigadas, and Metres | | | | | 324 |
| 23. | Deities of Metres, Vedas, Vaşaţkāra, Svāhākṛtis. The to | nes | (Sva | ras) | | 325 |
| 24. | Deities of the tones | | | | | 326 |
| 25. | Deities of the Prastāva, Udgītha, Upadrava, Pratihāra, I | Nidh | ana | | | 327 |
| 26. | Various deities incidental in Vaisvadeva hymns . | | | | | 329 |
| | Remarks about deities and knowledge of them | | | | | 330 |
| 28. | Importance of knowing the deities | | | | | 332 |

ABBREVIATIONS

The symbols designating MSS, are explained in the Introduction, pp. xi-xviii.

AB. = Aitareya Brāhmaṇa.

AGS. =Āśvalāyana Gṛhya Sütra.

Ārs. = Ārṣānukramaņī.

AS'S. = Āśvalāyana Śrauta Sūtra.

 \mathbf{AV} . = Atharva-veda.

BD. = Brhaddevatā.

JAOS. = Journal of the American Oriental Society.

JRAS. = Journal of the Royal Asiatic Society of Great Britain and Ireland.

KB. = Kausītaki Brāhmaņa.

KZ. = Kuhn's Zeitschrift.

M.M. = Man Müller.

n. = Nītimañjarī.

Nir. = Yāska's Nirukta.

R. = Rājendralāla Mitra.

r. = the reading in Rājendralāla Mitra's text.

 $\mathbf{RV.} = \mathbf{Rg}\text{-veda}.$

ş. = Şadguruśişya.

s. = Sāyaṇa.

S. = Sarvānukramaņī.

S'B. = Śatapatha Brāhmaṇa.

TB. — Taittirīya Brāhmaņa.

TS. = Taittirīya Samhitā.

v.r. = various reading.

VS. = Vājasaneyi Saṃhitā.

ZDMG. = Zeitschrift der deutschen morgenländischen Gesellschaft.

BRHADDEVATĀ

TRANSLATION AND NOTES

- 1. Importance of knowing the deities. The Vedic Triad.
- 1. With obeisance to the seers of formulas, I will, in the sequence of the traditional textⁿ, state for (all) stanzas the divinity of the hymn, the stanza, the hemistich, and the verse.

नमस्तृत्वा bfk m1, corrected to नमस्तृत्य h, नमस्तृत्य rd (Rgvidhāna i. 1.1 has नमस्तृत्वा मनत्रकृत्था).—च्छाभ्यो Bhr3m1, च्छच् r.

- a The words samāmnāyānupūrvašah occur also in Rgvidhāna i. 1.2.
- 2. In every formula one should know the divinity with exactness; for he who knows the divinities of the formulas, understands their object.

दैवतं हि hm^1rbk , हि तत्सर्वं r^1r^4 .— अवगक्त hm^1bfkn , अविगक्ति r^2 , अधिगक्ति r.—With the words दैवतज्ञो हि मन्त्राणाम् cp. Sarvänukramaṇĩ, Introduction \S 1: मन्त्राणां . . . दैवतिवद्; and मन्त्राणां देवताविद् below, viii. 31.

3. He is capable of giving an (authoritative) opinion $(vij\tilde{n}\bar{a}-payati)$ as to their $(tad=mantr\bar{a}n\bar{a}m)$ intentions which were contained $(hit\bar{a}n)$ in them (tad) at the time when the formulas were revealed to the seers $(rsin\bar{a}m \ mantradrsisu)$, (and) as to the correct understanding (of them) and the various ceremonies (connected with them).

तिश्वतांस् hm^1b , तिश्वतांस् f, तिश्वतांस् k, तिश्वतान् r^2r^4 , तिश्वदां r.— तद्भिप्रायान् hm^1rfk , त्वभिप्रायान् b.

^{*} Cp. Nirukta vii. 3 : evam uccāvacair abhiprāyair ṛṣṇāṃ mantradṛṣṭayo bhavanti. II.

4. For no one without really having correct knowledge of the divinity (addressed in the formula), attains to the fruit of customary or Vedic ceremonies a.

सौक्यानां Bhm1r3, सौकिकानां r.— वा hm1fk, च b, no particle r.

- * Cp. Sarvānukramanī, Introduction § 1: 'for without this knowledge, śrauta and smārta rites cannot be accomplished.' Cp. also below, i. 21, and Rgvidhāna i. 2. 1.
- 5. The first group of these (deities) belongs here to the divinity Agni, the second to Vāyu or Indra, and the third to Sūrya a.

इह hm1r, इव bfk.—सूर्यमेव च hm1rbik, सूर्यमेव तु r1r4.

- ^a Cp. below, i. 69; Nirukta vii. 5; Sarvānukramaņī, Introduction i. 8.
- 6. Whatever god a seer desiring an object mentions, let that one, it is said, be (the god of the formula) a. A formula predominantly praising (a god) with devotion, is addressed to that same god.

देवंm¹b, देव hd, देवं fkr.— सत्त्र्या hm¹r³r⁴, क्रत्या bf kr.— तह्व bfkr, तह्व hm¹d.— The end of the varga is here marked by 9 in bm¹, not in hdfk.

^a Cp. Nirukta vii. 1: 'the formula has that god for its deity to whom he addresses praise when desiring the possession of an object which he wants.'

2. Prayer and praise.

- 7. Praise is expressed by means of name, form, action, and relationship, but prayer by means of objects such as heaven, long life, wealth, and sons a.
 - ⁸ Cp. Rgvidhāna i. r. 6.
- 8. The stanzas in which both praise and prayer appear, are here (in the Rg-veda) but few; still fewer than these are those in which heaven is prayed for.

सुत्याशिषी तु hm^1rb , सुत्याशिषो नु f, सुत्याशिषसु r^1r^4 .— दृश्चेते hm^1r , दृश्चने $bfkr^1r^4$.—ताः सुः r, ता सुः hfk, ता सुस् m^1 , ता सु b.

9. Every one of us (sarvo 'yam) recognizes one who praises, (thinking) 'this man wants something from me,' and (he also

3]

recognizes) one who states an object, (thinking) 'he praises, (that is) he regards me as one having (those) objects (to bestow).'

अर्थयत्येष hm1r, अर्थयत्येव bfk.

10. But whether the seers who discern the truth either praise or state (an object), they express both; for both are in reality the same.

स्तुविज्ञवी वृत्तिवी hm^1bfkr^2 , स्तुविज्ञिस ब्रुविज्ञिस r.— स्विमिस्तलदिशिमिः hm^1r , स्विमिर्मन्त्रदिशिमः $bfkr^2$ (मंदिशिमः f), मन्त्रेष्वर्थानुदर्शिमः $r^1r^3(r^4)$).

11. When the name of a deity is mentioned in the second person a in a formula, one should know that to be the deity in the formula, because (that) indication is there (sampada).

भिधीयते Bhm¹r³, प्रदृश्कते r.—तामेव देवतां विद्यान्मन्ते hm¹bfk, तमेवा**डः मुसंपन्नं** मन्तं r.—The end of the varga is here marked by २ in bf, not in hm¹k.

 a Cp. Nirukta vii. 2: pratyakṣakṛtā madhyamapuruṣayogās tvam iti caitena sarvanāmnā.

3. Different kinds of hymns.

12. Therefore one familiar with (the) application (of formulas) should in every formula carefully observe the deity, with regard to name, and the multiplicity of the designations (of deities).

तु देवतां hr^3fkr^2 , तु देवता bm^1 , तद्देवता॰ r.—॰िमधानां hm^1rbfk , ॰िमधानं r^1r^4 .

13. The complete utterance of a seer is designated a hymn $(s\bar{u}kta)$, in which the deities appear in one, in many, (or) in two (formulas).

दृश्यने देवता यिखान् hm¹rbk, चित्रं तद्दृश्यते चास्मिन् r¹r⁴.—एकस्मिन् hm¹r⁴, एकस्य bfkr, एतस्यां r¹.—h has on the margin चित्रं तद् दृश्यते चास्मिन्नेकस्यां बज्जपु द्योरिति भाष्ये पाठः।

14, 15. A variety arises with regard to the deity, the authorship, the subject, and the metre. All hymns which are revealed as the praise of one single (seer, constitute) a seer's hymn (rsisilkta); for that is the (aggregate) hymn of that seer. In so far

as a subject is completed (in several stanzas), they call it a subject-hymn ($artha-s\bar{u}kta$).

ছन्द्रस्तो hm¹ bfkr², हन्दोभ्यो r.—च प्रजायते Bhr³m¹, तस्य जायते r.—ऋषिसूक्तं तु bfkrdh (corrected on margin in h to °सूक्तानि), ऋषिसूक्तानि (तान्यच यावन्धेकस्थ)r¹r⁴.— The reading of 15^{ab} in the text is that of Bhr³m¹; instead of this r reads देवतेका तु यावत्सु देवतायास्तदुच्यते. h has also on the margin सूचेतेका तु यावत्सु देवतायास्तदुच्यते स्ति भाष्ये पाठः। With reference to 15^{cd}, h has on the margin: यावत्स्वर्थः समा-येत अ०।

16. (The stanzas) which have a common metre are called a metre-hymn (chandah- $s\bar{u}kta$). Thus one should here recognize the variety of hymns such as it really is.

याः सुस् hr²r³r⁵, या सुस् bfm¹, या सु k, यासु r.—तक्दः hdfm¹, तक्दः r, क्दः k, तदृषि b.—वैविध्यमेवं Bhr³m¹, वैविध्यमेतत् r.—The end of the varga is here marked by 3 in hdmbfk.

4. Hymn deities, stanza deities, incidental deities.

17. The denominations of the deities in the formulas are of three kinds: such as belong to a (whole) hymn^a, or such as belong to a stanza (only), as well as such as are incidental ^b.

मन्त्रेषु hrb, मंत्रेण fk.— १थ वर्ग्भाजि hm1bf, ॰थ ऋरभाजि r, ॰ध वर्ग्भाजि k.

- ^a Cp. Nirukta vii. 13 and x. 42.

 ^b Cp. Nirukta i. 20 and vii. 18.
- 18. (Names) belonging to hymns belong to (whole) hymns, those belonging to stanzas belong to (single) stanzas (only). In a formula addressed to one divinity certain other (names) are here mentioned,

भजने वै hm^1r , भजने यै: bfk.—वै ऋच: hm^1r , यै: ऋच: b, यैर्क्क्स्च: $r^1r^4fkr^2r^5$.— न्यानि hm^1rfk , यानि br^4 .—व कानिचित् Bhm^1r^3 , प्रसङ्गत: r.— $r8^d=4r^d$.

19. either because they belong to the same world or because they are associated: these are incidental. Hence even in a hymn of manifold character, there may belong to the (whole) hymn

॰प्रकार्ऽपि hm¹rbfk, ॰प्रकाश्रेऽपि r¹r⁴r⁵.

20. a deity: that is, (such) a hymn is understood to be one

that cannot be definitely described a. When a hymn is broken up (bhinne) b, one should here state the deity from (its) characteristic mark c.

॰श्रेष्यं hm¹ r³br⁶ r⁷, ॰श्रेष्य fk r², ॰श्रेषं r.—देवतामिह खिङ्गतः m¹rbfk, देवता खिंग-भेदतः hd. No various reading is given by Rājendralāla Mitra.

- This perhaps refers to hymns of an indefinite character in which the name of no deity is mentioned (cp. anādiṣṭa-devata, Nirukta vii. 4), but the deity of which, as a whole, is Prajāpati (cp. below, vii. 16; Sarv. x. 18; Sieg, Sagenstoffe, p. 8).

 That is, when single stanzas of it are ritually applied, the deity is that of the stanza: cp. sūkta-bheda-prayoge in Sarvānukramaṇī i. 139.

 Cp. Sarvānukramaṇī l.c. and i. 94.
- 21. In each case one should duly connect the formulas with the rites by ascertaining the deity; for that is the rite which is completely successful a.

चथावस hm¹r, तथावस bfk.—कर्मसु hm¹rb, कर्म प्र⁰ fkr².—The end of the varga sis here marked by 8 in hm¹bfk.

^a Cp. i. 4, where the same thing is negatively stated; see also i. 118, ii. 20, viii. 124.

5. Origin of names.

22. ^a Because the praisers, at the beginning and end of hymns, proclaim the occasion ^b, one who knows formulas should here observe the deities with regard to their name.

देवता नाम्ना $bfkr^2$, देवता नाम्नाम् r^1r^4 , देवतास्तास्ता hm^1r^3 . — उपेचेतेह hbfkr, उपेचेते हि m^1 , अपेचेतेह r^1r^4 .

- * Text, with translation and notes, of the following passage (22-33) on the origin of names has been printed by me in Album-Kern (Leiden, 1903), pp. 334, 336.
- b That is, the Rishis often mention the names of the deities especially at the beginning and the end of a hymn, together with some reference to the circumstances connected with their laudation.
- 23. As to that, indeed, they say: 'from how many actions does a name arise, whether of Vedic beings or any other (name occurring) here?'a

खत्त्वानां r^1 , सत्त्वानां f, सत्वानां all the rest. — वा $f k r^1 r^3$, च $h m^1 r$. — यद्वान्यद् $r^1 r^4$, यदन्यद् $h m^1 r b k$.

• This expression is equivalent to laukyānām; cp. laukyānām vaidikānām vā above (i. 4).

24. 'From nine,' say the etymologists, and the ancient sages Madhuka, Svetaketu, and Gālava think so too:

पुराखा: all MSS. except r^1r^4 , which have पौराखा: — मन्त्रते hr^3 , मन्द्रते $Bm^1r^1r^4d$: I have chosen the former reading against the balance of the MS. evidence, because it is the more difficult, because the plural suits the construction better, because h and r^3 are the most correct of the MSS., and because मन्द्रते is very easily altered to मन्द्रते, as is proved by the fact that d, which is a copy of h, has the latter reading.

25. '(viz.) that which (comes) from abode, action, form, luck, speech, prayer, from accident, as well as addiction a and extraction b.'

यदृक्योपवसनात् hm^1rb , यदृक्योप्रवरानात् f, यदृक्योपवसनात् $r^1r^4r^5$.—तथामुष्यायणाञ्च यत् bfk, तथामुष्यायणाञ्च r^1r^4 , तथामुष्यायणाञ्चपात् hr, तथा यणाञ्चपात् m^1 (the syllables **पारा** in the margin being meant to fill the lacuna). Cp. the various readings below, i. 28.

- ^a I have assumed this to be the most likely meaning from the use of upa-vas.

 ^b Lit.

 'the condition of being the descendant (āyana) of him (amuṣya).'
- 26. With regard to that (question), Yāska, Gārgya, and Rathītara say, 'from four: from prayer, from the diversity of objects a, from speech, and from action.'

॰ रथोतरा: hm¹rbf, ॰ रथंतरा: kr².—Between इति and तचाइर् fk insert नामानि कर्मतस्वाह शोभते, evidently copied by mistake from 27^{ab}.— यार्थवैरूपाद् hm¹rb, र्थार्थवैरूपाद् fkr²r⁵ (॰ रूपाद् f), य च वैरूपाद् r¹r⁴.—The end of the varga is here marked by 4 in bfdm¹, not in k.

a Artha-vairūpya here corresponds to rūpa in 25.

6. Saunaka's view: all names derived from action.

27. Saunaka, however, says that all these names (come) from action: prayer and form and utterance a, all arise from action.

कर्मतस्त्वाह $hr^1r^3m^1bfk$, कर्मणां चाह r.—वाच्यं $hr^3br^2r^5$, वाक्यं r, काव्यं fk.

- a Rūpa here corresponds to artha-vairūpya and vācya to vāc in 26.
- 28. Similarly, even that (name) which (comes) from acci-

dent a, as well as from addiction and extraction, is simply action: and so hear (what) the reasons (are).

यदृक्ष्योपवसनात् hrb, यदृक्ष्योपवचनात् fkr², यदृक्ष्या निवासाञ्च r¹r⁴.—तथामु-ष्यायणाञ्च यत् hrb, तथामुष्यायणाय यत् fk, यद्दा मृष्यायणाञ्च r¹r⁴.— तथा तद्दिण all MSS. except b, which has तथावद्धि.— कृणुष्यं च m¹bfk, कृणुष्यं तृ r, कृणु त्वं च hr³d.— हतवः Bhm¹r³, हतुतः r. The evidence of the MSS. is so strongly in favour of the ungrammatical use of the nom. for the acc., that I have retained it as an original inaccuracy (due perhaps to the metre). The Revidence of the same loose usage (i. 3.4; iii, 4.1). हितुतः (the reading apparently of r¹r⁴) looks too much like a correction (cp. i. 46).

- A Yadrchayā is the only word here and in 25 which is not in the ablative, probably owing to the frequent adverbial use of the instrumental of this word. The corruption japāt (for ca yat) in 25 was probably due to yadrchayopavasanāt being understood by the copyist as one expression and the consequent necessity of making up the number nine in some other way. The corruption is not repeated in 28 because of the absence of this necessity. Yadrchayā (scil. nāma) is explained below (i. 30) as yādrchikam nāma.
- 29. Creatures arise from action; from action (comes) the intercourse of beings. And a being comes into existence somewhere: it is produced from (its) abode.

प्रजाः hm^1r , प्रजा r^1bfkr^2 .—कर्मतः सत्वसंगतिः hm^1rb , कर्मतः सत्वगंगतिः f (गागितः kr^2), कर्मणः सद्य जायते r^1 .—क्कचित् all MSS. except r^1r^4 , which have सतो.—संजायते सद्य k, स जायते सद्य hr^3d , संज्ञायते सद्य fm^1r , संज्ञापयेवद्य b, निवसते सद्य r^1r^4 .

30. An accidental name is given somewhere or other: one should know that that also is here (derived) from a comparison with some (form of) becoming.

तु नामाभिधीयते $h\,m^1r$, नाम नामाधीयते $fk\,r^2$, नाम नाम धीयते r^1r^5 , नाम नामापि भिधीयते b.— श्रीपम्यादिष्ठ $h\,m^1r^3r^4r^5$, श्रीपम्यादिष $bfk\,r^2$, श्रीपम्यादिष r.

31. For there is no (form of) becoming unconnected with action, nor is any name meaningless. Names have no other source than becoming; therefore they are all derived from action.

न नामासि hm¹ r, न नामाह b, त नामाह f, तज्ञामाह kr².—The end of the varga is here marked by & in hd, by 9& in fk, not at all in bm¹.

- 7. Auspicious names. Different kinds of formulas.
- .32. A name which is formed from luck and from addiction

simply becomes a prayer: from (words expressing) luck, such as svasti (welfare),

यञ्च hm^1bfk , यनु r.—॰वसनाञ्च hm^1r , ॰वसनं च b, ॰वचनं च $r^1r^4fkr^2$ (चत् f).— भवत्येव तु m^1rfk , भवत्येव हि hb.— स्वस्त्यादेर्मगलादिह $hm^1bkr^2r^5$, स्वस्त्यादे मंगलानि ह corrected to ॰िदह f, स्वस्त्यादेर्मङ्गलानि च r, आशासी मङ्गलानि च r^1r^4 .

33. names of beings, even the well-known ones, are formed on the principle, 'how, pray, could this man, with such a contemptible name, live long here?'a

श्रपि कुत्सित° hm^1rb , श्रपि कत्सित° f, श्रचिकित्सित° kr^2 .—इह bfkr, श्रपि hr^4 .—विदितान्यपि hm^1rfk , वि[दितान्य]पि b, निन्दितान्यपि r^1r^4 .

- ^a That is, even ordinary names are based on the principle of avoiding what is inauspicious. Cp. Nirukta i. 20, where ku in ku-cara is interpreted as kutsita if the word is an epithet of 'beast' (mrya), but not if it applies to a god.
- 34. The formulas which have been seen by the seers of such, may be of various sorts both with respect to the (kind of) praise and to the (degree of) majesty (arising) from the prominence of a deity's nature.

चे $\rm B\,h\,m^1\,r^3$, वे r. — चैव $\rm h\,r$, खेवं $\rm b\,fk$. — प्रभावाद्देवतातानः $\rm h\,r^3\,f\,r^2\,r^7$, प्रभावा देव-तातानः $\rm m^1\,k$, प्रभावाद्देवतातानः $\rm b$, वाक्प्रभाविण चातानः $\rm r$.

35. Praise (47)^a, laudation (48), blame (49), doubt (51), plaint (50), desire (53), prayer (50), boasting (51), request (49), question (50), summons (57), enigma (57),

प्रविल्हिका m¹ r³ r², प्रवाल्हिका k, प्रविल्हिका hdbfr: cp. the various readings in 57.

- ^a The figures in 35-39 refer to the ślokas below which exemplify these categories. Cp. Nirukta vii. ^a3, where examples of praise (stuti), prayer (āśis), narration (ācikhyāsa), plaint (puridevanā), blame (nindā), and laudation (praśaṃsā) are given.
- 36. commission (51), injunction (52), vaunt (53), lament a (53), narration (58), conversation (52), purifying narrative b (53).
- a Corresponding to this (vilapitam) we have vilāpa in 53.

 Bimply ākhyāna in 53.—The end of the varga is here marked by on m¹dfk, not in b.

8. Different kinds of formulas and modes of expression.

37. Lascivious verses (55), obeisance (54), obstacle (55), resolve (55), prattle (55), reply (50);

प्रतिराथस् \mathbf{r}^4 , प्रतिरोधस् \mathbf{f} k \mathbf{r} , प्रतिसेधस् \mathbf{b} , प्रतिषेधस् \mathbf{h} $\mathbf{m}^1\mathbf{r}^7$ (cp. the various readings in 55). — प्रतिवाक्यं तथैव च \mathbf{h} $\mathbf{m}^1\mathbf{r}^3\mathbf{r}^7$, प्रतिवाक्यं च नाम यत् \mathbf{r} , प्रतिवाक्यं च नाम यत् \mathbf{b} fk.

38. prohibition and admonition (52), intoxication and denial (56, 57), and what is called invitation (56), agitation (56), and wonder (57);

प्रसादापह्नी hm^1rfk , प्रसादपद्भनी b.—च ह $hm^1r^3r^7$, व ह b, ये ह k, च ये ह f, च यत् r.— संज्वरो hm^1 , सज्वरो bfkr (cp. various readings in 56).— यश्च Bhm^1r^3 , नाम r.

39. abuse (48), eulogy a, invective (49), curse b (49, 58); preposition, particle, noun, and verb c;

স্মান্ধীয়ो $hm^1r^3br^7$, স্মান্ধায়ो fk.— भिष्टव॰ $hr^3m^1r^7(f?)$, भिञ्चव॰ kr^2 , भिलव॰ r.—चैपः hbfk, স্মান্ধাः r.—उपसर्गों hm^1rb , उपसर्गा $r^1r^4kr^2$.—निपातस्र hbfk, निपातास्र r^1r^4 .

- ^a No example of this category (abhistava) is given below, perhaps because of its practical identity with praise (stati).

 ^b See below (47-58), where examples of all these thirty-five modes of expression are given (excepting abhistava).

 ^c These four grammatical categories are discussed below (i. 42-45 and ii. 89-98).
- 40. past, present a, and future; masculine, feminine, neuter b: of such a nature are the formulas in all the Vedas everywhere.

भविष्यं च hm¹k, भविष्यंच f, भविष्यंच br.—पुमां MSS.—स्त्री च hm¹r³br7, स्त्रीलं fk, स्त्र्यथ r.— सर्ववेदेषु सर्वग्रः Bhr³m¹, सर्ववेदेष्विति स्थितिः r, सर्वदेवेष्विति स्थितिः r⁴.

- ^a Bhavya here meaning 'present,' in i. 61 means 'future.' b Cp. below, ii. 96.
- 41. Stanzas, hemistichs, and verses are for the purpose of setting forth the object of (their) utterances; moreover, in Brāhmaṇa and ritual (kalpa) some (of these stanzas &c.) here are quoted.

वाक्यार्थदर्शनार्थीया $hm^1bfkr^5r^7$, तेषां निर्द्शनार्थीया r.— धर्चः hm^1r , धर्च bfk.— ब्राह्मण चाथ कल्पे च निगदानेऽच कानिचित् hm^1rbfk , विधी कल्पे च देवे च निग- बन्देऽच कर्हिचित् r^1r^4 .— The end of the varga is here marked by r in hm^1bfk .

9. Definition of noun and verb.

42ª. The uttered sound by which we here apprehend a substantive, when connected in the (correct) disposition of syllables, the wise call 'noun' (name).

॰चर्तिनेह rbk, ॰चार्तिनेह hm^1f .— द्र्यं hm^1b , द्र्ये rfk.—तद्वर् hm^1b , तद्वर् fkr.—42-45 are omitted in r^1r^4 .

- ^a The text and translation, with notes, of 42-45 have been printed in Album-Kern, pp. 334 and 337.
- 43. That in which eight inflexions are employed in various senses, sages call a noun, when there is a distinction of number and gender.

विभक्तयः hr³r7m1, विभूतयः fkr.

44. That notion which, connected with many actions, becoming a later from an earlier a, (and yet being) but one, is effected by the development of the action, they call by the term 'verb.'

क्रियाभिनिर्वृत्तिवर्शन $\mathbf{m}^T \mathbf{r}$, क्रियाभिनिवृत्ति॰ f, क्रियाभिनिर्वृत्तवर्शन \mathbf{h} , क्रियाभिनि-वृत्तिवर्शन $\mathbf{b} \mathbf{f} \mathbf{k}$.—सिद्ध $\mathbf{m}^T \mathbf{b} \mathbf{f} \mathbf{k} \mathbf{r}$, सिद्धा \mathbf{h} .

- ^a That is, which expresses sequence of time: the expression is taken from Nirukta i. 1.
- 45. When there is a becoming which arises from the development of an action, and which is designated by a term with a primary suffix, and which is joined with number, inflexion (or) indeclinable form (avyaya), and gender, then it is to be regarded as a substantive (dravya).

क्रियाभिनिर्दृत्ति° m¹rfb, क्रियाभिनिर्दृत्त° h.—हाद्नाश्रब्दाभिहितो hm¹fr, हाद्नार श्रब्द् भिनिहितो b.—°विभक्तयव्यय° hm¹r, विभिक्तिव्यय° fk b. The end of the varga is here marked by Q in hm¹bf k.

10. Examples of different kinds of formulas.

46. Hear now, in succession, how the seers formerly with terms of different kinds saw their various utterances here.

विविधानीह $hr^3r^4m^1bfkr^2$, विविधान्यपि r.

47. By means of (attributing) beautiful form and so forth, praise (35) is pronounced; similarly prayer by (such terms as) heaven and so forth. The utterances which are different from these may also be of many kinds.

मोता आशी: hr1r3br2m1, प्रोता आ fk, प्रोता श्राधाः r.

48. In the formula 'Citra indeed' ($citra\ it$: viii. 21. 18) Sobhari's praise of the liberal giver is a laudation (35). (Formulas) expressive of abuse (39) appear: (e. g. the formula) 'and thy mother' $(m\bar{a}t\bar{a}\ ca)^a$ reviles.

मन्त्र hm¹rb, मन्त्र: r¹r⁴, मन्त्र॰ r³fk.—प्रशंसा भोजख hm¹rbfk, प्रसंगाङ्गोजख r¹r⁴.— सोभर्: m¹, सौभर्: hr, सौभर् b, सौभर् fkr².—माता चेत्व॰ hm¹r, माता मेत्व॰ fkr¹r²r⁵.

^a VS. xxiii. 25; TS. vii. 4. 19³; SB. xiii, v. 2⁵; TB. iii. 9. 7⁴; ASS. x. 8. 10.

49. The stanza 'vain food' (mogham annam: x. 117. 6) is blame (35), while the stanza 'who me' (yo mā: vii. 104. 16) is a curse (39). 'What, wondrous Indra' (yad indra citra: v. 39. 1) is a request (35), while in the stanza 'over this world' (abhīdam: x. 48. 7) there is invective (39);

च्छङ् मोघमन्नं hm^1r , च्छङ् मोघमन्न b, च्छग्मोयमन्न f, च्छग्मोयमन kr^2 . — निन्दा hm^1br , तिदा fkr^2 .

50. 'May wind waft hither' ($v\bar{a}ta\ \bar{a}\ v\bar{a}tu$: x. 186. 1) is a prayer (35); 'staves' ($dand\bar{a}h$: vii. 33. 6) is plaint (35), while the two stanzas 'I ask thee' ($prch\bar{a}mi\ tv\bar{a}$: i. 164. 34, 35) are respectively question (35) and reply (37).

दण्डेति $hm^1rhfkr^2r^6$, दण्डादि r^4 .—परिदेवना hm^1rh , परिवेदना $fkr^2r^4r^6$.—The end of the varga is here marked by 90 in $hhfkm^1$.

11. Examples of different kinds of formulas (continued).

51. 'What was below' (adhaḥ svid āsīt: x. 129. 5) is doubt (35); 'I was Manu' (aham manuḥ: iv. 26. 1) would be boasting (35); in the (stanza) 'this our sacrifice' (imam no yajñam: iii. 21. 1) the (first) verse is called commission (36).

श्रासीस hm^1rbfk , श्रासीदिस्टक् r^1r^4 .—कत्यना hm^1r , कथना r^1r^4bfk , कच्छना r^5 .—उच्यते hm^1rbfk , उत्तमे r^1r^4

52. 'Here let him say' (iha bravītu: i. 164. 7) is injunction (36); the stanza 'clasp me tightly' (upopa me: i. 126. 7) is conversation (36); but 'not with dice' (akṣair mā: x. 34. 13) in the praise of dice a is prohibition and admonition (38).

संजाप bfkr, संज्ञाप hm¹, सज्जाप r¹r³r⁴.— ऋगुपोप में hr³m¹B, तृगुपोप में r.—प्रति-विधोपदेशी hm¹rbfk, प्रतिविधापदेशी r⁴r⁵.

[•]a That is, in the dice-hymn, x. 34.

53. 'Ho, wife' (haye jāye: x. 95. 1) is narrative (36); 'of the reed to me' (nadasya mā: i. 179. 4) would be lamentation (36) b; 'without a husband' (avīrām: x. 86. 9) is a vaunt (36) about oneself, while 'the lover'e (sudevaḥ: x. 95. 14, expresses) desire (35).

विलापः स्थान् $hr^3r^2r^7bfkm^1$ (no visarga $bfkm^1$), विलापसु r.— श्रवीरामात्मनः $hr^3r^4m^1bfkr^2$, श्रवीरामिव माम् r.

- ^a Akhyāna here corresponds to pavitrākhyāna in 36. ^b Vilāpa here corresponds to vilapitam in 36; the latter expression is also used in Nirukta v. 2 with reference to the above passage (i. 179. 4). ^c In Nirukta vii. 3 this passage is, however, described as plaint (paridevanā).
- 54. Obeisance (37, is expressed) in (the formula of) Śunaḥśepa, 'Obeisance to thee, Lightning' (namas te astu vidyute: AV. i. 13. 1)^a; but when one resolves what is expressed (with the words) 'I will be equal' (tulyo 'haṃ syām) b,

श्रुन:श्रेपे m¹r, श्रुन:श्रेपे b, श्रुन:श्रेपे r⁵, श्रुन:श्रेपे f, श्रुन:श्रेपे kr², (°रो) मत ऋषे r¹r⁴.—तुन्थोऽहं स्थाम् hm¹rfk, तुन्थो ह स्थाम् b.—Instead of 54°d, as given in the text according to hm¹rbfk, a totally different line occurs in r¹: यां कल्पयन्ति नोऽर्यः परिचासूक्तमिह ते, the first pāda of which is the pratīka of a khila mentioned below (viii. 45).

- ^a Cp. below, viii. 44; Meyer, Rgvidhāna xxiii, xxvii.

 ^b The author here seems to have been unable to quote an example of saṃkalpa, and to have contented himself with giving only a definition of its meaning.
- 55. (there is) resolve (37); 'what, Indra, I' (yad indrāham: viii. 14. 1, AV. xx. 27. 1) is the prattle (37) of Aitaśa^a; 'the harlot' (mahānagnī: AV. xx. 136. 5) would be a lascivious verse (37); 'bang!' (bhuk: AV. xx. 135. 1-3)^b, again, (expresses) an obstacle (37).

लैतश्रस्य m^1hfk , लेतश्रस्य br.—यः Bhm^1r^3 , नुः r.—महानग्न्या॰ hm^1rfk , प्रहानान्या॰ b.—स्वात् hm^1 , स्वात् fkr^2 , त्या b, तु r.—प्रतिराधो hdf, प्रतिरागे kr^2 , प्रतिरोधो bm^1r (cp. above, 37).— भृगित्यपि m^1hr^3f , धृगित्यपि kr^2 , भृगित्यमि br^7 , भृगित्युत r.—The end of the varga is here marked by 99 in hdm^1f , not in bk.

^a See Aitareya Brāhmaṇa vi. 33. 1, and Sāyaṇa's comment in Aufrecht's edition; also Haug, vol. ii, p. 434.

^b Cp. AB. vi. 33. 19, Haug, vol. ii, p. 435.

12. Further examples of different kinds of formulas.

56. 'Well, I' (hantāham: x. 119. 9), this (formula) is intoxication (38); 'not our own' (na sa svah: vii. 86. 6) is denial (38); 'O Indra-Kutsa' (indrākutsā: v. 31. 9) is invitation (38); 'I discern not' (na vi jānāmi: i. 164. 37) is agitation (38).

प्रमादस्विष hm¹r, प्रमादस्विह b, प्रमादस्विक fkr².— न स ख hm¹r³f, नमख kr², नमछ r, omitted in b.— अपह्रव: bhr³m¹, अपह्रच f, अपह्रव k, अह्रव r², अभिञ्जव: r.— संज्वर: hrm¹, सज्बर: fk.— 56^{cd} and 57^{ab} are omitted in b.

57. 'Let the invoker worship' (hotā yakṣat: i. 139. 10) is a summons (35); 'who, to-day' (ko adya: i. 84. 16 or iv. 25. 1) is wonder (38); 'to his brother not' (na jāmaye: iii. 31. 2)a—this (stanza) is denial (38); (there is) an enigma (35) which begins 'outstretched' (vitatau: AV. xx. 133. 1-6)b.

जामचेऽपह्नो ${\bf r}^4$, जामन्नपह्नो ${\bf r}$, जामनुपह्नो ${\bf r}^3$, यामनुपह्नो ${\bf hd}$, यामनपह्नो ${\bf hd}$, यामनुपह्नो ${\bf r}^4$, यामनुपह्नो ${\bf r}^4$, यामनुपह्नो ${\bf r}^3$ ${\bf kr}^2$, विस्वा ${\bf r}^4$ कि ${\bf r}^4$ (ep. 35).

- ^a Cp. below, iv. III. If the reading adopted in the text is the right one (jāmaye 'pahnavo na), the transposition of the negative is remarkable, and we have thus two examples of apahnava and none of abhistava: see note on i. 39.

 ^b The Sandhi of vitatādi adds a second irregularity to this line.
- 58. 'Death was not' (na mṛtyur āsīt: x. 129. 2)—this (stanza) they pronounce to be narration (36)^a; 'may they be childless' (aprajāḥ santu: i. 25. 5°) is a curse (39)^b, while 'blessed' (bhadram: i. 89. 8) is a prayer c in Gotama d.
- मद्रम् hdm¹r, रद्भ bfkr².—गोतमे m¹, गौतमे hbfkr². The author of 1.89.8 (bhadram karnebhih) is Gotama, that of iv. 11.7 (bhadram te agne) is Vāmadeva Gautama. The former must be meant because it (and not the latter) is a good example of a prayer, and a seer would not be referred to by his patronymic when the latter belongs to two seers (Vāmadeva and Nodhas), and the context does not show which is meant. I have, moreover, preferred the reading गोतमे, as seers are regularly referred to thus in the locative (cp. i. 54, ii. 129-131), not, e.g. as गोतमे, 'in the hymn of Gotama' (but गात्समदे in iii. 36). (In ii. 129 hbm¹ have all wrongly गोतमे for गोतमे; cp. also critical note on ii. 46.)
- The same term is used to describe the same stanza in Nirukta vii. 3.

 b 'Curse'

 (39) is twice exemplified, once as $s\bar{a}pa$ (49), and once (57) as $abhis\bar{a}pa$.

 c This is the second example of $\bar{a}sis$ (35).

 Apahnava in i. 57 (note a) would therefore not stand alone as exemplified twice.

 d The author of i. 89.

59. Much else of this kind can be found, and can in accordance with the application (*prayogatas*) of these (formulas) be stated to be such, when contained in stanzas, (whole) hymns, and hemistichs.

इतीदृश्रम् hm1r3bfkr2r7, इहार्वजम् r.—प्रयोगतम् hm1rfk, प्रयोग तच् b.

60. These contents $(v\bar{a}ky\bar{a}rth\bar{a}h)$ of the formulas are properly connected with the deity belonging to the hymn; but the praise in this case is a matter of inference.

°तां मूक्तभागिनीम $hm^1 bfr$, °तां मूक्तभागिनाम $r^1 r^4$, °ता सूक्तभागिनी kr^2 .— संश्रयने $hm^1 rb$, संभूयते fkr^2 .— त्वचा॰ $hm^1 rb$, तचा॰ r^4 , °त्व श्रानु॰ f, °त्वा श्रानु॰ kr^2 .—The end of the varga is here marked by qq in hdbf, and by qq in k, not at all in m^1 .

a These various forms of statement in reality imply praise of the deity with which they are connected.

13. The Sun and Prajapati as the source of all.

61. Of what is and has been and is to be a, and of what moves and is stationary,—of all this some regard the Sun alone to be the origin and the cause of dissolution.

hr³m¹bfkr²r⁷ read 61^{ab} as in the text; r has भवज्ञूतं भविष्यच जङ्गमं स्थावरं च यत्।

- a Bhavya is used above (i. 40) in the sense of 'present.'
- 62. Both of what is not and what is, this source is (really) Prajāpati, as (being) this eternal Brahma which is at once imperishable (akṣaram) and the object of speech (vācyam)^a.

एषा hm^1rbfk , एषां r^1 .—यद् Bhr^3m^1 , त्यद् r.—च वाच्यं hdr^3m^1b , च वाक्यं r^5r^7 , च वाच् f, च वाच् g, चाव्ययं g.

- ^a That is, Prajāpati is a form of the supreme Brahma, which alone is eternal (nitya) and, though transcending thought and speech, can be directly expressed (vācya) in the Vedāntist formula (cp. Vedāntasāra, § 144, and introductory stanza, ed. Böhtlingk).
- 63. He (the Sun), having divided himself into three, abides in these worlds, causing all the gods in due order to rest in his rays.

क्रत्वेष hr3m1bfkr2r7, क्रत्वेव r.—निवेश्य स्वेषु hm1r, निवेश्यः स्वेषु b, निवेश्यास्वषु f.

64. This (being) which, in the form of fire, abides in three forms $(tridh\bar{a})$ in the worlds that have come into being, the seers adore with songs as manifested under three names.

एतज्ञूतेषु hdr, एतज्ञक्तेषु m^1 , एत भूतेषु b, एज्जूतेषु f, यज्ञूतेषु k, एतमेवैषु r^1r^4 . — यज्ञितं hm^1rbfk . यज्ञिनं $r^4r^5r^7$.

65. For he abides, glowing, in the interior of every being, and, with sacrificial litter spread, they adore him in the invocation as having three abodes.

एष हि hm¹r³r⁷, एष च bfkr², एव च r.— The end of the varga is here marked by 93 in bfkm¹hd.

14. The three forms of Agni.

66. Here (on earth) he is by priests called Agni Pavamāna, (in the) middle (sphere), Agni Vanaspati^a, but in that (celestial) world, Agni Śuci^b.

पवमानो $\mathbf{3}$ पित् $\mathbf{h}\mathbf{m}^1\mathbf{r}$ $\mathbf{b}\mathbf{f}\mathbf{k}$, पवमानापित् $\mathbf{r}^1\mathbf{r}^4$.—•िप्तर्वनस्पतिः $\mathbf{B}\mathbf{h}\mathbf{r}^3\mathbf{m}^1$, •िप्तसु पावकः \mathbf{r} .—•श्रमुष्मित्तेव $\mathbf{m}^1\mathbf{r}^3\mathbf{r}^5\mathbf{r}^7$, •ित्रष \mathbf{f} , •ित्रप $\mathbf{h}\mathbf{d}$, •ित्रप $\mathbf{h}\mathbf{d}$.

- * Agni is called Vanaspati in AV. v. 24. 2: cp. St. Petersburg Dictionary sub voce.

 b Pavamāna, S'uci, Pāvaka are the three names in TS. ii. 2. 4², and in the Purāṇas (see St. Petersburg Dict.). Cp. the names of Agni's brothers below (vii. 61).
- 67. In this world he is extolled by seers with praises as being Agni, in the middle (world) he is praised as Jātavedas, in heaven he is praised as Vaiśvānara^a.

र्रेजितः r¹ r² r⁵ bfk, र्रेजितः hm¹r.—जातवेदाः r, जातवेदा hdm¹ bfk.

- ^a The triad Agni, Jātavedas, Vaiśvānara is placed at the head of the Daivatakāṇḍa of the Naighaṇṭuka. Yāska, in Nirukta vii. 23, states that ancient ritualists took Agni Vaiśvānara to be the sun, while Sākapūṇi considered him to be the terrestrial Agni. With the latter view Yāska substantially agrees in Nirukta vii. 31. Cp. below, ii. 17.
- 68. Because, taking up fluids with his rays, accompanied by Vāyu, he rains upon the world, he is termed 'Indra.'

॰यं गतः सह hm¹rbfk, •यं सह संखुतः r¹r⁴.—स स्नृतः hm¹rbfk, नु खुतः r¹r⁴.

69. Agni in this (world), Indra and Vāyu in the middle, Sūrya in heaven, are here to be recognized as the three deities a.

मध्यतो hr^3m^1 , मध्यमो bfkr.—वायुरेव च hm^1rfk , वायुरेव वा b.

^a Cp. tisra eva devatāḥ &c. in Nirukta vii. 5, and Saryānukramaṇī, Introduction ii. 8 (with Ṣadguru iṣya's comment).

70. Owing to the majesty a of these (deities) different names are applied (to each of them); (the diversity of names) here appears in this and that (sphere) according to the division of their respective spheres.

तत्तत् hm¹r, तत fk, तञ्च b.—तच तचेह दृश्यते hr³m¹ br⁵r⁷, तच तचेह दृति f, तच तचेह यदृति k, तच तचोपलच्येत् r.—The end of the varga is here marked by 98 in hd bm¹fk.

^a Cp. Nirukta vii. 5: tāsāņ māhābhāgyād ehaikasyā api bahūni nāmadheyāni bhavanti.

15. The Triad and the Atman. Three forms of Vac.

71. This is a manifestation of their power $(vibh\bar{u}ti)$, that their names are various. The poets, however, in their formulas say that these (deities) have a mutual origin $(anyonyayonit\bar{a})^a$.

नामानि यदनेकशः hfr, नामानि पदमेकशः k, यद्मामानि वेकशः b.—॰योनिताम् hm^1br , ॰योगिताम् fkr^2 .

a Cp. my Vedic Mythology, p. 16. In Nirukta vii. 4 the gods are itaretarajanmānaļ.

72. These deities are designated by different names according to their sphere. Some speak of them thus as belonging to (bhakta) that (sphere), and chiefly concerned with it.

प्रदिष्टास्ता m¹rbfk, प्रतिष्ठास्ता hd, प्रदिष्टास्तु r¹.—तङ्गकास्तत् hm¹fkr, तङ्गकाश्व b.—केचिदेवं वदन्ति ताः hm¹rbfk, नैवं केचिद्वदन्ति तु r¹r⁴, ताः r⁵.

73. The Soul $(\bar{a}tm\bar{a})$ is all a that is proclaimed to be an attribute (bhakti) b of those three chief lords of the world who have been separately mentioned above.

पृथक् पुरस्ताचे तून्ना hm¹fr, °चेत्युक्ता kr², °चौक्ताः r⁴, पृथुचुर्चन्तका b.—लोकादि° hm¹rfk, लोकारि° b, लोकाधि° r¹r⁴.— यद्मक्तिः प्रकीर्त्यते hm¹rbfk, यद्ग्यक्रिक्तः कीर्त्यते r¹r⁴.

- ^a Cp. Nirukta vii. 4: ātmā sarvam devasya.

 ^b Cp. Durga on Nirukta, Bibliotheca
 Indica edition, vol. iii, pp. 111 and 392, last line.
- 74. They say that it is the energy (of the Soul) which is the weapon and the vehicle a of any (god).

Similarly (they say) that Speech $(V\bar{a}c)$ is praised separately

as this (terrestrial) one, as connected with Indra (in the middle sphere), and as celestial.

तेजस्त्वेवायुधं ${\bf r}^{(4)}$, तेजस्त्वेवयवाः ${\bf m}^1$, तेजस्ते वयवाः ${\bf hd}$, तेजस्ते वायवाः ${\bf r}^3$, तेजस्ते वायवा ${\bf f}$, तेजस्ते वायवाः ${\bf r}^2$.—यस्य यत् ${\bf Bhr}^3$, तस्य तत् ${\bf r}$.

a See Nirukta vii. 4: ātmaivaiṣām ratho bhavati...ātmāyudham. Cp. BD. iii. 85; iv. 143.

75. In all those praises which are addressed to many deities, and in those joint praises which are in the dual, the (three) lords (of the world) are predominant.

बङदेवता सुतयो kr^2 , बङदेवतायाः सुतयो rd, बङदेवता या सुतयो hm^1bf . The MS. evidence is in favour of a pāda of nine syllables (cp. ii. 25 and viii. 62).—दिवत्सं-सुतयञ्च $hm^1r^3r^5r^7f$ (°स्त° f), दिवत्संततयञ्च kr^2 , श्चेंवत्सस्तुतञ्च b, दुन्दशः सुतयञ्च r.— पतीनामिव $m^1fkr^2r^3r^5$.—The end of the varga is here marked by qq in hdbf, not in m^1k .

16. The chief deity of a hymn.

76. In bringing out $(samp\bar{a}dayan)$ the sphere, the names, and the attributes $(bhakt\bar{i}h)$ of a deity in each praise, one should here observe every possible means of doing so (sampadam).

देवतायाः सुती m1r, •ताया सुती hdbfk.

77. All who are praised with the attributes (bhakti) of Agni, one should sum up (samāpayet) in Agni, and what has the attributes of Indra, in Indra, and what is attached to Sūrya, in Sūrya.

जुतान्त् सर्वान् hdm^1 , जु तान् सर्वान् r. जु तां सर्वान् b, जुतत्सर्वान् fk, जु या सर्वाम् r^1 .— तसिंद्रे hdm^1fk , तिंद्रे b, तसिन्द्रे r, तसिन्द्रे r^1r^4 .

78. That deity to whom the oblation is offered, and to whom the hymn belongs a, will there be the chief object (of praise), not (the deity) who is praised incidentally.

निष्यते hr^4m^1 (cp. Nirukta vii. 18), निष्ध्यते rbfk.— यस्री hrbf, यस्री kr^4 .— सूक्तं च hm^1bfk , सूक्तं तु r.—सैव तच hrbfk, तच तच r^1r^4 .— प्रधानं hm^1r , ॰न fk, ॰ना b, ॰नो r^1r^4 .— स्थान् hrfk, स्था b, सी r^1r^4 .— या खुताः hdm^1f , या सुता b, या खुया k, याः खुताः r.

[•] a Cp. Nirukta vii. 18: yas tu sūktaņ bhajate, yasmai hovir nirupyate.

79. Thus the rule about these three (gods) has been stated in a general way. But after it has thus been stated in general, the list (of the gods is as follows) in detail.

इति hm^1rbfk , इह r^1r^4 .—एतेषाम् hm^1rbf , एवेषाम् kr^3 .—समासेनेवमुक्तखु hm^1rb fk, समापद्यन्त तत्सर्वम् r^1r^4 .

80. For the detailed account of the names of each must necessarily be known, since it is impossible to know the formulas without cognisance of the names a.

नामां m¹ br¹ r⁵, नामा hrfk, नाम: r⁴. — मंत्र: भूको f. — The end of the varga is here marked by 9£ in hdbm¹, not in fk.

a Cp. above, i. 2, 4.

17. Names of deities enumerated.

81. Even unembodied beings, the great sages, the seers, have also lauded as deities here, to the best of their ability, in their various praises:

सलान्य॰ hrfk, सामान्य॰ b.—देवतावद् r^1r^4 , देवता च rbfk, देवतां च hd.— $8r^{cd}$ is the reading of hdrfk; तुष्टु —— य तासु ता सुतिष्विह b.

82. (the seers) by whom Agni, Indra, Soma, Vāyu, Sūrya, Bṛhaspati, the Moon, Viṣṇu, Parjanya, Pūṣan, the Rbhus, the Aśvins,

चैस्विपर् ${
m rbf}$, चेस्विपर् k, चैरिपर् ${
m r}^4$, चस्विपर् ${
m hdm}^1$.— पूषा चाप्युभवो ${
m hdr}$, पूषा वाप्युभवो k, एषा वाप्युवो b, पूषोषा भूगवो ${
m r}^1{
m r}^4$.

83. the Two Worlds, the divine Maruts, Earth, the Waters, Prajāpati, and the divine Mitra-Varuṇa, separately, and both together,

देवी च m^1br , देवी हि hd, देवी धि fk.— सह च fkr, त्र्यह च b, च सह m^1 , च मह hd.—तावुमी hbrfk, ता उभी m^1 .

84. the All-gods, Savitr, Tvastr (who is) regarded as the fashioner of forms, the Steed, Food, Priests, the Bolt, the Pressingstones, (all these deities) furnished with cars,

मतः hrfk, मसः b, मुखः r4. — रथसंयुताः hfk, ॰सं - उतां b, ॰संयुतः r, ॰संयुगः r4.

19]

85. are praised separately in their various hymns and stanzas by their names: these (names) of theirs in their respective praises I will declare in order.

मूतिकशिभाष hrbfk, मूतिष्वृतु च r4.—The end of the varga is here marked by 90 in hdbfm1, not k.

18. Characteristics of hymns to Agni, Indra-Väyu, and Sürya.

86. One should determine a formula to be addressed to Agni when distinguished by the characteristic marks of Agni, which on the one hand consist chiefly of the five oblations (havispankti), and on the other (are) simple invocations by name.

हविष्पङ्कि॰ hr³r⁴m¹, हविष्पञ्जिः fk, हविषाञ्जिः b, हविष्यञ्जिः r.

87. A formula addressed to Indra is distinguished by the characteristic marks of Vāyu as well as of Indra, and by denominations of the bolt, by mighty activity a, and by might.

लच्यते hm^1rbf , लभ्यते k, लचितम् r^4 .— नामधेयैः q^4 hm^1rbfk , नामभिस् r^1r^4 .— बलकृत्या hm^1rf , वलकृत्या bk.— बलेन hm^1rf , वलेन k, चलेन b.

a The same expression, balakrti, is applied to Indra in Nirukta vii. 10.

88. (A formula) addressed to Sūrya (is distinguished) by the characteristic marks of Sūrya, as well as by all qualities relating to brilliance, and by those denominations of the moon by which it (the moon) here belongs to the hymn.

सर्वेश hr^4bfkr^2 , सर्वेशु rm^4 .— नामधेयेश्व Bhr^3 , नामभिश्चेव r.— भजतेऽत्र यै: hrfk, समित त्र यै: r^5r^7 , भजतेऽखिलै: r^4 .

89. All such (hymns) of any (seer) here which (authorities) cannot determine by mention of the denominations of these deities, (must be determined) in some other way than this.

व्यवस्थन्यतो hr, व्यवस्थंततो m¹, व्यवस्थत्यतो bfkr³r⁴.

90. Let this application of these (three) lights a take place in the three worlds (respectively): a wise man knowing the formulas does not fail in the application.

श्रयं hm¹r, इयं bfk. — प्रयोगस्वितेषां hm¹rfk, प्रयोगत्वे तेषां b. — ज्योतिषां चिषु hm¹r, ज्योतिःषु चिषु r²r⁴, ज्योतिष्वतृषु b, ज्यो षु चि च fk. — वर्तताम् m¹, वर्त्तताम् bfkr, नर्तताम् hd. — The end of the varga is here marked by 9 ा hd m¹bf, not in k.

^a Cp. i. 97 and Nirukta vii. 20.

19. The three Agnis.

91. Because this (terrestrial Agni) is led a (niyate) by men, and that (celestial Agni) leads him from this (world), therefore these two (Agnis), while having the same name, have performed their work each separately.

ऽयं नृमिर् br, यन्नृभिर् hm^1 , यन्नभिर् fk.— च तम् hm^1rbfk , सञ्चत् r^4 .— चक्रतुः hm^1 , वक्रतुः b, चक्रतु fk, च क्रतुः r.

- ^a The root $n\bar{i}$ being etymologically connected with the second part of the name (cp. $n\bar{i}h$ parah in Nirukta vii. 14).
- 92. Because he is known (vidyate) when born ($j\bar{a}tah$)^a, or because he is known (vidyate) here by creatures ($j\bar{a}taih$), therefore these two, while having an identical name (i. e. $j\bar{a}tavedas$), pervade ($sam\bar{a}pnutah$) b both worlds c (separately).

हि जातः सन् r⁴, हि जातस्य hm¹b, हि जतस्य f, हि यतस्य kr², च जातस्य r. That जातः सन् must be the correct reading, in spite of the almost universal जातस्य, is apparent from ii. 30; cp. मध्यमस्य for मध्यमः स in ii. 44, and द्वारस्य for द्वार्सु in iii. 6.—यद्वाच hm¹rbf, यद्वाचं k, यद्वाध r⁴.—•नामानौ hm¹fk, •नामानाव् br. (The hiatus is doubtless original, though not metrically necessary, because the word belongs in sense to र्मो, not to उभी), उभौ omitted in f.—समाप्तः hrf, समाप्तः m¹bk, समञ्जतः r⁴.

- ^a This etymology differs from the first of the five given in Nirukta vii. 19, but the second is identical in sense with the second of Yūska (jātāni veda tāni vainam viduh). Three others (agreeing with Yūska) are given below (ii. 30, 31).

 ^b Samaśnutah (cp. r⁴) would be the usual word in this sense.

 ^c That is, the terrestrial and the celestial.
- 93. He (Agni), as the middlemost of these (three), shines in the air discharging (rain)^a: thus some (names) of Agni are mentioned only incidentally.

विख्जन्नयम् hdm¹r, विख्जनयम् f, विख्ज्यन्नयम् b, विख्ज्यनयम् kr², ख्जन्तिरयम् r⁴.—एतेषां hrbfk, एकस् r⁴.—कथ्यने hr³, कल्पने m¹r, कल्पने r⁴, कल्पांते bfk.

a Cp. ii. 59: visrjann apah: also i. 68: varsati.

94. This (terrestrial) Agni is hairy (keśī) with flames, and the middle one with lightnings, while that (celestial) one is hairy with rays: therefore (the poet) calls them hairy ones (keśinaḥ) a.

यचिभिः केश्चयं hdm^1r^5 , यचिभिः केश्चयं f, स्विचिभिः केश्चयं r^2 , स्विधिः केश्चयं k, यश्चिभि केश्चयं b.—चैव hm^1bfk , त्वेव r^3r^4 , चेष r.— यसौ तु r, यसौ कु fk, यसो तु hdm^1 , यश्ची तु b.—तेनेनान् m^1r , तेन नान् r^4 , तेनेन् hd, तेनेवाम् b, ते तान् fk.

- a Cp. Nirukta xii. 25-27, and below, ii. 65.
- 95. Now owing to the separate nature of these three hairy ones here, they are distinguished in their specific characters (prakriyāsu) in the stanza, 'Three hairy ones' (trayaḥ keśinaḥa: i. 164. 44).

a Cp. Sarvānukramaņī on RV. i. 164.

20. Agni, Jātavedas, Vaiśvānara: essentially identical, but distinguished.

96. It is impossible to explain their production (*prasūti*) or their power, sphere, and birth^a: for the whole of this world is pervaded by them.

न चैवेषां bfk, न चैवेषां hdm^1 , न चेवेषां r, न खेवेषां r^4 .—विभूतिस्थानजन्म वा $hdr^3m^1fkr^2$, विभूतिस्थान $\frac{1}{r}$ वा b, विभूतिः स्थानजन्म वा r. Cp. विभूतिस्थानसंभवम् i, 104, ii. 20.

- ^a Because they are really identical, as explained in i. 97, and therefore cannot be said to have different origins, abodes, and powers.
- 97. Agni is contained in (śrita) Vaiśvānara, Vaiśvānara is contained in Agni; Jātavedas is in these two; thus these two (lights) are two (forms of) Jātavedas a.

वैश्वानरं hm^1rbfk , वैश्वानरे r^1r^4 .— अप्रिं hm^1rb , अप्रिं fk, अप्रीं r^1r^4 .— वैश्वानरः m^1r , वैश्वानर् hdbfk.— जातवेदासु $Bhm^1r^1r^4$, जातवेदाश्व r.— तथैते hm^1b , तथेतं fk, तथैनौं $r^1r^3r^2r^5$, तथैव r.— जातवेदसी $Bhdm^1r^1r^3$, जातवेदसि r.

A Cp. above, i. 90, and Nirukta vii. 20: ete uttare jyotisi jatuvedasi ucyete.

98. The divine nature of each god here (is derived) from their belonging to the same world, from their having one and the same birth, and from brilliance being inherent in them; at the same time (ca) they appear praised separately^a.

चैकजातलाट् h dr, चैकाजातलाट् m^1 , चैकाजन्यास् r^1r^4 , चैकाजातास्य b, चैकजास्य fk.—व्याप्तिमन्त्राम् तैजसः hm^1r , °ला तु तेजस b, °ला सु तैजसः fk, °लास्र तेजसः r^1r^4 .—तस्य तस्रेह hm^1r , यस्य यस्रेह r^1r^4 , तस्य तस्र ह fkr^2r^5 , तस्र तस्राह b.—देवलं hm^1r fk, देवस्र b.—च पृथक्जुताः $hm^1r^3fkr^2$, ते पृथक्जुताः r, जुतिषु जुताः r^4 , जुषु जुता b.

- ^a Though identical in abode, origin, and nature, they are praised as separate deities in the hymns, as stated in the next śloka (99). Cp. below, i. 101.
- 99. When we speak of (a hymn) as addressed to Agni, the terrestrial one in that case owns the hymn (sūktabhūj). When a hymn is stated to be addressed to Jātavedas, the middle (Agni) has been taught (as the object of praise) in it.

यत्वापेयम् hm¹ r⁴f, यञ्चापेयम् r³, यं त्वापेयम् b, यन्त्वापेयम् r.—ब्रूमः r, ब्रूमस् hm², जूम b, श्रूय fk.—सूक्तभाक् तत्र hm¹ rbfk, सूक्तं भक्तया तु r¹r⁴.—स्रृतः hm¹ br,(°म)स्तः fk.

100. Or when again we speak anywhere of (a hymn) as addressed to Vaiśvānara, Sūrya is in that case to be recognized in the praise of Vaiśvānara to be the owner $(bh\bar{a}j)$ of the hymn.

मूर्य: hm¹r³, सूर्य rbfk.— तत्र hm¹rfk, तस्र b.— The second line in r¹r⁴ appears as सूर्यभक्तस्य सूर्यस्य द्वेया विश्वानरो द्वि.— The end of the varga is here marked by 20 in hdm¹bf, not in k.

21. The deities of the three worlds in the descending series.

101, 102. Now the terrestrial and the middle (Agnis) are seen to be produced (prasāta) from the sun: at each sacrifice (the priest), wishing to perform the litany to Agni and the Maruts according to the descending series (which is) the reverse of the ascending series a of these three worlds, begins with a hymn to Vaiśvānarab;

दृष्टी hm^1r , दृश्वी r^1r^4 , दृशी fkr^2 , दृशो b. — शस्त्रं hm^1rf , शस्त्र k, शस्तं b, शास्त्रं r^3 .—प्रतिपद्यते hdrbfk, प्रतिपाद्यते m^1 .

^a That is, earth, air, heaven. ^b That is, Sūrya in heaven. The wording is for the most part identical with that of Nirukta vii. 23: eṣāṃ lokānām . . . rohāt prutyavarohaś cikīrṣitaḥ . . . hotāgnimārute śastre vaiśvānarīyeṇa sūktena pratipadyate.

103. Then he lauds next the deities of the middle sphere, Rudra and the Maruts, (and) again a this (terrestrial) Agni in the Stotriya b.

मध्यमखाना hrb, मध्यमे खानाट् f, खाना k, मध्यखानां m^1 .— इटं hdr^3m^1 (cp. Nirukta vii. 23), इटं f, इन्टं rbk.—स्तीचिये hm^1rfk , स्तीतीये b.

- ^a That is, in the third place, on earth.

 ^b Which is peculiar to Agni: see Roth, Erläuterungen, on Nirukta vii. 23, where Yūska remarks tata āgachati madhyasthānā devatāḥ, rudraṃ ca marutaś ca, tato 'gnim ihasthānam: atraiva stotriyaṃ śaṃsatī.
- 104. Just as this has been said of these (three) as arising from (their different) powers and spheres a, so it also appears here in its respective place (as applicable) to the god of gods (Prajāpati) b.

यथैतद $hr^3r^4m^1bfkr^2$, तथैतद r.—तथा च Bhr^3m^1 , यथा च r.

- ^a I take vibhūti-sthāna-saṃbhavam as a bahuvrīhi (as in ii. 20); vibhūti-sthāna-janma in i. 96 is a dvandva.

 ^b Of whom these three are manifestations; see i. 62, 63, and cp. 73.
- 105. Whatever (appears) anywhere as belonging to the sphere of earth, and as contained in the terrestrial Agni, attend to all that (now) being told in due order.

चापिमाश्रितम् hm^1b , चापिमिश्रितम् r^k , वापिमिश्रितम् r^1r^4f , वाग्विमिश्रितम् r^5 . \sim पूर्वेण् $hm^1r^3r^4r^5$, \sim पूर्वेण् bkr. — निबोधत hm^1r , निवोधता fk, निवोचतः b. — The end of the varga is here marked by >9 in hdbfk, not in m^1 .

22. The deities representing terrestrial Agni.

106. Jātavedas is contained in Agni, Vaišvānara is contained in Agni; so also are Draviņodas, and Fuel (*idhma*), and Tanūnapāt is contained in Agni^a.

जातवेदाः श्रितो hdr, जातवेदा श्रितो bfk (श्रु॰ f). — वैश्वानरः श्रितः hm¹rb, ॰र श्रितः fd, ॰र स्नृतः k.—The second pada of 106 is identical with the second of 97.

a The deities enumerated in vargas 22, 23 (106-114) correspond to the list of terrestrial deities in Naighaṇṭuka v. 1-3, the only essential difference being that I\bar{a} (a goddess of the middle sphere, in Naighaṇṭuka v. 4) is added in 112. The sequence of the sixteen names in Naighaṇṭuka v. 1, 2 is also followed without deviation (106-109^{ab}). There are, however, some variations (which will be noted below) both in the sequence and the form of the names enumerated in Naighaṇṭuka v. 3 (109^{cd}-114). The twelve Aprī deities (Idhma-Svāhākṛṭayaḥ: Naighaṇṭuka v. 2) are again enumerated in connexion with RV. i. 13 (ii. 147-150) and the etymology of these names is discussed in ii. 158, iii. 1-30.

107. Narāsamsa is contained in him, in him a is contained Iļa, the Litter and the Divine Doors are contained in this a Agni.

नराशंसः श्रि॰ r, नराशंस श्रि॰ hdm¹ bf, नराशंसा श्रि॰ k.—चैनमेनम् m¹fkr, चैतमेनम् hdr³, चैतमेतम् b, चैवमेतम् r⁴.—॰व्विटः hdm¹, ॰जः bfkr.—प्रिमेनम् hdm¹r, प्रिमेतम् b, प्रिमेत तु fk.—संश्रिताः m¹dfkr, संख्ता b.

- ^a The correct form at the beginning of the pada here and in III would be etam; I have, however, kept enam as the form favoured by the best MSS., and as the only form otherwise occurring in every śloka from 107 to 114.
- 108. Night and Dawn^a, and the two Divine Sacrificers are contained in him; and the Three Goddesses are contained in him, and Tvastr is contained in him.

दैयों fr^5 , all the rest $(h \, d \, m^1 \, b \, k \, r)$ देयों (दैया होतारा Naighanṭuka v. 2).—होतारा-वेतदाश्रयों $h \, m^1 r$, होतारावेतदाश्रितों r^4 , °री चेतदाश्रयों b, °रा चेतराश्रयों k, °रा चेतदाश्रयों r, °री च तदाश्रयों r^7 .—देयस् b f k r, देयःस् m^1 , देयास् $h \, r^3 d$.—ितसः श्रि-ताश्रेनं r, तिस्रिश्चताश्रेनं gr^4 , तिस्रिश्चताश्रेनं gr^4 , तिस्रिश्चताश्रेनं gr^4 , तिस्रिश्चताश्रेनं gr^4 , तिस्रिश्चताश्रेनं gr^4

- ^a Naktosāsā, also ii. 148 (naktosāsau, iii. 8), while Naighantuka v. 2 has usāsānaktā.
- 109. Vanaspati is contained in him, also the Svāhākṛtis; and a the Steed, and the Bird, and the Frogs are contained in him.

चैनं hm1r, चैतं b, चैवं fkr2.— चैतदाश्रयाः hm1rb, च तदाश्रयाः fkr2.

- ^a The following thirty-seven names, including the eight pairs at the end $(109^{cd}-114)$, correspond to the thirty-six in Naighantuka v. 3, to which $H_{\bar{a}}$ is added in 112 from v. 4.
- 110. And the Pressing-stones are contained in him, and the Dice a, also Narāśaṃsa b, the Car, and the Drum, and the Quiver (are contained) in him, the Handguard, the Reins, the Bow;

यावाण्य् m^1rb , यावण्य् hdr^3 , यावाण्य् f, यावण्य् kr^2 . — चैनमचाय m^1r , चैनमचाय hd, चैतमचाय r^4 , चैवमचाय fkr^2 , चैतमज्ञायु b. — ॰ धियैनं hr^3m^1 , ॰ धियैतं r^5r^7 , ॰ धियैव fk, ॰ वैयैव b. — भीश्रवो hm^1rfk , भीषवो b. — नर्श्चिस् is the reading of all the MSS., as well as of two of the Naighantuka (see Roth, p. 27).

a The sequence of the names in Naighaṇṭuka v. 3 is akṣāḥ, grāvāṇaḥ.

b Narā-saṃsa has already occurred above (i. 107) as a terrestrial deity (= Naighaṇṭuka v. 2) and the corresponding form in the text of Naighaṇṭuka v. 3 is nārāśaṃsaḥ, which is the form explained by Yāska, Nirukta ix. 9 (yena narāḥ praśasyante sa nārāśaṃso mantraḥ), quoting RV. i. 126. I as an example (cp. below, iii. 154).—The end of the varga is here marked by २२ in bm¹dfk.

23. Terrestrial deities connected with Agni (continued).

111. And the Bowstring is contained in him, and the Arrow, and contained in him are a the Whip, the Bull, and the Mallet, in him the Draught and the Mortar b.

श्रिता अश्वाजनी hm^1rf , श्रिता आश्वाजनी kr^2 , श्रिता चाश्वाजनी r^4 , श्रिता चाश्वाज b.—चैनम् $hr^2r^5r^7$, चैतम् b, चैवम् r^4 , चैनम् rkr^2 , चैत्वम् f—एनं hd, एतं br, ऐषैतं fk.

- * Śritā (= śritāḥ) is the plural agreeing with aśvājanī, vṛṣabhaḥ, and drughaṇaḥ.
 * Ulūkhalam comes before rṛṣabhaḥ in Naighaṇṭuka v. 3.
- 112. And the Rivers (are contained) in him, and the Waters and all the Plants; Rātrī, Apvā, Agnāyī, Araṇyānī, Śraddhā, Iļā a, and Pṛthivī b.

सर्वा ग्रीषधयश्च ह $hm^1r^3r^5r^7$, सर्वा ग्रीषधयः सह f, सर्वाश्वीषधयः सह kr^2 , सर्वा प्रीषवयः सह b, सार्वश्वीषधयस्त्रथा r.—राज्यप्वापाय्य॰ hd, राज्यधापाय्य॰ r^3r^5 , राज्य-श्वापाय्य॰ m^1 , राज्यश्वापाय्य॰ r, राजिर्थात्तेय्य॰ fkr^2 .—॰र्खानी $hm^1r^3fkr^2r^5$, ॰र्खान्वी b, ॰र्खानिः r.—श्रद्धेळा hdm^1 , श्रद्धेला fkr, श्रद्धिरा b, श्रद्धा बावा॰ r^1r^3 .

- a I\bar{\bar{a}} does not occur in Naighanṭuka v. 3, but is taken from v. 5.

 b These feminine deities correspond to the nine (with the addition of I\bar{\bar{a}} from v. 5) in Naighanṭuka v. 3, the first four being in the same order. They recur below (ii. 73-75), where I\bar{\bar{a}} is omitted, Usas and Sarasvat\bar{\bar{a}} appearing instead.
- 113. And the two Ends of the Bow belong to him and the Two Worlds a forming a pair, and Pestle and Mortar b (belong) to him, and the two Oblation-carts as they are called.

भजेते $br^1r^4r^5$, भजते hdm^1rfk .— एवार्ली $hm^1r^1r^3r^4$, एवोर्वी bfkr.— च रोदसी hm^1rf , च रोदसी b, तु गेदृश् k, तु गेदृश् r^2 .— ॰खले चैनं hm^1fkr , ॰खले एव r^1r^4 , ॰खलं चैतं b.

- ^a Rodasī for the dyāvāpṛthivī of Naighaṇṭuka v. 3.

 ^b Musalolūkhale for the ulūkhalamusale of Naighaṇṭuka v. 3.
- 114. The two Fostering (goddesses)^a and the two worshipped with strengthening oblations^a (are contained) in him, and the Vipāś together with the Śutudrī, and the two Agnis, the divine Śuna and Sīra^b, are contained in him.

°ङ्गती चैनं hm^1br , °ङ्गतिश्चैनं fkr^2 , °ङ्गतिश्चैन r^1r^4 .—विपाट् सह hm^1rf , विपादाह b, E

विपादह k.—चापी चैतदाश्रयौ $hm^{I}r$, चापी वैतदाश्रयाः b, चापि चैतदाख्या f (॰र्था f) kr^{2} , चैवायैतदाश्रयौ $r^{I}r^{4}$.

- ^a Cp. Nirukta ix. 41, 42. ^b Explained by the commentators as Indra and Aditya: see Roth on Nirukta ix. 41, and the various views stated below, v. 8.
- 115. This World a and the morning Soma pressing which is performed at the sacrifice, and the two seasons, Spring and Autumn a, the Anustubh b (metre) and the Trivit Stoma;

लोको ६ यं $hm^1r^1r^3r^4r^5$, लोको वै b, लोके वै rkr^2 .—प्रातः सवनं hm^1rfk , प्रात यवनं b.—चर्तू hm^1r , चर्तु f, चर्त्तु k, वर्त्तु b.—नुष्टुबथो चिवृत् hm^1rf , नुष्टव् श्रो चिवृत् k, नष्टुचाय तुवृत् b, नुष्टुप् च यस्तिवृत् r^1r^4 .—The end of the varga is here marked by २३ in hm^1bfk .

a This and the following four and a half ślokas (115-120^{ab}) are based chiefly on Nirukta vii. 8. The objects there enumerated as belonging to the sphere of Agni (agnibhaktīni) are: ayam lokah prātahsavanam vasanto gāyatrī trivṛtstomo rathamtaram sāma ye ca devaganāh samāmnātāh prathame sthāne... From Nirukta vii. 11 are borrowed śarad and anuṣṭubh, which, besides the ekaviṃśastomah and the vairājaṃ sāma, are there described as abiding on earth (pṛthivyāyatanāni).

b Anuṣṭubh is curiously inserted between stomah and trivṛt, doubtless for metrical reasons. A similar distortion of the natural order of the words occurs in ii. 13 (asau, tṛtīyaṃ savanaṃ, lokaḥ).

24. Other deities associated with Agni.

116. the Gāyatrī, the Ekavimśa (Stoma)^a, the Rathamtara chant and the Vairāja chant^a, the Sādhyas and the Āptyas with the Vasus^b (belong to the sphere of Agni).

यच साम hm¹r, यच सांध्यं b, यच साध्यं fkr². — श्राष्ट्राश्च hm¹r³r⁴r⁵b, श्राष्ट्राश्च fk, श्राष्ट्राश्च r.

- ^a See 115, note ^a. ^b These three groups take the place of the general statement of the Nirukta vii. 8 (the divine groups of the first sphere), but none of these three groups belongs to the terrestrial region according to Naighantuka v. 5, 6.
- 117. With Indra and the Maruts^a, with Soma and Varuṇa, with Parjanya and the Seasons, and with Viṣṇu^b he shares praise.

वर्गोन hdrfk, वर्गस्य b.

^a The Maruts are not mentioned in Nirukta vii. 8, but only Indra, Soma, Varuna, Parjanya, Rtavah as deities sharing praise with Agni (asya samstavikā devāh). ^b According to Nirukta vii. 8 Agni shares only sacrifice, but not praise in the RV. with Visnu (āynāvaiṣṇavam havir, na tv rk saṃstavikī daśatayīṣu vidyate). See Roth, Erläuterungen, p. 104.

Introduction

118. This same Agni shares sovereignty with Pūṣana and with Varuna. One who knows the essential meaning (of the formulas) should connect b the deity (and) the oblation by means of the formulas.

पुष्णा च hr, पुषा च m^1 , पुंसा च r^5r^7 , पुंसी च fh, पुंश्र्य kr^2 .—संयोजयेद r^1r^4 , संस्क्यते hdm1rbfk.—हवि: hm1rb, वि: f, विदः k, विदुः r2.

^a This probably alludes to the remark in Nirukta vii. 8 (similar to that regarding Visnu: see above, 117, note b), that Agni-Püsan share an oblation, but not any invocation in the dual (agnapausnam havir, na tu samstavah). Yaska, however, quotes the verse RV. x. 17.3 as invoking Agni and Pūsan separately (vibhaktistuti), though not in the dual. b Though the MSS, of both A and B read samstuyate, and only r1r4 samyojayet, I have chosen the latter reading, as it is impossible to construe the former. I assume swystwyete to have been an early gloss meant to explain samyojayet, and to have been substituted for the word in later MSS, in the form of samslayate. I take the meaning of the line as given in the text to be as follows: 'one who knows the true meaning of the formulas should connect dual divinities in such a way with an oblation by means of formulas that they not only share the oblation, but share praise (samstuyete).' I construe samyojayet with the two accusatives devatām and havih (cp. ii. 20, samyay vijānan mantresu tam tu karmasu yojayet).

119. Even though (a god) be not praised along with (another in the dual), one and the same oblation is (occasionally) offered (to both)a. The bringing of the gods, as well as the taking of the oblations (to them) b,

त्रसंस्तृतस्यापि hdm1 bf, त्रसंस्तृतस्य वि k, त्रसंन्ततस्यापि r, त्रसंस्तृतस्यापि r1r4.-- सतो hrb, $nah kr^4(r^2)$.—हिवरेकं br, हिवरेवं hm^1r^3 , हिवरेषा fkr^2 .—िनर्थित h, निरूपित m¹dbrfk.—वहनं हविषां h (वहनं च हविषां Nirukta vii. 8), वहनं हविषा m¹, हविषां वहनं bfkr, हविषो वहनं r1r4.

^a This doubtless alludes to Yāska's remarks in Nirukta vii. 8 as to Agni-Visnu and Agni-Püsan having a combined oblation, but not combined praise (samstava). The writer means that a combined oblation is offered to deities whose prafse is combined; but even when combined praise of them cannot be found, a combined oblation may be With regard to Agni-Püsan, Durga remarks: mrayam udaharanam yena offered them. b This line 119°d (devatāvāhanam) in all the MSS, comes before 118°d samstavah. (devatām artho^o). It was probably transposed by an oversight in the archetype owing to the beginning of both lines being identical (devatā°). That it originally came before 120^{ab} (harma dryte ca) is both evident in itself, and is proved by Nirukta vii. 8, on which the two lines are clearly based: athāsya karma vahanam ca haviṣām āvāhanam ca devatānām yac ca kim cid dürşţivişayikam agnikarmaitat.

120. is his activity, and whatever moves within the ken of vision (is connected with that activity)^a. Thus the whole of this great group contained in the Agni of earth has been stated.

दृष्ट च hm¹rfk, दृष्टे तु r¹r⁴, दृष्टेषु r⁵r⁷, दृष्टेषु b. The line being clearly a paraphrase of the phrase used in the Nirukta vii. 8 (yac ca kim cid därstivisayikam agnikarma), the original reading was probably drstes ca or drstes tu (visaye).— पृथिवान्यात्रयो hrf, अन्या-स्यो k, अन्यामयो b.—The end of the varga is here marked by २४ in hdm¹bfk.

^a That is, one of Agni's activities is to make objects visible. Cp. Roth, Erläuterungen, p. 104: 'und alles was sich auf das Sehen bezieht fällt unter seine Thätigkeit.'

25. The group of deities of the middle sphere belonging to Indra.

121. Now the group of the middle sphere belonging to Indra follows here, (including) the celestial cars and the group of the Apsarases.

यश्चेद्रो m¹d, यश्चेद्रो hr, याः श्वेद्रो f, याश्चेद्रो k, यस्वेद्रो br¹r⁴.—गणः सोऽयम् hdr, गण् सो थम् b, गणो यम् f, गणो यः म् k.—गण्शाप्पर्सा hdm¹r³r⁵r⁷, गन्धवी-प्प्सां bfk, गन्धवीप्प्रस् r¹r⁴.—The evidence of the MSS. points to **प्प्**र्सां as the original reading. The alteration of गण्शा to गन्धवी॰ would easily suggest itself, and then the gen. pl. would naturally be changed (as in r¹r⁴) to the nom. for the sake of the construction.

- 122. In Indra a are contained Parjanya, Rudra, Vāyu, Bṛhaspati, Varuṇa, Ka, Mṛtyu, and the god Brahmaṇaspati;
- a The deities of the middle sphere enumerated in this and the following seven slokas (122-129) are identical with those contained in Naighantuka v. 4, 5. The order is, however, considerably diversified here, and two deities are added (Sītā and Lākṣā).
- 123. Manyu, Viśvakarman, Mitra, Kṣetrapati a, Yama, Tārkṣya, as well as Vāstoṣpati, and also Sarasvat are here;

मन्युस hr (मन्यु: Naighantuka v. 4), मनुस m¹bfkr²r5.—ग्रव ह hm¹rbfk, तव तु r¹r⁴.

- a Kșetrasya patih in Naighanțuka v. 4.
- 124. Apām napāt and Dadhikrā, then Suparņa, Purūravas, Rta, Asunīti, Vena; in his sphere (āśraye) also is Aditi;

द्धिकाश्व hm^1r , द्धिकाश्व r^3 , धवकाश्व b, द्धिका च $r^1r^4r^5$, द्धिक्क fk.—वेनश्व hm^1rf , वेनश्वस् k, वेनश्व r^4 , वेन b.—तस्रीतस्राश्रये r^1r^4 , तस्र तस्राश्रये b, तथेन्दुश्व स्त्रियो hdm^1rfk , तथदुश्व स्त्रियो r^5r^7 . Though the weight of the MS. evidence seems to favour

तथेन्द्र स्त्रयो, I have preferred तस्त्रेतसाश्रये because (1) Indu occurs in the next śloka but one, where there is no trace of a corruption, (2) स्त्रियः are not mentioned in Naighaṇṭuka v. 4, 5; (3) ाश्रये could easily be corrupted to स्त्रियो, especially in juxtaposition with श्रद्धिः, the latter being the first of the मध्यमस्थाना स्त्रियः (see Nirukta xi. 22); (4) तस्त्रेतस्थ could have been corrupted to तथेंदुशः—With regard to the expression तस्ति-साश्रयेऽदितिः cp. ii. 10 तसाश्रये सर्ख्यः.

125. and Tvaṣṭṛ and Saviṭṛ, Vāta as well as Vācaspati, Dhāṭṛ and also Prajāpati, and those who are called Atharvans;

वातो hm^1hr , वाचो r^1r^4 , omitted in fk. — चैव श्रथवीण्य hm^1r , चैवाथवीण्य fb, चैव वाथवीण्य kr^2 .

126. and so also the Falcon, and Agni, as well as she who is called Ilā; Vidhātr, Indu, the Dragon of the Deep, Soma, the Dragon, and the Moon;

भ्रानश्चित्तम् r¹ r⁴, सनश्चिम् b, मृगवश्चिम् hm¹ rfk, each group of MSS. thus showing both readings (as above in 124). But मृगवः is improbable, because (1) the name occurs below (128); (2) श्रिन would then be the only name in Naighantuka v. 4, 5 omitted in this passage of the BD. (122-129). मृगवः has probably come in here owing to the frequent juxtaposition of the name with अथवाणः.—अपिश्व hm¹ rbfk, आपश्च r² (r¹?) r⁴.—तथेळा चैव या सृता hdm¹, तथेलाश्चिव या सृताः b, तथेला चैव याः सृताः r, तथेलाश्चिव या सृताः fk (the ल in f looks like त्स, k has त्य).—विधातेन्द्र् hm¹ r, विधातेनुर् b, विधातेनुर् f, विधानेनुर् k.—The end of the varya is here marked by २५ in hm¹ bfk; but in d the २५ follows the number of the preceding śloka, २५ (= १२५).

26. Deities and deified objects belonging to Indra's sphere.

127. and the divine Viśvānara, and the group of the Rudras is praised with (him), the Maruts, as well as the Angirases, and the Fathers together with the Rbhus.

च वे hm¹rb, चैव kr²r¹.—देवो बद्राणां r¹r⁴, देवो ब्एणां b, देच भूनुणां k, देव ऋभूणां h dm¹fr. If च्छभूनां were read, the Rudras, occurring as they do in Naighantuka v. 5, would disappear from the present passage of the BD. altogether. The names in the Naighantuka occur in the following order: मब्तः। बद्धाः। च्छभवः। चाङ्किरसः। पितरः। Hence both Rudras and Rbhus are to be expected in the present śloka.—चर्नुभिः hm¹r, चर्नुभिः d, च उभिः b, चैवभिः fk. The Rbhus, not the Rtus, occur in Naighantuka v. 5. चर्नुभिः was doubtless changed to चर्नुभिः on account of the reading च्छभूणां in the preceding line. The words मब्त्यभूभिः सह occur at the end of a line in Rgvidhāna i. 9. 4.

128. Rākā, Vāc, Saramā, and the Āptyas, the Bhṛgus, Aghnyā, Sarasvatī, Yamī, Urvaśī, Sinīvālī, Pathyā, Svasti, Uṣas, Kuhū;

सरमाष्ट्राञ्च hm¹rfk, सरमाष्ट्रञ्च r⁵, सरमाखाञ्च b.—यम्युर्वश्री hm¹r, यम्युर्वसि (probably meant for °सी) f, यम्युर्श्वसि k, यस्प्षर्ञ्जसि b.

129. Earth, Anumatī, Dhenu, Sītā a, Lākṣā b, likewise Go and Gaurī, as well as Rodasī; and he (Indra) is the husband of Indrāṇī.

सीता लाचा $hdm^1fr^2r^3$, सीता लचा b, सीता लाच्या k, सीतेलाख्या r, श्रीकिंचि(ला) r^1r^4 (cp. ii. 84).— तथैव $hm^1r^2r^3fb$, तथै च k, दितिश्व r^1r^4 .— चैव द्न्हाखाश्चेष hm^1r , चैविंद्रायखाश्चेष f, चैवेंद्राखाश्चेष kr^2 , चैवेंद्राखाश्चेष b.

- ^a Sītā and Lākṣā are the only names in the above passage (122-129) not found in Naighaṇṭuka v. 4, 5.

 ^b See below, ii. 84 (also Ārṣānukramaṇī x. 102), and viii. 51.
- 130. The metre Tristubha and Pankti and the middlemost of the worlds and the middle (i. e. midday) pressing (of Soma), one should know, (belong to his) sphere among these same (gods);

एतेष्वेवाश्रयो hdm1r, एतेष्वेवाश्रये fkr2r7, पतसैवाश्रये b.

- n The statements of this and the following śloka are based on Nirukta vii. 10: athaitānindrabhaktīni: antarikṣaloko mādhyaṇdinan savanam grīṣmas triṣṭup..bṛhat sāma, and vii. 11: hemantaḥ paṅktiḥ .. śākvaran sāmety antarikṣāyatanāni.
- 131. and the two seasons, Summer and Winter, and the chant which is called Brhat, and the chant which, Śākvara by name, is sung in the Śakvarī verses a.
- चतु च hrfk, चृत व b.—वृहत् bfkr, वृहत् hd.—यद्गीतं hrfk, गृद्गीतं b.—भाक्षरम् hr fk, भक्षरं b.—The only MSS. accessible to me which, in accordance with the usage of Vedic works, repeat the last words of the adhyāya, are b and f. Whether any of the MSS. used by Rājendralāla Mitra follow this practice, I have no means of ascertaining. See Roth, Nirukta, Erläuterungen, p. 15, last paragraph.—The end of the varya is here marked by २६ in bdfkm¹. The last śloka is numbered 939 in hd. It should be the same in r (instead of 930); the error is due to 29 being repeated after śloka 22.

^a Cp. Durga on Nirukta vii. 10, 11, Bibliotheca Indica ed., vol. iii, p. 364.

1. Deities of Indra's sphere.

1. Śākaṭāyana, moreover, says that to him (Indra) belong (asyaāśrayau) two Stomas, (viz.) that which is called the fifteenfold (pañcadaśa), and that which is three times nine in number (trinava)^a.

दी $hr^3m^1bfr^2r^5$, ती r.— आश्रयी hm^1r , आश्रये b, आचयत् (साकसूनयः) f. The line r^{ab} omitted in k.— यस hm^1rb , यस्र fkr^2 .—संख्या hm^1r , संख्या b, संख्या r^1r^4 .

- ^a The statement that the Pañcadaśa Stoma and the Trinava Stoma belong to Indra's sphere is also made in Nirukta vii. 10, line 1, and 11, line 5 respectively.
- 2. He is praised in combination (saṃstutaḥ) with Pūṣan and Viṣṇu and Varuṇa, and with Soma, Vāyu, Agni, Kutsa, as well as Brahmaṇaspatia;

चैव hm¹r, चैक b. In place of संस्तृतश्चेव पूष्णा f has वृश्वेष्मा, and k वृश्वेष्या (sic).

- All the ten deities stated here, and in the following śloka, to be praised with Indra are enumerated in the same sense in Nirukta vii. 10 (lines 3, 4): atha asya samstavikā devāh: agnih somo varuņah pūṣā brhaspatir brahmanaspatih purvatah hutso viṣnur vāyuḥ.
- 3, with Brhataspatia as well as (with him) who is Parvatab by name. They say that in some praises certain (gods) are praised as incidental c.

बृहतस्पतिना चैव $hdm^1r^2br^5$, बृहस्पतिना च तथा r, स्हस्पतिना चैव f, स बृहस्पतिना चैव kr^2 . As MSS, of both families have the reading बृहतस्पतिना (following Yäska's etymology बृहतः पाता Nirukta x. 11) it must be original (cp. R's variant in the next $p\bar{u}da$). The a having dropped out in some, a syllable was added at the end in one variant p0 and at the beginning in another (kr^2) .—नामा यशापि पर्वतः hdm^1r^3B , बृहतश्चिष वै पतिः $r(=r^1r^4?)$.—कामुचित्केचिदित्याङ्गर् hm^1r , कामुचित्केचिविद्त्याङ f, कामुचित्केचिविद्त्याङ f, कामुचित्केचिविद्त्याङ f0.—निपाता hm^1bfk , निपाताः f1 निपातः f^1r^4 .— खुताः f1 f1 f2, खुताः f3 f3 f4.

- a Bṛhataspati is doubtless meant as the etymological equivalent of Bṛhaspati (see critical note).

 b Cp. below, iv. 5, where Parvata is explained as representing Indra's bolt (vajra).

 c Nipātāḥ is here used like nipātinaḥ; cp. Nirukta x. 13: kāś cid (devatā) nipātabhājaḥ.
- 4. And the god Mitra is frequently praised a in the sacred text (śrūyate) with Varuṇa, Soma with Rudra and Pūṣan, and again Pūṣan with Vāyu b;

मिनस् A, मिनसु B.—श्रूयते $h dm^1 r^3 r^5 r^7$, श्रृयते b, यते fk, स्तूयते r.—सहासक्तत् all MSS. (ep. R, note 3), सहाः सक्रत् r.—पुनः पूषा च वायुना $m^1 r f k$, पुः पूषा च वायुना h d, पुनः सखा च वायुना b.

- a That is, in Indra's (middle) sphere: cf. Roth, Erläuterungen, p. 105. The statement about these five couples being praised together, follows Nirukta vii. 10: athāpi mitro varuņena saṃstūyate pūṣṇā rudreṇa ca somo gninā ca pūṣā vātena ca parjanyaḥ.

 b In associating Vāyu (not Agni) with Pūṣan the BD. here agrees with the shorter recension of the Nirukta (vāyunā ca pūṣā: Roth, p. 201), while the longer recension (as quoted in note a) associates Agni with Pūṣan: see Roth, Erläuterungen, p. 105, note 3.
- 5. and Parjanya with Vāta. Elsewhere, however, he (Indra) is here and there (kvacit), in these stanzas, hemistichs, verses, (or) hymns (of the Rg-veda) as a whole, distinguished (as the deity).

वातेनैव च $\rm hm^1r^3$, वातेनैव तु $\rm r$, वातेन चैव $\rm fkr^2r^5$, वातेद्यतेव $\rm b$.— न्यच वै क्कचित् $\rm hm^1r^3r^5r^7$, वै क्कचित्कचित् $\rm br$, वै क्कचित् $\rm fk$.— सूक्तेप्वेषु तु $\rm hm^1rfk$, सूक्तेप्वेव तु $\rm r^1r^4$, सूक्तेप्वेषु $\rm r^7$, सूक्तेप्वे नु $\rm b$.

6. Now the taking up a of moisture is his function, and the destruction of Vrtra, (and)—the prevailing feature (prabhutvam) of (his) praise—the complete accomplishment of every (kind of) mighty deed b.

रसादानं hdm¹rbfk, रसदानं r¹r⁴.—कर्मास्थ hm¹rfk, कर्म्मा स्थाद् h.—सुति: hdm¹r, सुति h, सुतः fk.— प्रभुत्वं hrbfk, प्रभूतं m¹.—The end of the varya is here marked by 9 in bfkm¹d.

n One would at first sight be inclined to favour the reading of r^1r^4 rasadānam: ep. Nirukta vii. 10: rasānupradānam, 'the giving back of moisture,' while rasādānam is there stated to be the function of the Sun (see below, 19). But the reading of the text, rasādānam, occurring in MSS. of both families, is supported by BD. i. 68, where it is said of the middle Agni (Jātavedas) rasān..ādāya..varṣati; and in iv. 38 the function of (the middle) Agni is described as haraṇam..vāro visargaṃ punar eva ca.

b This śloka is based on Nirukta vii. 10, where the three functions of Indra are stated to be the bestowal of moisture, the slaying of Vṛtra, and the accomplishment of every mighty deed: athāsya karma rasānupradānaṃ vṛtravadho yā ca kā ca balakṛtir indrakarmaiva tat.

2. Deities of Sūrya's sphere: his three wives.

7. Thus Indra's group belonging to the middle sphere has been duly specified. Now learn the following group of the heavenly sphere (and) belonging to Sūrya.

यः पर्सु dr, यः परस्त fk, य पर्सु h, यप्पर्सु b, यस यसु r¹. — गणः hdr, गता bfk. — बुस्थानस् hrfk, बुत्थानस् b.

8. The two chief gods a of that (group) connected with Sūrya are the Aśvins b; while Vṛṣākapāyī, Sūryā, and Uṣas c are the wives of Sūrya d.

देवावश्विनौ hrbfk, देवौ लश्विनौ r¹ r⁴.— वृषाकपायी all MSS., वृषाकपायि r (cp. R's note 2).— सूर्योषा: hrfk, सूर्योषा b.— पत्नयः hrb, यत्नयः f, यत्नतः kr², पतायः r¹.

- a Cp. Nirukta xii. 1: tāsām (dyusthānāmām devatānām) aśvinau prathamāgāminau bhavataḥ.

 b In this and the following four ślokas (8-12) all the deities enumerated in Naighaṇṭuka v. 6 are mentioned, though in a different order, except Tvaṣṭṛ (omitted perhaps because occurring twice before: i. 108, and i. 125). The list begins with the same four names: Aśvins, Uṣas, Sūryā, Vṛṣūkapūyī.

 c Cp. below, iii. 10.

 d Cp. Nirukta xii. 7: sūryā sūryasya patnī.
- 9. From that (heavenly world) they return hitherward a, reversed, in connexion with him (Sūrya). They call her Uṣas before sunrise b, Sūryā when midday reigns c,

त्रमुतोऽवीङ् hrf (वेङ् f) k, त्रमुतोऽवीग् r^5r^7 , त्रमुतो वाङ् m^1 , त्रमुतो वान् b.— प्रतिलोमास् bfkrd, प्रतिलामाःस् b.— तदाश्रयाः hr, तदाश्रया b, तदिश्रयाः fk, फलोद्ये r^1r^4 .—पुरोद्यात् hfr, पुरोद्या k, पुरोद्पात् b, पुरोद्ये r^1r^4 (cp. below, vii. 121).— मूर्या r, सूर्या hdm 1 fk, सूर्यो b.

- a The words amuto 'rvān are doubtless suggested by Nirukta vii. 24: amuto 'rvāncaḥ paryāvartante with reference to the rays of the sun.

 b Cp. iii. 10: prāg udayūt, and vii. 121.

 c The expression madhyamdine sthite also occurs in Rgvidhāna i. 9. 2.
- 10. but Vṛṣākapāyī at the setting a of the sun. In his sphere (āśraye) also are Saraṇyū, Bhaga, Pūṣan, Vṛṣākapi;

वृषाकपायी all MSS., वृषाकपायि r.— मूर्यस तामेवाइस r^1r^4 , मूर्यस सानेवाइ bfr^2 , मूर्यस सानेवाह k, मूर्यासकाल आङ bdm^4 , सूर्यासकाल आङ: r.— तु निमुचि r^1 , सु निमुचि r^2 , सुति तिमुचि b, सुतिष्वृचि bdm^1rfk .— तस्याश्रये m^1br (cp. above, i. 124), तस्याश्रमे br^3 , तस्याश्रये f, तस्याश्रयो g, तस्याश्रयो g, तसायुश्च g, तसायुश्च

^a Tu nimruci: this is a good instance of the B MSS, preserving, in a corrupt form, the undoubtedly original reading; of the agreement of an Λ MS, (r^1) and a B MS, (b) in preserving an original reading (cp. i. 126); and of Λ MSS, (in agreement with some B MSS, fk) showing a corruption in a seemingly correct form: statist rci.

11. Yama, Vaiśvānara a, Viṣṇu, Varuṇa, Aja ekapād, and Earth (pṛthivī), and Ocean (samudra), the Gods, and the Seven Seers (saptarṣayaḥ);

विश्वानर: all MSS., विश्वानर: Naighantuka v. 6 as well as 5 (both celestial and atmospheric); the latter form occurs above, i. 127.—समुद्रश्च bfk (Naighantuka v. 6 समुद्रः), समुद्राश्च hdm¹r.—The end of the varga is here marked by २ in dbfk, but by ३ in hm¹.

* For a similar discrepancy, cp. above, i. 110 (Narāśaṃsa and Nārāśaṃsa).

3. Deities of Surya's sphere (continued).

12. the Ādityas, the Hairy Ones a (kcśinaḥ), and the Sādhyas, Savitr with the Vasus, Manu, Dadhyañe, Atharvan, the All (gods) b, the Steeds (vājinaḥ), the Wives of the Gods.

सविता hm^1r , सद्देच b, सदेव fk.—वसुभिर् hm^1r , तसुभिर् b, वनुपृषिर् fk.—दध्यङ्कः dr, दध्यङः hm^1fk , दध्यङः b.

- a In Naighaṇṭuka v. 6 both keśi and keśinaḥ occur. Both may be meant by the prior member of the compound used in the text, keśi-sādhyāḥ.

 b Viśve is occasionally used in the Bṛhaddevatā for viśve devāḥ: see Index of Words, sub roce.
- 13. That a (heavenly) world, the third (Soma) pressing b, the Raivata and the Vairūpa chant (sāman), and the Rains as well as the Cold Season;

श्रसी तृतीयं सवनं लोकः r, श्रसी तृतीयं सवनं लोकाः $h\,m^1$, श्रसी तृतीयसवनं लोकाः r^1r^4 , श्रसी तृतीयः सवनलोकः b, श्रसी तृतीयः सर्वेन लोम fkr^2 (सर्वन f).—साम च m^1r , सामा च $h\,bfk$.—शिशिरोऽथ $h\,rfk$, शिशिरो य b.

- a This and the next śloka are based on the following statements of Nirukta vii. II (lines I and 6):—athaitāny ādityabhaktīni: asau lokas tṛtīyasavanaṃ varṣā jagatī saptadaśastomo vairūpaṃ sāma and śiśiro 'tichandās trayastriṃśastomo raivataṃ sāmeti dyubhaktīni.

 b The order of the words in the text, asau tṛtīyaṃ savanaṃ lokaḥ, in which all the MSS. agree, is a curious transposition, on metrical grounds, of the words of the Nirukta. A similar transposition is sometimes found in the case of pratīkas (cp. i. 57; iv. 122; v. 169).
- 14. and the thirty-threefold Stoma and that which in arrangement $(klpty\bar{a})$ is seventeenfold; and the metre called Jagatī as well as the Atichandas metres.

य खोमः bfk, यः खोमः r, यत्खोमं r¹r⁴, यः सोमः m¹, यः सोम hd.— क्रुष्ट्या hm¹fk, क्रिप्टा b, क्रप्टा d, क्रुप्टा r.— °क्टन्ट्सय hdm¹r, °क्टन्ट्ग्र्य b, °क्टन्ट्साय r¹r³r⁴r², (तथा) क्रंट् - च्छय (याः) f, (तथा) द्वंट् - पंय (ये) k.

15. And what relates to Puruṣa, they say, is his (asya); now all this (universe: etat sarvam) is related to Puruṣa a. Three gods are to be recognized as associated with him (etasya) in praise:—

चाङ्कर् hm^1r , वाङ्कर् k, बाङ्कर् fb. — सर्वमेव तु hm^1r , सर्वमेव ह fkr^2 , साज्यमेव तु b. — संखिवकास्त्रयः hm^1r , सखिवकासु ये f, सखिवकास्त्रयः b.

- a Cp. above, i. 73.
- 16. (viz.) the Moon and Wind (Vāyu) and that which is regarded as the Year (saṃvatsara)^a. Now some offer to him an oblation addressed to Sūrya and b Vaiśvānara.

यश्च संवत्सरं r¹r⁴, पंच संवत्सरं fkr², पंचमं वत्सरं hdm¹br.—केचित्तु hm¹rfk, केचेन्द्रे b.— निर्वपन्तर hm¹bfk, निर्वपत्य r, निर्वपते r¹r⁴.— सीर्यवैश्वानरं hm¹bfk (Nirukta vii. 23, last two lines), सीर्यं वैश्वानरं r.— हवि: hdrfk, विदु: b.— The end of the varga is here marked by 3 in hdbf, by 8 in m¹, not at all in k.

a This line follows Nirukta vii. 11, line 3: candramasā vāyunā saņvatsareņeti saņstavaļi.

b Cp. Şadgurusisya on x. 88: sauryavaisvānarīyam: sūryadevatyaņ vaisvānaraguņāgnidevatyaņ ca.

4. Sürya and Vaiśvānara a form of Agni.

17. For (the hymn) addressed to Sūrya and Vaiśvānara a appears like a hymn of his (Sūrya's: tat-sūktam): (whether) a stanza, a hemistich, or a verse, or a couplet, or a triplet (is regarded).

तत्मृतम् hm1rfk, न मृतम् br1r4.—इव hrfk, इह r1r4.

- ^a RV. x. 88; see Sarvānukramaņī and Sāyaņa's introduction to that hymn; cp. also above, i. 100, 102, and Nirukta vii. 23 and 24.
- 18. But by that expression containing the word 'head' a (his) praise is apparent. Here the identity of Sūrya, Vaiśvānara, and Λgni appears.

प्रवादेन hm^1r , प्रपादेन $bfkr^2$, प्रयोगेण r^1r^4 .— दृष्टा मूर्धन्वता m^1r^5 , दृष्टा मूर्ं hd, दिष्टा मूर्ज्जता f, दृष्टा मूर्ज्जता f, दृष्टा मूर्ज्जता f, दृष्टा मूर्ज्जता f, सौर्यवैश्वानरायीनाम् f, सौर्यवैश्वानरायीनाम् f

- ^a Mūrdhanvatā: that is in RV. x. 88. 5, 6, where Agni is described as being the head (mūrdhā), or standing at the head (mūrdhan) of the world; cp. Nirukta vii. 27.
- 19. Now the holding a (harana) of moisture in that (celestial) world (amutra) also by means of (his) rays—this is (his) function:

wherefore all beings fail to distinguish (him) very clearly by the eye.

हर्णं तु रससीतत् $r(r^1r^4?)$, हर्णं रिप्रमिश्वास्थ $hr^3m^1fr^5r^7$ (॰ण, ॰श्वि॰ f), हिर्प्यश्विमिश्वास्य k. I have adopted the reading of r, against the weight of the MS. evidence, because on the one hand rasa or a similar word is necessary (cp. i. 68; ii. 6; iv. 38), and, on the other, raśmibhih, as coming at the end of the line, is superfluous here. Its occurrence here also is doubtless an early corruption due to anticipation helped by the identity of the first syllable of rasasya and raśmibhih.— कमामुच च $hr^3bfkr^5r^7$, कर्मणामुच r.— येन नातिवजानित $hdr^3m^1r^2r^5r^7$, येन नातिवजानित bfk, यानीमानि च पश्चित्त r.— सर्वभूतानि br, सूर्यभूतानि $hr^3m^1fkr^2r^5r^7$. सूर्य॰, the reading of most of the MSS., would be an easy corruption of सर्व॰, partly owing to the \bar{u} of ॰भूतानि, and partly because सूर्य॰ would be in the mind of the copyist. The expression सर्वभूतानि recurs in ii. 31. But सूर्य भूतानि might have been the original reading.— चचुषा $hdr^3m^1bfkr^2r^5r^7$, तेजसा r.

- a This word is probably meant to express the double phrase of the Nirukta (vii. 11): athāsya karma rasādānaņ raśmibhiś ca rasādhāraņam, the taking up and holding of moisture with his rays.
- 20. Now distinguishing correctly in the formulas this distribution of these (three deities) which arises a from (their different) powers and spheres,

विजानन r^1r^4 , विजानं b, विज्ञान hm^1k , विज्ञानं f, विज्ञाय r.

- ^a Vibhūti-sthāna-saṇbhavam, a bahuvrīhi, as in i. 104; but vibhūti-sthāna-janma in i. 96 is a dvandva.
- 21. Teaching, studying, and reciting a formula (addressed to them), a man attains to the sphere of, to identity of world (and) intimate union with, these same (gods).

श्रधापयद्मधीयानो hm^1rfk , °यन्वीयान b.— मन्त्रं चैवानुकीर्तयन् m^1r , मसु देवानुकीर्त्तयं b, सत्सु चैवानुकीर्तयन् r^1r^4 , मंच चैवानुकीर्त्तयत् fk (°यत् corr. to °यत् f), मन्त्रे चैवानुकीर्तयत् hd.— स्थानं hm^1r , स्थान bfk.— सालोक्यं r, सालोक्य hdkf (मा॰ f), सार्कालोक्य b.— एव गक्टित Bhr^3m^1 , श्रधिगक्टित r.—The end of the varya is here marked by 8 in $hdbfm^1$, not in k.

5. Five names of Agni. Derivation of Agni, Dravinodas, Tanunapat.

22. Now as to the hymns, the poets proclaim (in them) five names of Agni, twenty-six of Indra, and seven of Sūrya.

मुक्तानि hdm'rbfk, मुक्तेषु r'r4.— षड्विंग्रतिस् hdbr, श्वातः f, श्वाति m'k.

- 23. The separate explanation, based on the function a (of the god), of each of these here, do ye listen to as duly stated by me in its entirety.
 - ⁸ With pṛthan-nirvacanam karmajam cp. vibhāgam vibhūti-sthāna-sambhavam in 20.
- 24. Because he was born at the beginning (ag-re) of beings, and because he is a leader $(agra-n\bar{\imath})^a$ at the sacrifice, or (because) he unites (his) body $(angam sam-n\bar{\imath})^b$, he is praised by sages under the name of 'Ag-ni.'

श्रुष्वरे hm^1r , श्रुष्यरे bfk.—संनयते m^1fk , सञ्जयते hrb, सन्तिष्ठते r^1r^4 .—वांगं hdm^1 , वांगं fk, चांगं b, चांगं r^1r^4 .

- ^a These three etymologies are practically identical with those of Nirukta vii. 14: agraņīr bhavati, agraņ yajācṣu praṇīyate, aṅgaṃ nayati saṃnamamānaḥ; cp. above, i. 91. ^b Saṃ-nayate is doubtless meant to correspond to Yāska's nayati saṃ-namamānaḥ.
- 25. Kutsa a observing the action by which he bestowed b dravina c—wealth or d strength—proclaimed him as Dravino-das (1).

वापि hm^1rfk , वा b, चैव r^1r^4 . प्रायक्श्येन r, प्रायाक्श्येन f, प्रायक्श्येन hdm^1 , प्रायाद्वेन k, प्रयक्श्येन br^1r^4 : cp. RV. i. 96. 8 प्र यंसत् (indicative agrist in form, but injunctive in sense).

- a In RV. i. 96. 8. b The \bar{a} in the majority of MSS, seems decisive in favour of prāyachad as against prayached. c Cp. Nirukta viii. 1: dhanam draviņam ucyate ... balam vā draviņam. d Though vāpi gives one syllable too much to the line, it is probably original, as the rhythm at the end of the pāda is normal $(o--\cdot)$, the two syllables at the beginning (drāvi-) taking the place of one long one. For analogous irregularities in the Mahābhārata, see Hopkins, The Great Epic of India, p. 52.
- 26. This (terrestrial) Agni is Tanūnapāt (2). For that (celestial) Agni is tanu from tanana (extending): from him the middle (Agni) was born, then from the middle one, in (his proper) place, this (terrestrial) one ^a.

तनगत्तनुः fr, ततनात्तनुः m^1 , तनना तनुः k, तनात्तनुः b, ततरात्तनुः h, तपसा तनुः r^1r^4 .—जिञ्च hm^1r , यञ्च bfk.—स्थानिऽयं hm^1r , स्थानीऽयं f, स्थानीऽयं kr^2 , यव b, यश्चि r^1r^4 .—The end of the varya is here marked by \mathbf{u} in $h\,d\,m^1\,b\,f\,k$.

^a Cp. below, iii. 64.

6. Narāśaṃsa, Pavamāna, Jātavedas.

27. The poets call an immediate a descendant ($praj\bar{a}m$) grandson ($nap\bar{a}t$), and this (terrestrial) Agni is the grandson b of that (celestial) one; hence he is Tanūnapāt.

अनन्तर् i hbr 5 r 7 fk, अनन्तरं dr. — क्रपखदः hrb, क्रपाखदः m 1, धूपखदः fk. — अमुख hm 1 r, अमुख्य b, अमुख्य r 2, अनुःख्य fk.

- a This expression is borrowed from Nirukta viii. 5: napād iti anantarāyāḥ prajāyā nāmadheyam. 'Next after a son' is evidently the meaning here of anantara. b Yāska also explains Tanūnapāt as a 'grandson,' but in a different sense (cow, milk, sacrificial butter), as the word, according to him, designates the ājya. He also quotes S'ākapūṇi's divergent explanation of Agni as a 'grandson' (atmospheric waters, plants, Agni).
- 28. Because he is individually (pṛthaktvena) lauded (śaṃs) by men (nṛ) a combined at the sacrifice, therefore poets praise this (Agni) as Narāśaṃsa (3) in Āprī hymns.

पृथक्तिन hd m¹ f, पृथक्तिन kr, पृथक्किन b.—समासैसु hr³ fm¹ kr² r⁵ r⁷, समसीसु b, समसेन r.—यङ्खते m¹ bfk, यङ्खसे hd, यङ्खते r, यद्दाखते r¹ r² (r⁴?).—कार्वः hd m¹ r bfk, सूर्यः r¹ r⁴.

- ^a This is evidently based on Sakapūṇi's explanation of Narasaṃsa as Agni (Nirukta viii. 6): naraiḥ prasasyo bhavati. Kātthakya's explanation of Narasaṃsa as sacrifice (yajāa) is given below, iii. 2.
- 29. And again because the terrestrial Λgni purifies ($pun\bar{a}ti$) this universe, therefore he is praised by hermit seers as (the Purifier) a Pavamāna (4).

पुनाति hr, पुति b, जानाति fkr^2 .— य च hm^1r , य च fkr^2 , प्सवः b.— वैखानसर्षि-भिस्तेन hm^1r , वैखोनसर्षिभिस्तेन b, वैखानस च्छिषस्तिन r^2 , वैषानस च्छिपस्तिन k, वौषा-नसक्षिस्तिन f. This śloka is omitted here, but added after 31, in a somewhat altered form, by r^1r^4 .

- ^a Cp. above, i. 66.
- 30. Again, because when born $(j\bar{a}ta)$ he knows (veda) beings, he is spoken of as Jātavedas (5), and because he became one in whom knowledge $(vidy\bar{a})$ was produced $(j\bar{a}ta)$, or (because) when born $(j\bar{a}ta)$ he knows (adhi-vetti) wealth;

जातविद्राष्टं कथ्यते $\rm hm^1rfk$, जातं विद्राष्ट विद्यते $\rm b$, जातिर्यद्वाष्ट विद्यति $\rm r^1r^4$ (cp. i. 92).—यद्यैष $\rm hm^1kr$, यथैष $\rm b$, यद्यैष $\rm r^1r^4$.—जातविद्यो $\rm hm^1r$, जातवेद्यो $\rm bfk$, जातं वेदो $\rm r^1r^4r^7$.—वित्तं $\rm hr^3m^1br^2r^5$, वित्त $\rm f$, वित $\rm k$, वित्त्वा $\rm r$ —धिवेत्ति वा $\rm hm^1rb$, धिवेति वा $\rm fk$, य वेत्ति वा $\rm r^1r^4$.

31. or because when born $(j\bar{a}ta)$ again and again he is known (vidyate) by all beings, therefore he, as the Indra of the middle part (of the universe)^a, is praised as Jātavedas^b.

जातः hm¹r, जातं k, जातां bfr¹r⁴.—मध्यभागेन्द्रो hr³m¹bfkr², मध्यभागिन्द्रो r.—After this (31) s'loka, r¹r⁴ add 29 in the following modified form:

पुनाति यदिदं विश्वं ह्येषोऽपिः पार्थिवोऽप्यु सन्। वैखानसाश्चितेसासात्पवमान इति सुतः॥

The end of the varga is here marked by & in hbfk, not in m1.

a Cp. above, i. 99, where a hymn to Jātavedas means one addressed to the Middle Agni; cp. also i. 67. b Two etymologies of Jātavedas have already been given in i. 92, jāto vidyate and jātair vidyate, the former being identical with the fourth given in ii. 30, 31. There are thus five which correspond more or less to the five given in Nirukta vii. 19: three of those, jātavidya, jātavitta, jāte jāte vidyate, are followed by the second, third, and fourth in the above two ślokas (30, 31), another, jātāni veda, is partially followed by the first, while the fifth, jātāni . . enaņ viduḥ, is followed by the second in i. 92 (jātair vidyate).

7. The twenty-six names of Indra: Vayu, Varuna, Rudra, Indra.

• 32. But because he, in a most subtle form, abides in the air as the one pervading $(vy\bar{a}pya)$ the three (worlds), the seers adoring (him) by reason of this function, called him $V\bar{a}yu^a$ (1).

यत्तु चीन् hfr, यत्तू चीन् m^1 , य तु चीन् k, यन्तु चीन् br^2r^5 , यत्तन्वा r^1 , यन्तन्वा r^4 .— र्चन्तः hm^1r , र्चन्त b, र्चतं f, र्चन्ते $r^3kr^2r^5r^7$.

- a Vāyu comes first in the Naighaņţuka (v. 4) in the list of the deities of the middle sphere: cp. Nirukta x. 1, and Roth, Erlänterungen, p. 134. Twenty-three of these twenty-six names (the first eight in the same order) occur among the thirty-two of Naighaṇṭuka v. 4, the three others appearing in Naighaṇṭuka v. 5. (p. above, i. 122-129.
- 33. But because with concrete moisture he alone covers (*vṛṇoti*) a these three (worlds), the singers in their praises speak of him, by reason of this faculty, as Varuṇa (2).

चीणीमान्यावृणोत्येको hm^1rbfk , चीनिमानावृणोद्धोकान् r^1r^4 . — तयैनं bfkr, तिनैनं hm^1 . — श्रुत्या hrbfk, प्राद्धः m^1 . — श्रुपण्यवः hm^1rb , प्रण्यवः f, प्राय च k, तु कार्वः r^1r^4 .

- a This follows the etymology of Nirukta x. 3: varuno vṛṇotiti sataḥ.
- 34. Because he roared $(arod\bar{u})^a$ in the air, giving rain with lightning b to men, therefore he is highly praised by four seers c as Rudra (3).

श्रादीद $\mathrm{h}\,\mathrm{m}^{1}\mathrm{r}\,\mathrm{f}\,\mathrm{k}$, रोरूयन $\mathrm{r}^{1}\mathrm{r}^{4}$.—विवादुष्टिं ददनुणाम् $\mathrm{h}\,\mathrm{m}^{1}\mathrm{r}$, विवादुष्टिमदानुणाम्

- fk, विबुद्धष्टरदानृणाम् r^1r^4 . इत्यभिसंजुतः hm^1rk , (च)द्रत्यभिसंजुतः f, इत्यभिधीयते r^1r^4 . This śloka (34) is omitted in b.
- ^a This is one of the etymologies of Rudra given in Nirukta x. 5: yad arodīt tad rudrasya rudratvam iti hāridravikam. Yāska remarks that the name may also be derived from the root ru.

 ^b Cp. vātavṛṣṭi, 'rain with wind.'

 ^c That is, by Kaṇva (i. 43), Kutsa (i. 114), Gṛṭsamada (ii. 33), and Vasiṣṭha (vii. 46).
- 35. And having become the established (source of) life of the four kinds of beings, he rules (iṣṭe) over this universe; therefore he has been named Indra (4).
- र्ष्टि hd, र्ष्टे m¹r, र्ति fb, र्ति k.—सर्वस्य hm¹r, सलस्य fk, सद्यंस्य b.—स स्नृत: hm¹ rbf, संस्ता: k.—S'loka 35 comes before 32 (that is, at the beginning of the varga) in bfk. It is omitted in r¹r⁴.
- 36. Because he, associated with the Maruts, at the (proper) time bursts open $(drn\bar{a}ti)$ refreshment $(ir\bar{a}m)^n$ in the sky, accompanied with great roar, therefore the seers called him Indra.
- इरां हुणाति hm¹rh (=Nirukta x. 8), द्रा द्दाति r¹r⁴ (इरां द्दाति is the second derivation in Nirukta x. 8), द्लां हुणाति f, द्लां हुणाति k.— त्रुवन hrb, ध्रुवम् fk.— र्वेण hm¹rb, रौर्वेण fk.— The last pāda in m¹ is तेनेन्द्र इति स स्मृतः repeated by mistake from the last śloka.—The end of the varga is here marked by 9 in hm¹bf, not in k.
 - ^a This is identical with the first of several etymologies given in Nirukta x. 8.

8. Parjanya, Brhaspati, Brahmanaspati, Ksetrasya pati, Rta.

37. Because he alone endows (*prārjayati*) a this earth at the (proper) time with moisture produced from the sky, therefore the seers Atri b and the son of Urvaśi c (Vasiṣṭha) speak of him as Parjanya (5).

यदिमां $h\,m^1$, यदिमा fk, यदिंमा b. — प्रार्जयत्येको $h\,m^1$, प्रार्जयत्येक fk, पार्ज्ञयत्येक b. — चर्षी $h\,dr$, चार्षी r^1r^4 , च ऋषी f, चर्रको b, चर्षिस् m^1 .

^a The four etymologies of Parjanya given in this and the following śloka are identical with Yūska's in Nirukta x.10: parjanyas trper ādyantaviparītasya tarpayitā janyaḥ, paro jetā vā janayitā vā, prārjayitā vā rasānām.

^b As composer of the Parjanya hymn, v. 83.

^c Vasiṣṭha, several times thus referred to by his metronymic (e. g. ii. 44, 156; iii. 56; cp. v. 149, 150), is the author of the other two Parjanya hymns, vii. 101, 102.

38. Because he gladdens (tarpayati) the worlds, and because he is genial (janya)—friendly to the people (jana)—(or because he is) a supreme (para) conqueror ($jet\bar{a}$) or generator ($janayit\bar{a}$), therefore (Kumāra) Āgneya a sang (of him as Parjanya).

तर्पयत्येष यल् hm^1r , तर्पयंतेष्वयं fk, तर्प्पयव्यंषयं b.—लोकाज् hfk, लोकान् m^1r , लोकां b.—परो जेता hm^1r b (Nirukta x. 10), पुरो जेता fk r^2 .—यद्वाप्रेयस्ततो bfk, यद्वाचेयस्ततो r^3m^1 , यद्वाचेयस्तुतो r, यद्वाचेयासुस्ततो r, यद्वाचेयासुस्ततो r^3

- As the alternative author of vii. 101, 102: cp. Ārṣānukramaṇī on those hymus: agniputraḥ kumāro vā vasiṣṭho vā svayaṃ muniḥ, and Survānukramaṇī: ete kumāra āgneyo 'paśyad vasiṣṭha eva vā vṛṣṭikāmaḥ.
- 39. Because he protects ($p\bar{a}ti$) the two great (brhat) worlds, the middle and the highest, he is, by reason of this great function, lauded as Brhaspati ^a (6).
- ु बृहता hm^1r , बृहन्ति fkr^2 , दृत्य b.—॰ितरीखितः b, ॰ितरितीखितः hdm^1r , ॰ितःरी-खितः f, ॰ित इतीरितः k.
- ^a Cp. Yāska's etymology (Nirukta x. 11): brhaspatir brhataḥ pātā pālayitā vā; brhataḥ being explained by Durga as mahato asya jagata udakasya vā. ('p. ii. 3: brhatas patinā.
- 40. Speech is Brahma and truth is Brahma, this whole world is Brahma; therefore Saunahotra (Gṛtsamada) praising sang (of him) as protector (pātāram) of Brahma b (i. e. as Brahmaṇaspati, 7).
- वाग् b, वाक् b m^1r fk. पातारं b m^1r , पानानां fk, पातीमां b. ब्रह्मण्स् b m^1r , ब्राह्मण्स् fb. °होत्र सुवज् b, °होत्र सुवन् m^1 , °होत्र सुवं fk. This śloka (40) omitted in r^1r^4 .
- ^a In RV, ii. 23–26.
 ^b Nirukta x, 12 : brahmaņaspatir brahmaņaḥ pātā vā pāla-yitā vā,
- 41. Because he entered into the earth (ksitau) a at the (proper) seasons, distributing food to the nations b (ksitibhyah), therefore Vāmadeva c, praising (him), calls him 'Lord of the Field' (8).
- असं hm¹, अंगं d, अन्तं r³, चपां r. The reading of 41^{ab} in the text is that of hdm¹r (presumably r³, as r¹r⁴ omit this line here); this form of the line is added by bfkr²r¹r⁴ after 60^{ab} (see v.r. there), instead of it bfk, and in addition to it $r = r^2$; omitted in r^3r^5), have here—

ददाति यद्वसन्तर्ता चेंचे थ वरजं पुनः । bfk ददाति यदि सङ्केचे लुतावम्बरजं पुनः । r

which probably represent-

ददाति यद्दसन् चेचे लृतावम्बर्जं पुनः।

वामदेव hm^1bfk , वामदेवः r, पाकदेव r^1r^4 .

- ^a Nirukta x. 13: kṣetrasya patiḥ: kṣetram kṣiyater nivāsakarmaṇas, tasya pātā vā pālayitā vā.

 ^b The amended form of this line as found in some of the MSS. (see critical note above) would mean: 'because dwelling in the field he again in due season gives rain.'

 ^c In RV. iv. 57.
- 42. Because he declared him who, connected with the middle world, is to be seen by the mind (only), with truth (to be) in truth (satya) a, the same (Vāmadeva) praised him as Rta b (9).

मनसेमं $\operatorname{hm}^1\operatorname{bfkr}^1r^4$, मनसेयं r^2 , मनसोमं r^3 .— तु यहुश्चं hdr , तु यहुश्चं $\operatorname{m}^1\operatorname{b}$, तु भाहुश्चं fkr^2 , इमं दृश्चं r^1r^4 .— शंसत् $\operatorname{hm}^1\operatorname{fr}$, सशत् k , संसं b .— सखेन सखे ने hrb , सखेनं संखे ने f , सखेन संखे ने k , सखे सखे न m^1 .— स एवं $\operatorname{hm}^1\operatorname{rbfk}$, य एवं $\operatorname{r}^5\operatorname{r}^7$.— • नृतम् $\operatorname{hm}^1\operatorname{rbfk}$, • नृषि: $\operatorname{r}^1\operatorname{r}^4$.— The end of the varga is here marked by r in $\operatorname{hdm}^1\operatorname{bfk}$.

a Rta is explained in Nirukta iv. 19 as satyam vā yajñam vā. Cp. also Sāyaṇa on RV. iv. 23. 8.

b RV. iv. 23. 8 (in illustration of rta) is commented on by Yāska in Nirukta x. 41: cp. Roth, Erläuterungen, on this passage.

9. Västospati, Väcaspati, Aditi, Ka, Yama.

43. And by his magical power he abides in the air with internal moisture a shed with thunder: hence he (Vāmadeva) again b spoke of him (as such in) 'the call of Rta' (rtasya ślokah).

रवेणान्तरसै: चिप्तै: hdm¹r, रवेणान्तारसै चिप्ति b, रवेनातरसै चिप्त fk, रसं चितौ रवेणत्ती र्वा र्वे. — स्थितो व्योक्येष bfr, स्थितो व्योक्षेष m¹k, स्थितौ च्योन्येष b. — ऋतस्य स्थोत hm¹rb, ऋतस्य नोत k.— इत्येष hm¹rb, द्त्येषा fk.—पुनश्चैनं hm¹rb, पुनश्चैतं f.

- ^a With reference to the meaning 'water' (Nirukta ii. 25: rtum ity udahonāma); cp. below, ii. 50.

 ^b That is, first in the sense of 'truth' (sutya), now in the sense of 'water' (i.e. cloud-water, lit. 'internal fluid': antārasa).

 ^c RV. iv. 23. 8°: see Nirukta x. 41.
- 44. But because (being in the) middle (sphere) he granting an abode (vāstu) to the world, protects a (it), therefore the son of Urvaśī (Vasiṣṭha) proclaims him (to be) Vāstoṣpati (10) in four (formulas) b.

प्रयक्त r, प्रयक्त hd, प्रयक्त m1, प्रयक् b, प्रयक् fk.—मध्यम: स hdm1, मध्यमख

bfkr (cp. critical note on i. 92: jātaḥ san and jātasya).—वास्तीप्पति hdr, वास्तीःप्पतिः k, वास्तीप्पति f, वास्तोः पति b.

- ^a Nirukta x. 16: vāstospatir: vāstu vasater nivāsakarmaņas, tasya pātā vā pālayitā vā.

 ^b RV. viii. 54. 1-3, 55. 1. Caturbhih, here and in some other passages of the BD. (see Index of Words), refers to stanzas, not hymns. Mantraih is perhaps to be supplied here, not rgbhih: but see vi. 41, where rgbhis caturbhih actually occur in juxtaposition.
- 45. Since the Vedas are learned with speech $(v\bar{a}c)$, (and) the metres there (are recited) with speech, and moreover speech is this universe, therefore (he is) praised as 'Lord of Speech' (11) a.

वाचा वेदा hm¹rb, वाचो वेद f, वाचो वेदे k.—This śloka (45) is omitted in r¹r⁴.

- a Nirukta x. 17: vācaspatir: vācah pātā vā pālayitā vā.
- 46. And because he abides (in the) middle (sphere) surrounding (the world) a, not afflicted (dina) on any side, therefore the seer Rāhūgaṇa Gotama b proclaims him as Aditi c (12).

न कुतस्रन hm^1 , न कुतस्रिष r^1r^4 , कुतस्रिष b, न कुतस्रिप $rfkr^2$. — गोतमो $r^1r^4bm^1$, गीतमो hfkr. Cp. critical note on i. 58.

- a Cp. RV. x. 90. 1: sa bhūmiņ višvato vṛtvātiṣṭhat.

 b In RV. i. 89. 10 (Nirukta iv. 22, 23).

 c Nirukta iv. 22: aditir adīnā devamātā.
- 47. But because he is a protection to creatures, desiring (their) $k\alpha$ —happiness (sukha) a—in his heart, therefore the seer Hiranyagarbha b, adoring c (him), spoke of him as Ka (13).

यक्क $hm^1fr^2r^3$, यक्क $hm^1r^2r^5$, यक्क r, यक्क k.— किम्बिनामा मुखम् $hm^1r^2r^5$, किम्बिनामा मुखम् bfk, एव वीर्: ग्रिवः मुखः r.— तेनेनम् hm^1r , तेनेवम् bfk.— अर्च- नुवाच कम् b, अर्चतु वाचकम् r, अचनुवाच कम् f, इक्क्ष्मवाच कम् $hm^1r^3r^6r^7$, एव तु वाचकम् kr^2 .

- Sukha is one of the three explanations of ka given in Nirukta x. 22: kah hamano vā kramaņo vā sukho vā.
 The reputed seer of RV. x. 121; see Ārṣānukramaņī x. 59 and Sarvānukramaņī on x. 121.
 Cp. arcantah in ii. 32.
- 48. He giving a (prayachan) offspring here, and gathering (them) goes forth b (to the other world): therefore the seer Yama c calls him, the son of Vivasvat d, Yama c (14).

प्रजाः hr^3m^1br , प्रजां fk.—प्रयक्तस्त $hr^3m^1r^2$, प्रयक्तस्त bfk, प्रयक्किति r, नियक्किः \mathbf{r}^1r^4 .—संगृहीत्वा $hr^3m^1\mathbf{r}^5r^7$, संप्रदीत्व fk, सप्रहीवा b, संग्रहीता r.—प्रयाति hr, ह याति

bk, ह यानि f, ह पानि r^4 . — यमो यसम् r^1r^4 , यसा मू b, यदो पमा f, पदो पमा k, पुनर्थसम् hm^1r . — The end of the varga is here marked by \mathbf{Q} in hm^1bfk .

^a Nirukta x. 19: yamo yachatīti sataḥ. ^b Cp. RV. x. 14. 1 (commented on in Nirukta x. 19) pareyivāṃsam . . . saṃgamanaṃ janānām. ^c The reputed seer of RV. x. 14; cp. Ārṣānukramaṇī x. 6 and Sarvānukramaṇī on x. 14. ^d RV. x. 14. 1: vaivasvataṃ . . yamam. ^e Cp. Nirukta x. 20: agnir api yama ucyate.

10. Mitra, Viśvakarman, Sarasvat, Vena, Manyu.

49. Because all men making (mitrīkṛṭya) a friend (of him) worship him, therefore Viśvāmitra himself praising (him) calls him 'Mitra' (15).

मित्रीक्रत्य hm1bfkr, मैत्रं क्रतीर् r1r4.—यदिमं hm1r, यदिमे fkr2, यदेते r1r4.

- In RV. iii. 59. 1 (commented on in Nirukta x. 22). b That is, 'Friend.' None of the three etymologies given in Nirukta x. 21 is here followed.
- 50. Because at the close of the hot months he refreshes the earth with water $(rta)^a$, creating the activity (karma) of everything $(vi\acute{s}vasya)$, therefore he (is called) Viśvakarman (16).

निद्धमासातिगमे m^1r , निद्धमासातिनिगमे hd, निद्धमासाविगमे fk, निद्धयमासानिगमे b.—यदृतेनावित चितिम् hm^1rbf (चिति f), यद्तेगाचित चिति kr^2 , यद्दि सेनावितिम् r^1r^4 .—जनयन् hm^1r , जनयं b, जयत् f, जनयत् k.—तेन सः hm^1rbfk , तेन तु r^1r^4 .

- ^b Cp. above, ii. 43.
 ^b Cp. Nirukta x. 25: viśvakarmā sarvasya kartā.
- 51. Because he has lakes (sarāṃsi) full of ghee in the three worlds, (the seer) proclaims (him) as 'Sarasvat'b, (while) Vāc (speech) they call Sarasvatīc.

यन्तिषु \mathbf{n}^1 dr, यनिषु $\mathbf{h}fk$, यन्नषु \mathbf{b} .— इति प्राह $\mathbf{h}\mathbf{m}^1$ rfk, इति प्राणं \mathbf{b} (cp. iv. 39), इतीमन्तु $\mathbf{r}^1\mathbf{r}^4$.— वाचं प्राज्ञः सर्खतीम् all except $\mathbf{r}^1\mathbf{r}^4$ which read दोध्यनमीर्वशी, i.e. दोर्घतमीर्वशी.

That is, Vasistha in RV. vii. 96. 4-6, one of these three stanzas being quoted by Yāska (Nirukta x. 24) for Sarasvat, but without explanation.

b Yāska, Nirukta x. 24, does not explain Sarasvat, merely remarking: sarasvān vyākhyātaḥ. This must refer to ii. 23, where Sarasvatī is stated to be a name of Vāc (voice), RV. vi. 61. 2 being quoted as an example of Sarasvatī as a river, while examples of her as a goddess (madhyasthānā strī) are deferred to Nirukta xi. 25-27.

c 51^{cd}=iv. 39^{cd}, except that in the latter passage utul takes the place of ute. Curiously enough b has in the present passage

the reading **पाएं** which we should at first sight expect in iv. 39 (cp. notes on that śloka). The reading of $\mathbf{r}^1\mathbf{r}^4$ refers to the only two seers who mention Sarasvat, Dirghatamas in RV. i. 164. 52 and Vasistha in RV. vii. 96. 4-6.

52. Because being their life (prāṇa) he moves a (venati)—abides—in them, therefore the seer named Vena Bhārgava b here calls him Vena (18).

यद्वेनत्येषु $h\,m^1r^3$, यद्विनत्येषु b, यद्वेनलेन्दु r^5r^7 , यद्वितत्येह r, omitted in fk.— आहर्षि- वैनी $h\,m^1r$, आहार्ष वेनो fk, आहार्थवेनो b, आहार्चन्वेनो r^1r^4 (cp. ii. 47).

- "Yāska, Nirukta x. 38, explains Vena as derived from the verb ven in the sense of to desire': venateh kāntikarmaṇah. This verb is one of the kāntikarmāṇah in Naighaṇṭuka ii. 6; it also occurs among the verbs of motion (gatikarmāṇah) in Naighaṇṭuka ii. 14. Cp. Roth, Erläuterungen, on Nirukta x. 38.

 b The reputed seer of RV. x. 123, the first stanza of which is explained by Yāska in Nirukta x. 38. Cp. Ārṣānukramaṇī x. 60: veno nāma bhṛgoh sutah.
- 53. Primaeval (agraja) Heat a (tapas), desiring (abhimatya) b, created him month after month: therefore Manyu Tāpasa c calls him 'Manyu.'

माखेनम् hm^1r , माखेनां bfk, मासीमां r^1r^4 .— श्वभिमत्य m^1br , श्वभिपत्य hr^3 , श्वभि-वत्य fkr^2 , श्वभितत्य r^1r^4 .—तपोऽग्रजः r^1r^4 , ततो जज k, ततो त्रजं fb, ततो त्रजन् hm^1r .—मन्युरित्या॰ bfkr, मन्युमित्या॰ hm^1 .—The end of the varga is here marked by **90** in m^1bfk , not in hd.

a My reasons for adopting the emendation tupo 'grajam are the following. would account for the patronymic form tapasa in the name of the Rishi invented from the contents of the two hymns RV. x. 83, 84, where Manyu is frequently addressed and connected with tapas (83, 2, 3), and might thus be called manyu tapasa. Tapas is the starting point of creation in some of the cosmogonic hymns of the RV. (x. 190. 1; x. 129. 3), whence desire, käma (cp. abhi-matya), came into being, the first seed of manas (cp. manyu); and tapas is identified with svayambhu brahma and called the 'first marvel,' TB. iii. 12, 3 (cp. Ved. Stud. iii, p. 129). Manyu in x. 84. 1 (also 83. 3) is identified with Indra (the middle Agni), and Agni in RV. x. 52. 3 is said to be born month after month (jāyate māsi māsi, cp. sasrje māsi māsy enam). Thus Manyu Tāpasa would be the deity as well as invented Rishi, though these are regarded as distinct (there being no atmastara here), as Yama in 48, Vena in 52, Tärksya in 58, Mrtyu in 60. Dr. Sieg, with whom I corresponded about this passage, wished (with r¹r⁴) to read tapo 'grajah, 'the eldest born of Tapas' (= Manyu Tāpasa), but the meaning seems to me impossible. The MSS constantly confuse anusvāra and visarga; for instance, in ii. 60 where, in the case of the analogous emendation मृतम, nearly all the MSS, have visarga for anusvara. Again, vrajam (fb) is very close to grajam.

b Yāska (x. 29) derives Manyu from man also, though without explaining why he is so called: manyur manyater dīptikarmaṇaḥ krodhakarmaṇo vadhakarmaṇo vā.

c Manyu Tāpasa is, according to Ārṣānukramaṇī x. 33 and the Sarvānukramaṇī on x. 83, the seer of RV. x. 83, 84. The first stanza of the latter hymn is commented on by Yāska, Nirukta x. 30.

11. Asunīti, Apām napāt, Dadhikrā, Dhātr, Tārkşya.

54. Because at the time when beings die he alone leads (nayati) (their) spirits a (asūn), therefore he is spoken of as Asunīti (20) by Śrutabandhu who praises (him).

नयत्यसून् hm1r, पयत्यसी fk, पयःत्यसी b.— सुवता श्रुतबन्धुना hm1r, सुवता सुत-बन्धुना b, सुचनाता सुलबंधुना f, सुचनाता सुतवंधुना k.

- ^a Nirukta x. 39: asunītir asūn nayati.

 ^b The reputed author of RV. x. 59, the fifth stanza of which is commented on in Nirukta x. 40.
- 55. At the end of the hot months (his) birth takes place in (their) midst^a: therefore the seer Gṛtsamada^b (in) praising (him) calls him Child of Waters^c (21).

॰मासातिगमे $h\,m^1r$, ॰मासानिगमे hfk.— मध्ये भवत्यपाम् $h\,m^1r$, मध्ये स्य यत्त्यपाम् r^1r^4 , मध्ये स्थस्य पत्यथा fk, मध्य स्य पत्यथा b.—गृत्समदः सुवन् m^1r , गृत्समद् सुवन् h, गृत्समद् स्वन् fk, गृत्समद् सुवं b, गृत्समद्स्वपाम् r^1r^4 .

- ^b Cp. apsv antar in RV. x. 30. 4 commented on in Nirukta x. 19; not 'in the middle (sphere),' as one would otherwise be inclined to translate from the use of madhyamah in ii. 44 and madhyabhāgendrah in ii. 31.

 ^b In RV. ii. 35 (cp. Nirukta x. 19).

 ^c Cp. Nirukta x. 18: apām napāt tanūnaptrā vyakhyātah: see above, ii. 27.
- 56. Because supporting (ā-dadhat) the mass of waters contained in the atmosphere a for eight months, he roars b (krandati) frequently in (their) midst, therefore he is described as Dadhikrā (22).

॰गर्भोघम् $m^1 r b f$, ॰गर्भोघम् k.— आद्धत्सो $m^1 r$, आद्धत्सो h d, आद्धत्यो f, ॰त्यो k, माधत्सी b, आहर्त्सो $r^1 r^4$.— 56^{cd} omitted in f k.— अन्द्त्य • $h m^1 r b$, अन्द्ते $r^1 r^4$.— •सहन् h r, ॰सहन् b.— •आत्रीन अध्यते $h r^3 m^1 b r^2 r^5 r^7$, •अति तदोद्यते $r^1 r^4$.

^a Cp. antārasāh above, 43.

^b This is one of the three derivations given in Nirukta ii. 27 (the first part of the compound, dadhat, being the same in all three): dadhat krāmatīti vā dadhat krandatīti vā dadhadākārī bhavatīti vā.

57. He then himself roaring deposits (dadhāti) in the earth for a month, the germ developed in the ninth month: (therefore) he is sung in stanzas (of the Rg-veda) as 'Dhātṛ'a (23).

संभृतं hm^1r , संभूतं b.—थ मासिकम् hm^1rb , प्टमासिकम् r^1r^4 .— 57^{ab} omitted in fk.— उर्वी धाते खुभिः hm^1r , उर्वी धाते खुभिः k, उर्व्या द्वाते जिपः b.

- ^a There is no corresponding explanation in the Nirukta; all that is there said is (xi. 10): $dh\bar{a}t\bar{a}$ sarvasya vidh $\bar{a}t\bar{a}$.
- 58. In the wide a (stīrņe) air he dwells (kṣiyati) or he swiftly (tūrṇam) glides b (kṣarati): therefore the seer Ariṣṭanemi Tārkṣya c has spoken of him thus as Tārkṣya (24).

स्तीर्गेंऽन्तर्वे चियति $\mathrm{hm^1r}$ (Nirukta x. 27 तीर्गेंऽन्तर्वे चियति), तूर्गं चिप्रं वज्रसखा $\mathrm{r^1r^4}$, तूर्गं चिप्रं वज्रसखो $\mathrm{fr^2k}$, तूर्गं चिप्रं वज्रसखो b.—यदा तूर्गं चर्ष्यसी $\mathrm{hm^1r}$ (तूर्गमर्थं रचति Nirukta x. 27), करोत्यसी $\mathrm{r^5r^7}$, यद्विपत्ति पन्वति f. यद्वियति पन्वति $\mathrm{kr^2}$. यद्विपत्ति पवृति b, यद्विपातीह धन्विनि $\mathrm{r^1r^4}$.—तेनैवम् $\mathrm{hr^3bfkr^2r^5r^7}$, तेनैनम् r ($\mathrm{r^1r^4}$?).—The end of the varga is here marked by 99 in $\mathrm{hm^1bf}$, not in k.

a Nirukta x. 27: tārkṣyas tvaṣṭrā vyākhyātaḥ (see viii. 13: tvaṣṭā tūrṇam aśnuta iti nairuktāḥ): tīrṇe 'ntarikṣe kṣiyati tūrṇam arthaṇ rakṣaty aśnoter vā. In view of the etymology in the Nirukta, it looks as if tīrṇe might have been the original reading of the BD., but stīrṇe may have been an intentional variation as having a clearer meaning. Cp. the etymologies of Tvaṣṭṛ given below, iii. 16.

b Kṣarati may also have been an intentional deviation from rakṣati, the explanation of the Nirukta.

c The reputed author (Ārṣānukramaṇī x. 61) of RV. x. 178, the first stanza of which is commented on in Nirukta x. 28. Tārkṣyarṣiḥ may be meant for a compound, not an irregular sandhi.

12. Pururavas, Mrtyu. Names of the sun: Savitr, Bhaga.

59. Roaring (ruvan) in the sky he proceeds to sunrise, discharging the waters from the abyss (kṛntatrāt)^b: (therefore) Uruvāsinī c (i. e. Urvasī) calls him Purūravas (25) d in her own words c.

क्वन् r, भवन् b, भ f, भन् k, रोदन् hm^1 .— क्वन्तचाद् m^1b , क्वन्तभाद् hr^2 , क्वन्तभाद् r, न्वंतचाद् fk.— विस्वजन्तपः m^1r , विस्वजन्तयः f, विस्वजं नमः h, विस्वजन्तयः k, विजस्नयः b.— पुरूर्वसम् hr, पुर्वसम् m^1 , युत्तर्वसम् b, यत्तर्वसम् f, यतर्वसम् k.— °वाक्येनोक्वासिनी bfkr, °वाक्येनूक्वासिनी hdm^1 , °वाक्येक्क्वाशिनी r^1r^4 .

a Cp. above, i. 93.

b An instance of a Vedic word used without the influence of the passage referred to.

c Meant to be an etymological form of Urvasī, which, however, differs from any of the three derivations given by Yāska in Nirukta v. 13.

d Cp. Nirukta x. 56: purūravā bahudhā rorūyate. On the rava of various gods, see Vedische Studien iii, p. 137.

c In RV. x. 95. 7 (commented on by Yāska in Nirukta x. 47).

60, 61. But because with great din he goes driving on the deceased (mṛtam)^a, therefore him, as being death (mṛtyu), the youngest son of Yama, named Saṃkusuka^b, himself praises as 'Mṛtyu' (26) c.

Causing the darkness to disappear from the sun and Dawn to appear,

60. प्रच्यावयन्नेति kd, प्रत्यावचयन्नेति f, प्रचावयन्नेति h, प्राचावयंनेति m^1 , प्रत्यावयंनेति h, प्राच्या वयं नेति r^1 , नैति r^1r^4 .—मृत: fkr^2 , वृत: hm^1r , मृधे r^1 , मृधम् r^4 .—Between the, two lines of 60 (where it is absolutely out of place) $bfkr^2r^1r^4r(r^7)$ add the line (=41 ab):

चयं वितिभ्यो विद्धद् यन्वृतुष्वैविश्रत् वितौ ।

 1 चय $bfkr^2$, चैमं r. — 2 विद्धद् r, विद्वत् b, विर्यत f, विर्जत् r^2 , विर्जत k. — 3 श्रथर्मुष्व॰ r, यतुर्मुष्ठ॰ b, यतु श्रं (?)ष्व॰ f, यतुर्ख्य॰ k, यसु f प्व॰ r^2 . — 4 ॰ विश्तत् r, ॰ विश् ंb, ॰ यिविश् k, ॰ विश् fr^2 , ॰ विव (चिती) r^1r^4 .

- 61. जघन्यज: hm¹r, जघन्यस: bfkr², जघन्यक: r⁵.—संवर्तयंस् r, स्वं वर्तयंस् r¹r⁴, संवर्तयं hr³m¹r²r⁵, संवर्तयत्fb,°य k.—सूर्याद् bfkr²r⁵hr³m¹, सूपौ r¹r⁴.—उपसं hm¹r, उःसं b, उः६k.
- a The explanation of Satabalākṣa Maudgalya in Nirukta xi. 5: mṛtyur mārayatīti sato, mṛtam cyāvayatīti vā śatabalākṣo maudgalyaḥ. b The author of RV. x. 18, the first stanza of which is quoted by Yāska in Nirukta xi. 7. Cp. Ārṣānukramaṇī x. 8, and Sarvānukramaṇī on RV. x. 18. c Twenty-three of these names occur in Naighaṇṭuka v. 4, and three (Aditi, Dhātṛ, Mṛtyu) in v. 5, most of them being explained in Nirukta x.
- 62. he alone propels (pra-sauti) a the day-star: by reason of that function he is Savitr (1). And he arose illuminating (bhāsayan) these worlds with his rays: therefore the seer Vasiṣṭha b himself (in) praising (him) calls him Bhaga c (2).

दिवाकरं bfk, दिवा चरन् r^1r^4 , दिवाकरः hm^1r . — प्रसौक्षेकः hm^1r bfk, प्रसूत्येकः r^1r^4 . — सासयन् m^1fk , सासयन् hrb, साति यन् r^1r^4 . — चैष स्वर्° hm^1r , चैकस् र° $br^2r^3r^7$, चैक र° fk. — सुवन्भगम् hm^1r , सुवन्नगम् $bfkr^3(r^2?)$. — The end of the varga is here marked by 9२ in hbfk, not in m^1 . The end of the preceding line (स्वर्शिमाः) is marked in hd by **Q3**, and the end of the varga (after varga) by **Q3** | 92 | 92 | 93 | 93 | 93 | 94 |

a Cp. Nirukta x. 31: savitā sarvasya prasavitā. The enumeration of the seven names of Sūrya begins with this śloka. I have preferred the reading which has divākara in the accusative, as the verb pra-sū is regularly used as a transitive; but the nom. otherwise makes good sense: 'the day-star (i.e. Sūrya) stimulates (in general).'

b The author of RV. vii. 41. 2, which is commented on in Nirukta xii. 14.

c Bhāsayan here appears to be meant for an etymological explanation of bhaga, suggested, perhaps, by the explanation of jāra as applied to the sun in Nirukta iii. 16: rātrer jarayitā sa eva bhāsām; though the word bhaga is there derived from the root bhej.

13. Püşan, Vişnu, Keśin, Viśvānara, Vṛṣākapi.

63. Nourishing (pusyan) he causes the earth to thrive, dispelling the darkness with his rays a: therefore Bharadvāja praised him as 'Pūṣan' (3) with five (hymns) b.

असीत्पृषेति hm1r, असीत्पृषेति b, असीप्पृतेन् fk.

- ^a Cp. Nirukta xii. 16: yad raśmipoṣam puṣyati tat pūṣū bhavati.

 ^b RV. vi. 53-56, 58; the first stanza of the latter is commented on by Yāska, Nirukta xii. 17. Cp. below, v. 118.
- 64. Because the three (trīṇi) regions (rajāṃsi) shine with brilliance as his footsteps, therefore Medhātithi a pronounces him (to be) Viṣṇu (4) of the three strides (trivikrama).

तेजसा hm1r, तेन सा b, तेजसी f, तेजस: r1r4, तेजसे k.

- ^a In RV. i. 22. 17, which is commented on by Yāska in Nirukta xii. 19. In explaining the words of the text, tredhā nidadhe padam, he quotes Sākapūṇi's opinion that this refers to the three worlds (pṛthivyām antarikṣe divi), an opinion followed in the present passage of the Bṛhaddevatā. Cp. my 'Vedic Mythology,' p. 38.
- 65. Because, after making a sojourn (sāyam) apart, he goes, at the departure of darkness, making light a (prakāśam) for beings with his beams, therefore they regard him as (the Hairy) Keśin (5).

सायं पृथग्याति $\mathbf{m}^1\mathbf{r}$, सायं पृथक् याति \mathbf{hd} , साय पृथक् याति \mathbf{fk} , सायं पृथक् न्याति \mathbf{b} , सीर्यं पृथक् ते भी $\mathbf{r}^1\mathbf{r}^4$.—त्यये $\mathbf{m}^1\mathbf{r}\mathbf{bfk}$, चर्ये \mathbf{hd} .

- ^a Cp. Nirukta xii. 25: keśi, keśā raśmayas, tais tadvān bhavati, kūśanād vā prakāśanād vā. Cp. above, i. 94.
- 66. Because all men (viśve narāh) now singly (and) separately think a of him, by reason of this function he is praised in laudations as Viśvānara (6).

संप्रत्येकैकश्रस्त्वेनं hm^1r , मां प्रत्येकैकश्रस्त्वेव r^1r^4 , मां प्रत्येकैकयस्त्वेनं b, यां प्रत्येकयस्त्वेनं fk.—यवान्यन्ते r, यं मन्यन्ते hdb, य मन्यन्ते fk.—पृथक् नराः hr, पृथक् नराः m^1d , पृथक् वरा k, पृथक्राः fb.—विश्वानर्स् hm^1rbfk , विश्वानर्स् r^1r^4 .

^a The verb used in Yāska's explanation is not man but nī (Nirukta vii. 21): viśvān narān nayati viśva enam narā nayantīti vā. Cp. Roth's Erläuterungen on Nirukta vii. 21.

- 67. Because having become a brown (kapila) bull a (vṛṣā), he mounts the firmament, therefore he is Vṛṣākapi (7), (in) 'Indra is above all' b (RV. x. 86); (or) this highest bull (vṛṣā) goes causing to waver (kampayan) with (his) rays c:
- चुषेष br¹ r⁴, वृषेक (without visarga) hdr³m¹ fkr², वृषेष r.—्रोहति hm¹r, ्रोहत b, ्रोहन fk.—The end of the varga is here marked at the end of this śloka (eva suh) by 93 in hdbfk, not in m¹. I have left it there, as all the MSS, which mark it agree. It would, however, have been much more natural to end the varga after the preceding line (uttarah), as varga 13 and varga 14 would thus have five ślokas each, instead of five and a half and four and a half respectively. The sense would, moreover, not have been interrupted as by the present division. In hd the preceding line (uttarah) ends a śloka, numbered QC, 69^{ab} as 200, 69 (after yah) as 9 (= 209), &c.
- ^a Cp. below, vii. 141. ^b The refrain of RV. x. 46, the twenty-first stanza of which is commented on by Yāska in Nirukta xii. 28. ^c This alternative etymology is based on Yāska's in Nirukta xii. 27: yad raśmibhir abhiprakampayann eti tad vṛṣākapir bhavati vṛṣākampanaḥ.

14. Derivation of Vișnu. Incidental names cannot be enumerated.

68. (i.e.) because he goes home (astam) at eventide causing beings to sleep a, (his name) Vṛṣākapi may be (derived) from this; for in the three formulas beginning 'the waste' (dhanva: RV. x. 86. 20-22) in the hymn to Vṛṣākapi b, he appears to be bidden thus (iti) by Indra.

मन्त्रेषु hm¹rb, मन्त्रे हुँ f, मन्त्रे ह k.— विषु hrfk, नृषु b, विदु r⁵.— धन्वेति m¹rbr⁵, धन्वेरि fk, धालेति hdr³.— प्रयुक्तो hdm¹, प्रत्युक्तो fkr¹, प्रात्युक्तो b.—वारिषाकपे hm¹rfb, नृषाकपे kr². It would be best (as in hd) to make śloka 68 end after vāriṣākape, as I have been obliged to do in the above translation, owing to the sense running on.

- a This is meant to be an explanation of raśmibhih kampayann eti.

 b The irregular formation vāriṣākapa for vārṣākapa seems to be due to the exigency of metre.

 c In the three stanzas (x. 86. 20-22) Vṛṣākapi is addressed and called upon to go home (astam ehi) by the path which procures sleep (svapnanaṇśana: in Nirukta xii. 28, however, explained as that which destroys dreams: svapnān nāśayati).
- 69. Viṣṇu a may be from (the root) viṣ (viṣṇāti) or viś (viśati), (or) from veviṣ (veveṣṭi), expressing pervasion b: (he) is (thus) explained as the Sun who is everything c and is contained in everything.

विष्णातेर् hdm¹r, धिष्णातेर् b, तेर् f, तेर् k.—वेवेष्टेर् h, देवेष्टेर् r, वेष्टेर् m¹, विय-स्तोर् bf, विपस्तोर् k: the reading of bk looks like a corruption of व्यञ्जोतेर् (the third etymology in Nirukta xii. 18), which may thus have been the original reading of the Brhaddovatā.— कर्मणः hdm¹r, कर्मणाः f, कर्मणा bk.— सूर्यः hm¹bk, सू f, वातः r.— यः hdm¹, यं k, सः r, सं bf.— The third line of 67 (रिप्रम⁰) and 68, 69 omitted in r¹r⁴.

- The etymology of Viṣṇu is added here at the end of the list of the names of Sūrya, as it was not given in 64.

 b Cp. Nirukta xii. 18: atha yad viṣito bhavati tad viṣṇur bhavati; viṣṇur viśater vā vyaśnoter vā. The above three explanations are probably meant to correspond to these: viṣṇāti = viṣṇāti = viṣtah, viśati = viṣtati, veveṣṭi = vyaśnoti.

 c Cp. ii. 158.
- 70. The five, the twenty-six, and the seven names of Agni, Indra, and Sūrya^a (respectively), have (thus) been duly stated in succession.
 - a Cp. above, ii. 22.
- 71. But of the incidental names a, accompanied by the above-mentioned b nominal characteristics ($n\bar{a}ma-lakṣaṇaih$), a separate enumeration does not exist.

नामां तु bfkr, नामां च hdm¹.—पृथक्तिन hdr, पृथक्तिन bfk.—The end of the varga is here marked by 98 in hdm¹bfk.—This śloka (71) is numbered as 3 (= २०३) in hd, and 8 (= २०८) in m¹.

^a That is, epithets, e.g. vṛṭrahan, which accompany any of the regular names, e.g. Indra, mentioned above, cannot be enumerated; cp. Nirukta vii. 13: abhidhānaih saṃynjya haviś codayatīndrāya vṛṭraghna indrāya vṛṭratura indrāyāṃhomuca iti; tāny apy eke samāmananti, bhūyāṃsi tu samāmnānāt. Cp. below, ii. 93.

^b i. 86-88.

15. Threefold Vac: her terrestrial and middle forms.

72. As to Speech (Vāc) also, who is threefold as terrestrial, middle, (and) celestial, listen to (an account of) her hymns (and) names according to her sphere.

चिविधा तु या hdr, चिविधा तु यः m^1 , तृवधामुपा b, (वाग्यया) च विधा तु या fk.—•स्थानं नि॰ hm^1r , •स्थान वि॰ b, •स्थानानि fk.

73. Now she owns the entire hymn when the rivers on earth, and when the waters, (and) when the plants a, being praised, own it b.

एषा $hm^1r^3bfkr^2$, ह्येषा r^1r^4 , एता r.— नय सुता hdm^1bfk , नयः सुता r, नयसदा r^1r^4 .— यदा चैनं $r^1r^4bfkr^2$, पंच वैनं r^3 , पंच वैनं hd, पंचैवैनं m^1 .— अजन्यापो hdm^1r , भवन्यापो $bfkr^2$.— यदा चोषधयो यदा b, य चौषधयो यदा f, यवोषयो यदा k, यदा चौषधयः सदा hdr, तदा चौषधयस्त्रथा r^1r^4 .

- a Rivers, waters, plants are here mentioned in the same order as in Naighantuka v. 3, and above, i. 112. b Enam, which all the MSS. have, is ungrammatically used for enad, with reference to the neuter sūktam; cp. v.r. of itarad, viii. 17.
- 74. And when she becomes Araṇyānī and Rātrī, Śraddhā,. Uṣas, and Pṛthivī by name, and Apvāa, (all these forms of her) own the stanzab.

रावी च hdm¹r, सवी च b, सवी व fk. — चोषा: hdr, चोषा m¹, चेषा r¹r⁴bfkr². — पृथिवी चैव hdrb, पृथिवी खैव m¹fk. — भूत्वाप्वार्च hd, भूत्वाथार्च m¹, भूत्वाद्या च fkr, भूत्वा ज्या च b.

- ^a See below, 75, note ^a.

 ^b As her representatives, being thus rgbhājaḥ.
- 75. Also when she becomes Agnāyī by name, she appears here (in the RV.) in various passages (tatra tatra) praised only incidentally in some (hymns) addressed to Agni.

नामतो उद्येषा hdm1r, नामनो मेषा b, नामतो नैषा fk.—केषुचित् bfkr, तु क्कचित् hdm1.

- a Of the above eleven names of female deities, nine agree with the enumeration (nadyaħ to Δgnāyī) in Naighaṇṭuka v. 3 (terrestrial deities), Uṣas and Sarasvatī being added from Naighaṇṭuka v. 5 (atmospheric deities). They also correspond to the list of ten in BD. i. 112 (where they are connected with the terrestrial Λgni), the only difference being that Uṣas and Sarasvatī in the present passage take the place of Iṭā in that.
- 76. When she, being Vāc h in the middle (sphere), has become Aditi and Sarasvatī, she owns the complete hymn under (these) three names only b.

मध्ये सत्य° hdm¹r, मध्यसत्य° bfkr².—भूला चैषा hm¹r, भूलेषा च bfk.—समग्रं hbr, समग्र fk, समग्रं m¹.—सूत्रं चिभिर् hm¹r, सूत्रत् भिर् b, तं चिभिर् fk.—The end of the varga is here marked by 94 in bfm¹, not in hdk. This śloka (76) is numbered as \subseteq (= \bigcirc 0 \subseteq) in hd, and as 90 (= \bigcirc 90) in m¹.

A Of the nineteen names of the middle Vāc enumerated in 76 to 78, all except Romasā (and, of course, Durgā) are to be found in Naighantuka v. 5 (deities of the middle sphere), denapatnyah being added from Naighantuka v. 6 (celestial deities), while four (occurring in v. 5), Prthivī, Gaurī, Uṣas, and Iļā, are omitted. They are for the most

part identical with the female deities previously enumerated (i. 128, 129) as connected with Indra.

b That is, the middle Vāc is sūktabhāj under these three names alone, while under the remaining names, which are incidental, she is only rybhāj.

16. Other middle forms of Vac. Her four celestial forms.

77. [She on becoming Durgā (and) uttering a a stanza may own a (whole) hymn]^b. Her (other) names are Yamī, Indrāṇī, Saramā, Romaśā c, Urvaśī; she first d becomes Sinīvālī and Rākā, Anumati, Kuhū;

दुर्गा hdm¹fkr, दुर्गे b.—भूलर्च hdrfk, भूलर्च b, भूलेचं m¹.— छला hdrfk, छखा m¹, छला r⁵r¹, इत्या b.— The first line of 77 (eṣaiva durgā) is omitted in r¹r⁴.— तन्नामानि hm¹r, सूलार्घानी॰ r¹r⁴, खे जुतिभाजी व नामानी f, तस्ये जुतिभाजी च नामानी सूलार्द्दानी b. This looks as if the words of the text तन्नामानि had been glossed with the words तस्ये जुतिभाजि च नामानि सूलार्भाजि, i.e. 'and the names devoted to her praise, which own hymn or stanza,' (are)..., and as if this gloss had been substituted for तन्नामाति in b as well as f (where, however, सूलार्भाजि is omitted), while only सूलार्भाजि was substituted in r¹r⁴.— यमीन्द्राणि hdm¹, यमिन्द्राणी r, यमिन्द्राणि b, यमित्राणि f.— भवत्यस्या hdm¹r³, भवस्त्यस्या bfkr², भवत्पथ्या r, ऋचस्त्वस्या r¹r⁴.— राका चानुमितः hdm¹rbfk, राकोषानुमितः r¹r⁴.

a What was exactly meant by kṛṭuā in connexion with ṛṭam in this interpolated line (see next note) is not clear.

b There can be no doubt that this line is an interpolation, for Durgā, not being a Vedic goddess, is not to be found in the Naighaṇṭuka, as are all the other deities here enumerated; the line, moreover, interrupts the sense of the passage, besides giving half a śloka too much to the varga. It must, however, have been an early interpolation, as it occurs in MSS, of both groups.

c This is the only one of the above names not occurring in Naighaṇṭuka v. 5, 6. Cp. note a on 76.

d This perhaps alludes to the fact that the group Anumati, Rākā, Sinīvālī, Kuhū, in Naighantuka v. 5, comes before Yamī, Urvašī, Pṛthivī, Indrāṇī.

78. then Go, Dhenu, the Wives of the Gods, Aghnyā, Pathyā, and Svasti, Rodasī. (Now) whatever names of any (gods) a are incidental, own the stanza (only) b.

गीधेंनुदेंवपत्योऽ द्या $\rm hm^1bfk$, गीधेंनुदेंवपत्यो ग्न्या $\rm r$, गोरीगींधेंनुपत्योऽग्न्या $\rm r^1r^4$, देवपत्यो द्या $\rm r^6r^7$. — खिल्ला $\rm hr^3m^1br^6r^7$, खिल्ला च $\rm fkr^2$, खिल्ला $\rm r$. — नैपातिकान च्यमाञ्जि $\rm hm^1r$, नैपातिकान्यनिग्माञ्जि $\rm b$, निपातकान्यानिग्माञ्जि $\rm fk$, नैपातिकान पृथ-गाञ्जि $\rm r^1$.

- ^a $Ye\bar{s}\bar{a}m$: this being a general remark, and therefore not referring grammatically to the female deities enumerated in the preceding lines.

 ^b That is, the incidental (nai-pātika) names of the middle Vāc (like the corresponding ones of her terrestrial form in 74, 75) are only stanza-owning $(rgbh\bar{a}j)$, not hymn-owning $(s\bar{u}ktabh\bar{a}j)$ as the primary names in 76 (as well as 73 and 79).
- 79. But when this Vāc becomes Sūryā, she belongs to that (celestial) world: thus on becoming Uṣas as well as Sūryā, she owns the entire hymn a.

वाग्भवखे॰ br, वाक् भवखे॰ m^1 , वाक्यवखे॰ hd, वाग्भजखे॰ r^1r^4 , वामासावखे॰ f.सूर्यामुं hdm^1rb , सूर्यामु f.—•श्रिता bkr, •श्रितां f, •श्रिताः hd.—तथा $hdm^1bfkr^5r^7$, तदा r.—सूक्रमुषा rbr^5r^7 , सूक्रमुखा $hdm^1r^3fkr^2$.

- ^a These being the primary names of the celestial Vac. Thus there is a whole hymn to Sürya (x. 85) and a number to Usas.
- 80. And when she becomes Vṛṣākapāyī (and) Saraṇyūa, these two undoubtedly (own) a stanzab. And when she is Earth corresponding to Heaven (dyuvat)c, she only owns (a stanza) incidentallyd.

दे च ते ध्रुवम् hm^1rb , द च ते ध्रुवं f, खेव तहूचम् r^1r^4 , ते भुवम् r^7 . — युवच्च hdr^3 , युविच m^1 , यविच r, युवित् fk, क्रिचित्तु r^1r^4 .

- ^a Uṣas, Sūryā, Vṛṣākapāyī, Saraṇyū are all mentioned together in this order as goddesses of the celestial sphere in Naighaṇṭuka vi. 6.

 ^b Vṛṣākapāyī and Saraṇyū are each mentioned only once in the RV. (x. 86. 13 and x. 17. 2 respectively).

 ^c That is, as belonging to the celestial sphere; for Pṛthivī occurs among the deities of each of the three spheres in Naighaṇṭuka v. 3, 5, 6. This is doubtless due partly to Pṛthivī being constantly invoked along with (the celestial) Dyaus, and partly to the loose use of the 'three earths' in the RV., to denote earth, air, heaven; cp. my 'Vedic Mythology,' p. 9.

 ^d Pṛthivī is addressed in only one whole hymn (of three stanzas), v. 84, where she is stated below (v. 88) to be mudhyamā; but according to ii. 74, 76, 80 no form of Pṛthivī is sūktabhōj.
- 81. We see that when this Vāc is Sūryā, Gaurīa, Sarasvatī, they (are) in the hymns to the All-gods (praised) incidentally only.

bfk omit सूर्यामेव सती°, going on मतां गौरी &c., doubtless owing to the preceding line ending with सती.—केवला: h m¹ rbk, केला: f, केवलाम r^1r^4 .— $8r^b$ =iv. 36^b .—The end of the varya is here marked by 9ξ in hbfk, not in m^1 .—In hd, $8r^{ab}$ (ending सर्खतीम्) is numbered 93 (= 993), and 82^{ab} (ending निषत्) 98 (= 998).

^a Λ goddess of the middle sphere (Naighantuka v. 5) omitted in the enumeration above (77, 78). RV. i. 164. 41, 42 are given as examples for Gaurī in Nirukta xii. 40, 41.

17. Names of female seers: three groups.

82. Ghoṣā a, Godhā b, Viśvavārā c, Apālā d, Upaniṣad, Niṣad c, Brahmajāyā (who is) named Juhū f, the sister of Agastya g, Aditi h,

घोषा गोधा brfk, गोधा घोषा $hdm^1(\bar{A}rs\bar{a}nukraman\bar{n})$.—•वारापालोपनिषन्निषत् r^1r^4 $m^1bfkr^2r^5$, •वारापालोपनिषन्निषत् hdr^3 .—नामागस्यस्य m^1brfkd , नामा – गस्त्यस्य h.

- a RV. x. 39, 40.
 b x. 134. 6, 7.
 c v. 28.
 d viii. 91.
 These two are the seers of the khila of seven stanzas beginning pra dhārayantu madhuno
 ghṛtasya, and described thus in the Kashmir MS. of the khilas: 'pra,' sapta, brāhmyo
 [i. e. brāhmyau=brahmavādinyau] niṣadupaniṣadau.
 f Juhū Brahmajāyā, seer of RV.
 x. 109; see Ārṣānukramaṇī x. 51, and Sarvānukramaṇī on RV. x. 109.
 g Seer of
 RV. x. 60. 6; cp. Ārṣānukramaṇī x. 24; Sarvānukramaṇī on x. 60; Sieg, Sagenstoffe, p. 129,
 note 7.
 h The seer of some of the stanzas of RV. iv. 18.
 - 83. and Indrāṇī^a, and the mother of Indra^b, Saramā^c, Romaśā^d, Urvaśī^c, and Lopāmudrā^f, and the Rivers^g, (and) Yamī^h, and the wife Śaśvatīⁱ,

चेन्द्रमाता hm^1rb , चन्द्रमाता fkr^2 .—च श्रुयती hdr^1r^4 , च शायती m^1r , तथैव च $bfkr^2$.— $83^b=ii.$ 77 d .

- a x. 86 (several stanzas) and 145.

 b Indramūtaraḥ are said to be the Rishis of x. 153, Ārṣūnukramaṇī x. 79.

 c In several stanzas of x. 108.

 d i. 126. 7.

 l In several stanzas of x. 108.

 l In some stanzas of iii. 33.

 h That is, Yamī Vaivasvatī in x. 10 and 154.

 i viii. 1. 34. Sieg, Sagenstoffe, p. 40, cites a passage from the Nītimaūjarī in which nārī, among women (strīṣu), is she who is distressed when her husband is distressed, and rejoices when he rejoices, śaśvatī being quoted from the RV. (viii. 1. 34) as an example. Cp. Sarvānukramaṇī on RV. viii. 1, and below, vi. 40.
- 84. Śrī^a, Lākṣā^b, Sārparājñī^c, Vāc^d, Śraddhā^c, Medhā^f, Dakṣiṇā^g, Rātrī^h, and Sūryā Sāvitrīⁱ, (all these) are pronounced to be female seersⁱ (brahmavādinyaḥ).

श्रीकीचा $h \, d \, m^1$, श्रीक्वाचा b, श्रीकंच्सी f k, श्रीकंच्सी: r.—सार्पराज्ञी $h \, m^1 r$, सर्थेराज्ञी b, सार्पराज्ञा $f k \, r^2$.—वाक् श्रद्धा मेधा $h \, m^1 r$, वाक्रुद्धामेधे b, वाक्रद्धामेधे f k.—ईरिता: $h \, m^1 r$, ईरिता f k, ईलिता b.

* Supposed seer of the Srīsūkta, the khila after v. 87. below, viii. 51. c RV. x. 89. d x. 125. c x. 151. f Seer of the Medhāsūkta, the khila after RV. x. 151. g Rv. x. 107. h x. 127. i x. 85. i These three ślokas (82-84) are identical with three at the end of the Ārṣūnukramaṇī (x. 100-102). With 82, 83, cp. i. 128, 129.

85. The first group of these, consisting of nine a, praised the deities; the middle series b conversed with seers and deities.

लासां hm^1r , तासां fkr^2 , तासा b.—वर्गसुष्टाव hm^1r , वर्गस्वष्टा च b, वर्गश्रुष्टा च f, वर्गश्रुसा च k.—समुद्दे hm^1r , समुद्दे b, समुद्दे fkr^2 , समुद्दे r^1 .

- ^a That is, those enumerated in ii. 82. ^b The nine enumerated in ii. 83.
- 86. So the last group sang of the evolutionary forms ($bh\bar{a}va-vrtt\bar{a}ni$) a of Self b. Whoever is the seer (of a hymn by one) of the last group is also the deity c.

वर्गस्वधोत्तमः hm¹r, पीय र्थोत्तमः k, ग्रीस्रिक्शित्तमः bf.—86 is omitted in r^1r^4 .—The end of the varga is here marked by 99 in hdbfk, not in m^1 .—86^{ab} is numbered as 9 = (= 99) in hd, 87^{ab} as 9 = (= 99).

a For a definition of bhāvavṛttam, see below, ii. 120. b According to the Sarvānukramaṇī, seer and deity are identical in the case of Sārparājñī (RV. x. 189: ātmadaivatam), Vāc (x. 125: tuṣtāvātmānam), Sraddhā (x. 151), Dakṣiṇā (x. 107), Rātrī (x. 127), Sūryā Sāvitrī (x. 85: ātmadaivatam). The three others, Srī, Lākṣā, Medhā, are the seers and deities of khilas. Atman here I take to mean 'self' (in accordance with the evident meaning of the Sarvānukramaṇī passages just given, and their interprotation by Ṣaḍguru-śiṣya), the expression ātmano bhāvavṛttāni jagau being equivalent to ātmānam astaud . . devatām in 87. c As the object of praise is self.

18. Deity in self-laudations and colloquies. Particles.

87. Now (each seer of) the last group thus praised herself as the deity: therefore whoever may be the seer in self-laudations is at the same time the deity.

यस्त्रथोत्तमः hm^1r , यत्त्रथोत्तमः h, यत्रथोत्तमः f, चोत्तमस्तु यः r^1r^4 . — तस्त्राद्यात्मस्त्रवेषु hm^1r , तस्त्राद्यात्मस्त्रवेषु fk, तस्त्राद्यात्मस्त्रवेषु fk, तस्त्राद्यात्मस्त्रवेषु fk, तस्त्राद्यात्मस्त्रवेषु fk, तस्त्राद्यात्मस्त्रवेष्ट्येष स्त्रवेष्ट्रयेष स्त्रवेष स्त्रवेष्ट्रयेष स्त्रवेष स्त्

88. He who utters the speech in colloquies should be (regarded as) the seer a in it; whoever may be addressed by that speech should be (regarded as) the deity therein b.

भवेदृषिः ${\rm hm^1rbfk}$, भवत्यृषिः ${\rm r^1r^4}$.—तेनोच्येत ${\rm hm^1rb}$, तेनाच्येन ${\rm fk}$.—वाक्येन ${\rm m^1kr}$, वाक्ये च ${\rm hdfb}$.—देवता तच सा ${\rm hdm^1r}$, देवता धुं च सा ${\rm f}$, देवता द्यं च सा ${\rm k}$, देवता तेपु सा ${\rm r^1r^4}$, देवता धु सा ${\rm b}$.

- ^a Cp. Sarvānukramaņi, Introduction ii. 4: yasya vākyaṃ sa ṛṣṭḥ. ^b Cp. ibid., ii. 5: yā tenocyate sā devatā; see also the three lines quoted from the Devatānukramaṇī by Ṣaḍguruśiṣya (pp. 97, 98) on RV. i. 165.
- 89. a Particles are enumerated in various senses—both for the purpose of connecting actions, and occasionally for the sake of comparison b.

कर्मोपसंग्रहार्थे च hm^1 (and Nirukta i. 4), कर्मोपग्रहणार्थे च fkr, कर्मोपग्रहणार्थे च hm^2 कर्मोपग्रहणार्थ

- a Text and translation, with notes, of the following passage (ii. 89-122) have been printed by me in the Album-Kern, pp. 334-340. b Cp. Nirukta i. 4: atha nipātā uccāvacesv arthesu nipatanty apy upamārthe 'pi karmopasaṃgrahārthe.
- 90. Others again (are) occasionally (used) for the purpose of filling up a defective verses ($p\bar{a}da$). Those (particles) which in metrical books have the purpose of filling up (the verse) are meaningless b:—

ऊनानां hm^1r , प्रनाना f, सनानां k, चनाना b.— पूरणार्था hm^1r , पूरणार्थं br^1r^4 , पूर्त्यार्थं f, पूर्णार्थं k.—पूर्णार्थास्व॰ hm^1rb , पूर्णार्थं व॰ r^1r^4 , पुराणार्थासु f.

- a Cp. Nirukta i. 4: atha nipātāh. . api padapūraņāh.

 b Based on Nirukta i. 9: atha ye pravṛtte 'rthe 'mitākṣareṣu grantheṣu vākyapūraṇā āgachanti, padapūraṇās te mitākṣareṣv anarthakāḥ: kam īm id v iti: 'Now those particles which, when a subject is started, appear as sentence-filling in non-metrical works, being verse-filling in metrical books, (are) meaningless, (viz.) kam, īm, id, u': examples for these are quoted in Nirukta i. 10. Cp. also RV. Prātiśākhya xii. 9, and VS. Prātiśākhya ii. 16.
- 91. they are to be recognized as kam, $\bar{\imath}m$, id, u^a . But (there are) also such (particles) as have various senses. Iva, na, cid, nu—these are the four having the sense of comparison b.

कमीमिदिति m^1r (and Nirukta i. 9), कमीमि इति h, वामीमिदिति b, चामीमिदिति f, चामिमिदिति kr^2 .— त्वनेकार्थकाश्च ते km^1r , वेन्वोचार्थकाश्च ते f, त्वानोचार्थकाश्च ते b, त्वन्ये सार्थकाः सुतौ r^1r^4 .— इवो न चिन्नु hr^3 , इवो नु चिन्न m^1 , इवे न चिन्नु r^5 , इव ना चिनु b, इव ना चितु f, इव न चित्सु r.— भवन्ति ते $hm^1r^3bfkr^2r^5$, भवन्यभी r^1r^4 .— The end of the varga is here marked by q = n hbf, by q = n0 in k, omitted in m^1 .

^a Nirukta i. 9, quoted above, ii. 90, note ^b.

^b Cp. Nirukta i. 4: ete catvāra upamārthe bhavantīti, the four particles mentioned above being then discussed in the same order.

19. Particles (continued). Prepositions. Genders.

92. Now na is, in metrical books, only occasionally used as a particle $(nip\bar{a}tyate)$ in the sense of comparison, but frequently in (the sense of) negation ^a.

उपमार्थे $hm^1r^3r^5$, उपमार्थ br, उपमार्थ fk.—प्रतिषिध त्वनल्पण्नः $hr^3bfkr^2r^5$, प्रतिषिध-स्त्वनिकण्नः r, पूर्णार्थस्त्वनर्थकः m^1 (cp. ii. 90^d).

- ^a Cp. Nirukta i. 4: neti pratisedhärthiyo bhāṣāyām, ubhayam anvadhyāyam . . . pratisedhārthiyah . . . upamārthiyah.
- 93. There does not exist an enumeration of the particles (stating explicitly) 'there are so many'a. These particles are used (nipātyante) at every turn (pade pade) on account of the subject-matter (prakaraņa) b.

वशात्रकरणस्थिते $h\,r^3\,r^5$, वश्रा प्रकरणस्थिते b, वश्राः प्रकरणस्थिते r^2 , वश्रात्प्रकरणस्थित m^1 , वश्रा प्रकरणं सैते fk, प्रयोजनवश्रा ह्येते $r^1\,r^4$.

- a The same expression is used in RV. Prātiśākhya xii. 9: neyanta ity asti saṃkhyā; but the VS. Prātiśākhya (ii. 16 and viii. 57) enumerates fourteen, and in the latter passage states that to be the number. Yāska, however, mentions twenty-two in Nirukta i. 4 ff., where five of those treated in the VS. Prātiśākhya do not occur.

 b Cp. RV. Prātiśākhya xii. 9: arthavaśāt, 'on account of the sense.' See also Hemacandra's Abhidhāna-cintāmaṇi, ed. Böhtlingk, p. 443; Benfey, Göttinger Gelehrte Anzeigen, 1859, no. 103, p. 1023.
- 94. The twenty a prepositions ($upasarg\bar{a}h$) are to be recognized by reason of their connexion with (verbal) action b; for they differentiate the meaning c in the inflexions of noun and verb d.

कियायोगेन $h m^1 r^3 b f k r^2 r^5$, क्रियायोगेषु r—हार्थ $h m^1 b$, खर्थ $r^3 r^5$, हार्था f k, हार्थान् r^4 , खर्थान् r—°विभक्तिषु $h m^1 r^3 b f k r^2 r^5$, °विभक्तिभि: r^1 , °विभक्तितः r^4 .

- a This number is expressly stated in RV. Prātiśākhya xii. 6, 7; it is also the number enumerated in Nirukta i. 3, RV. Prātiśākhya xii. 6, VS. Prātiśākhya vi. 24, and in the Gaṇa prādayaḥ.
 b Cp. Pāṇini i. 4. 59: upasargāḥ kriyāyoge.
 c Cp. RV. Prātiśākhya xii. 8: upasargo viśeṣakṛt.
 a Cp. Nirukta i. 3: nāmākhyātayor arthavikaraṇam.
- 95. Achaa, śrad, antar—these the teacher Śākaṭāyana considered prepositions because of their connexion with action; they are three more.

श्रन all MSS, and r.—उपसर्गा: hm¹rb, उपसर्गा fk.—ते तु hm¹, ते त bfk, तेन r.— 95-105 omitted in r¹r⁴.

- Anu, which already occurs among the twenty, must be an old corruption, as the reading of all the MSS. It might stand for either acha or aram, but the former seems both palaeographically and otherwise the more probable. Alam, antar, acha are gatis in Pāṇini i. 4. 64, 65, 69. A vārttika on Pāṇini i. 4. 59 adds śrad to the list of upasargas.
- 96. There are just the three genders in popular usage (loke)—masculine, feminine, neuter a. In (regard to) nouns, the employment of which has been stated b, the subject-matter must be stated in this way c.

स्त्री च hm¹, स्त्रीलं bfk, स्त्र्यथ r.—नाममूक्तप्रयोगेषु hbfkr, नाममूक्तप्रदेशेषु r¹r⁴ (among the fragments added in R's edition, p. 56, śloka 130).—वाच्यं प्रकर्णं तथा hbfkr, योज्यं प्रकर्णं लनु r¹r⁴ (ibid.).—The end of the varga is here marked by 90 in hbfk, not in m¹.

^a Cp. above, i. 40. ^b This probably refers to BD. i. 23-45. ^c That is, in connexion with gender.

20. Nouns. Pronouns. Sense. Rules for construing.

97. Now these (names) are mentioned (not only) by means of nouns, (but also) by means of genders; by means of pronouns repeated mention (is made) of (a noun already) mentioned, similar to (the repeated mention of) a positive or negative act (kṛtākṛtasya)ⁿ.

कताकृतस्य all MSS.—सदृशो rk, सदृशे hm1bf.—पुनर्यहः bfk r, पुनर्गृहः h.

- ^a Lit. 'what has been (stated to be) done or not done': the meaning probably being that pronouns may refer to a preceding verbal notion as well as a noun.
- 98. All (authorities) say that the names (occurring) in verses, hymns, stanzas, hemistichs, and any others (there may be), (are) nouns; some a (call them) so according to circumstances ($yath\bar{a}kath\bar{a}$) b.

सर्वे नामानि चैवाङ्गर् hfkr, सर्वना॰ b, कुर्वज्ञामानि वै वाङ्गर् $\mathbf{r}^1\mathbf{r}^4$ (śloka 131).— श्रान्थे चैवं h bfkr, श्रान्थवे $\mathbf{r}^1\mathbf{r}^4$.— यथा कथा hfkr, यथा कया b, त्यथा यथा $\mathbf{r}^1\mathbf{r}^4$. यथा तथा \mathbf{m}^1 .

- ^b Anye here used in antithesis to sarve must be meant as an equivalent to eke.
 ^b A somewhat archaic use of the adverb kathā; cp. yathā kathā ca in Nirukta iv. 3, x. 26.
- 99. The sense is the chief thing a; for a term (sabda) is required (to be) dependent on the qualities (guna) of it b (the

sense); therefore one should bring terms under subjection to the sense by the various expedients of construing.

प्रधानमर्थः ग्रब्दो r, प्रधानमर्थग्रब्दो bfk, प्रधानग्रब्दमर्थो hdm¹.— ततुणायत्त r, ततुणायत्तम् m¹, ततुणायतम् hd, ततुणोयत्त fb, ततुणो यत्तु k.— नानान्वयोपायैः hd, ॰पायः r, नानान्वपायै b, नाल्या fk.

- ^a Cp. Nirukta ii. 1: arthanityah parīkṣeta.

 ^b That tad must refer to arthah is shown by the expression śabdān arthavaśam nayet.
- 100. A redundant word (pada) should be rejected, while one that is lacking one should introduce into the sentence; and one that is far removed one should bring into juxtaposition, and should (then) arrange the regular sequence (of the words).

त्रानुपूर्वी च hm1r, त्रानुपूर्वी च d, त्रानुपूर्वे च fk, त्रानुपूर्व प्रº b.

101. Gender, root, and inflexion one should, in their respective places, adapt a (to the sense). Whatever is Vedic in a formula one should turn into everyday speech (laukika) b.

धातुं विभक्तिं m¹kr, धातुविभक्तिं hdb, धातुनिविभक्ति f. — संनमेत्तन hdm¹, संनमे तन bfk, संनयेत्तन r (cp. Nirukta ii. 1: विभक्तीः संनमयेत्). — मन्ते m¹bfk, वाक्ये hd, वाक्यं r. — तत्तत्वार्यात्तु m¹b, तत्तु कुर्यात्त f, कुर्यात्तत्त्तु r, कुर्याक्यन्त्रे तु hd. — The end of the varga is here marked by **२0** in hdbf, not in m¹k.

a Cp. Nirukta ii. 1: yathartham vibhaktih samnamayet, b Cp. i. 4 and 23.

21. Analysis of words. Six kinds of compounds.

102. The analysis of the secondary elements $(guna)^a$ may be (effected) by the aid of all roots $(dh\bar{a}tu)$ which possess a traditional characteristic form (linga), and the sense of which can be stated.

यावतामेव ${\bf m^1bfkr}$, याचनामेव hd.—•िभधेयः स्थात् h, •िभधेय स्थात् ${\bf m^1}$, •िभधेयस्थ bfk, •िभधेयं च r.

- The root (dhātu) here representing the primary form (prakṛti or pradhāna), cp. ii. 108, and v. 96.
- 103. A word (pada), the definition of which can be expressed, whether it be derived from two roots, many (roots), or one root, is one consisting of a sound ($\hat{s}abda$) that contains root, preposition, members (avayava), and secondary elements (guna).

॰श्रब्दं दिधातुनम् hdm1, ॰श्रब्दार्बधातुनम् r, ॰श्रब्ददिधातुनम् f, ॰श्रब्दिधातुनम् b.—वापि hdfkr, चापि b.—पदं hdm1, पद bfk, यद r.

- 104. A word may be explained in five ways, (viz.) as derived from a root, as derived from the derivative a of a root, as derived from a compound meaning $(samast\bar{a}rtha)^b$, as derived from a sentence $(v\bar{a}kya)^c$, and as (of) confused d (derivation).
- a Corresponding to taddhita below, 106, and Nirukta ii. 2. b That is, derived with a samāsānta suffix; cp. taddhita-samāsesu, Nirukta ii. 2. c As, for example, itihāsa (=iti haāsa). d Vyatikīrņa: that is, by transposition of letters; cp. Nirukta ii. 1: ādy-anta-viparyayaḥ.
- 105. Dvigu, Dvandva, Avyayībhāva, and Karmadhāraya, the fifth Bahuvrīhi, and the sixth called Tatpuruṣa (are the compounds) a.
- ^a This śloka is quoted by Durga on Nirukta ii. 2. Only four classes are distinguished in the VS. Prātiśākhya (i. 27 and v. 1, commentary), which does not mention the dvigu or the karmadhāraya class.
- 106. In compounds, as well as in a secondary derivative, explanation (nirvacas) should proceed from analysis: one should explain after separating a (the parts); thus 'punishable' (dand-ya) b as 'deserving punishment' (dandaarha),

विग्रहाज्ञिवेच: m¹, विग्रहा निर्वच: hdrfk, विग्राहाज्ञिवेच: b.—तिश्वते hdr, तिश्वते b, ताहुमे fk.—निर्वृयाद् hdm¹, निव्रयाद् r, निर्वित्या fk, निवर्त्तया b.— दण्ड्य bfr, दण्डय hd, दण्ड m¹k.—The end of the varya is here marked by २१ in hdbfk, not in m¹.

^a Cp. Nirukta ii. 2: taddhita-samāseṣu ... pūrvaṃ pūrvam aparam aparaṃ pravibhajya nirbrūyāt.

^b As an example of a taddhita; cp. Nirukta ii. 2: daṇḍyaḥ ... daṇḍam arhati; see also Pāṇini v. 1. 66.

22. Meaning and analysis of words.

- 107. and 'fair-wived' (rūpavad-bhārya) as 'he has a fair (rūpavatī) wife (bhāryā)'a. Thus 'Indra-Soma' (Indrā-Somau) as 'Indra and Soma' is an example (of a Dvandva).
- As an example of a bahuvrihi. Yāska, in Nirukta ii. 2, 3, exemplifies only the tatpurusa class, though without naming it.

108. The form of the sound ($\acute{s}abda$), the sense of the word (pada), the etymology, the primary form (prakrti), the secondary element (guna), all this has manifold sense: there are ten species ($gun\bar{a}h$, scil., of explanation) in (case of) misunderstanding (anavagame) a.

प्रकृतिर् hdbfk, सक्तिर् r.—दशानवगमे r, दृशानवगमे hdm1, दशानवगुणे bfk.

- a That is, five correct explanations under the above heads, and five incorrect.
- 109. Terms (śabdāḥ) expressive of a general meaning are occasionally applied in a particular sense (viśeṣe); thus (in) 'Who, pray, O men' (ko nu maryāḥ: viii. 45. 37), the interpretation (of) 'goes' (īṣate) is in (the sense of) 'fleeing' a.

विशेष स्थापिताः hm^1r , विशेष क्यापिताः b, विशेष क्यापिना f, विशेषा द्वाविना k.— पजायने hrbfk.— यथा वृत्तिः hm^1bf , यथावृत्ति rk.— इतीषते h, इतीष्यते m^1bfr , इति- स्वते k.— 109^{cd} and 110^{ab} are omitted in d.

- ^a The word *īṣate* in RV. viii. 45. 37 is explained by Yāska in his comment on this stanza (Nirukta iv. 2) as *palāyate*, while in Naighanṭuka ii. 14 it is enumerated among the verbs which mean 'to go.'
- 110. But other (terms) expressive of a particular meaning are occasionally applied in a general sense; in the formula, 'With cold the fire' ($himen\bar{a}gnim$: i. 116. 8), the term 'frost' ($him\alpha$) is an example.
- ^a Yāska, in his comment on RV. i. 116. 8 (Nirukta vi. 36), explains himenu by udakena grişmānte; cp. also Sāyaṇa on i. 116. 8.
- 111. Yāska has, in the stanza 'To every tree' (vṛkṣe-vṛkṣe: x. 27. 22), explained the word 'man-eating' (pūruṣādaḥ) by taking one word (and) dividing (it) into two b.

पुरुषाद: hdm1fr, पूर्पाद: b, पुरुषादं k.—The end of the rarga is here marked by २३ in hdbf, not in m1k.

a This and the following five examples (in 111-114) are given as illustrations of wrong interpretation due to misunderstanding (anavagama). The preceding two slokas may also have been meant to be included in this criticism.

b Yāska, in Nirukta ii. 36, explains pūruṣādah as puruṣān adanāya, 'in order to devour men,' but there is nothing in this to justify the criticism that he took pūruṣādah as two words.

23. Yāska's wrong explanations. Dropping of letters.

- 112. Similarly, another (expression) which is not one (word), he has explained as one only by (his) analysis as 'month-maker' $(m\bar{a}sa-krt)$ in the formula, 'The ruddy one me once' a (aruno $m\bar{a}$ sakrt: i. 195. 18).
- a In his comment on this stanza Yāska (Nirukta v. 21) explains the word as māsānām kartā. Our author here agrees with the Padapātha. See Roth, Erläuterungen, on Nirukta
 v. 21; Sāyaṇa on RV. i. 195. 18; Geldner, Vedische Studien iii, p. 178.
- 113. In the stanza, 'Not to his brother' (na jāmaye: iii. 31. 2), he has explained the two words garbham nidhānam, even though (another) word a intervenes, by making them into one b.
- ^a Sanitur: the words in iii. 31. 2 being garbham sanitur nidhānam. ^b That is, his explanation, in Nirukta iii. 6, is garbhanidhānīm. Yāska, however, doubtless intended merely to express that the two words constitute an 'open' or purely semantic compound; ep. Geldner, Vedische Studien iii, p. 107; Sieg, Sagenstoffe, p. 92.
- 114. The class of word is not recognized in the word $tvah^a$, (nor) the sense in $sit\bar{a}man^b$. Misunderstanding of the accent (in) $adh\bar{a}yi$ is shown in the stanza 'As on the tree'c (vane na: x. 29. 1).
- ॰रविज्ञाता hdm¹r, ॰रविज्ञाता b, ॰रेकिज्ञाता f.— खःपदे hdm¹b, खपदे fk, खः पदा(र्थः) r.—र्थः ग्रितामनि hdm¹, र्थ ग्रिसामित b, र्थ ग्रिनामनि f, र्थः सिनामनि r.— खरानवगमो hdm¹rfk, खरानवरामो b.—वने ने॰ m¹r, वने मे॰ hd, वेवे ने॰ b, चेने ते॰ fk.
- ^a Yāska (Nirukta i. 7) enumerates, doubtless following an earlier view, tva among the particles, but he clearly considers it an inflected word (ibid. i. 8). Our author must therefore be criticizing the latter view.

 ^b Yāska (Nirukta iv. 3) states that the word means 'fore-arm' (dos), adding the divergent views of Sākapūṇi, Taiṭīki, and Gālava. From the above it does not, of course, appear what view our author held.

 ^c Yāska (Nirukta vi. 28) in commenting on RV. x. 29. I reads vāyó ní adhāyi, while the Padapūṭha, reading vā yó ní adhāyi, leaves the verb unaccented after the relative. If our author is criticizing Yāska, it does not appear what he means here by a misunderstanding of the accent. Cp. Roth, Erläuterungen, p. 94; Max Müller, RV. Prātiśākhya, p. 4; Rig-veda, 2nd ed., vol. iv, p. 9; Sāyaṇa on RV. x. 29. I; Oldenberg, Prolegomena, p. 532.
- 115. As the regular order a (of the words) was (arranged) according to the sense in Śunaḥ-ścpam b, Narā-śaṃsam c, Dyāvā naḥ pṛthivī d, nir-askṛta c, and the rest:

प्रभृतिष्वर्थाद् hdm¹, °ितस्वर्थाद् r, °ित ऋर्थाद् bfk.— °सीत्क्रमो hm¹r, °सीक्रमो fk, °सीक्रमो b.

- That is, in the Kramapātha. This and the following sloka appear to be connected thus: as the sense requires the restoration of words to their proper order (pada-krama), so it requires the restoration of letters for the purposes of etymology to their proper order (varna-krama).

 b For sunas cic chepam in RV. v. 2. 7; see RV. Prātiśākhya ii. 43 and xi. 8.

 c For narā vā samsam in RV. x. 64. 3; see RV. Prātiśākhya, loc. cit. d That is, these words in RV. ii. 41. 20 must be read as dyūvāpṛthivī naḥ; ep. Nirukta ix. 38.

 e For nir u svasāram askṛta in RV. x. 127. 3; ep. RV. Prātiśākhya x. 4, xi. 5.
- 116. (so) there is dropping of a letter (varṇa), of two letters, of many, and of a consonant: (for instance, in) atrāṇi a, kapiḥ b, nābhā c, danaḥ d, yāmi e, and aghāsu f.

यामीत्यघासु m¹, यामित्यघासु hdr, यामीत्यदासु b, यामित्यदासु f. — The end of the varga is here marked by २३ in hdbfk, not in m¹.

** For attrāni in RV. x. 79. 2.

** For vṛṣā-kapiḥ in RV. x. 86. 5; see Nirukta xii. 27.

** A very frequent form in the RV. before consonants beside the rare nābhau. There is possibly an allusion to Yāska's etymology (in Nirukta iv. 21): nābhir saṃnahanāt.

** Explained by Yāska (Nirukta vi. 31), on RV. i. 174. 2, as dānamanasaḥ.

** Given by Yāska (Nirukta ii. 1) as an example in tat tvā yāmi (RV. i. 24. 11 or viii. 3. 9) for the dropping of a letter. It is explained by Durga as yācāmi.

** In RV. x. 85. 13; supposed to be = maghāsu (the reading of the AV.); see Weber, Nakṣatra ii. 365,

24. Word and sense. The verb expresses a form of becoming.

117. From the sense (comes) the word (pada), its designation; from the word (comes) the ascertainment of the sense of the sentence ($v\bar{a}kya$). (For) the sentence arises from an aggregation of words, the word arises from an aggregation of letters a.

खाभिधेयं hdmlrfk, साभिधेयं b.

- * Which are significant: hence the sense is the starting-point in interpretation.
- 118. From the sense (of the word), the subject-matter (prakarana), the gender, the appropriateness, and from (considerations of) place and time, the (possibility of) discriminating the (whole) sense in the formulas will result; such is the settled rule (sthitih) in (regard to) other (writings) also.

There is a lacuna in b from 118cd to 122cd: मन्त्रेष्वर्श्चविवि क --- मन्त्रवि त्तमै: 1

119. He who thus exerts himself in the study of etymology (nairukte) by the various means of construing (anvaya), being desirous of knowing the form of Brahma^a, will, even though an evil-doer, go to the supreme ^b (param).

नैक्ते यो यतेत hm^1r , निक्तो यो यतेत f, निक्तो जायते k.— रूपमपि दुष्कृत्परं hm^1r (दुःकृत m^1), रूपमि दुःकृप f, दुःक्रय k.

- a That is, the Veda. b Cp. Nirukta i. 18: yo 'rthajña it sakalam bhadram aśnute: nākam eti jñānavidhūtapāpmā.
- 120. How this (world) did not exist in the beginning, either as non-existent or existent, how this universe (sarvam) came into being, (all) this they term the evolution (vrttam) of becoming a ($bh\bar{a}va$).

यथेद्मग्रेhdm¹, यथेद्मग्रेr, यथेद्मग्रेfk.—°सद्य्य°hdr, °श्ब्द्ाय्य°f.—भाववृत्तं hm¹r, भाववृत्तं fk.—वदन्ति dm¹rfk, वदिति h, प्रचचते r¹r⁴ (R's edition, p. 56, śloka 132).

a Cp. below, viii, 46 on RV. x. 129 (nāsat): vadanti bhāvavṛttaṃ tat.

121. The verb $(\bar{a}khy\bar{a}ta)$ has becoming as its fundamental meaning $(pradh\bar{a}na)^a$. There are these six modifications $(vik\bar{a}r\bar{a}h)^b$ of becoming: genesis (janma), existence (astitvam), transformation $(par\bar{i}n\bar{a}mah)$, growth (rrddhih), decline $(h\bar{a}nam)$, destruction $(vin\bar{a}sanam)$.

षड्विकारा hdr, षड्विकारो fk, षट्प्रकारा r^1r^4 (p. 56, śloka 128).—जन्मास्तित्वं hrm r^1r^4 (p. 56, śloka 128), जन्मास्तित्वं f.—परीणामो m^1 fr, परीणामो d, परिणामो h, परिणामो k.— वृज्ञिहानं वि° hdr, वृज्ञिहानिवि° fk r^1r^4 (p. 56, śloka 128).—The end of the varga is here marked by $\mathbf{28}$ in hm f, not in k (nor in b owing to the lacuna in that MS.).

^a This definition is identical with that in Nirukta i. 1: bhāvapradhānam ākhyūtam. Cp. RV. Prātiśākhya ii. 12. 8.

^b This is quoted by Yāska (Nirukta i. 2) as the opinion of Vārṣyāyaṇi: ṣaḍ bhāvavikārā bhavanti.

^c The passage in Nirukta i. 2 on which this is based, gives the verbs (jūyate &c.) corresponding to the above nouns.

25. The deities of the Vyahrtis and of Om.

122. But whatever other modifications of becoming arise from these six a must be inferred in each case according to the sentence^b, to the best of their ability $(s\bar{a}marthy\bar{a}t)$, by those who are most familiar with the formulas,

षसां तु hrfk, वर्षाः सुर् r¹r⁴ (p. 56, śloka 129).—ते यथावाकाम् hrfk, यथावचनम् r¹r⁴ (p. 56, śloka 129).— अप्यूहाः r, अत्यु f, अभ्यूहाः hdm¹ (ep. Nirukta i. 3: अभ्यूहितवाः).

- The wording is somewhat clumsy; literally: 'others which arise from the modification of becoming of these six.' The passage of the Nirukta (i. 3), on which the above is based, is more clearly expressed: anye bhāvavikārā eteṣām eva vikārā bhavanti.

 b Cp. Nirukta i. 3: te yathāvacanam abhyūhitavyāḥ.
- 123. and (must) likewise (be inferred) in accordance with the (nature of the) adorations $(namask\bar{a}rai\hbar)^a$ of the Gods and Fathers, (appearing in those formulas).

Now hear the divinity of the sacred utterances $(vy\bar{a}hrti)^b$, individually and collectively.

नमस्कारिसचिव hm¹r, नमस्कार्स्सचैव fk, नमस्कार्स्ववैव b.—अथ व्यस्तं hm¹r, अथ वास्तं fk, अवास्तं b.

- That is, the various modifications of the verbal sense are to be inferred not only from the nature of the sentence but also of the prayer which it contains. If namaskā-aḥ be read, the meaning would be: 'the nature of the prayer is also to be inferred (in doubtful cases) from the tenor of the sentence.'

 That is, the three mystical words bhūr bhuvaḥ svaḥ.
- 124. Now the divinity of the sacred utterances collectively is Prajāpati^a, while the deities of them individually are this (terrestrial) Agni, Vāyu, and Sūrya (respectively).

दैवतं तु hm1r, देवतं तु fk, दैवतं च b.

- * Cp. Sarvānukramaņī, Introduction ii. 10: samastānāņ prajāpatiķ.
- 125. The syllable Om has Vāc for its deity, or else it is addressed to Indra, or else (it belongs) to Paramesthin; or it is addressed to the All-gods, or to Brahman, or to the Gods (in general), or Ka (is its deity)^a.

वाग्देवत्यो hdbr¹r⁴ (p. 56, śloka 133), वाग्देवत्यो r, वाहेवत्यो f, वाक्देव^o m¹, वान्देवो k.—देव: क एव r¹r⁴bfkr, देव: क एव hdm¹.—The end of the varga is here marked after this śloka (125) by २५ in hdm¹, but after 124 in bfk. The former is doubtless correct, as the end of the varga thus corresponds with the end of the Introduction, while in the other case the twenty-fifth varga would without any apparent reason contain only three ślokas. The two vargas, 25 and 26, however, contain together only eight ślokas instead of ten.

^a On this sloka is based Sarvānukramaņī, Introduction ii. 11, where, however, Vāc and Indra are omitted, and ādhvātmikaḥ (see Sadgurusisya) corresponds to ka.

- 26. The first three hymns. Authors of Vaisvadeva hymns.
- 126. The first hymn is addressed to Agni. Its seer a is Madhuchandas. The seven triplets b which follow it should all be recognized as addressed to different deities.

त्राग्रेयं hm¹rfk, अपये b. — °स आर्षकम् hm¹r³r⁴r⁵, °स आवृणः b, °स आवृण् f, °ग्रात्र्यावृण् k, °स आवृण् f, °ग्रात्र्यावृण् k, °स आवृण् f, °ग्रात्र्यावृण् k, °स आवृण् f, चियास्त्रियो स्वि hm¹r³r⁴r⁵, ज्ञेयास्त्रियो b, ज्ञेयास्त्रियो fk, ज्ञेया-स्त्र्यो r. — From here (126) down to 145 Rājendralāla Mitra gives readings connected with r⁴: yhapustakoddhṛtapāṭhaḥ (perhaps = 'restored' or 'corrected' reading). Both yha and yha u are referred to in the notes on śloka 137, p. 57.

- ^a More literally, 'the authorship (ārṣakam) is that of Madhuchandas.'

 b That is, those which are contained in RV. i. 2, 3.
- 127. The first of these (2. 1-3) is addressed to Vāyu, the following one (2. 4-6) to Indra and Vāyu, then one to Mitra and Varuṇa (2. 7-9), one also to the Aśvins (3. 1-3), one to Indra (3. 4-6), then one to the All-gods (3. 7-9).

लेषां hm^1r , तेषां bfk.—•णोऽषाश्विनो $hr^3r^4fkr^2r^5$, ॰णो ब्रास्तिनो b, ॰ण ऋश्विन्य r.—पीन्ट्रो hr^3r^5 , स्लिन्ट्रो fkr^2 , विन्ट्रो b, ऐन्ट्रो r.—तो hr^3r^5 , थो m^1 , वो bfk, य: r.—वैश्वदेवतः $hm^1r^3r^5$, वैश्वदेवतः bfk, पश्चमस्तृचः r.

128. Now (this) last triplet (3. 7-9), composed in the Gāyatrī metre, contains that name $(tan-n\bar{a}m\bar{a})^a$, or has (the word) 'all' (viśva) as its characteristic mark. But (any) other (hymn) addressed to many divinities can be recited in (the place of) those addressed to the All-gods b.

तज्ञामा hr³r⁴r⁵m¹, नानाप्रा bfk, नान्यः पष्ठाद् r.—विश्वलिङ्गो वा hm¹r³r⁴r⁵b, विश्वलिङ्गो fkr. After this there is a lacuna of four pādas in fk: 'जिङ्गो [वा - शार्याते गो] तमे थ स्वित्वश्वनि.—गायत्रोऽन्यसु यसुचः hdr, गायत्रो त्य यस्त्रिचः b, गायत्रो स्यपरसृचः r¹r⁴r⁶ (r⁶ or ca first appears in Rājendralāla's edition in the notes on this śloka, the whole introduction being evidently wanting in this MS.).—बङदेवतम् rb (=Nirukta xii. 40), वङदेवत॰ r⁴, बङदेवत्यम् r³, बङदेवत्यम् hd.— अन्यत्तु m¹r³, अन्यं तु hb, °मन्तस्तु r¹r⁴.—128 = iii. 33 d.

a That is, each of these three stanzas contains the name viśve devāsaḥ, or in other words it is characterzed by the term viśva.

b According to Yāska (Nirukta xii. 40) this (i. 3. 7-9) is the only gāyatrī triplet addressed to the Viśve devāḥ. But, he adds,

whatever (hymn) is addressed to many divinities may be suitably employed in place of such as are (in the strict sense) addressed to the All-gods: yat tu kim cid bahudaivatam tad vaiśvadevānām sthāne yujyate. Cp. Roth, Erläuterungen, p. 167; also Ṣadguruśisya on Sarvānukramaņī i. 139.

129. In ^a Luśa ^b, Duvasyu ^c, Śāryāta ^d, Gotama ^c, Rjiśvan ^f, Avatsāra ^g, Paruchepa ^h, Atri ⁱ, the seer Dirghatamas ^j,

दुवस्थी r, य दात्स्थे hdm¹r³r⁴r⁵ (lacuna in fk): the latter must be a very old corruption as MSS. of both families have it. The only MSS. with the correct reading are apparently r¹ and r⁶.—गीतमे hdm¹b, गोतमे r; the reading of fk (where the गो of लिंगो seems to have caused the lacuna: see note on 128) लिंगोतमे also points to गोतमे. गौतमे and गोतमे are frequently confused in the MSS.: cp. critical note on i. 58.—पद्छेपे hr³f, पद्तिपे b, पद्चेप r, पद्चेप kr², पद्भेप m¹.—ग्रची r (=r¹r⁶), पुचे bfk r²r⁶ hdm¹r³r⁴: the latter must also be a very old corruption, which is easy to explain palaeographically, and would, moreover, have been helped by the hiatus (°द्धेप ग्रची).— दोधतमस्यूषी hm¹r, दोधतमस्यूषी b, दोधतत्यूषी f, दोधतत्पृथी kr².—The end of the varga is here marked by ६६ in hdbfk, not in m¹.

All-gods.

b Seer of RV. x. 35, 36.

c Seer of RV. x. 100.

d Seer of RV. x. 92.

e Seer of RV. i. 139.

f Seer of RV. vi. 49-52.

g Seer of RV. vi. 44-43.

g Seer of RV. i. 164.

27. Character of Vaisvadeva hymns.

130. in Vasiṣṭha^a, Nābhānediṣṭha^b, Gaya^c, Medhātithi^d, Manu^c, Kakṣīvat ^f, Vihavya^g, as well as in many other seers ^h,

कचीवति r, कचीवते hdm1r4, का चीवते bfkr2.—• ध्वथिषु hm1r3r4bkr2r5, •षु चिषिषु r.

- a Seer of RV. vii. 34-37, 39, 40, 42, 43. b Seer of RV. x. 61, 62. c Seer of RV. x. 63, 64. d Seer of RV. i. 14. c Seer of RV. viii. 27-30. f Seer of RV. i. 121, 122. g Seer of RV. x. 128. b Besides the twenty here enumerated there are about ten other authors of Vaisvadeva hymns in the RV.; see Aufrecht, RV. vol. ii, p. 668, under devāh. Seventeen of the twenty seers enumerated above (the omissions being Atri, Gāthin, and Nābhānodiṣṭha) are repeated below in iii. 55-59, where twenty more are added.
- 131. in Agastya a, Brhaduktha b, Viśvāmitra c, and Gāthin d, variations (vipravādāḥ) c are here (in the Rg-veda) apparent in their respective praises.

विश्वामिने च hm^1r , विश्वामिने थ $bfkr^2r^5r^4$. — विप्रवादाश्च $hm^1r^1r^4r^6$, विप्रवादाश्च r, विप्रवादांश्च bfk.

- ^a Seer of RV. i. 186.

 ^b Seer of RV. x. 56.

 ^c Seer of RV. iii. 57.

 ^d Seer of RV. iii. 20.

 ^e That is, these seers differ from one another in regard to the deities addressed in their Vaisvadeva hymns.
- 132. Now the teachers Yāska^a and Sāndilya say that any formula^b in which a combination of many (deities) appears, is addressed to the All-gods.

बहीनां सं॰ hm^1r , बहीनां चं b, बहीनां सं॰ fk.—वैश्वदेवं तद् $hm^1r^3r^4r^5$, वैश्वदेवं तम् r, ॰देवं खम् b, ॰देवलं f, ॰देव तुम् k.

- ^a In Nirukta xii. 40: see above 128, note ^b.

 ^b Mantra is here treated as a neuter; also below, viii. 129.
- 133. One should state everything, whatever it be, a verse, or hemistich, or stanza, or hymn, which is addressed to many divinities, to be addressed to the All-gods a.

वदेत्सर्वे hrbfk, वदेत्सूर्ये m¹.—बङ्गदैवतम् hm¹rbfk (Nirukta xii. 40), °देवतम् r¹r6.

a See above, 128, 132, and Nirukta xii. 40.

134. All $(sarv\bar{a}h)$ the deities are praised by the seers with collective laudations; now this technical term $(sanj\tilde{n}\bar{a})$ 'collective' $(vi\acute{s}va)$ is laid down $(nip\bar{a}tit\bar{a})$ in (the sense of) all-comprehensiveness a $(sarv\bar{a}v\bar{a}ptau)$.

The words सर्वा to सुता: (inclusive) are omitted in fk.—इत्येषा bfkr²r⁵hm¹r³r⁴, इत्यासां r.—निपातिता hdr, निपातितौ bm¹r⁴r⁵, निपातिति fk.—The end of the varga is here marked by २७ in bfk, by २८ in hd, not at all in m¹.

a That is, it is used in a collective sense, viśve devāh thus meaning 'the gods collectively.'

28. Passages of the Rg-veda addressed to Sarasvatī. Indra hymns.

135. Now the seventh (triplet) is addressed to Sarasvatī (3. 10-12). These are the Prauga deities a. She is praised in all stanzas by the name of Sarasvatī in two ways:

सारखतजु $hm^1r^3r^6r^4$, सरखतजु bfk, सारखतः r.—सप्तम $hm^1r^3r^6r^4$, श्र्नमा b, उत्तरम fkr^2 , सप्तमजु r.—Qnr: प्रचग o hdr, Qnr Qnr property property

चविध्यमान जने वा प्रजगेष्वत आवपेत्।

- —सर्खतीति hm¹bfk, सर्खती तु r.—द्विविधम् hdm¹, द्विविदम् fk, द्विविवम् b, द्विवि-धाम् r.—ऋनु hm¹bfk, ह्यनु r.—सर्वामु सा hm¹r³r⁵r⁴, संदृश्चते r, सदृश्चते b, सदृश्चते fk.
- ^a RV. i. 3. 10-12, where Sarasvatī appears as a Praüga deity, is explained in Nirukta xi. 26, 27. Sarasvatī again appears as a Praüga deity in RV. ii. 41. 16-18. Cp. below, iv. 92.
- 136. as a river, and as a deity. Now with regard to this the teacher Saunaka has stated that the passages (in which she is praised) as a river a are six, (and that there is) not a seventh:

नदीवहेवतावस h b f k \mathbf{r}^2 (Nirukta ii. 23), नदीवसीव वाग्वैव \mathbf{r} .— तवाचार्यसु h d \mathbf{m}^1 , स्तवाचार्यसु b, सूवाचार्यसु f k \mathbf{r}^2 , सूताचार्यसु $\mathbf{r}^3\mathbf{r}^4\mathbf{r}^6$, तरीवमुभयं \mathbf{r} .— शीनकः h d $\mathbf{m}^1\mathbf{r}^3\mathbf{r}^4$ b f k $\mathbf{r}^2\mathbf{r}^5$, स्नृतम् \mathbf{r} .— नदीवित्तगमाः $\mathbf{r}^3\mathbf{r}^4\mathbf{r}^2\mathbf{r}^5$, नदीविनिगमा b, नदीवित्तगमो f k, नदीवहेवताः h d \mathbf{m}^1 .— षट् ते h $\mathbf{m}^1\mathbf{r}^3\mathbf{r}^4\mathbf{r}^2\mathbf{r}^5$, पत्ने f k, पद्रे b.— $\mathbf{r}_3\mathbf{6}^{cd}$ – $\mathbf{r}_3\mathbf{8}^{cd}$ seem to be omitted in \mathbf{r}^1 (and \mathbf{r}^6 ?), as these five lines are relegated to a footnote by Rājendralāla Mitra.

- a Cp. Nirukta ii. 23: sarasvatīty etasya nadīvad devatāvac ca nigamā bhavanti.
- 137. (the six being) a 'Best Mother' (ambi-tame: ii. 41. 6) b, 'Alone' (ekā: vii. 95. 2), 'On the Dṛṣadvatī' (dṛṣadvatyām: iii. 23. 4^{cd}), 'Citra indeed' (citra it: viii. 21. 18), 'Sarasvatī' c (x. 64. 9 and vi. 52. 6^b). Yāska, however, regarded this (passage), 'She with her might' (iyaṃ śuṣmebhiḥ: vi. 61. 2) d, to be a seventh.

म्रंब्येका hm¹, मन्वेका fkr, भ्रनेका b.—चित्र इस hr³r⁴r²(?)r⁶, इमं bfk.

As the first line of the śloka contains pratīkas only, one would naturally expect six separate words to represent them; but according to the reading favoured by the MSS. (citra ic ca, sarasvatī) there are only five, sarasvatī representing two passages. On the other hand, the reading of bfk, citra imam, gives six pratīkas; imam (x. 75.5) is, moreover, most appropriate, as Sarasvatī is here invoked with a number of other rivers. Citra imam could easily have been corrupted to citra ic ca, the second word beginning with the same letter, and citra it being already familiar to the scribe from a previous occurrence (i. 48). Citra ic ca would much less easily be corrupted to citra imam. The id could not have been considered necessary for identification, as another stanza of the RV. also begins citra it (x. 115. 1). For these reasons citra imam appears to be the preferable reading.

1. In this passage Sarasvatī is again a Praüga deity; cp. 135, note a.

- o There are three pādas in the RV. beginning Sarasvatī: x. 64. 9 (sarasvatī sarayuḥ sindhuḥ), vi. 52. 6^b (sarasvatī sindhubhiḥ pinvamānā), and ii. 3. 8 (sarasvatī sādhayantī dhiyam). The latter passage could not have been meant, as Sarasvatī is here one of the three sacrificial goddesses along with Ilā and Bhāratī in an Āprī hymn. If sarasvatī is meant to represent two pratīkas, the second passage can hardly be objected to because it is only the second pāda of a stanza, since drṣadvatyām in the same line is the third pāda of a stanza.

 d This stanza is expressly stated by Yāska (Nirukta ii. 23) to be addressed to Sarasvatī as a river: athaitan nadīvat.
- 138. Aitara a regarding this (stanza) as a sacrificial text (yājyā) for the victim offered to Sarasvatī (sārasvata) in the Maitrāyaṇīya (Saṃhitā) b, because the oblation is (here) the chief thing c, has stated (that it is addressed) to Vāc d.

°खीतां hr³r⁴fbkr²r⁵, खीनां m¹.—याज्या hr³r⁴m¹br²r⁵, यज्या fk. The anusvāra must have dropped out owing to the following भै॰.—°जविषः hm¹r, °द्धिषः b, °द्धुधिष f, °द्धुदिष k.—एवैतरो hdm¹rb, एवोनरी fk.

- This name is not found elsewhere.

 b iv. 14.7 (among the yājyānuvākyā texts).

 That is, regarded from the point of view of the sacrifice, the goddess would be addressed, not the river.

 d That is, Sarasvatī = Vāc; cp. Nirukta vii. 23, where Sarasvatī is the only one of the fifty-seven names of vāc (Naighaṇṭuka i. 11) discussed.
- 139. (The hymn) 'Doer of fair deeds' (surāpakṛtnum: i. 4) is addressed to Indra, as well as seven others after it (5-11). Six successive stanzas (beginning) 'Then according to their wont' (ād aha svadhām anu: 6. 4-9) are addressed to the Maruts.

चान्यान्यतः hm^1b , चान्यतः fk, चान्योऽन्यतः r.—षलाद्ह bfr^4 , वलाद्ह kr^2 , षडाद्ह hdm^1r .—The end of the varga is here marked by p in bfk, not in hdm^1 .

29. Indra associated with the Maruts in RV. i. 6.

140. One (of them), 'What is firm' ($v\bar{t}u$ cit: 6.5) is sung in honour of Indra with the Maruts. But the latter hemistich of the (stanza) next but one to this (i.e. 6.7°) a is addressed to two deities.

^a That is, the third pada, this being a gayatrī stanza.

141. For while it is chiefly addressed to the host of the Maruts, Indra is at the same time intended to be distinguished thus: 'both glad (and) equal in brilliance' (mandū samānavarcasā); or (this means) 'with him who is glad (and) of equal brilliance'a.

- ^a These alternative explanations are based on Nirukta iv. 12: mandū madiṣṇū yuvāṃ sthali; api vā mandunā teneti syūt, samānavarcasety etenu vyūkhyātam.
- 142. Those to whom (the hemistich appears to be) addressed to two deities a, explain (the final vowel of) $mand\bar{u}$ as not liable to phonetic combination (pragrhnanti) b. One (however) who from his study (of it) recognizes the pāda to have only one deity, deserves a hearing;

मन्दू hdr, संज्ञ b, संद् k, मण्डू $r^1r^4r^6r^5$.— येषामेव $hm^1r^3r^4r^5$ b, येषामेष r, एषामेव fkr^2 . — एकदेवत्यम् hdbfk, °देवत्वम् m^1 , °देवत्यम् r. — विज्ञाया॰ hdbf, विज्ञेया॰ r. विज्ञाना॰ $r^1r^4r^5$.— ॰ध्ययनात् $hrm^1r^1r^4r^5$, °त्ययनात् fkr^2 , °त्यनयत् b.

- ^a The two deities would be the host of the Maruts and Indra; but cp. Griffith, Translation of the Rig-veda on i. 6. 7, and Grassmann, Wörterbuch, under mandu. ^b $Mand\bar{u}$ is treated as pragrhya in the Padapāṭha.
- 143. as Rodasī in the Λ tharva-veda (atharvāngirasa) is (regarded as one) of the wives of the gods a.

This praise is by the teachers regarded as chiefly addressed to the host of the Maruts ^b.

अथर्वाङ्गिरसे hrm^1 , अधर्वाङ्गिरसे b, आथर्वागरसे f, आथर्वागरसे k.— 143^{ab} is omitted in $r^1r^4r^6$.

a In RV. v. 46.8 ródasī is treated as pragrhya in the Padapāṭha (doubtless because not accented rodasī). This stanza also occurs in the Atharva-veda vii. 46.8. It is commented on by Yāska (Nirukta xii. 46), who, however, explains ródasī here as rudrasya patnī. Cp. Sāyaṇa on RV. v. 46.8.

b That the praise of the Maruts is predominant here, is supported by the wording of the Sarvānukramaṇī: 'the six (stanzas) ād aha (6.4-9) are addressed to the Maruts, vīļu cid (6.5), indreņa (6.7) are also addressed to Indra.'

144. As the host of the Maruts is chiefly addressed, Indra is at the same time intended to be distinguished. For the entire host of the Maruts is considered to share (in sacrifice) equally (samāṃśam) with the great Indra.

विचिकित्सितः $hr^3r^4bfkr^2$, विचिकित्स्यिते r.— मब्द्रणं महेन्द्रस्य hdr, मब्द्रणमहेन्द्रस्य $r^4(r^3?)bfk$, मब्द्रणंनिहेन्द्रस्य $r^1r^4r^6r^2$, सब्द्रणं प्रधानस्य m^1 .— समाणं hm^1r , समाणं f, भ्रमाणं b, समासं $r^1r^4r^6k$.— सकलं hm^1r , भ्राकलं $r^1r^4r^6$, साकला bfk.— The end of the varga is here marked by २९ in hm^1bfk .

30. The deities of RV. i. 12, and of the Aprī hymn i. 13.

145. The hymn 'Agni' (agnim: i. 12) has Agni as its divinity. In it one verse, 'by Agni Agni is kindled' (agnināgniḥ sam idhyate: 6^a), is addressed to two deities: they mean Nirmathya and Āhavanīya ^a.

°पिदैवत्यं hm¹r, °दैवत्यं b, °देवत्यो fk.—द्विदेवतः hbfk, द्विदैवतः m¹r³r⁴r⁵ (Sarvā-nukramaņī द्व्यपिदैवतः).—निर्मथ्या॰ r¹r⁴fk Sarvānukramaņī, निर्मन्थ्या॰ hdr⁶m¹b.—•था-र्थाव् hdm¹rb, °यार्थव् fk, ॰यार्था r¹r⁴, ॰यार्थे r⁶.

^a Two forms of Agni, the one being the fire produced by friction, the other the oblation fire. Cp. Sarvānukramaņī on RV. i. 12: pādo dvyagnidaivato nirmathyāhavanīyau.

146. Now as to the deities which, stanza by stanza, in the second hymn of twelve stanzas (i. 13), are praised along with Agni, hear their names from me.

यासु देवताः hm^1bfk , देवताः सुताः r.—सूयन्ते hm^1r , ख्यंते b, श्रूयते $r^1r^4r^6fk$.—स्थिना hm^1rb , पिना fk.—In $r^1r^4r^6$ 146^{cd} reads:

श्र्यते देवता यासां नामानि शृगुतेह नः।

147. In the first (stanza) Fuel a (idhma) is praised, in the second Tanūnapāt, Narāśaṃsa in the third, but in the fourth Ila is praised;

जुतश्विभो $h\,m^1r\,b$, श्रुतश्विभो $f\,k$, सिमञ्जजु $r^1r^4r^6$.— ज़ूयते लिळः $h\,m^1$, ज़ूयते लिजः r, ज़ूयते न्वितः b, श्रूयत न्विजः f, श्रूयतां विजः k.

- a On the Aprī hymns, see Roth, Erläuterungen, pp. 122-124.
- 148. but the Litter (barhis) in the fifth, then the Divine Doors with another (6), Night and Morning (naktoṣāsā) in the seventh, while in the eighth are praised together

देखस hm¹bfk, देखस r: the Sarvānukramaņī has the Vedic form देवी:.— न्यया hm¹rfb, न्यपा r⁶, न्यथा kr².—संजुती सह hm¹r³, जुती सह (सं being omitted) b, जुती रहे (the preceding four syllables षष्टम्यां सं being omitted) fk, स जुती सह r⁵r³, तु जुती सह r.

149. the two 'Divine' Sacrificers; in the ninth stanza are praised the Three Goddesses; but Tvaṣṭṛ is to be known as praised in the tenth.

दैव्याव hm¹r, देव्याव fkr²r⁵, देव्याद b.—सुतः hm¹r, स्वतः b, श्रुतः fk.—The end, of the varga is here marked by 30 in hdm¹bfk.

31. The eleven Apri hymns.

150. In the eleventh (stanza) of the hymn one should know Vanaspati to be praised, but in the twelfth one should know the divine 'Svāhākṛtis' to be praised.

स्तृतं m¹ r⁵, स्तृत b, सुत fk, स्तृतिं hdr.—देवीर् hm¹, देवी r³ bfk, देव्यो r.—°क्रतीर्रित hm¹ r³ bfk, °क्रतीरिह r.

151. Now as to the deities which, stanza by stanza, are celebrated in this hymn (i. 13), they (occur) in all the Āprīs; the second (deity), however, is subject to option (vikalpate) a.

॰या तु विकल्पते $h\,r^3\,r^6\,b\,f\,r^2$, ॰या तु विकल्प्यते m^1k , ॰यायां विकल्प्यते r.

^a As to how this option applies, see below, ii. 155-157.

152. As to the Āprī hymns, including the Praisas (ritual summons), they are eleven (in number); or (rather) the Praisa hymn^a (consists of) sacrificial formulas, while these other (hymns of the Rg-veda) are ten (in number)^b.

सहाप्रीमूत्तानि $hm^1r^3r^5$, सहैयमूत्तानि $bfkr^2$, सहैव हैतानि r.— तान्येकाद्श सन्ति च $hm^1r^3bfkr^2r^5$, त्वेकाद्श प्रचचते r.— यजूंषि $hm^1r^3fkr^2r^5$, यज्ञांसि b, यजुषः r.— श्रिराणि तु hm^1rb , श्रिराणि च k, श्रिराणि f.

^a Which consists of twelve yajūmṣi, that is, VS. xxi. 29-40. This is referred to by Yāska (Nirukta viii. 22) as praiṣikam (scil. sūktam), and included by him among the eleven Āprī hymns (tāny etāny ekādaśāprīsūktāni). Cp. Roth, Erläuterungen, p. 122.

^b The ten Āprī hymns of the Rg-veda are enumerated in the Anuvākānukramaṇī, 10-12, p. 48 of my edition of the Sarvūnukramaṇī. See also ĀŚS. iii. 2. 5 ff.

153. Now there are three (Āprī hymns) relating to the Sautrāmaṇī sacrifice (sautrāmaṇāni) a, one to Prajāpati (prājāpatya) b, and one used at the horse-sacrifice (āśvamedhika) c, and the one (employed) in the human sacrifice (puruṣasya medhe) d: these (make) six (special additional Āprī hymns) in the Yajur-veda (yajuhṣu).

पुरुषस्य तु hm^1 , पुरुषस्य च rbfk.—यजुःष्वेव r, यजुष्वेव hm^1bfk .—तानि षट् hm^1r^3 $bfkr^2r^5$, तञ्च ह r.

- That is, VS. xx. 36-46 (cp. S'B. xiii. 9. 3¹⁶, note); xx. 55-66 (cp. S'B. xii. 8. 2¹⁹); xxi. 12-22 (cp. S'B. xii. 9. 3¹⁶). b That is, VS. xxvii. 11-22 (see commentary on the first stanza and cp. S'B. vi. 2. 2¹ ff., especially ¹⁰ and note on ¹²). c VS. xxix. 1-11 (cp. S'B. xiii. 2. 2¹⁴). d Referred to in Sankh. SS. xvi. 12. 8 as beginning again mrtyuh.
- 154. Here only the Praisa hymn (VS. xxi. 29-40) need be (considered); that (which has been referred to beyond this) in the Yajur-veda (yajuhsu) need not be troubled about (here).

'Of those (eleven) the hymn relating to the Praisas a, and that which Dirghatamas sang (i. 142),

यजुःष्वाद्रियेत तत् m^1r , यजुष्वाद्रिये तत् h, यजुष्टाद्ये ततः b, यजुषा इत्येव तः fk, यजुःष्वाद्येषु च $r^1r^4r^6$.—प्रैषगतं hm^1r^3 , प्रैषक्ततं bfkr.—सूक्तं यस् hm^1 , यस यस r, यस तस fkr^2 , यस only b, यन्तु तस r^5r^7 .—The end of the varya is here marked by $\mathbf{39}$ in hm^1bfk .

^a That is, Āprī stanzas belonging to (-gata) or turned into (-kṛta) Praiṣas, the expression being equivalent to Yāska's praiṣika, consisting of Praiṣas.'

32. Tanūnapāt and Narāśaṃsa in Āprī hymns. Idhma a form of Agni.

155. and that which has been mentioned in (the collection of) Medhātithi (i. 13)^a: only these three contain both ^b (Tanūnapāt and Narāśaṃsa). Both that which is mentioned in (the collection of) Grtsamada ^a (ii. 3) and in (that of) Vādhryaśva ^a (x. 70),

मेधातिथी $hm^1r^3r^5r^7$, मेधातिथेर् fkr^2 , मेधातिथिं r.—•वन्ति तु hrbfk, •वंति च m^1 .—• ऋषी गृत्समदे $hm^1r^3r^5r^7$, च्छिष्गृत्समदो bfkr.—वाध्यश्च $hm^1r^3r^5r^7$, वाध्यश्चस् r, वाध्यश्च तं, वाध्यश्च k, वाष्ट्रयंखं k, वाष्ट्रयंखं k, वाष्ट्रयंखं k, वार्

a Which would constitute a rsi-sūkta according to i. 14, 15. b Ubhayavanti; cp. Nirukta viii. 22: maidhātitham dairghatamasam praisikam ity ubhayavanti; cp. Roth, Erläuterungen, p. 122; see also my Introduction to the Sarvānukramanī, p. xiv.

156. both (the hymn) of Atri (v. 5) and that (vii. 2) which was revealed to the son of Urvaśī (Vasiṣṭha), contain Narāśaṃsa. Tanūnapāt (appears in that) which Agastya (i. 188) and Jamadagni a (x. 110) sang,

अवेश $hm^1fr^3r^2r^5r^7$, अवेश b, अवे स k, अविस्तु r.—द्दर्श स $hm^1r^3bfkr^2r^5r^7$, द्दृश् थ r.— गस्यश्च $hm^1r^3br^5r^7$, गस्यस्तु r, no particle in k.— जमद्गिस्तु r, जामद्गश्च b, जामद्ग्यश्च r^5r^7 , वामदेवश्च hdm^1r^3 .—There is a lacuna in fk between गस्य and यज्जगी.

^a The reading of hdm¹r³, vāmadevaḥ, is doubtless a corruption of the incorrect reading jāmadagnaḥ. There is no Āprī hymn by Vāmadeva, while that of Jamadagni is particularly important, the whole of it being commented on by Yāska (Nirukta viii. 4-21); cp. Roth, Erläuterungen, p. 122, and Sarvānukramaṇī, Introduction, p. xiv.

157. and that which the seer Viśvāmitra (iii. 4) and Asita the son of Kaśyapa (ix. 5) sang.

Now as to the twelve deities which have been stated a (to belong) to the stanzas of Medhātithi (i. 13. 1-12),

॰थेर्म्यचा यांसु b, ॰थेर्म्यचा या तु fk, ॰थेर्म्यचो यासु $m^1r^3r^2r^5r^7$, ॰थेर्म्यचोर्यास्य h, ॰थेर्म्यचोर्यास्य d, ॰थेस्युचां यासु r.

а Above, ii. 146-150.

158. learn the manner (sampadam) in which they represent (sampadyante) Agni.

The Fuel (idh-ma) is the Agni who is everything; for this (Agni) is kindled (sam-idhyate) a as fuel. Or this form (i-dhma) is made from the root $dhm\bar{a}$; for fuel is kindled when blown $(dhm\bar{a}tah)$.

यथापिं ताः $hr^3m^1r^2r^5r^7$, यथापि ताः bfk, यथापीकाः r—सर्वम् $hr^3m^1bfkr^2r^5r^7$, सोऽयम् r—होध्मः $hm^1r^3r^6r^7$, होध्मो b, होध्मे r, होध्मो f—ध्मातेर्वेतस्तृतम् hm^1r^1 $r^3r^4r^6$, ध्मातेर्वेतस्तृतम् b, ध्मातेर्थेतस्तृतम् fk, ध्मातेर्वेतस्तृतम् r—ध्मातो r, ध्माते bfk, हेथिए hdm^1 —हीध्मः hm^1rbfk , होन्धे $r^3r^5r^7$.—The end of the varga is here marked by a0 in hm^1fk . The last pāda is repeated in b0 only.

^{*} This etymology corresponds to the only one given by Yāska (Nirukta viii. 4): ilhmah samindhanāt.

1. Tanunapat. Narasamsa. Ila. Barhis.

1. Now this same Agni is (also) Tanūnapāt a by name. That (celestial Agni) extends (yachati) b his body (tanum).

They say that 'Napāt' is a descendant c, and that the origin of this one (asya) is from that one (amutas) d.

यक्त्यसौ तनुम् $hm^1r^3r^2r^5r^7$, यक्तैत्यसौ तनम् b, यक्तित्यसौ तनुम् f, सोऽप्युच्यते तनूः r.— समुतोऽस्य $hm^1r^3bfkr^2r^5r^7$, स्रमृतस्य r.

- Cp. above, ii. 26: ayam tanūnapād agniķ.

 Cp. ii. 27: anantarām projām āhur napād iti.

 d Cp. ibid.: asau hi tananāt tanuķ.

 d Cp. ibid.: napād amuṣya caivāyam agniķ, and ii. 26^{cd}.
- 2. Now some say that Narāśaṃsa here is Agnia. Again (athava) others (use the term) in (the sense of) sacrifice b, (saying) all men (narah) utter praise (samsanti) seated at it.'

नैराग्नंसिमहैके तु $hm^1r^3bfkr^2r^5r^7$, °सिन्लहैके तु r.— अपिमाङर्थेतरे $hm^1r^3r^5r^7$, हतुमित्याङर्थंतरं fk, हेतुमित्याङर्थंतरं b, होतृभिस्लाङर्ध्वरे r.— इति वाध्वरे hm^1r^3 r^5r^7 , इति वा नरः bk, इति चानरः f, इति वादिनः r.

- n This is the opinion of Sakapūņi according to Yaska, Nirukta viii. 6: agnir iti sākapūņir: naraih prasasyo bhavati.

 b This is the view of Katthakya, ibid.: narāsaņso yajāa iti kātthakyo: narā asminn āsīnāh saņsanti.
- 3. Others say he is Agni, because he is Narāśaṃsa as the object of praise (praśasya) by men seated at the sacrifice a; and so also say the ritualists (rtvijo narah) b.

एतमेवाङ्गर्न्थेऽपिम् hm¹r³br⁵r७, इतिमेवाङ्गर्न्थेऽपिम् fk, तदाङ्गर्पिमेवायम् r.— ह्ययम् hr³bfkr²r⁵r७, त्वयम् r.—प्रशस्य hdb, प्रवास्य fk, प्रशंस m¹, श्रस्त r.—चैवर्त्विजो नरः hr³bfr²r७r७, चैवोर्जिजो नरः m¹, चैर्त्विजो नरः k, च ऋत्विजो नराः r.

- The previous sloka states two views corresponding to those stated in Nirukta viii. 6, that Narāsamsa is (1) Agni: naraih prasasyah (Sākapūṇi); (2) yajña: narā asminn āsīnāh samsanti (Kātthakya). The third here added is a combination of the other two: narair āsīnair adhvare prasasyah; it is identical with the explanation given in ii. 28: yajñe yac chasyate nṛbhih.

 b This expression is doubtless meant to be equivalent in sense to yājñikāḥ, so often used by Yāska.
- 4. Ila is a form made by the Rishis a, and (is derived) from the root id, expressing praise b: Agni is called $il\bar{a}v\bar{a}n$ c ('possessing

refreshment') either from that (root) or from the root $i\dot{q}$, expressing increase $^{\rm d}$.

इलस्पृषिक्ततं b, इषस्पृषिक्ततं fk, इषस्विषक्ततं \mathbf{r}^2 , इडस्त्विषक्ततं $\mathbf{r}^3\mathbf{r}^5\mathbf{r}^7$, इडस्त्विषक्ततं hdm¹, इलाव्वितक्ततं \mathbf{r} .— ईडिश्च जुतिकर्मणः $\mathbf{h}\mathbf{r}^3\mathbf{b}\mathbf{r}^5\mathbf{r}^7$, ईढिश्च जुतिकर्मणः f, ईट्रोश्च जुतिकर्मणः $\mathbf{k}\mathbf{r}^2$, ह्युषिभिगेतिकर्मणः r.— इळावांस् f, इलावांस् bk, इडावांस् $\mathbf{h}\mathbf{m}^1\mathbf{r}$.— वोक्तोऽगिर् $\mathbf{h}\mathbf{m}^1\mathbf{b}\mathbf{k}$, वोक्तौपिर् f, चोक्तािप् r.— इडिना $\mathbf{h}\mathbf{m}^1\mathbf{r}^3$, ईडिना $\mathbf{r}^5\mathbf{r}^7$, ईलिना fb, श्रिलना k, इरिणा r.— विधिकर्मणा \mathbf{r}^5 , विधिकर्मिणा $\mathbf{h}\mathbf{m}^1\mathbf{r}^3$, वुडिकर्मणा \mathbf{r}^7 , वित्तिन्मणा b, वास्तिकर्मणा fk, गितकर्मणा r.

- a The meaning of this reading (rṣi-kṛtaṃ rūpam) I take to be this: the form Iļa, it is true, does not occur in the Rg-veda; nevertheless it is Vedic, being abstracted by the Rishis from the various forms of the verb iḍ, 'to praise,' which occur in the Āprī stanzas addressed to Iļa (cp. Roth, Erläuterungen, p. 118). I was at first inclined to adopt the reading iṣi-kṛtaṃ, 'made from the root iṣ' (=iḍ, cp. Grassmann, Wörterbuch, sub voce iḍ); but this seemed incompatible with the following iḍeś ca (not iḍer vā) and tena in the next line, which points to a single antecedent etymology, while Yūska makes no reference to a root iṣ in his explanation of Iḷa (see next note).

 b Yāska (Nirākta viii. 7) derives iḷa from either iḍ or idh: iṭṭeḥ stutikarmaṇa indhater vā.

 c Our author has to say 'Agni is called iṭāvān,' because iḷa itself does not occur in the Rg-veda.

 d The preceding vā in vokto shows that the vardhi- of the MSS, must also contain vā (that is, vā ṛddhi-). The dropping of the d in the MSS, is doubtless due to confusion with vardhin and other derivatives of the root vṛdh, which happens to have the same meaning as ṛdh.
- 5. Again, this Agni is the Litter (barhis), for the whole of it (sarvam) is furnished (paribṛṃhitam) with food a, or because, when sacrificed to, he (Agni) is furnished (paribṛṃhitaḥ) b with fuel.

^a That is, the oblations are laid on it.

^b The etymological explanation is similar to that of Yāska (Nirukta viii. 8): barhiḥ paribarhaṇāt.

2. The Divine Doors. Night and Morning.

6. The Divine Doors, as they are called, are the wives of all (the gods) a; they follow Agnāyī, and so also Agnāyī (follows) Agnī b.

द्वारस्त r, द्वारस्व b, द्वारस्य hm¹r³fkr²r⁵r⁷ (on this corruption cp. critical note on i. 92). The MSS, have the correct form in i. 107 and ii. 148.— प्रोक्ता omitted in fk.— पत्नय: hdm¹, पत्नय b, यत्नय: fk, यत्नत: r.—6^{cd} follows the reading of hm¹rbfk:

- * This is doubtless suggested by RV. x. 110. 5 (commented on in Nirukta viii. 10): vi śrayantām patibhyo na . . . devebhyo bhavata suprāyaṇāḥ.

 * This remark is intended to show the identity of the devyo dvāraḥ with Agni (cp. i. 107): being the wives of the gods they represent Agnāyī, the wife of Agni, who comprehends all the terrestrial deities (see i. 105, 106). Sākapūṇi, in Nirukta viii. 10, identifies them with Agni: yajñe gṛhadvāra iti kātthakyaḥ; agnir iti śākapūṇiḥ.
- 7. Now being firmly established in Agni they are praised in combination with Agni. In their case also there is a predominance of Agni, both in praises and oblations a.

ध्रुवं स्थितासासु hrbfk, ध्रुवास्थितत्वानु $r^1r^4r^6$. — संसूयने $hm^1r^3bfkr^2r^5$, सूयने च r_i — सुतिष्वेव $hr^3r^5r^7$, सुतिष्वे m^1 , सुतिष्वय r, सुतिष्यं b, सुतिथय f. — हिंविषु च m^1r , हिंविषु च h, हिंवेषु च h

- a Because they, as well as the other Aprī deities, are regarded only as forms of Agni.
- 8. And as to the two goddesses, Night and Dawn ($naktos\bar{a}sau$), they too are regarded as related to Agni. For the Dark ($\acute{s}y\bar{a}vi$) a is related to Agni b, while Dawn is, as it were, a sixteenth portion ($kal\bar{a}$) of that time c ($k\bar{a}la$).

नक्तोषासी च ये $hr^3m^1fkr^2r^5r^7$, नक्तोषा सा च ये r, नक्तेवात्ये b.— श्चाव्यापेयी hm^1 bfr^5r^7 , श्चावापेयी r^3d , श्चामापेयी r, भ्याव्यापेयी k, माव्यापेयी r^2 .— तस्त्रीवो॰ bfkr, तथैवो॰ hdm^1 .— कलेव तु hb, कले च तु fk, कलेव तु m^1r , किलावमा $r^1r^4r^6$.

- a Syāvī is the first of the twenty-three names of night enumerated in Naighanṭuka i. 7.
 b Thus Syāvī = Night occurs in the first stanza of an Agni hymn (i. 71. 1).
 c That is, Uṣas being a part of Syāvī would also be related to Agni. Cp. Nirukta ii. 18: (uṣāḥ) rātrer aparaḥ kālaḥ. The reading of r¹r⁴r² is doubtless a corruption of kalāvamā, i.e. Uṣas is 'the last portion' of that time.
- 9. Dawn (usas) lightens a (uchati) the darkness, Night (naktā) anoints (anakti) b her with drops of dew (hima) c; or else this (form) might be (derived) from the root $a\tilde{n}c^{d}$, preceded by the negative $(na\tilde{n})$ c, (and) mean 'the indefinite-coloured one' (avyaktavarnā) f.

हिमिबन्दुभि: hm^1rb , हि बिन्दुभि: fk.— ऋषि वाव्य° hm^1r (Nirukta viii. 10: ऋषि वा - अव्य°), ऋभि वा॰ $bfkr^2$.— नञ्पूर्वीचेर् hd, नञ् पूर्वी वेर् r, नञ् पूर्वी चेट् m^1 , न पूर्वीयेर् b, न पूर्वियेर् f, (न पूर्व f) चेर् f0 चेर् f1 पूर्वियेर् f3.— This śloka is omitted in f1 f4 f6.

- b Nirukta viii. 10: nakteti . . a Cp. Nirukta ii. 18: usāh kasmād? uchatīti. anakti bhūtāny avašyāyena; ep. ii. 18 on rātri: rāter vā syād dānakarmaņaķ: pradīyante 'syām avaśyāyāh. c Hima-bindu, in the plural, is here substituted for the plural expression avasyāyāh, twice used by Yāska in connexion with night. d That is, $nakt\bar{a} =$ an-aktā: as far as the meaning is concerned, the derivation from anj (from which comes vy-akta itself) would have been more natural; but the author doubtless wanted a root different from the one he had already used in his first etymology (anakti). Rajendralala Mitra, who has the corrupt reading pūrvām ver, refers to RV. i. 72. 9, where the word veh occurs. This is indeed verification gone wrong. ^e An early occurrence of the f Cp. Nirukta viii. 10: api technical form of the negative prefix as used by Pānini. vā naktā avyakta-varnā.
- 10. For at first she becomes Gloaming $(dos\bar{a})^a$, at midnight she is Darkling $(tamasvat\bar{\imath})$, and before the rising of the Sun she becomes Dawn (usas) by name.

दोषा $hm^1r^1r^4r^6$, वोषा fkr.—निश्रीथ सा $hm^1r^3br^2r^5r^7$, निश्रीय सा fk, मध्ये प्राप्ते r.—तमस्त्रती bfkr, तमस्त्रिनी $hr^3r^2r^5r^7$, तपस्त्रिनी m^1 . I have preferred तमस्त्रती, since it is the form which occurs in Naighantuka i. 7 as one of the names of night.—सेषा hm^1r , शिषा b, शिषा fkr^2 .— 10^{ab} comes first in $hm^1r^3bfkr^2r^5$; in $r = r^1r^4r^6$) 10^{cd} comes before 10^{ab} .—The end of the varga is here marked by a in a in a, by a figure meant for a, but looking like a, in a, by a in a, not at all in a1.—This śloka is numbered a300 in a1.

^a Doṣā and Tamasvatī, as well as S'yāvī and Naktā, occur in Naighaṇṭuka i. 7 as synonymns of Rātri.

3. The Two Divine Sacrificers. The Three Goddesses. Tvastr.

11. Now the Two Divine Sacrificers are the terrestrial and the middle (forms of) Agnia. For they were born from the celestial (divya) Agni; they are therefore celestial (daivya) by birth.

दैवाव् bm¹r (Sarvānukramaņī), देवाव् hdr³fkr².— अभी hm¹r³r⁵r³, अघी b, omitted in fk, उसी r.— अभेहिं hm¹r³bfkr²r⁵r³, अभेसु r.— देव्यी m¹b, देव्यी hdr, देव्यो fk; ep. above, i. 108.— जवाना hm¹r, जनावा bfk, कथ्यते r¹r⁶r²r⁵.

a This agrees with Yāska's explanation in Nirukta viii. 11: daivyau hotārāv ayam cāgnir asau ca madhyamaḥ.

b That is, daivya is treated as a patronymic formation from divya: cp. ii. 26.

12. Now they who are called the Three Goddesses are here simply (representative of) Speech (Vāc) in the three spheres. She is spoken of by a threefold name a as abiding in the three lights b.

वर्तिनी hm1r, वर्त्तनी fbk.

- a On the three forms of Vac, see above, ii. 72 ff. b Cp. above, i. 90.
- 13. Iļā follows a (the terrestrial) Agni, Sarasvatī b is attached to (prāptā), the middle one, while that (celestial form of Vāc) becomes Bhāratī as occupying that (celestial) world.

॰नुगेळा hdm1, ॰नुगेला r, ॰नुसेला r1r4r6, ॰नुसेला b, ॰नुग्रेला fkr2. — मध्यं प्राप्ता लोकं hm1rb, स्थितविलोकं r1r4r6, स्थिता इलोके fk. -- भवति hm1, भव d, भवती fk, भरती b, भारतो r.

- . a Anugā: cp. anuvartate, above, iii. 6. b Cp. above, ii. 76.
- 14. Now this same Vac is threefold (as) in heaven and in air and here (on earth). Both when individual and combined she belongs (bhajati) to a all these (three) Agnis b.

वासे hm1b, से d, वार्म fk, वे वाग r.—व्यक्ता bfkr, वाप्ता r1r4r6, व्यक्ताम् hdm1.— समस्ता bfkr, समस्ताप् hm1. - भजत्य hm1r1r4r6bfk, भजते r. - भानपि hdrbfk, ॰मानन $r^1r^4r^6$.

- a Cp. śrita in i. 108, anuga in iii. 13, and anuvartate in iii. 6. b Thus not only does Ila, the terrestrial form of Vac, belong to the terrestrial Agni, but all the 'Three goddesses' belong to the terrestrial Agni (i. 108), as well as to the other two forms of Agni.
- 15. Now as to Tvastr, there is praise (of him) as this same terrestrial Agnia; or (it may be said) there are stanzas b to him as terrestrial, and there is one stanza e also in the (hymns) to the seasons (addressed) to (him as) one or other (kasyāpi, form of Agni)d.

यस्वयं प्रोत्तः hm1r3 (°त्ख् r3), यः सोऽयमेव r, यसुणामेव r2r5r7, यःसुणामेव fk, यः णामेव b.— खुति: hm1r3br2r5r7, सुति: f, श्रुति: kr.—वर्च सु: hdbm1fk, वर्च: सु: m r—कस्याप्युक् $m hdm^{1}r$, कस्यापुक् $m r^{5}r^{7}$, काञ्चावीच् $m fkr^{2}$, कीञ्चापीच् m b, कीत्साचिष्व् $m r^{1}$ r4r6. — चार्तवेषु च hdrm1fkr2r5r7b, ऋार्त्तवीषु च r1r4r6. — The whole line has the following modified form in r¹r⁴r⁶: पार्थिवो वाध्यक्षे च कौत्साचिष्वार्त्तवीषु च.—The end of the varga is here marked by 3 in dm1bfk.

a That is, in Aprī hymns; our author agreeing with the view of Sakapūņi quoted in Nirukta viii. 14 (agnir iti śākapūṇih), as well as with the view represented by the Naighantuka, where Tvastr is first mentioned among the Apri deities (v. 2), secondly, among the atmospheric deities (v. 4), and thirdly, among the celestial deities (v. 6). According to the view of others, Tvastr in the Aprī hymns belongs to the middle group: mādhyamikas tvastā ity āhuh, madhyame ca sthāne samāmnātah (Nirukta viii. 14). He is stated below (iii. 25) to belong to the middle group, when rūpakartā. Cp. Sieg, Sagenstoffe, p. 14. b That is, in the stanzas of the Apri hymns addressed to him, he represents the ter-^c The third stanza in two of the three hymns to the Seasons (i. 15; restrial Agni. ii. 36; on ii. 37 see below, iii. 36) is addressed to Tvastr, though the name occurs in d That is, in the hymns to the Seasons any one of the three forms of Agni may be mount. The general sense of the second line I take to be: Tvastr in the Aprī hymns represents the terrestrial Agni only, but in the hymns to the Seasons he may represent one of Agni's other forms. I am, however, somewhat doubtful whether I have interpreted this passage correctly.

4. The celestial Tvastr. Story of Dadhyanc and the Mead.

16. (Tvaṣṭṛ) may be (derived) from tviṣ or from tvakṣ, or (it means) 'he quickly (tūrṇam) obtains (aśnute)'a, or 'he assists (ut-tāraṇa) in works (karmasu)'b: therefore he obtains this name.

खबतेवी $hr^3br^5r^7$, तचतेवी m^1 , तुचिते वा fkr^2 , तुष्ट्रतो वा r. — तूर्णमञ्जत एव वा hm^1 (ep. Nirnkta viii. 13), तूर्णमञ्जत एव वा r^2r^3 , तूर्णमञ्जत एव च r^5r^7 , तूर्णमञ्जत एव वा bfk, तूर्णमञ्जवतीति वा r. — कर्मसूत्तार्णो विति hr^3br^5 , कर्मसूत्तार्णो वित्ति r^2r^7 , कर्मसु तार्णो वित्ति fk, कर्मसु त्वर्णां वित्ति r.

- a These three etymologies are derived from Nirukta viii. 13: tvaṣṭā tūrṇam aśnuta iti nairuktāḥ; tviṣer vā syād dīptikarmaṇas, tvakṣater vā syāt karotikarmaṇaḥ. In connexion with tviṣi-tas, 'from the root tviṣ,' Mitra gives one of his marvellously irrelevant references to the Rg-veda, x. 84. 2: 'thou art brilliant (tviṣitas), O Manyu, like fire.' This additional etymology may have been suggested by Yāska's (tvakṣateḥ) karotikarmaṇaḥ. The suffix -tar would be accounted for by tāraṇa, while tvaṣ would be explained by transposition of letters (as in Yūska's parjanya from tṛp) from ut and karmasu. This is certainly going beyond even Yūska's wonderful achievements in etymology.
- 17. The thousandfold ray of the sun which abides in the moon, as well as the mead (madhu) which is above (puram) and on earth (iha), also (abides) in the Tvaṣṭṛ (who is) Agnia.

॰तमो रहमी $hr^3m^1r^5$, ॰तमो यसु b, ॰तमो यस्त fk, ॰तमौजस्तु r.—चन्द्रमुपाश्रितः hm^1rb , चन्द्रमुपाश्रिता fk, चन्द्रमसो श्रितः $r^1r^4r^6$.—सोऽपि $hr^3m^1br^2r^5r^7$, सापि fk,

सोऽयम् r.—°वापिं $hr^3m^1r^5r^7$, °वापिः br, °वापि fk.— चेह च hr^3 , वेद च m^1r^5 , वेद व $fbkr^2$, देव च r^7 , वन्दे च r.— यसधु $hrm^1r^5r^7$, तं मनुं fr^2 , तं मनु k.

- A This is the celestial Tvastr who is the guardian of the heavenly Soma (cp. my 'Vedic Mythology,' pp. 52 and 116), the abode of which is the moon (op. cit., p. 112). Agni is also a guardian of Soma (op. cit., p. 90), and in the later mythology the sun is regarded as replenishing the moon when caused to wane by the gods drinking up the Soma (op. cit., p. 112). Having thus stated Tvastr's connexion with the heavenly mead, the author goes on to relate the story of how the Aśvins obtained it from Dadhyañc.
- 18. a Well-pleased (with him, Indra) bestowed on the son of Atharvan (i. e. Dadhyañc) even that spell (brahma) b; and the seer became more brilliant by means of the spell.

ब्रह्मापि $hr^3m^1bfkr^2r^5r^7n(g)$, ब्रह्मा च r, र्न्होऽपि n. — मुताय $hr^3m^1bfkr^2r^5r^7$, पुचाय r.—तद्थर्वणः $hr^3m^1bfkr^2r^5r^7$, यद्थर्वणे r, (मुधना)यमथर्वणः n, (मुधृता)यमथर्वणः n(m), (मुधता)यमथर्वणः n(g).—दीप्तिमत्तरः $hr^3m^1bfkr^2r^5r^7$, वीर्यवत्तमः r.— 18^{cd} is omitted in n.

- The story of Dadhyañe, as far as related in the following six ślokas (18-23, excepting 18^{ed}), is quoted in the Nītimañjarī on RV. i. 116. 12. It is also told by Sāyaṇa (on RV. i. 116. 12), who states that it is narrated at length in the Satyāyanaka and the Vājasaneyaka. It is to be found in the Satapatha Brāhmaṇa (xiv. 1. 1¹⁸⁻²⁵; see Sacred Books of the East, vol. xliv, pp. 444 f.).

 b Which reveals the abode of Soma.
- 19. Indra forbade the sage (saying), 'Do not speak anywhere of the mead thus (revealed); for if this mead is proclaimed (to any one), I will not let you escape alive.'

तमृषिं hm^1bn , तं मृषिं n(m), तमृषि fk, तमृषिर् r, तं लृषिर् $r^1r^4r^6$.— न हि प्रोक्ते मधुन्यस्मिन् hm^1rbfk , मधौ ब्रह्मन् $r^1r^4r^6$, चिप्रं प्रोक्ते मधौ तिस्मिन् n.—जीवनं त्वोत्मृजान्यहम् hm^1rbfkn , जीवनं त्वहमुत्तुं $r^1r^4r^6$.

20. Now the divine Asvins asked for the mead in secret from the seer; and he told them what the Lord of Sacī had said.

विवित्ते $hr^3m^1r^5r^7$, विविवेन् b, विवेचेन् f, विवेचेन् k, विधिवन् r, मिषजी n.— तदाचष्टे $hm^1rbn(g)$, सदाचष्टे f, तज्ञाचष्टे n.— The end of the varga is here marked by 8 in hm^1bf , not k.

5. The horse's head of Dadhyanc. The middle Tvastr.

21. To him the Nāsatyas spake: 'Do you quickly make us two receive the mead by means of a horse's head; Indra shall not slay you for that.'

म्राष्ट्रीन $h\,r^3\,r^5\,r^7$ Sāyaṇa, म्राग्नेन n(g), ऋषिन $m^1\,r$ n, म्राप्तेन fk, यथिन b. — भवान् $h\,m^1\,b\,fk\,n$, (भवत् r. — याहयत्वावां $h\,r^1\,r^4\,r^6$, याहयत्वागं m^1 , याहयत्वा च fk, याहयत्वावे b, याहय तं तन् r, याहय तं च n. — मेन्द्र्थ $b\,r^2\,r^3\,r^5\,r^7$, मेन्द्रः य f, मेंद्र्थ m^1 , ऐन्द्र्थ $h\,d$, नेन्द्र्थ r. — त्वा वधीत्ततः $h\,m^1\,r^3\,r^2\,r^5\,r^7$, त्वां ववीततः b, त्वां व्रवीततः f, त्वां हनिष्यति r, (द्ध्य इ f) ध्वव्रवीत्ततः g.

22. Because Dadhyañc had told (the secret) to the two Aświns with the horse's head, Indra took off that (head) of his; (but) his own head they (the Aświns) put on (again)^a.

आखीन $m^1r^5r^7$, आश्चेन n(g), आखीन hrbfk. — तौ तु hm^1r , तत्तु $r^1r^4r^6$, ताभां $bfkr^2n$. — तद्खेन्द्रो hm^1bfk , तदाखेन्द्रो r. — हरत्खं तं bf, हरत्खं तद् n(g), हरत्खंतर् n, हरत्संतं r, हरदाव hr^3m^1 , हरज्ञान्य r^5r^7 . — न्यधत्ताम् m^1 , न्यधात्ताम् r, न्यवताम् bf, नवताम् kr^2 , नधत्ताम् $hr^3r^5r^7$, अधाताम् n(m)n(g), दधीताम् n (Sāyaṇa has the forms निधाय and प्रत्यधत्ताम्). — यिक्ट्राः $hr^3bfkr^2r^5r^7n$, तौ शिर्ः r.

- "The S'B. and Sāyaṇa tell the story only as far as the replacing of the head; cp. S'B.: atha asya svam śira āhrtya tad dha asya prati dadhatuh; Sāyaṇa: svakīyam mānuṣam śiraḥ pratyadhattām. The S'B. uses the expression āśvyaṃ śiraḥ, and the verbs chid and apa-ni-dhā.
- 23. And the horse's head of Dadhyañc, severed by the bolt-bearer with his bolt, fell in the midst of a lake on Mount Śaryaṇāvat.

दधीचय hm¹ r³br⁵ r⁷, दधीवय fk, दधीचस्रच् r. — वास्त्रं hm¹, चायं r, चाय b, वास्त fk, (दधीचोऽयश्रिर्म्) चास्त n.— इतं MSS. and r, क्त्रं n.

24. Rising up from the waters (and) bestowing manifold boons on living beings, it lies submerged in those same waters to the close of the cosmic age (yuga).

तद्श्रम् hm^1r , तद्श्रम् f, तद्श्रम् k, तश्चम् h, तिच्छ्र्म् $r^1r^2(?)r^4r^6$. — प्रादाय $hm^1r^3r^2r^5r^7$, प्रादात्स r, प्रदाय bfk. — ॰पर्यन्तं hm^1r , ॰पर्यन्ते bfk. — निमज्जिति hm^1r^3 $bfkr^2r^5r^7$, न्यमज्जत r.

25. That Tvaṣtṛ, who is in the group of the middle sphere $(m\bar{a}dhyamika)^a$, is a modifier $(vikartṛ)^b$ of forms. He too is praised incidentally; a hymn to him does not exist c.

निपातेन hm¹rbfk, निपाते च r¹r⁴r⁶.—तस्य न r, तस्य च hm¹, तस्य (no particle) bfk.—The end of the varga is here marked by **4** in hm¹bfk.

^a Cp. Nirukta viii. 14: mādhyamikas tvastājīty āhur, madhyame ca sthāne samāmnātaḥ.

^b Tvastr is often spoken of in the RV. as a fashioner of forms, and is called rūpakrt in the TS. &c.; cp. my 'Vedic Mythology,' p. 116.

^c See op. cit., p. 116, B, line 5.

6. Vanaspati. The Svähäkṛtis.

26. Now he whom they proclaim as Vanaspati is this (ayam) Agni a sa Lord of the Wood; for this (Agni) is lord (pati) of woods as (their) protector ($p\bar{a}t\bar{a}$), or because he guards ($p\bar{a}layati$) them b.

पालयतीति वा hm1r1r4r6bfk, पालयतीति च r.

- ^a Vanaspati as an Āprī deity is here (RV. i. 13.11) identified with the terrestrial Agni; but above (i. 66), where the three forms of Agni are distinguished, Vanaspati represents the middle Agni, as Jūtavedas does in i. 67.

 ^b Cp. Nirukta viii. 3: vanānāṃ pātā vā pālayitā vā.
- •27. This (ayam) Agni is also lauded as Vanaspati by Grtsamada in the third (stanza) a of the hymn 'Enjoy' (mandasva: ii. 37), which contains six stanzas.
- ॰पतिरिती॰ hm^1 , ॰पतिवद् bfkr.—॰िखतः b, ॰िसतः fk, ॰िउतः hm^1r .—मन्द्खेत्यस्य bfkr, मन्द्खेति च $hm^1r^3r^5r^7$.—सूक्तस्य bfkr, सूक्तेन m^1 , सूक्ते च hr^3 .
- ^a This stanza is commented on by Yāska (Nirukta viii. 3) as an example for Vanaspati. He quotes four others (viii. 17-20) in connexion with Vanaspati as an Āprī deity (x. 110. 10; iii. 8. 1; and two stanzas not from the RV.).
- 28. But an occasional (*prasangajā*) praise of him (Vanaspati), as a sacrificial post a and as a tree, with the whole b hymn, 'They anoint' (*anjanti*: iii. 8), is (to be found) in the third Mandala.

यास्य $hm^1r^3hr^2r^7$, याच r, या fk. — सर्वेणाञ्जन्ति $hm^1r^3fkr^2r^5$, सर्वेणां यति r^7 , सर्वेषां जोति h, समस्रेनैव r.

- ^a Cp. below, iv. 100. ^b Yāska in his comment on RV. iii, 8. 1 merely remarks (Nirukta viii. 16) regarding Vanaspati: agnir iti śākapūnih. But in commenting on RV. x. 110. 10 (Nirukta viii. 17) he observes: tat ko vanaspatih? yūpa iti kātthakyah, agnir iti śākapūnih.
- 29. As to the Svāhākṛtis—the views of the learned have been various. It is, however, a certain conclusion that all that (viz. which is meant by the term) a is simply (a form of) this Agni b.

°ष्ठतयो ६नेका स $hm^1r^3fkr^2r^5r^7$, °ष्ठताखसंख्यासु $r^1r^4r^6$, °ष्ठतीष्वसंख्यासु r.—खयं $r^3br^5r^7$, खयं hm^1 , सो ६यं r, omitted in fk.

- ^a Cp. the various explanations of the term given in Nirukta viii. 20. ^b Cp. Yāska's remark (Nirukta viii. 22) after stating the various deities with which the prayājās and the anuyājās had been identified: āyneyā iti tu sthitih, bhaktimātram itarat, 'it is, however, certain that they represent Agni; everything else is merely an attribute.'
- 30. For he is the maker $(kart\bar{a})$ of oblations $(sv\bar{a}h\bar{a})$; the making (krti) of them, (that is to say,) here is of a single nature $(ekaja)^a$: it is he who is the source $(pras\bar{u}ti)$ of living beings, the imperishable (source) of all of them.

हि कर्ता $m^1r^3r^2r^5r^7$, ह कर्ता hbfk, कर्ता च r.—खाहानां $hm^1r^3bfkr^2r^5r^7$, देवानां r.—जितसामाम् hbfk, सा क्षतिसाम् r.—सर्वेषाम् $hr^3bfkr^2r^5r^7$, स तेषाम् r.—The end of the varga is here marked by ξ in hdm^1bfk .

a In this etymology krti is explained by kartr: while there are many svāhās, there is only one maker of them, that is Agni, the source of all beings (ep. i. 61).

7. Tanunapat and Narasamsa. Deities of RV. i. 14 and 15.

31. Both the second (stanza) with Tanūnapāt and that which contains Narāśaṃsa, are combined as applicable (prayoktavye) in only three ^a (hymns) which (thus) contain both ^b.

॰पाह्नि॰ r, ॰पादि॰ hdm¹bfk.—॰या च hr³bfkr²r⁵r³, ॰या तु r.—नरा॰ rbfk, नस॰ f, नारा॰ hd.—समस्रोते hm¹r³kr², समस्रोते fb, समस्रोते r⁵r³, समस्राते r.—॰वत्सु m¹rbr⁵r³, •वत्स fk, •वस्य hr³.—तु hm¹r³br⁵, नु fk, च r³, इह r.

- ^a See above, ii. 155, note ^b.

 ^b That is, Tanunapat and Narasamsa.
- 32. The (stanza) containing Narāśaṃsa, as well as the second a, may be (applied in behalf) b of those wanting children, (of him) who desires strength or who desires food, as well as (of him) who may wish for prosperity.

वा खाद् fr, वा खा bk, चाखा hr^3r^5 , च खाद् m^1 .—•या च $hr^3fkr^2r^5r^7$, •ये (प्र•) b, •येह r.— त्रकामो वा $hm^1r^3bfkr^2r^5r^7$, थवा या खाद् r.— भूतिमिक्दियापि यः hm^1 $r^3br^2r^5r^7$, भृतमिक् तथापि यः fk, भूरिमिक्टित वापि यः r.

^a That is, the stonza containing Tanūnapāt.

^b That is, apart from their usual sacrificial application as Āprī stanzas.

33. The hymn, 'Hither with these' (aibhiḥ: i. 14), which invoking Agnia is spoken of here as addressed to the All-gods (vaiśvadeva), is recited (śasyate) among the hymns to the All-gods, because, being composed in the gāyatrī metre, it contains the characteristic 'All' (viśva) b.

सूक्तमैभिर्यद् h, सूक्तमेभिर्यद् $m^1r^3fr^2r^5r^7$, सूक्तमेभिर्य k, इति यन्त्वेभिर् r.— ग्रस्थते hm^1rb , कास्यते fk.—iii. 33^d =ii. 128^d .

- Agni is the only god invoked in the vocative in this hymn; but the gods, thrice with the characteristic viśve, are several times mentioned in it, as well as several individual gods (in 3 and 10). Cp. below, iii. 51.

 b Cp. iii. 43, and ii. 128, 133, 134.
- 34. As to the hymn, 'Indra, drink Soma' (i. 15), consisting of twelve stanzas, and addressed to the Seasons a, (the seer) praises in it seven deities b in their respective stanzas, together with the Season (rtu).

पिनेतीदं hm^1r^3 , पिनेतीमं $r^2r^5r^7$, पिनेतीनं bf, इतीन्द्रं तु r.— यदादश्कम् MSS., यहादश्कम् r.

- ^a That is, the deities of the Rtuyājas; cp. AB. ii. 29. b Enumerated below, 37, 38.
- 35. There (the deities) are characterized in the plural and in the singular, in six stanzas (1-6) 'with Rtu' (rtunā), in four with the Rtus (rtubhiḥ), then again in two (11, 12) 'with Rtu'a.

चतस्रष्टृतुभिः सह r, चतस्रष्टृतुभि सह b, चतस्रवृतुभिः सह fk, चतस्रष्ट्यतुभिः सह hd.— The end of the varga is here marked by \circ in dm¹bfk, by \circ in h.

^a This statement is only approximate as regards this hymn of the RV. (rtunā occurs in 1-4 and 6, while 5 contains rtūňr; rtubhih occurs in 9 and 10 only, and no form of rtu in 7 and 8; rtunā in 11 and 12); but it is an exact description of the twelve Praisas for the Rtu offerings; see TS. vi. 5. 3; AB. ii. 29. 2-4, and Haug, vol. ii, p. 135, note ¹².

8. Hymn to the Seasons: RV. i. 15.

36. The Rtus are here incidentally praised with the deities: so it is both in the hymn of summons (praise) for offerings to the Rtus, and in the hymn of Gṛtsamada a also.

गार्त्समदेशप fk, गार्त्समदेति च b, गार्त्समदेषु च hdm1.—35, 36 omitted in r1r4r6.

- ^a That is, RV. ii. 36; cp. AB. v. 9.6, Haug, vol. ii, p. 336, note ⁸; see also Oldenberg, Prolegomena, p. 193, on the relation of RV. i. 15 to ii. 36 and 37 (which two really constitute one hymn).
- 37. Now with the first a (stanza) he (the seer) praised Indra, the Maruts with the second, Tvaṣṭṛ b with the third, and Agni with the fourth;

चतुर्थ्या चामिमेव च $m^1 r^3 b r^2$, चतुर्थ्या चामिमेव च hd, चतुर्थ्य वामिमेव च fk, ऋमिन्तु पर्या ततः r.

- ^a With $mukhyay\bar{a}$, compare $mukhe\ tu\ y\bar{a}$, v. 1. ^b On Tvastr in the Rtu hymns, cp. above, iii. 15.
- 38. with the fifth Sakra (Indra) again, the two gods who delight in truth (Mitra-Varuṇa) with the sixth, and with the four a beginning with the seventh (7–10) Agni Dravinodas.

पञ्चम्या hdm1r, पञ्चम्यां bfk.

- a Caturbhil, agreeing with saptamyādyābhil, clearly used as a feminine; cp. above, ii. 44.
- 39. The divinity of the formulas of the Rg-veda is to be known from authoritative statement a (ādeśa), not from its characteristic mark (linga); for it is not possible to know actually (tattvena) the divinity of these (stanzas) from its characteristic mark b.
- न जिङ्गतः hm¹rbfk, तु जिङ्गतः r¹r⁴r6.—ह्यासां hbfkr²r5r7, यासां m¹, प्यासां r.— देवतं hm¹rbfk, देवताः r¹r⁴r6.
- ^a Cp. below, iii. 109. ^b That is, Agni is not mentioned by his actual name, but only by the attributive Dravinodas, which might designate another god (though it is a well-known epithet of Agni; cp. i. 106; ii. 25; but see iii. 61).
- 40. With the eleventh (he praises) the Nāsatyas (Aśvins), with the twelfth this Agni again. Rathītara, however, says that this hymn consists of single separate praises a.

एकादश्चा hdm¹fr, एकादश्चां bk.—रथीतरः hrbf, रथांतरः kr².—The end of the varya is here marked by ⊏ in bfkm¹, not in hd.

^a In other words that it is a prthakstuti, one of the three kinds of hymns to the All-gods; cp. below, 43.

9. Three kinds of hymns to the All-gods.

41. For where, in (a hymn) with many deities or two deities, each deity is praised singly a (ckaikā) or by qualities arising from its activities b, they regard that (hymn) as one containing distributed praise c (vibhakta-stuti).

बक्रदैवे द्विदैवे hm1r, बक्रदेवते द्वन्द्वे bfkr2, बक्रदेवताद्वन्द्वे r1r4r6.—ग्रीवी hm1rbfk, गुणै: स्वैर् $\mathbf{r}^1\mathbf{r}^4\mathbf{r}^6$.— विभक्तखुति तद् \mathbf{r} , विभक्तखुततद् $\mathbf{f}\mathbf{k}$, विभक्तखुतिमद् \mathbf{b} , विभक्तिखुति तद् $\mathrm{hdm^{1}}$, मभितासुति तद् $\mathrm{r^{1}r^{4}r^{6}r^{2}}$ (?); cp. v.r. below, iii. 82; विभितासुति: in Nirukta vii. 8.

- ^a Cp. below, iii. 82, where ekavat 'in the singular' is used. b Cp. below, ° Yāska, in Nirukta vii. 8, gives RV. x. 17. 3 as an example vi. 69, on RV. viii. 29. of vibhaktistutik (where Pūṣan and Agni are praised separately in the singular) as opposed to a samstava or 'joint-praise.'
- 42. Now the hymns to the All-gods (vaiśvadeva) are of three kinds: that which is provided with joint-praise of the Sun (sūrya-saṃstava), that which contains the characteristic 'All' (viśra-linga), and that which contains separate praise (prthak-stuti).

चिविधानि hm1r, चिविधा वै b, चिवेधा वै fk.—प्रथक्सुति h, ॰ितः dm1bfkr (ep. ॰सुतीदं in 40 and ॰सुतीति in 43).

43. That which is called 'Separate praise' (prthak-stuti) one should recognize as addressed to many divinities; that which is characterized by 'All' (viśva-linga) a is the one in which (the gods are praised) with their universal (viśva) b qualities arising from their activities c.

प्रथक्जुतीति hm1bfk, ॰जुति तु r.— विश्वैः स्वैः hm1r, विश्वे स्वः f, ॰श्वः k, विश्वेसीः b.— कर्मजैर्गुए: hm¹rbfk, स्वकर्मभि: स्तृत: $r^1r^4r^6$.— 43^d =iii. 60^b .

- ^a The term viśvalinga occurs in Nirukta xii. 40, where Yāska states the view of Sākapūņi that only such hymns are vaišvadeva as contain the characteristic word višve. ^b Cp. above, ii. 134. See Roth, Erläuterungen, p. 167. ^c Cp. vi. 69.
- 44. That which with reference to the All-gods frequently praises the Sun, (and) at the same time praises the gods themselves, they call a joint-praise of the Sun (sūrya-saṃstava).

उद्दिश्च यद् rm1, उद्दिश्च वद hdb, (विश्वां) न्हिश्च वद f, विश्ववद k.—देवान्सीति $hm^1 hk$, देवां स्तीति f, देवांसु यव $r^1 r^4 r^6$.

45. But (the term a does) not (apply) at the beginning of the hymn to Bhaga b, nor in hymns to Uṣas, nor in the hymn to Savitr, 'I invoke' (hvayāmi: i. 35), nor in the Sūryā (hymn) d, in (regard to) oblation (and) sacrifice (makha);

मागस्य मूक्तादी $hdm^1r^3bfkr^2r^5r^7$, मागो स्वमूक्तादी r^6 , भागोऽश्वमूक्तादी r (cp. 51).—•वीषसेषु वा br^5 , •वोषसेषु वा hm^1r^3 , •कोषसेषु वा fk, (न मूर्य) त्वीषधेषु वा r.— मखि $hdm^1r^3bfr^5$, मुखे rk.—The end of the varya is here marked by $\mathbf C$ in hdm^1bfk .

That is, vaiśvadeva.

b Bhāgasya sūktādau = bhāgasya sūktasya ādau: in the first stanza of vii. 41 (the only hymn to Bhaga in the RV.) a number of other gods are mentioned, but it is not vaiśvadevī.

c In the first stanza of this hymn Savitr is associated with several other deities, but it is not vaiśvadevī.

d RV. x. 85, to the first stanza of which a similar remark applies.

o This, I suppose, means: nor are stanzas from these hymns treated as addressed to the All-gods when applied sacrificially.

10. How to ascertain the deity of a hymn.

46. nor, similarly, in any other formulas (which are) statements $(prav\bar{a}d\bar{a}h)^a$, or where the word 'associated' $(sajos\bar{a}h)$ or 'together' $(saj\bar{a}h)^b$ may be (used).

प्रवादेषु $hm^1r^3bfkr^2r^5$, प्रपादेषु r.

- ^a That is, when names are merely mentioned and do not imply an invocation. ^b Which, governing the accompanying name in the instrumental case, put it in a subordinate position.
- 47. But the old Lāmakāyana a states even that (hymn) to be addressed to the All-gods, in which many (deities) are celebrated even incidentally (prasangāt).

यस्मिन् hm^1rfb , ऋसिन् $r^1r^4r^6$.—प्रसङ्गाद् hm^1r , प्रसन्नाद् bk, प्रसन्नाद् f.—परिकीर्तनम् hm^1rb , परिकीर्तितम् fk.—लामकायनः hd, लोमकायनः m^1r , रोमकायनः $bfkr^2r^5$.

- ^a See Indische Studien, vol. xiii, p. 426.
- 48. The divinity, whether praised or not, (but) indicated somewhere a (in the hymn), the seers adore with formulas. That b (deity) one learned in scripture (śāstra) should take note of.

जुतं वापि ${\rm hm^1r^0bfkr^2r^5}$, संजुतवत् r (cp. 81^a).— मन्त्रीज्ञहृषयोऽर्चिन्ति ${\rm hm^1r}$, मन्त्रीजु हृष्टयो र्चन्ति ${\rm b}$, मन्त्रीजु हृष्टयो र्चन्ति ${\rm b}$, मन्त्रीजु हृष्टयो र्चन्ति ${\rm r}$, देवतामृषयोऽर्चन्तः ${\rm r^1r^4r^6}$.— बुध्येत ${\rm dr}$, बुध्येत ${\rm h}$

बुद्धेत m^1 , बुद्धेति fk, बुद्धे b.— शास्त्रवित् $hm^1r^3bfkr^2r^5r^7$, शास्त्रतः x.— 48^{ab} is nearly identical with iii. $8r^{ab}$.

- ^a Cp. the next śloka; also i. 22. ^b The feminine $t\bar{a}m$ is used as if $devat\bar{a}$, not daivatam preceded.
- 49. For the actions (of the gods), though not designated by their agentsⁿ, are nevertheless indicated b somewhere—at the beginning, and in the middle, and at the end, and in individual passages (pythaktvesu).

आदी हि ${\rm m}^1{\rm bfk}$, आदी ${\rm f.r.}$ आदी ${\rm hd}$ (no particle).—मध्ये चानो च ${\rm b.}$ मध्ये चांत्ये च ${\rm f.}$ मध्ये च वानो च ${\rm hd.}$ मध्ये च वांतेषु ${\rm m}^1{\rm r.}$ मध्ये वानो च ${\rm r.}$ — पृथक्वेषु ${\rm hd\,r^3\,r^6}$, पृथक्केषु ${\rm m}^1{\rm r^7}$, पृथग्रृषु ${\rm fk.}$ विधावृत्तु ${\rm r.}$ —कर्तृभिः ${\rm hr^3\,r^6m^1f\,r^7}$, कर्मभिः ${\rm kr.}$ — श्व्यनपदिष्टानि ${\rm hbf.}$ श्व्यनपद्ष्यानि ${\rm m^1r\,bfk.}$ वृत्तवत् ${\rm r^1r^4\,r^6.}$

- a That is, though the names of the gods who perform those actions may not be mentioned at the same time (as in RV. viii. 29).

 b That is, are connected with the deity of whom they are characteristic.
- 50. The very action itself in the Nivid to Savitr^a praises by the action^b: since the cow, the courser, and the ox are (called) milker, swift, or carrier ^c (respectively).

कमैंव तावत्साविच्यां hm^1r , कमैंव ताव साविचीयां fk. कमेंव ताच साविचीभ्यान् b.—यद्वेनु: सप्त्यनष्ठाहौं $hm^1r^5r^7$, यद्वेतुसमद्वाहौं fk, यद्वेनसद्वाहौं b, यद्वेनुसप्र्यनुहों r.—वोद्धा दोग्ध्यागुरेव वा hm^1r (च m^1), चोल्हा दोस्र आसुरेव वा fk, वोल्हा दंग्वृथा-सुरेव वा b.—The end of the varya is here marked by 90 in hdm^1bfk .

^a The Nivid to Savity is RV, i. 24, 3; cp. AB, v. 17, 7.

^b Cp. below, iii. 78; see also i. 7: statis tu karmanā &c.

^c In VS, xxii. 22: dogdhrī dhenur vodhānadvan āśuh saptih; quoted below, with a slight variation, iii. 79.

11. Hymn-owning and incidental deities. Seers of Vaiśvadeva hymns.

51. Inasmuch as (the seer) praises Agni and others in the hymn to Bhaga^a (vii. 41), Mitra and others in the panegyric of the horse (i. 162)^b, and adores Agni in (the hymn) to the All-gods^c, 'Hither with these' (aibhih, i. 14):

मागे यत् hb, मोगे यत् m^1 , मागे यः r, मासे य fk.—°दीनश्वसंस्तृतौ hm^1r , °दीश्वा-श्यसंस्तृतौ $r^1r^4r^6r^2$, °दीश्वश्वसंस्तृतौ f, (मि) त्राश्वाश्वसस्तृतौ b.—वैश्वदेवे bfkr, °देवो hd.

- That is, in the first stanza; see above, iii. 45. That is, in the first stanza.

 See above, iii. 33: āgneyam sūktam..vaiśvadevam ihocyate; cp. below, iii. 141.
- 52. as to that, they say that, while for the most part employing in his praise (stuvan) other stanzas at the beginning and end (of a hymn) b, he (the seer) from association (pratiyogat) or on occasion (prasangat) praises another deity at the same time d.

न्या जुवतृचः d, न्या जुवंतृचः h, न्या जुवतृचः m^1 , न्याः जुवतृचः $r^3r^5r^7$, न्या जुवंतृभिः b, न्या ज्ञचं तृभिः f, न्या जुवं तृभिः k, न्यां जुवतृषिः r—प्रतियोगात् $m^1r^3r^5r^7$, प्रातियोगात् hd, प्रातयोगात् f, प्रातयोगात् k, प्रातयोगात् br.

- That is, stanzas in other metres than those employed in the body of the hymn; thus the first stanza of the hymn to Bhaga (vii. 41) is composed in jagatī, the rest in triṣṭubh; the first and last of the hymn to Savitṛ (i. 35), mentioned above (45) in this connexion, are also in jagatī, the rest in triṣṭubh.

 Cp. above, i. 22, and below, v. 171.

 The reading of some of the BMSS., prātaryogāt, 'through association with the early morning,' may be due to the influence of the first stanza of the hymn to Bhaga (vii. 41), which begins prātar ūgnim, prātar indram &c.

 That is, the first and last stanzas of a hymn often show diversity of both metre and deity.
- 53. The deity to whom he addresses statements of an object $(arthav\bar{a}d\bar{a}n)^a$ is to be known as hymn-owning $(s\bar{u}kta-bh\bar{a}gin\bar{\imath})$; but the one whom he praises on occasion (prasaigena) is to be recognized as incidental $(nip\bar{a}tin\bar{\imath})^b$.

वदत्यर्थवादान् hrbk, °दात् f, °दांन्त् m^1 , वदन्यर्थपादाः $r^1r^4r^6$. — 53^{cd} omitted in fkm^1 .

- ^a Cp. artham bruvantam in i. 9. ^b Cp. above, i. 17, 18.
- 54. In four ways a (caturdhā), it may be said ($v\bar{a}$), the hymnowning (deity) is mentioned (bhanyate) in that hymn in which a seer who praises all the royal Rishis or (divine) Rishis b is indicated (nirdista) c

चतुर्धा भखते तिसान् hd, चतुर्धा भखते चासान् r, चतुष्ठा हन्यते तिसां b. न तु व्याहन्यते $r^1r^4r^6$. — सूक्ते वा hdr^3 , सूक्ते चा b, सूक्ते वे r. — 54^{ab} is omitted in m^1fk . — सर्वासु hm^1r , सर्वासु bfk. — ऋषीन् hm^1rb , ऋषिन् fk. — सुवनृषि hdr, सुवनृषि fk. सुवनृषि fk.

^a That is, I suppose, if the term viśve occurs in a line, hemistich, stanza, or a hymn as a whole: see the remark on the nature of a Vaiśvadeva hymn above, ii. 133.

^b This,

I suppose, is meant for a paraphrase of viśvān devān.

C This word does not occur till 56, and may possibly be a corruption (see 56, note f). The thirty-seven names (except Nābhāka: see 56, note f) enumerated in 55-59 are those of the reputed seers of Vaiśvadeva hymns. Of the twenty-four masculine names occurring in 55-57, seventeen occur in the previous list of twenty seers of Vaiśvadeva hymns, ii. 129-131. The additional ones are Vasukarņa, Svastyātreya, Nābhāka, Kaśyapa, Vāmadeva, Madhuchandas, Pārtha.

55. as Medhātithia, Agastyab, Brhadukthac, Manud, Gayae, Rjišvanf, Vasukarņag, Šāryātab, Gotamai, Lušaj;

hwlfaller rbfk, 'थिस्व' mld, 'थिस्व h.— 'गस्यस्नु hmlr, 'गस्यस् bfkr' r5.— बृहदु' hml, वृहदु' bfkr.— वसुकर्णस्य hdml, च सुकर्णस्य fkr, वसुकर्णस्य b.— ग्रायातो r, ग्रयातो hml, ग्रायातो fk, स्पायानी b.— ग्रातमो लुगः r (= rlr' r4 r6), मानवो च सः hml bfk, मानवो च सः r3 r2 r5 r7. I have adopted the reading of rlr4 r6 because (1) यमः by itself could not be right, as that name occurs below (58); (2) यमः never occurs elsewhere with the patronymic मानवः, but only with विक्यतः, as the name of a seer; (3) गोतमो could easily be corrupted to मानवो, and this would almost inevitably lead to the following word becoming यमः (the reading न यः seems to me a corruption of सार्थातः there is no reason to add the patronymic (as there is in the case of Agai below, 58), but the fact of its existence would have made the corruption of गोतमो easy. The MSS. rlr4 have in several previous cases been shown to have alone preserved the correct form of names in similar enumerations (श्रिन in i. 126, क्रिं in i. 127, दुवसु and अचि in ii. 129); the present I regard as another instance.— The end of the varga is here marked by 99 in hbfk, not in ml.

^a Seer of i. 14. ^b Seer of i. 186. ^c Seer of x. 56. ^d Seer of viii. 27:30. ^e Seer of x. 63, 64. ^f Seer of vi. 49 52. ^g Seer of x. 65, 66. ^h Seer of x. 92. ⁱ Seer of i. 89, 90. ^j Seer of x. 35, 36.

12. Seers of Vaisvadeva hymns (continued).

56. Svastyātreya^a, Paruchepa^b, Kakṣīvat^c, the son of Gāthin (Viśvāmitra)^d, and the son of Urvaśī (Vasiṣṭha)^e, Nābhāka^f, Duvasyu^g, and the son of Mamatā^h (Dīrghatamas),

माथिनौर्ववसी b, नाथनौर्वसी fk, गाथिरौर्वशः hdm¹, नाथिरौर्वशः r, नाथिर्व्वमुः r⁵r⁷. गाथिनौर्वशौ must be the correct reading, because there is no seer named गाथि, but only गाथिन (seer of iii. 20. 1, 5), and the two patronymics would naturally form a dvandva, just as गाथिनभागेवौ in viii. 70.

^a Seer of v. 50, 51. ^b Seer of i. 139. ^c Seer of i. 121, 122. ^d Seer of i. 3, 7-9; x. 137. 5: no entire hymn to the All-gods is attributed to him. ^e Seer of vii. 34-37, 39, 40, 42, 43. ^f All the MSS. and R read nābhākaś caiva nirdisto;

but Nābhāka (seer of viii. 39-42) is not credited with any hymn or stanza to the All-gods; on the other hand, Nābhānediṣṭha, who (and not Nābhāka) is mentioned in a previous list (ii. 129-131) as among the seers of Vaiśvadeva hymns, is the author of two hymns to the All-gods (x. 61, 62). This suggests that in nirdiṣṭo (peculiar enough in this place) we may have a corruption of nediṣṭho.

g Seer of x. 100.

h Soer of i. 164.

57. Vihavya a, the seer Kasyapa b, and he who is Avatsāra c by name d, Vāmadeva c, Madhuchandas f, Pārtha s, Aditi, daughter of Dakṣa h;

विह्यः $bm^{1}r$, विह्य hdfk.—कथ्रप ऋषिर् $bm^{1}r$, कथ्रपश्चिष् $br^{2}r^{5}r^{7}$, कस्रपश्चिष् f, कथ्रस्य यश्चिष् k.—पार्थो $m^{1}rbfk$, पार्थो $hm^{2}m^{3}$, पाष्यो $r^{1}r^{4}r^{6}$.—-द्चमुतादितिः hdm^{1} , ॰सुतादितिः b, ॰सुतादितिः r, दकसुतादितिः $r^{1}r^{4}r^{6}$.

- ^a Seer of x. 128.

 ^b Seer of x. 137. 2, and (as an alternative to Manu) of viii.

 29.

 ^c Seer of v. 44.

 ^d Rājendralāla Mitra, reading nāmayaḥ, has here one of his marvellous references to the RV., i. 139. 9, where the word nābhayaḥ occurs.

 ^c Seer of iv. 55.

 ^f Seer of i. 3. 7-9.

 ^g That is, Tānva Pārtha, seer of x. 93.

 ^h That is, Aditi Dākṣāyaṇī, alternative seer of x. 72; ep. Sarvānukramaṇī; Ārṣānukramaṇī x. 29.
- 58. Juhūa, and the seer Gṛtsamadab, and those who are the divine Seven Rishise, Yamad, Agni Tāpasae, Kutsaf, Kusīding, and Tritah;

चर्षिर् bfdr, चर्षिः m¹, चर्षि hk.— देवाः सप्तर्षयश्च hm¹r, देवा स ऋषयश्च r⁵r², देवोः स ऋषः च b, देवो स ऋषश्च fk.— यमो पिस्तापसः b, यमो सिस्तापसः f, यमो सि तापसः k, तापसोऽपिर्ऋषः r, यमो विस्तापसः hdr³m¹r⁵r². I have preferred the reading अपिसापसः because (1) the patronymic Tāpasa could not be connected with Atri, who is Bhauma; (2) Tāpasa, as the patronymic of three Rishis (Agni, Gharma, Manyu), would not be used alone to designate one of them without any indication to show which was meant; (3) Agni Tāpasa is the seer of a hymn to the All-gods. On the other hand, Atri, who occurs in the previous list (ii. 129-131), thus disappears from the present one. From some of the preceding notes it will be seen that something may be said in favour of each of the three names of the previous list, Gāthin, Nābhānediṣṭha, Atri, reappearing in the present longer list, where they are absent in my text.

- a Seer of x. 109. b Seer of ii. 29, 31. c Seers of x. 137. d Seer of x. 14 and part of x. 10. e Seer of x. 141. f Seer of i. 106, 107, alternative seer of i. 105. g Seer of viii. 83. b Seer of x. 1-7, alternative seer of i. 105.
- 59. also the four brothers, Bandhu and the rest a separately (pṛthak)b, and Viṣṇu c, and Nejameṣa d, and he who is Saṃvanana c by name.

बन्धुप्रभृतयश्चेव hdm¹r, वन्धुप्रकृतंयश्चेव b, बंधुप्रकृतयाश्चेव fk.— संवननश्च m¹rbfk, संववनश्च hr³.

- a Seers of v. 24 and x. 57-60. b That is, in v. 24; cp. Ārṣānukramaṇī v. 11, where their names are enumerated, and they are stated to be ekarcāh, i. e. each the seer of one stanza. These statements are repeated in the Sarvānukramaṇī. c The seer of x. 184. d The seer of the khila after x. 184. e The seer of x. 191.
- 60. All these have praised (him) in separate hymns with his universal (viśvaih) qualities arising from his (asya) activities, (whether those qualities are mentioned) collectively or individually.

सर्व hm¹rbfk, सर्वा $r^1r^4r^6$. — अथ च hm¹r, अथ चा fk, अथ वा br⁶r⁷. — सूतेषु hm¹r, सूतेन bfk. —60^b=43^d. —The end of the varya is here marked by **9**२ in hdm¹bfk.

^a That is, the seers of Vaiśvadeva hymns praise Agni in those hymns with the attributes of the All-gods, as in RV. i. 14; cp. above, iii. 33 and ii. 134.

13. Explanation of Dravinodas. Deities of RV. i. 16-18.

61. Now the Dravinoda, who has been asserted above (iii. 38) (to be) the terrestrial Agni, some call Indra^a, because of his being the giver of strength and wealth ^b.

पार्थिवो $\mathrm{dm^1rfk}$, पार्थिवे hb .—द्रविणोदो पिः $\mathrm{br^1r^4r^6}$, °दामिः $\mathrm{hdm^1rfk}$ (ep. the various readings in 62 and 65).—दातृत्वादेवे $\mathrm{hdm^1r}$, दातित्वादेवे bfk .—बनवित्तयोः $\mathrm{hdm^1r}$, वनवित्तयोः b , वनवित्तयोः fk .

- ^a Cp. Nirukta viii. 2, where it is stated to be Kraustuki's opinion that Dravinodas is Indra, and where that opinion is refuted; see Roth, Erläuterungen, p. 115.

 ^b Cp. above, ii. 25, where this is stated to be the reason why Kutsa calls Agni Dravinodas.
- 62. This (terrestrial) Agni is Dravinoda^a; for he is the giver of strength^b;

B and he is produced by strength, (that is) rubbed (mathyati) by the seers at the sacrifice.

द्रविणोदो पिर् hdm³b, °दापिर् m¹m²rfk.—The five lines, 62^{cd} 64, are to be found in bfkr²r⁵r² (=B) and m¹ only; they are omitted in hdm²m³r (r¹r³r⁴r⁶)=A. It is not till here (after 350 ślokas) that the divergence, as to length, of A from B begins.

वलेनायं मध्यत्यृ° m^1 , बलेनायमध्यत्यृ° fk, बलेनायमध्येत्यृ° $r^2r^5r^7$, बलेनायमध्येत्यृ° b.—Here the value of m^1 in constituting the text of the passages peculiar to B at once begins to show itself.

- I take Dravinodah here, and in 61, as the nom. (in 63 we have the nom. pl.) of the alternative form dravinoda used for metrical reasons instead of dravinodas (the nom. of dravinodas), which is otherwise employed here (i. 106; iii. 65; acc., ii. 25).

 b Cp. above, ii. 25.

 c Cp. Nirakta viii. 2: balena mathyamāno jāyate.
- B 63. They call the oblations wealth $(dravina)^a$, because it is produced from the oblation; now the sacrificers (rtvij) are givers of them b (oblations); hence they themselves are wealth-givers $(dravino-da)^c$.

द्रविश्ं ${\rm m^1bfk}$, द्रविश्ां ${\rm r^2r^5r^7}$.—हिवशे ${\rm r^2r^5r^7}$, हिवशे ${\rm b}$, हर्षस्थो ${\rm fk}$, हर्यश्चो ${\rm m^1}$.— तत स्वयम् ${\rm m^1b}$, ततः स्वयम् ${\rm rfk}$.

- ^a Cp. ii. 25 and Nirukta viii. 1. ^b Cp. Nirukta viii. 2: rtvijo 'tra dravinodasa ucyante haviṣo dātāraḥ. ^c The plural of dravinoda occurs in RV. i. 53. 1. Yāska uses the form dravinodas only.
- B 64. Or he (Agni) is (called) Drāviņodasa because he appears (connected) with them (eṣām) from (such expressions as) 'the son of the seers' a, (and) 'O child of strength' b; or because he was produced from the middle c (Agni).

च्छषीणां पुत्र br (Nirukta viii. 2), च्छषोपुत्र fk, च्छषपुत्र m^1 .— इत्येषां $bfkr^2r^5r^7$, इति लेषां m^1 .—सहसो यहो m^1fk , सहसो यमो b, सहसोपही r.—यतो जज्ञे $r^2r^5r^7$, यते यज्ञे m^1bfk .—द्राविणोद्सः fr^6 , द्रविणोद्सः $m^1bkr^2r^7$.

- ^a Cp. Nirukta viii. 2: yatho etad: agnim drāviņodasam āha iti: rtvijo 'tra draviņodasah . . te cainam janayanti. 'rṣṇām putro adhirāja eṣa' ity api uiyamo bhavati. Cp. Roth, Erläuterungen, p. 116, note ². The words rṣṇām putrah occur in VS. v. 4.

 ^b Agni is often addressed in the RV. as 'sahaso yaho,' i. 26. 10 &c. Cp. Nirukta viii. 2: balena mathyamāno jāyate, tasmād enam āha sahasas putram, sahasah sūnum, sahaso yahum. The expression sahaso yaho is used in explanation of rṣṇām putrah, as the priests produce Agni by means of strength (see above, 62).

 ^c That is, he is Drāviņodasa as derived from Draviņodas; cp. Nirukta viii. 2: athāpy agnim drāviņodasam āha: eṣa punar etasmāj jāyate.
- A 65. It is this (terrestrial) Agni who is wealth-giver (dravinoda); it is then a that he is called 'Dravinodas': it is only in (hymns) addressed to Agni that mention of Dravinodas appears b.

द्रविणोदापिर् hdm¹r.— आपेयेप्वेव दृश्यन्ते hr³m, °ष्ववदृश्येत r.— प्रवादा द्रविणो-दसः hdm¹m²m³, प्रवादाह्रवि° r (Nirukta viii. 2: प्रवादा द्राविणोदसाः).— This śloka (65) is found in A MSS. only, hdr³r (presumably r¹r⁴r⁶). The varga would therefore have only three and a half ślokas in them. As the varga without 65 would have the normal number of five ślokas, and 65^{ab} is very tautological immediately after 62^{ab} , it is probably a later addition. This śloka follows the Nirukta even more closely than the preceding five lines in B do.

- ^a That is, when he is terrestrial. ^b Cp. Nirukta viii. 2: ayam evä_jnir draviņodā iti šākapūņir: āgneyeşv eva hi sūktesu drāviņodasāh pravādā bhavanti.
- 66. Here (the hymn) which follows that of nine stanzas to Indra (i. 16) is addressed to Indra-Varuna (i. 17). The one next to it is 'The Soma-presser' (somānam: i. 18): Brahmaṇaspati is praised

नवकस्था हा r^5r^7 , नवकस्था ला b, नवकस्था दा r^5r^7 , नवकस्थ लो f, ॰स् ला k.— f तस्थी तरं च hm^1 , ॰रं तु r. ॰रं च $r^1r^4r^6$, ॰रं ति b, ॰र् ति fk.— The end of the varga is here marked by 93 in bfm^1 , not in hdm^2m^3 . The omission of the figure in A here, just where the varga would have the abnormal number of three and a half ślokas, is striking, especially as the ends of the preceding varga (12) and of 15 (which contain the normal number) are indicated (ep. note on 71).

a The reading of B gives the pratika of i. 16 (ā tvā).

14. Deities of RV. i. 18. Eight names of Prajapati.

- 67. in the first five stanzas; in (the next) three (6-8) Sadasaspati; and in the last stanza (9) Narāśaṇṣa; Soma-Indra are incidentally praised (nipātita)
- 68. in the fourth; Soma and Indra, and Dakṣiṇā as well ($adhik\bar{a}$), in the fifth.

On occasion the relationships $(sambandh\bar{a}h)$ of sphere and world a are proclaimed by the seer.

द्चिणाधिका hdm, द्चिणा तथा $r^1 r^4$, द्चिणा सष्ट bfkr.—संबन्धा hdm, ॰धा: r.—स्थानलोकयो: hmr, लोकस्थानयो: bfk.

- ^a That is, deities are occasionally mentioned together because they are related in sphere (sthāna) or world (loka) as either terrestrial, or atmospheric, or celestial.
- 69. Thus (a name) of Prajāpati (prājāpatyam) might be (meant for) Indra^a: on this principle (iti) two names of his b are mentioned here. There are six others as well; Prajāpati is the first of them.

प्राजापत्यं hmr, प्राजापत्यं b, प्रजापत्यं fk.—तथेन्द्र स्थादिति hdm, तथेन्द्रः स्थादिति r, तथा प्रश्नानि bfk.— $6g^{ab}$ reads thus in r^5r^7 : यानि तस्तेह नामानि प्राजापत्यानि तानि तु.—कथिते दे च षट् चान्यान्य् hmr, कथितेह वषद्वारा b, कथितेह वषद्वावा fk, कथितानीह षर्द्यानि r^5r^7 .—एषां चाद्या bdm, एषां चाद्याः r, तेषां स्वाद्यः r^5r^7k , तेषां स्वाद्य f.

- ^a For four of the eight names here stated to belong to Prajāpati, viz. Brahmaṇaspati, Vācaspati, Ka, Prajāpati, occur in the list of deities belonging to Indra's sphere in Naighaṇṭuka v. 4.

 ^b That is, Brahmaṇaspati in 66, and Sadasaspati in 67.
- 70. The remaining names I will next state (B) :—Satpatia, Ka, Kāma, and Sadasaspati;

70^{ab} is wanting in A (hdr¹r³r⁴r⁶) and m¹; it seems almost necessary as a transition from 69^{cd} to 70^{cd}, and without it the varga has only four and a half ślokas.— सञ्चित: hdm¹b, सञ्चभि: r, सित fk.— कथ hm¹rb, कथ fk.

- a Satpati does not occur in the Naighantuka; in the RV. it is predominantly an epithet of Indra (cp. above, 69). Six of these names of Prajāpati end in pati.
- 71. Ilaspati, Vācaspati, then Brahmanaspati: the third a and the last b (belong) to a hymn c, as well as the first d and the fifthe;

इळस्पतिर् m^1 , इळस्पति h, इजस्पति bk, इजस्पतिर् fr, इजस्पतिर् r^1 .—ततसु hm^1r , तृतसु b, स्नुतस्तु r^2r^6 , स्नुतस्तु fk.—नृतीयान्ते तु hm^1r , नृतीयन्ते च bk, नृतीयांते च f.—प्रथमं $bfk\,r^2r^6r^7$, चतुर्थं hm^1r .—The end of the varga is here marked by 98 in $fbdm^2$, not in m^1k .

a That is, Ka. The BD. mentions one stanza only (i. 24. 1) as addressed to Ka. b That is, Brahmanaspati, to whom (or Bṛhaspati) several hymns are addressed. C The genitive sūklasya must be used vaguely to express belonging to a hymn or part of a hymn,' not as the equivalent of sūklabhāj; for no hymn as a whole is attributed to either Ka or Sadasaspati. C That is, Prajūpati, to whom x. 121 is addressed. The reading of A, caturtham, must be wrong, as neither a hymn nor a stanza is addressed to Kāma in the Rg-veda. It was probably caused by a slip for prathamam, as the ordinal is preceded by tṛtīya, and immediately followed by paūcamam. C That is, Sadasaspati, to whom the three stanzas mentioned above (67), viz. i. 18. 6-8, are addressed.

15. Prajāpati's names (continued). Deities of RV. i. 19.

72, 73. but under the four other (names) neither a hymn nor a stanza belongs to (aśnute) a him.

Now certain people (etc)^b desirous of a correct view in devotion, say that all the names of all the deities (belong) to Prajāpati c.

With regard to that (others) say, this should not be so; for he is traditionally held (smrta) to be (the owner) of eight (only);

- 72. खेनं m¹r¹r⁴r⁴r⁶, खेन hd, तत्र bfkr.—न सूक्तं नाष्य् r, न सूक्तं नात्य् bfk, सूक्तं नाप्यि ख्रिंग्रेपं क्, सूक्तं नान्य् hdr³m¹m²m³.—च्छगु॰ bfkr, ऋचो hdr¹r³r⁴r⁶m¹m²m³.—•च्यते bfkr, ॰स्रुते hr³r¹r⁴r⁶, ॰स्रुते m¹m²m³. This points to न सूक्तं नाष्युगुच्यते as the original reading of B, and सूक्तं न नाष्युचोऽस्रुते as that of A (but in the latter case खेन, not खेनं, must have been read).—देवतानां m¹br, देवानां च hd, देवानां तु k, देवानां f (no तु).

 73. तदाङर् bfm¹r, तदाह hd.—एष hdr³bfkr²r⁶, एव m¹r.
- ^a Used in the sense of *bhajate*. The reading of B would mean, no hymn or stanza is mentioned with reference to him (tatra).

 ^b Ete (all MSS.) is used demonstratively with reference to the following word, 'these people, viz. those who &c.': in sense it is practically = eke.

 ^c Because he is the source of all; cp. above, i. 62.
- 74. and by these (names) only are sacrifices and oblations offered (kalpyante) to him.

Now together with the Maruts, who belong to the middle sphere, this terrestrial Agni

तिरेव चास्य hm^1r , तिरेवास्य प्र॰ $bfkr^2r^5r^7$.— कल्प्यन्ते $m^1rbfkr^2r^5r^7$, कल्पन्ते hd.— ॰स्थानिरयम् $hm^1r^3r^1r^4r^6$, ॰स्थानि: परम् bfkr.

75. is here praised with the hymn of nine stanzas 'To this' (prati tyam: i. 19). But by reason of the association with the Maruts in this hymn addressed to Agni and the Maruts,

नवकेनेह m¹bkr, °केनेह f, °केगेह hd, °चेंनेह r⁵r7.—साहचर्या तु hm¹r, °चर्यादा bfkr6.

76. Yāska a thinks the middle Agni, and not the terrestrial one, (is meant). But it can only be this terrestrial (Agni), for such is (here) evidently (his) character (rūpa).

मध्यमं चैव m^1 , माध्यमं चैव hdr, मध्यमं खेव b, मध्यमं खेवं $r^2r^5r^7$, मध्यं खेच fk.— Ul्रियंद्यंव hm^1r , पार्थिवेध्वेव br^5r^7 , पार्थिवेध्वेव fk, पार्थिवेध्वेव fk.— The end of the varga is here marked by fk in fk0.

^a In commenting on the first stanza of i. 19, he remarks (Nirukta x. 36): kam anyam madhyamād evam avaksyat?

^b The last pāda recurs three times (v. 87^b ; vi. 94^b ; viii. 62^d), where I have printed $tath\bar{a}r\bar{u}pam$ as a possessive compound in agreement with $s\bar{u}ktam$. Here, however, it seems better to take $tath\bar{a}$ $r\bar{u}pam$ as two words, and explain: 'for his (Agni's) character appears here as such.'

16. How to ascertain the deity of a stanza, &c.

77. Such (a prayer) as 'Thou art invoked to drink' is not (applicable) in (the case of) the lightning (Agni): so (the invocation) must belong to the designation of the respective deity b.

ह्रयसे पीतचे चेति hm^1fk , भूयसे वीतचे चेति r, इन्नयसे तीतचे चेतद् $r^1r^4r^6$.—वैद्युते न तदिस्त हि hm^1r , वैद्युते नित्यतिस्त्वह r^2r^5 , वद्युते नित्यतिस्त्वह fk.— अथ स्थाद् hm^1r , अतिसिद् r^5r^7 , अतिसिद् fk.—पृथक् पृथक् hm^1r , स्नुतौ स्नुतौ $fkr^2r^5r^7$.— The whole of varya 16 (77-82) is omitted in b.

- a The words hāyase pītaye ca are intended to represent the actual words of the text in i. 19. 1^b: gopīthāya pra hūyase.

 b That is, we must go by the name of the deity, and therefore here take Agni to be terrestrial, and the Maruts atmospheric.
- 78. How is one to know the divinity a of a stanza, of a hemistich, of a verse? As in the Nivid to Savitr b the activity (of the god) is praised by the (statement of his) activity c,

ज्ञायेत fr2r5r7, ज्ञायते k, जायेत hm1r.—कर्म कर्मणा hm1rfk, सूर्यकर्मणा r5r7.

- ^a The doubt as to which Agni is meant (75, 76) brings our author to the question, how is one to be sure of the deity in stanzas or parts of stanzas, as compared with the deity of a whole hymn (above, 53)? This he answers by saying that mention of the activity (karma) peculiar to a god implies praise of that god. Three of the examples of this given in 78-80 have already been mentioned in 50, 51.

 ^b RV. i. 24. 3: 'To thee, O god Savitr, the disposer of boons, ever helping, we come for our share'; see AB. v. 17. 7: abhi tvā deva savitar iti sāvitram.

 ^c See above, iii. 50.
- 79. (as in) 'The milking cow, the carrying ox, the swift courser, the industrious (woman)'a, and as (in the stanzas) 'May Mitra be gracious to us' (śam no mitrah: i. 90. 9), 'May Varuṇa be our protector' (Varuṇaḥ prāvitā bhuvat: i. 23. 6) b,

दोग्ध्री धेनुर्वोढानङ्गान् श्राणुः ${\rm hm^1r}$, दिग्धनवाग् लाद्वानामुप ${\rm fk}$.—सिप्तः पुरंधिया ${\rm hm^1f}$, सिप्तपुरं धियाः r, सिप्त तथैव च $r^1r^4r^6$.—श्रत्नोमिचीया ${\rm hm^1r^1r^4r^6}$, वनोमिचीया ${\rm fk}$, वरुणिमचीया r.

a This line is quoted from VS. xxii. 22, the last two words puramdhir yoṣā being changed, owing to the exigency of metre, to puramdhiyā. It has already been alluded to in iii. 50.

b That is, in these two stanzas Mitra and Varuṇa are practically praised as 'gracious' and 'protector' respectively.

80. (and) 'Hither with these, O Agni' (aibhir agne: i. 14. 1) and in such cases (tatra) the deities have to be carefully observed in accordance with the general purport (prāyeṇa) of the hymn.

Connected with words ($\hat{s}abda$) containing two or more members (pada) b, there are two deities or many deities c.

परीच्यासात्र देवताः ${ m m}^1$, परीच्यासात्र देवताः ${ m hdr}^3$, परीच्यं तत्र देवताः ${ m r}$, परीचसात्र संसात्रः ${ m r}^5{ m r}^7$, परीचसूत्रसंभवः ${ m fk}$.—हिंदीवबज्जदेवतम् ${ m hm}^1{ m fk}$, हिंदेवबज्जदेवतम् ${ m r}$.

- Already referred to above (iii. 51) in this connexion.

 b That is, Devatādvandas imply the praise of two or more gods.

 c Dvidaiva-bahudaivatam seems to be an abbreviated compound, for dvidaivata-bahudaivatam.
- 81. A divinity not associated in praise a (asamstuta) is (to be regarded) as though associated in praise if indicated anywhere b.

Where in a formula addressed to two divinities a deity is spoken of in the singular (ekavat),

संजुतवत् hdr, सजुतं यत् f, संजुतंज्ञत् k (cp. the v.r. in iii. 48).—दिदेवते hd, दिदेवतं m^1 , दिदेवते rfk.— 81^{ab} is possibly an early interpolation, as it is almost identical with 48^{ab} , as it is unconnected in construction with the preceding or the following line, and as with it the varya has six and a half ślokas.

- a I take the sam to be significant here (which it does not seem to be in iii. 48) owing to the mention of dual divinities in the preceding line.

 b That is, if association with a deity who is clearly praised may be gathered from the context (cp. iii. 49 and i. 119). An instance of this would be the last stanza of i. 154, where Viṣṇu only is praised, but the dual $v\bar{a}m$ occurs. Here it may be gathered that Indra is associated with Viṣṇu, as the two are invoked together in i. 155. 1-3.
- 82. one should know that to contain separate praise (*ribhakta-stuti*)^a; also that in which, when there are many (divinities), a deity is (spoken of) singly (*a-bahuvat*)^b.

In benedictions $(\bar{a}\hat{s}\bar{i}rv\bar{a}de\bar{s}u)$, in (enumerations of) technical names $(samj\tilde{n}\bar{a}su)$, in leading ritual forms $(karma-samsth\bar{a}su)$, many deities are in the plural (bahuvat) where two-membered (deities: dvipade) are associated in praise c .

विभक्त° h rfk (cp. v. r. in iii. 41; Nirukta vii. 8 has विभक्ति°).— बड ध्ववड वस hm¹r, वङ त्वबड वस fk.— यत् fkr¹r, तत् hm¹r.— संज्ञासु hdm¹, ॰ ज्ञासु r, ॰ ज्ञोष f, ॰ ज्ञोष k.— ॰ ध्यास hm¹fr, ॰ ध्यात k.— ह hm¹fk, हि r²r⁵r³.— बड़ वयच hdr,

बङ्गवत्तव m^1 , वङ्गवाच fk, बङ्गवाच्यव $r^2r^5r^7$.—द्विपदे यव संस्तृत $hr^3m^1r^1r^4r^6$, दिवहूी यव संस्तृती r, दिवहे यव संस्तृती fk.— 82^{ab} is identical with v. 93^{ab} .—82 is repeated in m^1 after 154.—The end of the varga is here marked by 96 in hdm^1fk .

^a See the definition of vibhakta-stuti above, iii. 41. b I take bahusu to be parallel to dvidaivate, and abahuvat to ekavat. c The general meaning of the last two lines appears to be that under these conditions many deities are not treated in the singular, and therefore it is in this case not vibhakta-stuti. I do not, however, understand the limitations stated in 82^{ab}. That line may also be an early interpolation as it recurs at v. 93.

17. Story of the Rbhus and Tvastr.

83. In former times there were three sons of Sudhanvan, son of Angiras, (viz.) Rbhu, Vibhvan, and Vāja b; and they became pupils of Tvaṣṭṛ.

The reading of 83^{ab} in the text is that of $\mathrm{hm^1r}$, श्रासन्तुधन्वनः पुत्रास्त्रय श्रिक्षित्स्य ये $\mathrm{r^2r^5r^7}$, श्रास सीधन्वनः पुत्रास्त्रय श्रागिरसञ्च ये fk , श्रयत्तुयधनपुत्रास्त्रयञ्चोमिर्सञ्च ये $\mathrm{b.}$ —वाजञ्च $\mathrm{hm^1r}$, वायुञ्च $\mathrm{bfkr^2}$.—वषुञ्च तेऽभवन् $\mathrm{hr^3m^1bfkr^2r^5r^7}$, ते त्वषुर्व च $\mathrm{r.}$

- as an introduction to the Rbhu hymn i. 20. b Cp. Nirukta xi. 16 (on RV. i. 110. 4): rbhur vibhvā vāja iti sudhanvana āngirasasya trayah putrā babhūvuh.
- 84. Tvaṣṭṛ instructed them in every art of which he was a master $(tv\bar{a}ṣṭra)$. The All-gods, who were thoroughly versed in the arts (pariniṣṭhita-karman), challenged them a.
 - a That is, to show their skill in the arts they had acquired.
- 85. They then made for all (the gods) vehicles and weapons. B They made the nectar-yielding cow—the draught of immortality (amṛta) is called nectar (sabar)—
- ते ततस्रकृर् hm^1r , त तत्तनुस्तद् b, ततस्तन्नस्ततस्त्रन् f, ततस्तननुस्ते तद्द् r^5r^7 .— तु hdm^1 , च bfkr.— 85^{ab} comes after 89^{ab} in r.—धेनुं सबर्द्धां m^1r (सवर्° and सर्व° r), धेनु सर्वद्धयां fk, धेनू सर्वर्धयां b.— अमृतं r, अमितं (श्वर्) bfk, (°क्रु:)स्मृते: m^1 .— 85^{cd} — 89^{ab} in Bm^1 only.
- B 86. of Brhaspati; then for the Asvins a divine car with three seats, and for Indra his two bay steeds; also what (they did) through Agni who had been dispatched (to them) by the gods ^a.

वृहस्पतिर्थाश्विभ्यां m¹, वृहस्पतिरश्विभ्यां br, वृहस्पति श्विभ्यां f, वृहस्पश्विभ्यां k.— विवसुरम् r, विवंधुवम् fk, वृवंधुरम् b, सबंधुरम् m¹.— इन्द्राय च हरी br, य इंद्राय हरी m¹, इन्द्राय हरि fk.—देवप्रहितेना॰ bfkr, देहिपिहितेना॰ m¹.

- * That is, the four cups which they made out of Tvastr's one, at the command of the gods who sent Agni as their messenger (see RV. i. 161. 1-3).
- B 87. When he had said 'One cup (make into four': RV. i. 161. 2), and when they had conversed in heaven (with the stanza), 'The eldest said' (iv. 33. 5) a, they fashioned the (four) cups as had been said, gladdened by him b.

एकं चमसित्वित b, एकं च समित्वित kr, एवं च सम° f, एवं श्रमीभिर्द्युति m¹.— ज्येष्ठ आहेत्यथो दिवि m¹, ज्येषु आहोत्यथो दिवि b, ज्येष्ठ आहोत्यथो दिवि f, ज्येष्ठो द्वावि-त्यथाह च r.— उत्का m¹fr, उता k, उक्था b.—तेन m¹, तच r, त b, न - fk.— The end of the varga is here marked by 9% in m¹f, by 9६ in b (because the sixteenth varga is omitted).

Where the eldest Rbhu recommends the making of two, the second, of three, and the youngest, of four.

That is, by the promise of making them participate in sacrifice with the gods (RV. i. 161. 2).

18. Deities of RV. i. 20-22.

B 88. And Tvaṣṭṛ, and Saviṭṛ, (and) the god of gods, Prajāpati, summoning all the gods, bestowed immortality (on the Rbhus)^a.

चैव bfk, चैव r. — देवदेव: m^1b , देवदेव kfr. — ॰मन्त्य ग्रमृ॰ m^1 , ॰मन्त्य मृ॰ fk, ॰मन्त्यामृ॰ b, ॰मन्त्य चामृ॰ r.

^a Cp. RV. iv. 33. 3, 4, and see my 'Vedic Mythology,' pp. 132, 133.

B 89. There appears (in the RV.) praise of them in the plural (bahuvat) with the name of the first and the last ".

In the third pressing (savana) a share is prescribed for them ($tes\tilde{a}m$) b with those (All-gods) c.

श्रादान्ययोर् bfk, श्रादान्ययो r, श्रादान्तयोर् m¹.—बक्रवत्सुवः f, बक्रवस्तवः r, बक्र-वत्सुतः b, बह्रव स्तुताः m¹ (ср. Nirukta xi. 16: बक्रविज्ञगमाः).

That is, these three deities are mentioned either as rbhavah or vājāh, but not in the plural form of Vibhvan; cp. Nirukta xi. 16: teṣāṃ prathamottamābhyāṃ bahuvan niŋamā bhavanti, na madhyamena. Roth, in his Erläuterungen, p. 148, seems to have mistaken the force of bahuvat when he translates: 'es gibt viele Textstellen, we der erste

und letzte derselben genannt sind, nicht so der mittlere.' Yāska goes on to say: 'thus there are many (bahūni) hymns in the ten books (of the RV.) with the plural (bahuvacanena) of Rbhu and praise in connexion (saṃstava) with the cup (camasa).' The remark made in my 'Vedic Mythology' that 'the plural of each of their names may designate the triad' is somewhat misleading, as the plural of the forms vibhu or vibhū only, not vibhvan, is used.

b Cp. RV. i. 20. 8: abhajanta bhāgaṃ deveṣu yajāiyam; also AB. iii. 30 regarding their share in the evening libation; see Sāyaṇa on RV. i. 20. 8; 'Vedic Mythology,' p. 132, l. 16.

c The word taiḥ would refer to sarvān devān (= viśvān devān) in B (88°), but to viśveṣām (85°) in A, as 85°d-89°a are omitted in the latter.

90. And Indra drank Soma with them a (the Rbhus) at that pressing. Now this hymn (beginning) 'This' (ayam: i. 20), which follows a and consists of eight stanzas, is their praise.

सर्वने सह $m^1 f k r$, सर्वनै: सह $h d - \xi \xi$ मूक्तं $h m^1 b f k$, इन्द्रमूक्तं $r - \alpha$ यम् $h r^3 m^1$ $r^1 r^4 r^6$, श्रयम् b f k r -श्रष्टकं $h r^3 m^1 b r^5 r^7$, श्रदकं f, श्रायकं k, श्रार्भवं r.

- ^a That is, which follows the one last mentioned (i. 19) in 75 (sūktena navakena 'pratityam').
- 91. (In) 'Here' (iha: i. 21) the two gods Indra-Agni are praised. The beginning of the third a (hymn praises) the Asvins; and then the next four (stanzas) 'The golden-handed' (hiranya-pāṇim: i. 22. 5-8) are addressed to Savitr.

॰(दिरिश्वनी hm^1r , ॰(दितोऽश्विनी $fk\,b\,r^5r^7$. — सावित्राश्वतस्रशायथोत्तराः hm^1r^3 , सावित्राश्वतस्रोऽप्यत उत्तराः r^5r^7 , सावित्री तिस्रश्चाप्यत उत्तराः br, [सा]वित्रीसिस्याप्यन्य उत्तराः fk. The Sarvānukramaṇī has both सावित्राः and चतसः; ep. Ṣadguru-śiṣya.

- That is, i. 22, the third hymn mentioned after the digression (iii. 78-89), the first being i. 20.
- 92. One a (9) is (addressed) to Agni, but two (10, 11) to the Goddesses; in the twelfth (stanza) the wives of the gods, Indrana and Varunana and Agnaya, are praised separately.

एकामेहें तु देवीनां hdm¹, एकामेहें तु देवानां r, एकामेहें च देवीनां r⁵r⁷, एकामी हे च देवीनां b, एकासी देवदेवानां fk. There is this marginal note in h: mantra-linga-viruddham etat, that is, this statement contradicts the evidence of the text. The order of the words so as to give the correct sense should be अपेहें देवीनामेका. The Sarvānu-kramanī has आपेखी हे देवीनामेका.—हादआं b, हादशां fk, हादशो hdm¹r.—अपायी

r²r⁵r⁷, च श्रापेयी hdr, चापीयो m¹, वापायी fk, चापायां b (the last four contract the initial vowel with the च at the end of the preceding pāda).—च पृथक् hm¹r, ता: पृथक् br²r⁵r⁷.—The end of the varga is here marked by 9 in bf, not in hm¹m²m³dk.

^a We have to choose here between an actual mistake in the text (which ought to state that 9, 10 are addressed to Agni, and 11 to the Goddesses) and a misleading transposition of the words from their natural order on account of the metre. As a similar case has already occurred in ii. 13^a, the latter is perhaps the more probable assumption.

19. RV. i. 22 (continued). RV. i. 23: Püşan Āghṛṇi.

93. And two (stanzas, 13, 14, praise) Heaven and Earth; the stanza 'Soft' ($syon\bar{a}$: 15) should be held to be addressed to Earth. The (stanza) 'From thence' (atah: 16) is (addressed) optionally ($v\bar{a}$) to the gods; the rest of the hymn (17-21)^a is addressed to Viṣṇu.

दे च स्थात् hdr, मही दे b, मही f.—स्थोनेत्यृक् h, स्थोनेतृक् m¹, स्थोनेतिप्र f. स्थोनेत् b, स्थोनेत् हि, स्थोनेत् कि, स्थोनेत्व कि, स्थोनेत् कि, स्थोनेत् कि, स्थोनेत् कि, स्थोनेत्व कि, स्थोने

Owing to the va, 16 is also optionally addressed to Visuu.

94. To Vāyu (belongs) 'Mighty' (tīvrāḥ: i. 23. 1); for the two, Indra-Vāyu, there is a couplet (2, 3); after that there is a triplet to Mitra-Varuṇa (4-6), also (one) for Indra accompanied by the Maruts (7-9);

द्वाभ्यां hr¹r³r⁴, ताभ्यां bfr²r⁵.— पर्म् hdr, पर्: bfk.— तुचो r³r⁵r⁷, तिचो hbfk, सूचे r.

- 95. (then) a triplet for the All-gods (10-12) and a triplet for Pūṣan Āghṛṇi (13-15).
- B (He is thus named,) for there is attached (ā-sakta) to his car a ghṛṇi: a skin full of curds a.

नुचो $r^3r^4r^6m^1r^5$, चिचो hbfk.—आघृणये नुचः r, आघृणयेति च bfk r^2 , आघृणिरिख्यः hm $^1r^3$.— आसको b, असको m^1fr , अश्रको k.— दभ्र f, द्धः r, दनभ्रा b.— पूर्णो इती रथे fk, पूर्णो दती रथे b, पूर्णे इती रथे r, पूर्णे दतः रथे r^5r^3 .—The four lines 95^{cd} to 97^{ab} are wanting in Λ .

^a Aghrni is explained by Yūska, Nirukta v. 9, simply as āgata-hrni, the meaning of hrni not being stated.

B 96. Therefore (tat) he is praised as \bar{A} -ghṛṇi; hence he is lauded (ribhyate) by singers $(k\bar{\imath}ri)^a$. For as their skin (drti) is full of mead, the suppliant (arthin) also approaches the Aśvins (in the same way) b.

आधृणिस् $m^1 fk$, आधृणैस् b, आक्णिस् r.—तखुतः m^1 , तत्सुषः fkb, तयुतः r.—कीरिभी रिभते m^1 , गोरिभी रिभते fr^2b , गोरिभ रिभते k, स गोभ रिभते r.—ततः m^1bfkr^2 , यतः r.—पूर्णो r, पूर्णः fk, पूर्ण b.—इतिर् r, इतिम् fm^1 , इतीम् b, दितिम् kr^2 .—अध्यैति m^1 , अधौति fkr^2 , आधीति b, असीति r.

a Kīri, being a Vedic word otherwise found exclusively in the RV., has been corrupted in all the MSS, but m¹. It is one of the stotṛnāmāni in Naighaṇṭuka iii. 16. The verb is also otherwise limited to Vedic texts; cp. RV. vii. 76. 7: uṣā ribhyate vasiṣṭhatḥ. Cp. Geldner, Vedische Studien, iii. p. 176.

b That is, Pūṣan, having a skin (ghṛṇi = dṛṭi) filled with curds on his car, is prayed to as the Aśvins are who have a skin (dṛṭi) filled with mead on their car.

B 97. The skin itself appears in (the passage) 'Refresh the track with mead' $(\bar{a} \ vartanim \ madhun\bar{a} : iv. 45, 3^c)$.

Seven and a half (stanzas) are to be known as (belonging) to the Waters $(16-23^{ab})$; the last in addition to the (preceding) half $(23^{cd}, 24)$ has Agni as its deity.

आ वर्तनि bfr, आ वर्तनी m¹, आ वर्त्तनी k.—हतेरिव m¹fkr, हचरिव b.—अधर्धान्या bfkr²r⁵, अधर्धान्या hr³ (अन्याधर्धा Sarvānukramaņī). I have here assumed a corruption by the transposition of i and e in हतेरिव for हतिरेव (cp. R, noto ⁶), as the former reading scems to make no possible sense.—The end of the varga is here marked by 90 in hdm¹bfk. The numbering is thus resumed after the omission of 90 and 95 in hd, where these three vargas (17-19) have an aggregate of nine ślokas only.

a That is, in the fourth pada of x. 45. 3: drtim vahethe madhumantam asvinā.

20. Deities of RV. i. 24-30.

98. But (in) 'Of whom now' (kasya nūnam: i. 24) the first (stanza) is addressed to Ka (1), there is (then) a stanza addressed to Agni (2), a triplet (next) to Savitr (3-5), 'Bestowed by the gods' (bhaga-bhaktasya: 5), being optionally (vā) addressed to Bhaga.

What follows (6-15), as well as (the next hymn) 'Whatever' (yac cit: i. 25), is addressed to Varuna.

काव्याद्यापेयी ऋक् $h d m^1$, काप्याद्या ऋषिव्युक् r, काव्याद्यापेर्ऋक् b, कांव्याद्या सपे ऋक् fk.—परं हि यद्य $h m^1 r^3$, परं यद्यि b, परं त्विद्य fk, परं यदिति r.

- 99. 'Do thou put on' (vasiṣvā hi: i. 26) are two (hymns) addressed to Agni (26, 27); but the stanza 'Thou that knowest lauds' (jarābodha: i. 27. 10) is to be recognized as (belonging) to the Middle Agni; the last (stanza) 'Obeisance' (namaḥ: i. 27. 13) is addressed to the All-gods.
 - ै वैश्वदेव्युत्तमा नमः А, वैश्वदेव्युद्गमः ь, वैश्वदेव्यनमद्गमः f, वैश्वदेव्युत्तमोत्तमा г.
- 100. The following four (stanzas), 'Where' (yatra: i. 28. 1-4), are (in) praise of Indra and the Mortar, (so) think Yāska^a and Kātthakya, but Bhāguri (thinks) of Indra (alone).

यविति fk r^5r^7 , यविति b, यविति h m^1 , यास्विद्धे r.—•म्होलूखनयो h m^1 , चेन्होलूखनयो: r, मुसलोलूखन॰ hfk r^5r^7 .

- There is no statement as to the deity of these four stanzas in the Nirukta. The Sarvānukramaņī follows Bhāguri, as it makes no statement about these four stanzas (which means that Indra is the deity: asya sūktasya anādeša indro devatā, Ṣaḍguruśiṣya).
- 101. 'If indeed' (yac cid dhi: i. 28. 5) a are two (stanzas in praise) of the Mortar (5, 6), the two following (7, 8) are (in praise) of the Pestle also b; the last (stanza) lauds the skin used in pressing (adhiṣavaṇṇya) or Soma c.

चर्माधिषवणीयं वा hdr (Ṣaḍguruśiṣya, Sāyaṇa), चर्माधिषवणीये (वा ?) r⁵, दे चर्म-ख्यधिषवणे b, दे चर्मखदिषवणे fk.—सोमं वान्या प्रश्नंसति hm¹r (Ṣaḍguruśiṣya, Sāyaṇa), सोमोपान्या प्रश्नंसति bk, सोमपात्या प्र° f.

- A Yāska quotes this stanza (Nirukta ix. 21) as an example for Ulūkhala, but without commenting on it.

 B According to a marginal note in h, tu has here the sense of ca: tuś cārthe: tena cotūkhala-samuccayaḥ: mantra-liṅga-saṃvūdāt. The Sarvānukramaṇī has yac cid dhy aulukhalyau, pare (7, 8) mausalyau ca.

 C There is no reference to Soma in the Sarvānukramaṇī, where Prajāpati Hariścandra or the skin is stated to be lauded: prajāpater hariścandrasya antyā carmapraśaṃsā vā. This is based on the combined statements of the Brhaddevatā (omitting Soma) and the Devatānukramaṇī: see Ṣaḍguruśiṣya (on i. 28), who remarks that the praise of Soma in this stanza is implied by AB. vii. 17. 1.—101cd is quoted by both Ṣaḍguruśiṣya and Ṣāyaṇa on RV. i. 28.
- 102. 'What though, O True One' (yac cid dhi satya: i. 29) is addressed to Indra as well as the following (i. 30). After the

triplet 'Hither, O Aśvins' (āśvinā a: i. 30. 17-19), addressed to the Aśvins, the next (uttara) triplet 'Who of thee' (kas te: 20-22), addressed to Dawn, is the last (triplet).

सत्येखु° MSS. and r.—चाश्विना तृचात् m¹, चाश्विनातृचात् r, श्राश्विना तृचात् hfkb, श्राश्विनं तृचम् r⁵.—श्राश्विनादुत्तरः hr, श्रश्विनादुत्तरः m¹, श्राश्विनेखुत्तरं bfr⁵r⁵, श्राश्विने मुत्तरं fk.— कस उपस्यस् hd, कस श्रीषसः r⁵r³, कस श्रीषसस् b, कसु श्रीश्रोषसस् fk, त्वन्य उपस्यस् r. The Sarvānukramaņī has the form उपस्थ here: परौ तृचावाश्विनो-पस्थौ.—The end of the varga is here marked by २० in m¹bfk.

a Confusion has been caused in the readings of the MSS, owing to the pratīka of the triplet being ā aśvinau and the triplet being described as 'addressed to the Aśvins,' āśvina. The exact pratīka āśvinau is here represented by āśvinā, which I have preferred to read before troāt, as it is better that uttaraḥ should be immediately preceded by its ablative.

21. Deities of RV. i. 31-40.

103. Being praised (with the stanza) 'For ever' (śaśvat: is 30. 16), he (Indra) a rejoiced in mind gave to Śunaḥśepa (the seer) a celestial car all made of gold.

सर्व hdr, सर्व॰ bfk.

- a Indra being the deity of the hymn according to 102.
- 104. The (hymn) which (begins) 'Thou' (tvam: i. 31) is addressed to Agni; and (then come) two (32, 33) addressed to Indra. Then 'Even thrice' (triś cid: i. 34) is addressed to the Aśvins; 'Of Indra' (indrasya: i. 32) lauds the action (of Indra) without (any) statement of an object a (artha-vāda).

यत्वं hr3fkr2r5r7, यत्तम् b. सूक्षम् r.— ऐन्द्रे च hr, ऐं एतद्वे द्वे b, एंद्रे द्व f.— ऋते र्थवादं hrb, ऋते र्थवादं m1, ऋते र्थवादं fk.— ॰द्रस्थेति तु hr, ॰द्रस्थंन्य b, ॰द्रस्थ श् fk.

- That is, the whole of RV. i. 32 is concerned with the myth of Indra's conflict with Vrtra, containing no prayers addressed to the god. Artha-vāda, meaning 'expression of a want,' has already occurred above (53): yasyām (devatāyām) vadaty artha-vādān.
- 105. (In) 'I invoke' (hvayāmi: i. 35) one verse (1^a) is to Agni, the next (1^b) is addressed to Mitra-Varuṇa, the third (1^c) is (in) praise of Night, (while) the (whole) hymn is stated to be addressed to Savitr.

पादी s पादे प्रयो h, पादे पेथो m^1 , पाद प्रये b, पादे खाप fk.— g तीथो रात्रिसंखावः hdr, g तीथे रात्रिसंखावः m^1 , रात्रि खुता g तीथेन b, रात्रिः खुता g तीथेन r^5 , रात्री सुता g तीथः । न f.— सूक्तं साविषम् hr, सावित्रं सूक्तं bfk.

106. These five hymns (31-35)^a the sage, the son of Angiras^b, after he had seen them, sang, on gaining the position of Hiranya-stūpa and eternal friendship with Indra.

पश्चैतानि hdm^1 , पश्चेमाति bfkr.—दृष्ट्य $hm^1r^3bfkr^2r^5r^7$, दृष्या r.—प्राप्य hr, प्राप्तः $bfkr^5$.

- a Cp. Ārsānukramaņi i. 11. b Loc. cit.: angirasah sutah.
- 107. 'Forth' (pra: i. 36) is addressed to Agni; the three (37-39) following this (beginning) 'Sporting' (krijam: i. 37) are to the Maruts^a. 'Stand up' (ut tistha: i. 40) is addressed to Brahmanaspati. 'Whom they protect' (yam rakṣanti: i. 41) is (composed of) three triplets:

मार्त hrb, मर्त f, °त k.— क्रीळं hdm¹, क्रीलं r, क्रीलां fk, स्नीलं r¹, क्रूलां b.— उत्तिष्ठ B, सूत्रामुद् hm¹r: I have preferred the former reading because the Sarvānu-kramaṇī has उत्तिष्ठ . ब्राह्मण्स्यम्.— The end of the varga is here marked by २९ in hm¹fk, by २२ in b.

^a The correction of mārutam to marutām is rendered necessary by the sense and the construction. The Sarvānukramanī has krīļam..mārutam hi, that is, 'krīļam (i. 37), as well as the two following, is addressed to the Maruts' (hi by the paribhāṣā meaning 'three').

22. Deities of RV. i. 41-47.

108. (the first, 1-3, and the third, 7-9, being addressed) to Varuṇa, Aryaman, and Mitra, (while) the middle one (4-6) has the Ādityas for its divinities. 'Shorten, O Pūṣan' (sam pūṣan: i. 42) is addressed to Pūṣan. (Then come) six (stanzas) addressed to Rudra (i. 43. 1-6), the third, however, not exclusively.

पीष्णं सं पूषन्षजुरीद्यस् hm^1 , पीष्ण्यं स पूषन्षजुरीद्यस् r, पीष्ण्यं स रीदृय षद्भादिति f, पीष्णं सं रीद्वय षद्भदिति b.

- 109. There is here (i. 43. 3) praise (of Rudra) along with Mitra, Varuna, and the All-gods.
- B It has already been said before a by the seer b that without an authoritative statement $(\bar{a}dc\dot{s}a)$ the divinity

वक्णेनाच hm^1r , वक्णेनास्य B.—संस्तवः hfk, संस्तृचः b, संस्रवः r.—उक्तमचर्षिणा r, उक्तमतृषिणा bfk.—पूर्वमादेशाद् r, पूर्वमादेशा fk, पूर्वमादेशा b.—The five lines 109^{ed} —111 are wanting in Λ ; m^1 has them as well as B.

- a In iii. 39: ādeśād daivataṃ jñeyam ... na śakyaṃ lingato...jñātum. b That is, by Saunaka, the reputed author of the present work. This way of referring to the author of the previous passage as different from that of the present one, certainly gives the latter the appearance of being a later addition.
- B 110. cannot be known from its characteristic mark (linga); yet in some places (kvacit) it (the deity) is stated a: (thus) in 'Thou, O Agni' (tvam agne: i. 45. 1) the Ādityas, Vasus, Rudras are praised at the same time b (with Agni).

संजुता: fkb, इति च जुता: r.

- a This seems to mean, that even though there may be no authority for it, a statement as to the deity is occasionally made in this work from the occurrence of the name (lingāt).

 b These names all occur in i. 45. I; but the Sarvānukramaņī says nothing about them.
- B 111. (Then come) three (stanzas) addressed to Soma (i. 43. 7-9). 'O Agni' (agne: i. 44. 1) are two (hymns) addressed to Agni (44, 45). With a Pragātha couplet a the Aśvins are (here) b praised with Dawn who bears her characteristic mark (linga-bhāj) c. 'Here is Soma, O bounteous ones' (ayaṃ somaḥ sudānavaḥ: i. 45. 10^{cd}) d

तिस्र: सीम्यो bm¹, तिस्र: सीम्यौ fk, तृचः सौम्यो r. The Sarvānukramaņī has तृचः सौम्यो, but तृचः, being in accordance with its phrascology, would naturally have been substituted for तिस्रः.—प त्रापेचे b, प त्रपेचे r, प चे m¹fk.—प्रगाधेनाश्विनौ सुतौ r, प्रगाधेमे श्विनौ b, प्रागाधिष मे श्विनौ सुतौ fk, प्रागाधातिमे धे श्विनौ सुतौ m¹.— सिङ्गभाजा m¹fkr, सिङ्गभाजो b.

- a That is, a couplet consisting of a brhatī and a satobrhatī.

 b That is, in i. 44. 1, 2; cp. Sarvānukramaņī: ādyo dvṛco 'śvy-uṣaṣāṃ ca.

 c That is, she is mentioned by name (as well as the Aśvins and Agni).

 d As his pratīka seems to be necessary, and 111^{ab} looks as if it had been known to the author of the Sarvānukramaņī (see critical note on tisraḥ and note b), the śloka is probably genuine.
- 112. is a hemistich which has the gods for its deities a. The two following (hymns, beginning) 'She here' (eṣo: i. 46. 1) are addressed to the Aśvins (46, 47).

B Yāska b thinks the Sun (āditya) is praised at the same time in (the stanza) 'With oblation' (haviṣā: i. 46. 4).

112^{cd} is wanting in A and m¹.— यास्तो r, यास्तो b, स्ता fk.—The end of the varga is here marked by २२ in bfk, after the next line (113^b) in m¹, not at all in hd.

^a Cp. Sāyaṇa, Introduction to i. 45: ayaṃ soma ity ardharco devadevatyaḥ; Sarvānukramaṇī: ardharco 'ntyo daivaḥ.

^b In Nirukta v. 24, where ādityaḥ occurs in the explanation of RV. i. 46. 4.

23. RV. i. 48-60. Story of Savya. The S'atarcins.

113. 'Together with' (saha: i. 48. 1) are two (hymns) addressed to Dawn (48, 49); then 'Upward him' (ud u tyam: i. 50) is addressed to Sūrya: (in) 'Wherewith' (yena: i. 50. 6) Varuṇa a connected with Heaven (dyubhakti) is praised; the last triplet (50. 11-13) is destructive of disease (rogaghna)^b.

सहीषसे hdm1, सहोषसे bfkr.—संसुत: bfk, संसुतम् hm1r.

- There is no statement in the Sarvānukramaņī about the deity of this stanza; cp. Sāyaņa on i. 50. 6.

 Dec. Sarvānukramaņī: antyas treo rogaghna upanisat.
- 114. With the first two (stanzas) in the last triplet (beginning) 'Rising' (udyan: i. 50. 11, 12) there is driving away of disease a, while in a hemistich b (of the last stanza) there is hostility to foes c.

Among the Satarcins is Savya^d who is a form of Indra (aindra).

रोगापनुतिर् b. रोगापनुतिव् r^5 , रोगापनुद्धि r^3 , रोगपनुत्तिम् m^1 , रोगोपनुत्तिर् f, रोगोपनुद्धिम् h, रोगोपनुद्धं r.—दिषह्देष r, दिषदेष hm^1bfk , (त्रर्धर्चं तु) दिषह्देषद् r^5 .— ऐन्द्रः सव्यः hdr, ऐन्द्रः सव्यः m^1 , ऐन्द्रः एष्टः r^5 , एंद्रः सत्यः p, व्य द्सत्पः f, व्यवी षत्पः p.

^a Cp. Sāyaṇa's introduction to the triplet i. 50. 11-13, where he quotes the following sloka from Saunaka:

उवज्ञविति मन्त्रोऽयं सीरः पापप्रणाश्रनः। रोगच्च विषच्च भुक्तिमुक्तिफलप्रदः॥

The second hemistich according to Rgvidhāna i. 19.4: uttamas tasya cārdharco dviṣuddveṣa iti smṛtaḥ; several MSS. of the Sarvānukranaṇī add antyo 'rdharcaḥ śatruyhnaś ca.

The BD. takes no notice of the khila which comes after RV. i. 50, and is printed by Aufrecht and Max Müller. It is the first in the Kashmir collection, but the first pāda there is different: sam ait tiṣyordhvamahasa (ādityena sahīyasā &c.).

A Savya being the seer of the group of seven hymns i. 51-57 (see Ārṣānukranaṇī i. 13), these seven hymns are now alluded to here in this way only. The allusion to the deity of these hymns is still more remote in Savya's attribute aindra.

115. Of the sage Angiras who wished for a son like Indra, the Bolt-bearer himself became the son a, having assumed the form of Savya in consequence of the seer's asceticism.

इक्तो hm^1 , इक्ति b, इक्तो fk, इक्तो r.—वन्येव hm^1 , वज्रेव r, अज्ञय च fk, वज्ञ्यो व b.—भूत्वर्षे fk. भूत्वर्षे fk.

- ^a Cp. Sarvānukramaņī: angirā indratulyam putram ichann abhyadhyāyat: savya itīndra cvāsya putro 'jāyata.
- 116. Now the seers in the first book are to be known as Satarcins; in the last, as seers of short hymns and of long hymns; in the middle ones, as middlemen (madhyama)^a.

जुद्रसूत्रामहासूत्रा hrbfk, Sarvānukramaņī, जुद्रसूत्रा महासूत्रा m¹, Ārṣānukramaņī, Sarvānukramaņī, v. r.— अन्ते hr, Sarvānukramaņī, अन्ते h, अन्ये fk.— मध्यमाः hm¹rbfk, Ārṣānukramaṇī, माध्यमाः Sarvānukramaṇī, ĀGS. iii. 4. 2 (श्तिचिनो माध्यमाः . . . जुद्र-सूत्रा महासूत्राः).

- ^a Cp. Sarvānukramaņī, Introduction ii. 2 (श्तर्चिन त्राद्ये मण्डले (न्द्ये चुद्रसूत्रमहा-सूत्रा मध्यमेषु माध्यमाः); Ārṣаnukramaņī i. 2; ii. 1; х. 1: ср. BD., vol. i, р. 146; see Roth, Zur Litteratur, р. 26.
- 117. 'Now indeed' (nū eit: i. 58), containing nine stanzas, is addressed to Jātavedas; while the hymn which (begins) 'Branches' (vayāḥ: i. 59) is addressed to Vaiśvānara; the following one, 'Bearer' (vahnim: i. 60), is addressed to Agni.

नू चिद्यत्तु $h \, dm^1 r$, न विद्य तु b, न विद्य तु f, न विद्य न k.—वहिमापेयमुत्तरम् $m^1 b$ $f k r^2 r^5 r^7$, श्रापेयं तु ततः पर्म r.—117 cd and 118 ab are wanting in hd.—The end of the varga is here marked by २३ in bfk, after the next line in m^1 .

24. RV. i. 61-73. Eleven Khilas. RV. i. 74-89.

118. Then (come) three (61-63), 'To him' (asmai: i. 61), addressed to Indra; 'For the manly host' (vṛṣṇe śardhāya: i. 64) is addressed to the Maruts; 'With a cow' (paśvā: i. 65) is (the first of) nine hymns (65-73) addressed to Agni; 'Ever indeed of you' (śaśvad dhi vām)

एन्द्राण्यसी ततस्त्रीणि $\mathbf{m}^1\mathbf{r}$, ऐन्द्राण्यसा चीणि \mathbf{b} , ऐन्द्रण्यसा द्वणि $\mathbf{f}\mathbf{k}$. — ग्रयधि वामिति $\mathbf{h}\mathbf{m}^1\mathbf{r}$, ग्रयदिनानि तु \mathbf{f} , ग्रयदिनानि तु $\mathbf{b}\mathbf{k}$, पड् द्वैपदानि तु $\mathbf{r}^5\mathbf{r}^7$.

119. are ten addressed to the Aśvinsa; (the hymn) 'These' (imāni: viii. 59) b is (in) praise of Indra-Varuṇa. But whatever (other deities) belong to the Sauparṇa hymns are praised incidentally (nipātastutiṣu).

दशायिनानीमानीति rfk, दशायिनानीमानीती॰ hd, दशायिनानमानीती॰ m^1 , दशायिनानीमानि b.— इन्द्रावर्णयोः खुतिः r, ॰न्द्रावर्णयोः खुतिः hd, ॰न्द्रोमूखलयो स्थितिः m^1 , तदिन्द्रावर्णं विदुः fkb (ep. Sarvānukramaņī on viii. 59: ऐन्द्रावर्णम्). Instead of this line r^5r^7 read:

उपान्यं सप्तमे धर्चं न मैत्रावर्णं विदुः।

—सीपर्णेयासु hbfk, सुपर्णेयासु m^1 .—याः काञ्चिन् $hr^3bfr^5r^7$, यासाञ्चि k, काञ्चिच r.—निपात॰ hr, निपाता b, नियाता k, निपाताः fr^5r^7 .

- a Here we have a collection of eleven Khila hymns, ten addressed to the Asvins, and one to Indra-Varuna. The text of the former is known in one MS, only, but the latter is identical with the eleventh Välakhilya hymn of the RV. (viii. 59), the seer of which, according to the Sarvanukramani, is Suparna and the deity Indra-Varuna. This collection is spoken of in the Rgvidhāna i. 20. 3 as 'the eleven purifying Sauparna hymns' (sauparnāni pavitrāņi sūktāny ekādaśa). Of the ten Asvin hymns we know only the pratīkas of two, viz. śaśvad dhi vām (the first) and of one of the others, pra dhārā yantu madhuno ghṛtasya (ĀGS. iii. 12. 14 and Sāyaṇa on AB. viii. 10. 4); cp. Meyer, Rgvidhāna, p. xxiv. In the Kashmir MS., the first has fourteen stanzas, the first line being śaśvan nāsatyā yuvayor mahitvam. The second has seven stanzas, and begins with the line pra dharayantu madhuno ghrtasya. b The eleventh hymn of the collection (imani), addressed to Indra-Varuna (referred to as sauparna in AB. vi. 25.7), is passed over below, vi. 86 (see note on that passage). Cp. on the sauparna khilas, Oldenberg, Prolegomena, p. 508. c I supply devatāh here, and take the meaning to be: whatever deities, except the Asvins and Indra-Varuna, are mentioned in these eleven Sauparna hymns are only incidental (nipātinī, not sūktabhāj or rgbhāj). Sauparņeya seems to be a derivative of sauparņa.
- 120. The following six hymns (74-79), 'Going forth' (upaprayantaḥ: i. 74. 1), are addressed to Agni; but the triplet 'With golden locks, of air' (hiraṇyakeśo rajasaḥ: i. 79. 1-3) is (addressed) to the middle Agni.

सूत्रानि आ॰ r, सूत्रान्या॰ hm¹b, सूत्रानामा॰ fk.

121. Now 'Thus' ($itth\bar{a}$: i. 80. 1) are five (80-84) addressed to Indra; in the (stanza) 'Whatever' ($y\bar{a}m$: i. 80. 16) Dadhyañe, Manu, and Atharvan are incidentally mentioned a. Then 'They who forth' ($pra\ ye$: i. 85. 1) are addressed to the Maruts,

Q

इत्येति hd, इक्येति b, इक्येति $fkr^2r^5r^7$, इत्येति r.—निपातिताः bfkr, निपातिनः hm^1 .—प्र ये ततः hrf, प्र येत्ततः k, थये ततः b, प्रयत्नतः m^1 .

- * This follows Nirukta xii. 33, 34 (on i. 80. 16): dadhyan . . atharvā . . manuh . . tesām nipāto bhavaty aindryūm rci.
- 122. being four (85-88). 'To us' (ā naḥ: i. 89. 1) are two (hymns) to the All-gods (89, 90); two a (stanzas here) are regarded as (in) praise of the gods (in general), both 'To us, the auspicious' (ā no bhadrāḥ: i. 89. 1), 'Of the gods' (devānām: i. 89. 2), and again 'What is auspicious' (bhadram: i. 89. 8) up to (yāvat) 'A hundred' (śatam: i. 89. 9) b.

चलायी नो hbr, चलायीपी $fk r^2$.—वैश्वदेवे hm^1 , वैश्वदेवे r, वैश्वदेवे qk, वैश्वदेवे fk, दित सूक्ते $r^1r^4r^6r^2$. — दे देवानां खुतिर्मते hd, दे देवानां खुतिर्मता r, दे (ξfk) देवानां खुतिर्मतः bfk, देवानां खुतिर्मतः $r^1r^4r^6r^2$, दे देवानां खुतिं विदुः m^1 .— मद्रं r, रूद्रं hm^1fk , रूट्र b.—यावच्छतं r, यावछतं hfk, याचर्छतं b.— 122^{cd} and 123^{ab} are omitted in $r^1r^4r^6$.—The end of the varya is here marked by 28 in hbfk, but in m^1 after 123^b .

a I supply reau here, and take punal to indicate a repetition of dve (reau). b There is no reference to these four stanzas in the Sarvānukramaņī.

25. RV. i. 90-93. Order of hymn-groups in Mandala i. 74-164.

123. In the triplet 'The winds waft mead' (madhu vātāḥ: i. 90. 6) the supreme (parama) mead is also (api)^a desired; but in the (stanza) 'Aditi is Heaven' (aditir dyauḥ: i. 89. 10) the majesty of Aditi is told.

तृचे br, तृचो fk, तृचस् hm¹.—मध्यपीष्यते r, मथपीष्यते fk, मथपीप्यते b, मथमिष्यते hdm¹.—After 123^{ab} r adds the following line (omitted in Am¹bfk):

शान्यथी शं न इत्येषा वैश्वदेवी ऋगिष्यते।

- —कथिता॰ hm^1r , कथ्यते $br^2r^5r^7$, कथते fk.
- ^a That is, while the triplet is addressed to the All-gods, the heavenly mead (madhu, which word occurs in every stanza of the triplet) is prayed for.
- 124. 'Thou, Soma' (tvam soma: i. 91) is addressed to Soma; 'These Dawns' (etā u tyāḥ: i. 92) is addressed to Dawn; the triplet 'O Aśvins' (aśvinā: i. 92. 16–18), to the Aśvins. 'Agni and Soma' (agnīṣomuu: i. 93) is (in) praise of Agni associated with Soma.

श्रीषसम् b, श्रीषस्यम् hm^1r , एषस्यम् fkr^2 , एधस्यम् $r^1r^4r^6$. — ससीमस्या॰ hdm^1 , च सोमस्या॰ fk, च सोमस्या॰ b.

125. After Gotama (74–93) the son of Uśij (Kakṣīvat comes: 116–126); after the seer Paruchepa (127–139) follows Kutsa (94–115); after Kutsa, Dīrghatamas (140–164): always (śaśvat) these two b (sets respectively); in this order (evam) is read (the text of the Rg-veda).

गोतमाड् hdr, गौतमाड् m^1bfk , Anuvākānukramaņī.— In $r^1r^4r^6$, 125^{ab} reads as follows:

गोतमो नाम च ऋषिः कुत्स ऋङ्गिरसः परः।

- —श्यत्ते द्वे एवमधीयते hm^1r^3 , द्वि ते द्वे एवमधीयते $r^1r^4r^6$, चेत्यमध्येतार्स्वधीयते r^5r^7 , चेत्यध्येतार्स्वधीयते h, सञ्चत्यध्येतार्स्वधीयते h, सञ्चत्यधितार्स्वधीयते h, सञ्चत्यधीयते h, सञ्चत्यवित्यते h, सञ्चत्य
- * That is, while the order of the Sākalas is Gotama, Kutsa, Kakṣīvat, Paruchepa, Dirghatamas, that laid down in the BD. is Gotama, Kakṣīvat, Paruchepa, Kutsa, Dīrghatamas: thus Kutsa instead of coming second comes fourth. This is the order of the Bāṣkalas, as shown by the form in which this śloka appears in the Anuvākānukramaṇī (see BD., vol. i, p. 146): kutsād dīrghatamā ity eṣa tu bāṣkalakaḥ kramaḥ. See Kuhn, in Indische Studien, i, p. 115, and Oldenberg, Prolegomena, p. 496.

 But die and Oldenberg, Prolegomena, p. 496.

 But die and Oldenberg of the dual neuter I supply sūkte, that is, rṣisūkte (collections by one seer; cp. i. 14): the collections of each of these five seers should be coupled successively in this order in reading the Rg-veda.

26. RV. i. 94-111. Seers of hymns with refrains. Khilas of Kasyapa.

126. Kutsa, son of Angiras, saw 'This' (imam: i. 94): he uttered (this hymn) containing sixteen stanzas (and) addressed to Jātavedas.

A Three verses (8^{abc}) of the stanza 'Foremost, O Gods' $(p\bar{a}rvo\ dev\bar{a}h: i. 94. 8)$ have the gods as their deities; then half of the last (stanza: i. 94. 16)

जातविद्सं hm¹r, जातविद्सं bfkr⁵r⁷.—पोळग्र्चम् hdm¹, षोडग्र्चं r, षोळग्रीचं f, षोलस्र्थम् b.—126^{cd} is found in hm¹r, but is omitted in bfkr⁵r⁷.

^a The second pada of 126 has one syllable too many.

A 127. either belongs to the same deity (i.e. Agni) as the (whole) hymn which precedes it $(tatp\bar{a}rva)$, or it is (addressed) to

the six deities, Mitra and the rest, who are here referred to $(pra-krta)^a$.

The last hemistich (i. 94. 16^{cd}) is (addressed) optionally $(v\bar{a})$ to the six (deities) praised, whereas in 'Foremost' $(p\bar{u}rvah: i. 94. 8)$ the gods (in general) are praised with three verses.

तत्पूर्वमूकं hd, तत्पूर्वमुकं m^1r .—वाच hm^1r , सुताप्रा r^1r^4 , सुताप्रो r^6 .— तु वा यसां r^5r^7 , यसां च h (one syllable short), यसां hm^1r (two syllables short).— पादेसु तुभि: fk, पादेसु सृभि h, पादे: सुतिभि: hm^1r .— 127^{ab} in hm^1r (wanting in hm^1r). In r^5r^7 , the four padas of the tristubh stanza 126^{ab} and 127^{cd} have been turned into four anustubh lines as follows:

रमं कुत्स ऋ दियां जातवेदसम्।
पूर्वा देवास्त्रतो देवास्त्रिमः पादैसु संसुताः॥
षोडशर्चे तथा मूके जगाद चतुरित्यसौ।
ऋ न्वेऽर्धर्चे तु वा षस्तां लिङ्गोक्तानां सुतौ गणः॥

Those MSS, also insert 125cd between the first and second of the above lines.

There can be no doubt that 126^{cd} and 127^{ab} are a later addition of the A MSS., since they merely amplify 127^{cd} which A has in common with B; they also give the varga six slokes instead of the normal five.

128. ^aIn Bharadvāja, Gṛtsamada, Vasiṣṭha^b, Nodhas^c, Agastya^d, Vimada^c, Nabhāka^f, Kutsag there are no similar (samānadharmiṇaḥ) refrains in (hymns) addressed to many divinities, also (not) in those addressed to two gods.

नोदर्का $hm^1r^1r^4r^6$, नोदर्के bfkr.— बक्कदैवतेषु hm^1 , ॰देवतेषु dbr, ॰द्वतेषु f.— दिदेवेषु hbfk, दिदेवेषु m^1 .—समानधर्मिण्: $hm^1r^3bfkr^2r^5r^7$, समानदेवधर्मा: r.

a In connexion with the last homistich (the refrain of i. 94-96, 98) of Kutsa's hymn (i. 94) mentioned in the preceding śloka, the author now goes on to enumerate eight seers whose hymns are characterized by refrains. The meaning seems to be, that no refrain of a similar character to this one of Kutsa's (that is, a refrain containing the names of several deities) occurs in any of the hymns of these seers addressed to many deities or None of the refrains of these seers (except Kutsa's) appear to have this character, even in hymns addressed to a single deity; but this point would have to be b The first three names are those of seers of whole Mandalas, more closely examined. in which refrains are frequent. ^c Seer of i. 58-64: 58, 60-64 end with the same refrain. d Seer of i. 166-168 which end with the same refrain. e Seer of x. 21 and 24: all the stanzas of the former and half of those of the latter contain the refrain vi vo made . . . f Seer of viii. 39-41, through the whole of which runs the refrain nabhantām vivaksase.

anyake same. The name, properly spelt Nābhāka (above, iii. 56; Ārṣānukramaṇī viii. 10; Sarvānukramaṇī), has the first syllable shortened owing to the metre.

g Seer of i. 94-98, all of which end with the same refrain except 97, which has a refrain of its own running through the whole hymn.

129. 'Two unlike' (dve virūpe: i. 95) is a hymn to Agni Auṣasa, 'He in the ancient way' (sa pratnathā: i. 96) is to Agni Draviņodas, 'Of Vaiśvānara' (vaiśvānarasya: i. 98) is addressed to Vaiśvānara; but the one before this (i. 97) is to Agni Śucia.

श्रीषसायायये hd, श्रीषसायये bfk, श्रीषसायये m^1 .— द्रविणोद्सेऽयये hm^1r , द्रवि-णोद्शे वहं b, द्रविणोद्शे वर् fk.—वैश्वानरस्रित rfk, वैश्वानरस्रित ये hdr^3 , omitted in b.—r has उत्तम् after वैश्वानरीयम्.— 129^{cd} is omitted in $r^1r^4r^6$.

^a Cp. Sāyaṇa, introduction to RV. i. 97.—The first two pādas of this stanza have twelve syllables ending iambically; the fourth, though having eleven syllables, ends iambically also.

B 130. Some say that the thousand hymns addressed to Jātavedas (which come) before (the hymn) addressed to Indra (i. 100) have Kaśyapa as their seer^a: the first hymn of these is 'For Jātavedas' (jātavedase: i. 99). Śākapūṇi thinks that they increase by one b (in the number of their stanzas)^c.

जातविद्स्यं m^1 br, जातविद्स्य fk.—सूत्रसहस्रमेक r, सूत्रसहस्रमेकम् m^1 , सूत्रं सहश्रमेक k, सूत्रस्य सहस्रामक b.—कश्चपार्षं m^1 r (Sarvānukramaņī), कश्चपार्रिषं b, कश्चपा ऋषि fk.—130 is omitted in A. After 130 Mitra adds from one (r^5) or two (r^5r^7) of his MSS, three lines not found in A or $bfkr^2$:

द्वृचाया सहस्रचीनं मूतं नानाविधं भवेत्। नवनवितः पञ्चलचा ऋचः खुः सचतुःश्तम्। नानादैवतमेकार्षे क्रन्दोभिश्चित्रमृत्पथम्॥

a The text of the Sarvānukramaṇī on RV. i. 99 is clearly based on this stanza, which must therefore be original. Cp. vol. i, Appendix vi, p. 148. b With the three interpolated lines in R cp. the ślokas in Sadguruśisya on Sarvānukramaṇī i. 99, where the total number of the stanzas (calculated as an arithmetical progression) contained in the 1000 hymns attributed to Kaśyapa is stated to be 500, 500 less one (i. e. subtracting one for the first, RV. i. 99, which is not a khila): cp. my explanatory note, Sarvānukramaṇī, p. 159. When Ṣadguruśisya states that 'Saunaka himself has referred to these khilas in indexing the secr' (rsyanukramaṇē) the allusion must be to the above passage of the BD., as the Ārṣānukramaṇē makes no mention of them. c Pādas acd, though ending like triṣṭubhs, have twelve syllables.

131. 'The mighty one who' (sa yo vṛṣā: i. 100) is (the first of) five (hymns) addressed to Indra (100-104)^a; there are (then) three (105-107) addressed to the All-gods, (beginning) 'The Moon' (candramās: i. 105. 1). 'That which, O Indra-Agni' (ya indrāgnī: i. 108) is (the first of) two addressed to Indra-Agni (108, 109); the two following (110, 111) 'I wrought' (tatam: i. 110. 1) are addressed to the Ŗbhus.

The end of the varga is here marked by a in hm bfk.

^a The Sarvānukramanī states RV. i. 101. I to be garbhasrāviņy upaniṣat, and in Rgvidhāna i. 23. 3 it is described as garbhapramocanī.

27. RV. i. 105: Story of Trita.

132. The cruel sons of the she-wolf $(s\bar{a}l\bar{a}vrk\bar{\imath})^a$ having cast Trita, who was following the cows, into a well b, carried off all the cows from thence c.

सालावृत्ती॰ r, श्वाला॰ $hm^1r^3r^5$, श्रला॰ b, शि्ळा॰ f (ep. RV. सालावृत्त).—गाः सर्वास् hm^1r , ताः सर्वास् Br^3 .—एवापजहिरे r, एवोप॰ hd, एवो॰ m^1 , एवाघ bfk, एवाघ॰ r^5r^7 .

- ^a Cp. RV. i. 105. 18: aruņo mā sakṛd vṛkaḥ pathā yantaṃ dadarśa hi.

 ^b Cp. RV. i. 105. 17: tritaḥ kūpe 'vahitaḥ.

 ^c On the story of Trita in the well cp. Geldner, Vedische Studien, iii. 170 ff.
- 133. He, the best knower of formulas among all knowers of such, pressed Soma there and summoned all the gods: Bṛhaspati heard that (call)^a.

स तत्र सुषुवे सोमं $h \, m^1 r$, तत्र सोमं सुषावासी $b f k r^5 r^7$.— चावाहयत् d, चावाहयन् r. चावहयत् b, चावहत् $m^1 f k$, चावहयन् h.

- a The words tac chuśrāva bṛhaspatih occur in RV. i. 105. 17.
- B 134. Now on seeing them coming, he reproached (them), saying, 'Where, indeed, abides, the all-seeing power (sarvadṛktva) of this Varuṇa and of Aryaman?

आगच्छतोऽथ तान् r, आगछतो न तां b, आगतो न तां fk, आगतानथ तान् m¹.— तत्वतः m¹, तत्वलं b, तत्वलं r, तत्वं fk. — सर्वदृत्वं m¹, सर्वदृतं fb, सर्वदृतं k, सर्वं दृतं r.— क्रां m¹fk, क्र b, च r.— वन्णसार्यम्ण r, वन्णसार्यमूचे॰ b, रूपसार्यमण्चे॰ f, कूप—134, 135 wanting in A.

B 135. 'My limbs were wounded by the bricks of the well. Having seen all (the gods) I praise (them), even though not one (of them) sees (me).'

कूपेष्टकाभिर् r, कूपे क्वनाभि m^1fk , दुपे क्वताभिर् b. — व्रिणतान्यङ्गान्येवाभवन्यम r, विण्तान्यन्यंगान्येवाभवन्यम b, व्रिणनान्यंगरेन्येवाभवन्यम fk, व्रिणनाम्यंगरेवाभवन्यम m^1 . — स्वीनहं m^1r , स्वीनह bf, स्वजह k. — क्वो न पश्चित bfkr, क्वो न विश्वितः m^1 .

136. The three troops a of the All-gods, urged on by Brhaspati, went to that sacrifice of Trita and took shares of it together.

विश्वदेवगणास् m¹ br, •देवा गणास् hfk.—जग्मुस्त्रितस्य hdm¹, जग्मुस्ते तस्य r, श्राज-गमुस्तस्य bfkr² r⁵ r⁷.—The end of the varga is here marked by २७ in bfk, not in hdm¹.

^a As belonging to the three spheres of heaven, air, and earth; cp. my 'Vedic Mythology,' p. 19.

28. Deities of RV. i. 112-121.

137. As a seer Brhaspati declared the knowledge and discernment of Trita here displayed (etai) with the last triplet (i. 105. 16-18)^a of the hymn (beginning) 'That' (asau: i. 105. 16).

वृहस्पतिस्त्रितस्रीतत् $\ln^1 r$, वृहस्पतिस्त्रितस्रीतं $r^1 r^4 r^6$, वृहस्पतिस्त्रितस्रीतत् f, वृहस्पतिति तस्रीत h.— मृक्तस्य $\ln^1 h f k$, मृक्तेन r.

- ^a It is important to note that this statement ignores the existence of RV. i. 105. 19, which, according to Grassman, RV. Translation, vol. ii, p. 446, is an interpolation. The first pāda of this stanza is, however, quoted by Yāska, Nirukta v. 11, to illustrate the word āṅgūṣa.
- 138. (The verse) 'I praise' (ile: i. 112. 1°) is to Heaven and Earth, the next verse (1^b) is addressed to Agni; the remainder of the hymn (112. 1^{cd}-25) should be (regarded as) addressed to the Asvins^a. 'This' (idam: i. 113) is (in) praise of Night and Dawn.

॰पृथिबोर् br^5r^7 , ॰पृथिबौर् fk, ॰पृथिबाव् hdm^1r .—॰लेति त्रापेयः r, ॰लेखापेय b, ॰लेनेखापेयः r^6r^7 , ॰केखादापेयः hdm^1 , ॰लेखात्रयनि fk.—रात्र्युषसोः m^1r , ॰सो fk, ॰स h, राचिषपस्थे b.

- * Cp. the quotation in Ṣaḍguruśiṣya (p. 93) from the Dovatānukramaņī: iļe dyāvā-pṛthivyor ādyaḥ pādaḥ paro 'gnaya āśvinam tac ca sūktam.
- 139. 'These' (imāḥ: i. 114) is addressed to Rudra; the next, 'The brilliant' (citram: i. 115), is addressed to the Sun. Then

(come) five (i. 116-120) addressed to the Asvins (beginning) 'For the Nāsatyas' (nāsatyābhyām: i. 116. 1): the last (stanza) in the last (hymn: i. 120. 12) is destructive of evil dreams.

ut सौर्य hm¹ r¹ r⁴ r⁶, तत: सौर्य bfk r.—लन्य न्या Am¹, लन्य अर्थर्ग r, लन्य अर्थर्ग fk, लंग्य अवर्ग b. The reading of A is supported by the Sarvänukramaņī: antyā duḥsvapnanāśinī; cp. also Rgvidhāna i. 25.1; Sāyaṇa on i. 120. 12; Pischel, Vedische Studien, i, p. 1.—॰नाभिनी Ak, ॰नाभनी fb.

140. 'When?' (kad: i. 121) is addressed to Indra, and 'Forth' (pra: i. 122) is addressed to the All-gods. The two (123, 124) next (beginning) 'Broad' (pṛṭhuḥ: i. 123. 1) are addressed to Dawn (auṣase). In 'At morn' (prātaḥ: i. 125) the seer lauds the gift of Bhāvya a.

प्रीषसे पृथुक्तरे hdm^{1} , प्रोषसे पृथुक्तरे r, प्रयुवः पृथुर्दे ऋषीषसे b, यवः पृथुर्दे ऋषीषसी fk.—दानं च $hm^{1}r$, दानं नु $bfkr^{5}n$.

a 140^{cd}-150 are quoted in the Nītimañjarī on RV. i. 126. 7. The following story is told to show under what circumstances RV. i. 125 and 126 were revealed to Kakṣīvat. The name Bhāvya, which occurs in RV. i. 126. 1, is here meant as an equivalent of Bhāvayavya, by which it is explained in Nirukta ix. 10.

141. 'When, indeed?' (kad itthā: i. 121), a hymn of Kakṣīvat which is traditionally held to be addressed to Indra, is indicated as indirectly addressed (parokṣa) to the All-gods in the Svarasāmans^a.

काचीवतं किंदित्येति hdm^1 , कचीवतं किंदित्याति $r^1r^3r^4r^6$, काचीवत वादित्वें b, कचीवनं वादिदीति fk, कचीवता विदित्वेति r.— 141^{cd} and 142^{ab} omitted in fk; 141 omitted in n.—परोचं hdr, परोचे br^5 .—The end of the varga is here marked by \mathbf{x} in hdm^1b , but after 141^b in fk.

^a It is mentioned as puroksavaiśvadeva in the Kausītaki Brāhmana xxiv. 9 (one of the sections on the Svarasāmans); cp. below, v. 44, 45.

29. Story of Kaksīvat and Svanaya.

142. Having acquired knowledge from his spiritual teacher^a (and) going home, as we are told (*kila*), Kakṣīvat fatigued on the way fell asleep within the forest.

खनिलयं hdbr, स्वं निलयं n.— किल hdm¹, प्रति br.—142-153 wanting in $r^1r^4r^6$ (142^b and 153 both end with the word किल).

^a That is, having completed his apprenticeship in Vedic study.

143. Him a king, Svanaya by name, the son of Bhāvayavya, saw as he went along to amuse himself, accompanied by his retinue, his wife, and his domestic priest.

भावयव्यसुतो hm¹rn(d), भावयव्यस्तो b, भावयव्यस्तो fkr⁵n(ab). The reading भुतो is supported by Sāyaṇa (on RV. i. 125. 1, where the story of Kakṣīvat is told), who calls Svanaya भावयव्यस्य पुत्र: 1.—The unanimity of the MSS. in writing क्रीडार्थ has caused a lapse from consistency, which requires क्रीटार्थ in the text.

• 144. Then on seeing him endowed with beauty (and) resembling the son of a god, he thought of bestowing his daughter (on him), if there were no objection on the score of caste and family.

ष्ययेनं hdfr, ष्ययेन k, श्राचिनं b, श्राहिनं n.-- शोचाविरोधतः hdbfkr, शोचावरोधतः n.

145. Then after wakening him he inquired as to his caste, family, and so forth. The youth replied to him saying, 'O king, I am of the race of Angiras;

ततः hdm¹, तदा bfkr, तथा n.—145^{cd} and 146^{ab} are omitted in r⁵.

146. 'I am a son of the seer Dīrghatamas, son of Ucathya, O king.' Thereupon he (Svanaya) gave him ten maidens decked with ornaments a,

कन्या bfkr⁵n, कन्यां hdm¹r.—दशाभारविभूषिताः b, दश भारविभूषिताः n, दश भारविभूषिता fk, दश भारविभूषिताः r⁵, दिखाभरणभूषिताम hdm¹r.—The reading कन्या दश is preferable, as apparently based on the words वधूमनो दश रथासः (interpreted as 'ten chariots with maidens') in RV. i. 126. 3, and because the reading in the next line (common to A and B) तावतस रथाम implies a previous statement of number. Svanaya intends to give his daughter (कन्यां) to Kakṣīvat, but in the meantime presents him with ten maidens along with the chariots, &c.—The end of the varga is here marked by २९ in bf, not in hm¹k.

^a Or, according to A, '(his) daughter decked with heavenly ornaments' (see critical note).

30. Story of Kakṣīvat and Svanaya (continued).

147. and the same number of chariots, strong-bodied bay steeds going in teams of four, for the purpose of conveying the maidens, money and (utensils of) inferior metal b, goats and sheep.

रथांद्यावान् h, रथान्द्यावान् d, रथांस्थावो b, रथांस्थास्य r^b n, रथांस्थास्य fk, रथान्स्थान् r, रथान्द्रियान् m^1 . (The word स्थावान्, occurring in RV. i. 126. 3, would easily

be corrupted: cp. b.)— वीडुङ्गान् वे hdm¹r, दीनश्चेश्व b, द्वीपनो श्वे: r⁵n, द्वीपनौ श्वे: fk. (The word vīḍvaṅga does not occur in RV. i. 126. 3, but is an epithet of aśva in RV. i. 118. 9.)— धनकुष्यं hdm¹fk, धनकूष्यं r, धनं कुष्यं bn, धनं कूष्यं r⁵. (I have preferred धनकुष्यं as a dvandva owing to the following श्वजाविकम्, and because this reading occurs in B as well as A.)

- a The expression vadhūnām vāhanārthāya was doubtless suggested by vadhūmantah in RV. i. 126. 3. Cp. critical note on kanyā daśa above, 146.

 b A similar distinction between dhana and kupya is found in Manu vii. 96. There is no reference to these, nor to sheep and goats, in the text of the hymn.
- 148. Further he gave (him) a hundred necklets and a hundred bulls. This is told in the next hymn with (the stanza) 'A hundred' (śatam: i. 126. 2) and so forth.

वृषमाणां च hm¹r, च्रषमाणां bfk, श्रतमञ्चानां r⁵n.—एतदुत्तरमूक्तेन hdm¹r, एतत्त-दुत्तरे सूक्ते r⁵n, एतत्तदुरे सूक्ते b, एवं तदुत्तरे सूक्ते fk.—श्रतमिखादिनोदितम् hm¹r, श्रतमिखादि चोच्यते r⁵, वोच्यते b, सूच्यते fk, °षूच्यते n.—The line 148^{cd} occupies this position in B and n, but in A_c and m¹ it comes after 150, its place at 148^{cd} being taken by the following line in A and m¹:

गवां सहस्रं षष्टिश्व b सर्वाः खल्बरिधायसः। b hdm², षष्टीश्व r.

This line must be spurious, as it repeats the sense of 149^{cd} , which is common to A and B. Its inclusion would, moreover, give five and a half ślokas to the varga instead of five. The line 148^{cd} is more appropriate here, as it interrupts the sense after 150.

- A Having thus referred to RV. i. 126.2, 3 the author, in the following śloka, enumerates the gifts over again in close adherence to the wording of those two stanzas.
- 149. A hundred horses, a hundred necklets, ten chariots with maidens, (steeds) going in teams of four, and a thousand and sixty cows a—

गवां चैव br, गवांश्वव hm^1fk .—षध्युपाधिकम् br^5 , षध्यताधिकम् m^1 , षध्यधाधिकम् hfr, षध्यधादिकम् n.—149, 150 omitted in d.

- n The text of the hymu (i. 126.2, 3) has niṣkāñ chatam aśvān..vadhūmanto daśa rathā-sah...saṣṭiḥ sahasram..gavyam.
- 150. Kakṣīvat, who obtained a (all this) from Svanaya Bhāva-yavya, both praised (him) after receiving (it) and recited (the hymn) 'At morn' (prātaḥ: i. 125) to his father.

मात: hm¹rbfk, तत: r⁵n.—The end of the varga is here marked by 30 in bfkm¹, not in hd.

^a The accusatives in 149 are of course governed by this verb.

31. Gifts of kings. Nārāśaṃsī stanzas. Opinions regarding i. 126. 6, 7.

A 151. Now here (in 125) the rewards (of liberality) are for the most part set forth to him. The father, however, saw the second (stanza), which begins 'Possessed of many kine' (suguḥ: 125. 2).

The three ślokas 151-153 are found in hdr³m¹ only. They are in all probability an interpolation. The matter is superfluous (nor is there any reference to it in the Sarvānukramaṇī), and the style is suspicious (e.g. ucyate). The length of the varga is here no argument in favour of the genuineness of the lines. The last varya of two other chapters has fewer than the normal number of ślokas; chapter v having three, and vi only two. These three ślokas appear, however, to have been known to Sāyaṇa; for in his comment on i.125. I he remarks that Kakṣīvat went and told his father Dīrghatamas of all he had received, and, on i. 125. 2, he goes on to say that in this stanza Kakṣīvat's father, being pleased with the wealth Kakṣīvat had brought, blessed the king abundantly.

A 152. The revered Saunaka says that the whole (hymn) is Kakṣīvat's. But as to this (stanza), how could it, according to the indications (it contains), have been seen by Dīrghatamas?

वाचीवंतं m1, वाचीवतं hdr.

A 153. The answer is, that when 'At morn' (prātaḥ: i. 125. 1) had been uttered (by Kakṣīvat), he (Dīrghatamas) was delighted by the gift to his son, and then uttered a prayer for the king with (the stanza) 'Possessed of many kine' (suguḥ: i. 125. 2).

प्रातरिखुति m1, प्रातरित्सूति hdr.

154. The stanzas in which the deeds of kings and their gifts, great, small, and middling, are told, should be understood to be called 'Laudations of Men' (nārāśaṃsī) a, as the praise of kings (is expressed) by them in the ten books (of the Rg-veda) b.

याभिः hm^1r , यानि bfk.—राज्ञां hm^1r , राज्ञा bkr^6 .—प्रतीयाद् hdfr, प्रतीयात् r^6r^7 , प्रतीयात् k, ता प्रतीया h.—दाण्यतयीषु hdr, दाण्यतियषु m^4 , (जुती) दृष्टा यामु विष्ट r^6r^7 , दृश्दिण् b, दृश्वरीण् fk.

^a Otherwise called 'Praise of Gifts' (dānastuti): on the relation of the latter to Nārāšamsī stanzas cp. Bloomfield, Hymns of the Atharva-veda, SBE. xlii, p. 688 f. ^b After 154 m¹ adds the following three lines (=iii. 82):

विभक्तसुति तदियादु वज्जध्ववज्जवच तत्। त्राशीवीदेषु संज्ञासु कर्मसंस्थासु देवताः। ७० बह्या ह वज्जवयच दिपदे यच संसुते।

155. The five (stanzas) 'Lively' (amandān: i. 126. 1-5) are a song (in praise) of Bhāvayavya. With a couplet (6, 7) there is a conversation of a husband and wife a. Śākapūṇi thinks these two stanzas are a conversation of Indra and the king with Romaśā b.

संप्रवादो हुचेन $hm^1r^1r^4r^6$, दे ऋची संप्रवादः fk, दे रिची संप्रवादः b, दी ऋची संप्रवादः r.—संप्रवादं r, संवादं bfk, संप्रवादो hdm^1 .—रोमग्रयेन्द्रराच्चीर् hm^1r , अस्था-मथवैव ताभ्याम् bfk, अस्य स्था अथ चैव ताभ्याम् $r^2r^6r^7$.

- ^A Cp. Pischel, Vedische Studien, vol. i, p. 1.

 ^b iii. 155-iv. 3^{ab} are quoted in the Nītimañjarī on RV. i. 126. 6, 4.
- 156. Śākaṭāyana thinks that in this couplet there is a story of a husband and wife a (in connexion) with Indra. Bṛhaspati gave his daughter b, Romaśā by name, to king Bhāvayavya.

हुचेऽस्मिन् m¹r³, दृचेऽस्मिन् b, हुचेसस्मिन् hd, त्यूचेऽस्मिन् r.—156^{ab} is omitted in fk.—सुतां hm¹r, स तां fkr²r⁵, च तां n.—रोमशां r, रोमसां b, रोमशा hdfm¹, यमशा k.—राज्ञे hrb, राज्ञो fk.—The last pāda is repeated in b only.—The end of the varya is here marked by 39 in m¹bfk, by २0 in hd.—After इति वृहद्देवतायां तृतीयोऽध्यायः (hdr) समाप्तः is added in bfk.

According to the Sarvānukramaņī, i. 126. 6, 7 are a colloquy of Bhāvayavya and Romaśā, husband and wife; cp. Sāyaṇa on i. 126, introduction, and on stanzas 6 and 7.
Sāyaṇa also, on i. 126. 7, states that Romaśā was the daughter of Brhaspati.

- 1. Romaśā and Indra. RV. i. 127-136. Praise in the dual.
- 1. Then the Lord of Bays, the Companion of Sacī (Indra) becoming aware of that affair, (and) desirous of seeing his dear friend Svanaya, quickly went to him. The king joyfully honoured him with due ceremony.

तमर्थं hm^1r , तत्सर्वं Bn.— ॰गामाणु hm^1r , ॰गामाण bfkn.— ॰सहाय: hm^1bfk , ॰मस्वाय: r, ॰समेत: n.— प्रीत्यार्चयत्तं hdr, प्रीत्यार्चयं तं m^1 , प्रत्यार्चित तं b, प्रत्यर्चितं तं fk, प्रत्यर्चितसद् n, प्रत्यर्चितोऽसौ r^5r^7 .— विधिनैव राजा hm^1r , विधिना च राजा br^5r^7 (॰ज b), विधिना च राजा fkn.

2. And the daughter of the Angiras (Brhaspati) came there: rejoicing she adored their feet. Indra then in a friendly way said to her, 'Have you hair or have you not, O Queen?'

स्ष्या hm1r, दृष्टा r2r5r7, दृष्ट्या bfkn.—ववन्दे hdfk, च वन्दे r, वदे b.

3. She in a childlike way then addressed him, 'Feel me closely (upopa me: i. 126. 7), Mighty One's. The king having soothed her with the previous (stanza: i. 126. 6), rejoiced. She then followed her husband as a devoted wife.

बाल hdfr, वाल bk.—तं hbk, तां r.—जगाद उपोप मे r, जगादोपोप मे hdm¹, जगादोपेप मे f, जगादो योप मे b.— 'या सांत्य hdm¹, सान्य r¹r⁴r⁶, 'या भांव b, 'या भांच fk, 'यर्चाथ r.—प्रहृष्टः सो न्वज्ञत् hdm¹, प्रहृष्टोवाचव्रजत् r¹r⁴r⁶, प्रहृरिषाद्न्द्वजा b, प्रहृरिषाद्ंधव्रत f, प्रहृषीद्वव्यज्ञत् r. The A MSS. appear to have endeavoured to remove the hiatus by inserting a syllable, while the B MSS. changed प्रहृष्टो into प्रहृषीद्, which leaves the sentence without a verb.—साथ hm¹r¹r⁴r⁶b, सो ध्य fkr.— पति पतिव्रता hm¹r¹r⁴r⁶, पति तु साव्रवीत् r, पति व्रवीत् b, पति व्रषीत् fk.

- The quotation from the BD in the Nītimañjarī on RV. i. 126, 6, 7 ends with this line (3^{ab}) .
- 4. Next follow two hymns (127, 128) addressed to Agni (beginning) 'Agni' (agnim: i. 127). There are (then) five (129-133) addressed to Indra (beginning) 'Which' (yam: i. 129). Here the stanza 'Forth this' (pra tad: i. 129. 6) is addressed to Indu, while Indra-Parvata are praised together (in) 'Ye him' (yuvam tam: i. 132. 6). Yāska here considered Indra to be predominant.

पश्चिन्द्राणि m^1r , पश्चिन्द्राणि $hdbfkr^5r^7$.—•व्युगन hm^1r , •व्युगेका r^5r^7 , •द्रं विगन b, •द्रं निग न f.—•पर्वती bfkr, •पर्वती hdm^1 (as part of the pratika).—लिन्द्रं hm^1 , इन्द्रं तु bfkr, लिन्द्रं तु $r^1r^4r^6$.—मेन इह यास्तः $hm^1r^1r^4r^6$, मेने यास्त fk, मेने यास्ता b, मेने यास्त एकं r.

5. For in (certain) stanzas (Indra's) bolt is praised as Parvata, and when there is praise (of the two) in the dual (dvivat-stutau) they say that Indra is predominant. (Beginning with) 'Hither thee' (ā tvā: i. 134. I) there are nine (stanzas: i. 134. I-b, 135. I-3) to Vāyu, (then) five (i. 135. 4-8) to Indra-Vāyu, (then) one (i. 135. 9) to Vāyu. The next (hymn: i. 136) has two predominant (deities).

च्छनु स्तृतः $\mathrm{hm^1r^1r^4r^6}$, सूचेतर्चु r, सूचेतर्ची b , 5^{ab} omitted in fk.—पर्वतविद्य यद्यो $\mathrm{m^1}$, पर्वतिद्ध यद्यो $\mathrm{r^1r^4r^6}$, पर्वतृद्धियद्यो hd , पर्वतो विद्ध वज्रो b , पर्वतो विद्ध वज्रो r .— द्विवत्सुतौ $\mathrm{m^1r}$, द्विवत्सुतौ hd , द्विवत्सुतौ b .—चेन्द्रमाइः $\mathrm{hdm^1}$, चन्द्रमाइः $\mathrm{r^1r^4r^6}$, चेन्द्रमाइः b , चेन्द्रमाइ r .—आ ला वायोर्चव b , आ ला नव $\mathrm{r^1r^4r^6}$, आ ला वायोर्चाव fk , आ ला वायोश्याय $\mathrm{hdr^3}$, आ लार्वयोर्य r , आ ला यावो चाय $\mathrm{m^1}$.—The end of the varya is here marked by q in hdbfk , not in $\mathrm{m^1}$.

"The Sarvānukramanī shows that nava must be read: ā tvā ṣad vāyavyan tu.. stīrnam nava, caturthyādyāh pañca aindryas ca, 'ā tvā has six stanzas; it, as well as the following (tu), is addressed to Vāyu; stīrnam (136) has nine stanzas; the five stanzas beginning with the fourth (4-8) are addressed to Indra as well (as Vāyu).'

2. Distributed praise. RV. i. 137-139. Vaisvadeva hymns.

6. There five (stanzas: i. 136. 1-5) have Varuṇa and Mitra for their gods; the following two (i. 136. 6, 7) are (addressed) to the (deities) mentioned a, Dyaus and the rest. Couples (of deities: dve dve), including the Two Worlds (rodasi), are praised together (samstute) b, (each) in a verse c (pada), and the gods (are praised) with a hemistich (7^{ab}); the rest (7^{cd}) is distributed (in praise) d.

पञ्च वक्णमित्रदेवा hbk, पञ्च वक्णं मित्रदेवा r.—दिवादिभ्यः hdr, दिभ्यः bfk, दिभ्यः त्राखाः r^5 —परे दे bfkr, पदे दे hdm^1 .—दे दे पदे hm^1r , दे परे bfk, दे वा परे (संस्तृती) r^5 .

a Divādibhyah kathitābhyah pare dve; the Sarvānukramanī has antye lingoktadevatye.

This does not mean, as the text of the hymn shows, praise in the dual (samstuti) as

opposed to vibhakta-stuti (cp. Nirukta vii. 8, and above, i. 117).

^c That is, Rodasī (dual) in 6^a , Mitra, Varuņa in 6^b , Indra, Agni in 6^c , Aryaman, Bhaga in 6^d .

^d That is, Agni, Mitra, Varuņa are praised separately (vibhakta-stuti).

- 7. The hymn 'We have pressed' (i. 137) is addressed to Mitra-Varuṇa. 'Forth, forth' (pra-pra: i. 138) is addressed to Pūṣan, the third (i. 139) is addressed to the All-gods. 'Let it be heard' (astu śrauṣaṭ: i. 139) is the third hymn addressed to the All-gods.
- A hymn to the All-gods may be (included) among those which contain many deities a.
- असु श्रीषट् bfkr⁵, एतत्सूकं hm¹r.—•देवतेषु hm¹rfk, •देवतेषु b.—The Sarvānu-kramaṇī, summing up the contents of this hymn, remarks: vaiśvadevam etat. The etat, however, does not seem to me to suffice for deciding in favour of the reading of hm¹r.
- ^a It has been stated above, ii. 132, 133, that hymns addressed to many deities are to be regarded as hymns to the All-gods.
- 8. There are variously (bahuśah), in (hymns) addressed to the All-gods, stanzas, verses, hemistichs a, stanzas with two verses (dvaipadāh) or with three (traipadāh): (such) Vaiśvadeva (formulas) have two predominant (deities) or one predominant (deity) or many predominant (deities).

सन्धृयः $hm^1r^1r^4r^6$, संसावः r, संसाव bfk.—पार्ट्यची bfk, पार् ऋर्घची hd, पार् ऋर्घची m^1 , ऋर्घची $r^1r^4r^6$ and ऋर्घची r (beth without पार्।).—चैपदास्य hm^1r , चैवदास्य h, (स्)वैसदास्या f.—वैस्रदेवाः hm^1r , ॰देव्या bfk, ॰देवः r^5r^7 .

- ^a Cp. above, ii. 133: pādam vā yadi vārdharcam rcam vā with reference to hymns to the All-gods.
- 9. There is (one: i. 139. 1) addressed to the All-gods, the second (2) is addressed to Mitra-Varuna; three (3-5) are to the Asvins, then (one) is addressed to Indra (6), then (one) to Agni (7), one is addressed to the Maruts (8), then (one) is addressed to Indra-Agni (9); and the next is addressed to Brhaspati (10); the last (stanza) praises the gods (11).
- 10. The seer in the (stanza) 'Dadhyañc of me' (dadhyañ ha me: i. 139. 9) praises either the (ancient) seers or himself a by

proclaiming his own origin among them. For this reason become disagree in regard to this (stanza, saying), that Indra-Agni c are at the same time (tu) incidentally praised ($nip\bar{a}ta$ - $bh\bar{a}j$) in it.

दथ्यक् ह में hd, दथ्यक् ग m^1 , दध्यक् में r, दह में bfk.— s स्थामात्मानं ना तेषु r, स्थामात्मायं ना तेषु bfk, नाथनी m^1 :— ग्रंगंस जन्म Am^1 , ग्रंस स्वजन्म b, ग्रंस-स्वजन्म r, संसत्वजन्म fk:— fk

The reading of A appears to be a corruption because the first pāda here has eleven syllables ending with an iambie, atharvānah is nominative, and this name does not occur in the stanza, and the perfect sasamsa is used along with the present stauti.

b Tasmād seems to mean: since no deity appears if the seer is described as proclaiming his ancestry, others say Indra-Agni are the deities of the stanza.

c The Sarvānukramaṇī simply states Indra-Agni to be the deities of the stanza.

3. Story of the birth of Dîrghatamas.

- 11. There were (once) two seers' sons, Ucathya and Bṛhaspati. Now Ucathya's wife was Mamatā by name, of the race of Bhṛgu ^u.
- ^a This and the next four slokas (11-15) are quoted in the Nītimaājarī on RV. i. 147. 3.
- 12. Brhaspati, the younger (of the two), approached her for sexual intercourse. Now at the time of impregnation the embryo addressed him:

कनीयाम् hm¹ r¹ r⁴ r⁶, चवीयान् br, श्रव्रवीट् fkn.—प्रत्यभाषत Am¹, प्रत्यवेधत fkrn, प्रत्यवेषत b.

13. 'Here am I previously engendered; you must not cause a commingling of seed.' Bṛhaspati, however, could not brook this remonstrance about the seed.

तक्कुकप्रतिषेधं hm^1r , तं शुक्रप्रतिष्टानं r^5 , तं शुक्रप्रतिधातं bn, ते शुक्रं पितञ्चानं fk.— न ममर्घ वृहस्पतिः hm^1r , वृहस्पतिरमर्घयत् fkr^6n , वृहस्पतिरर्थमन् b.

14. (So) he addressed the embryo: 'Long darkness shall be your lot.' And (hence) the seer, Ucathya's son, was born with the name Dīrghatamas (Long Darkness).

तं गर्भे hdm1r, गर्भ तं bfkn.

15. He when born distressed the gods, having become suddenly blind. The gods, however, gave him (the use of) his eyes (tannetre); so he was cured of his blindness.

भ्यतपहेवान् $h\,m^1\,r^4\,b\,f\,k\,r^2$, भ्यवट्हेवान् $r^3\,r^5\,r^7\,n$, ऽत्यतपञ्चोकान् r— श्रकस्माट् $h\,m^1\,r^3\,b$ fkr2r5n, एतसाद r.—तद्भेषे m1, तं नेचे hdb, वद्भेते fk, (देवा स्त) ता नेचे r, तस्याची r¹r⁴r6.—Æ: hdbfk, ₹ m¹, ₹ r.—The end of the varga is here marked by 3 in bf, not in hdm¹k.

4. Hymns revealed to Dîrghatamas: RV. i. 140-156.

16. With four a (hymns beginning) 'To him seated on the altar' (vedișade: i. 140) he praised Jātavedas (Agni). 'Kindled' (samiddhah: i. 142) is an Āprī hymn, its last (stanza) being addressed to Indra (i. 142. 13). The six (i. 145-150) following (beginning) 'Him' (tam: i. 145.1) are to Agni.

ब्रिमित्यपे: पराणि षट् br, पिंड्स: त्वियं तिमत्यतः ${
m r^1 r^4 r^6}$, प्राष्टावपे: पराणि च hm^1r^3 . As all the MSS. have चतुर्भिर, i.e. 140-144 (deducting 142, the Apri hymn), the reading of B (तम and षट) must be right; that of A (प्र, 143, and प्रश्ती, 143-150) would include 143, 144, which have already been mentioned.—16ab is omitted in f, the whole of 16 and 17 in k.

- ^a That is, i. 140, 141, 143, 144. An Aprī hymn, when interrupting a series of hymns, is similarly left out of account in v. 12 and other passages below.
- 17. But Mitra-Varuna are praised with the three (151-153) hymns (beginning) 'A Friend' (mitram: i. 151). 'A Friend' (mitram: i. 151. 1) expresses that this (stanza) is addressed to Mitra (only). 'May the kine' (\bar{a} dhenavah: i. 152. 6) lauds

सुते ह br, सुते fm1, सुते hd.—मैचीम m1, मैची hbfr, मिची d.

18. either Aditi or Agni; for (its) character is evidently such a. Saunaka, however, thought that both in Kutsa b and here Aditi means Agni only c.

दितिं लेव hdm¹r, दितिं यास्तः br⁵r⁷, द्विती यासु fk (i.e. the reading of B is यास्तः for खेव in A). — क़ारी चेह hm¹rb, क़ारी चेह fk, क़ारी चेह r^5r^7 . — $18^b = v$. 87^b , vi. 94^b , viii, 62^d.

^a That is, the form of the name appearing in the stanza is Aditi, but it means Agni according to Saunaka's view stated in the next line: hence 'Aditi or Agni.' b That \mathbf{S}

is, in RV. i. 94. 15. C Or according to the reading of B: 'Yūska considered Aditi to be Agni in RV. i. 94. 15, and Saunaka in this passage.' Yūska in introducing RV. i. 94. 15 remarks (Nirukta xi. 23): agnir apy aditir ucyate.

19. The seer may here mention (Aditi) either incidentally (prasangāt) or because he saw (Agni in this form). The three (hymns) after this (i. 154-156), (beginning) 'Of Viṣṇu now' (viṣṇor nu kam: i. 154. 1), are addressed to Viṣṇu;

The reading of 19^{ab} in the text is that of hm¹r, ऋषिर्पेः प्रसक्तलाहूष्ट्रापीनन्व-कीर्त्तयत् 19^{5} , ऋषिरिविप्रशक्तला दृष्ट्रायान्वकीर्त्तयत् 19^{5} , ऋषिरिविप्रसक्तला दृष्टा या लमकीर्त्तयत् 18 (॰प्रकाश्चला 18).

20. and with the three stanzas 'Forth your' ($pra\ vah$: i. 155. 1-3) Indra-Viṣṇu are praised together. In the stanza 'Those of you two' ($t\bar{a}\ v\bar{a}m$: i. 154. 6) he (the seer) may be said to long for ($v\bar{a}\ k\bar{a}nksati$) the mansions of Viṣṇu.

प्रवस्तिस्भिर् hd (cp. Sarvānukramaņī ऐन्द्रश्वाद्यसृदः. 'the first triplet is addressed to Indra as well,' scil. as Viṣṇu), प्रवश्वतस्भिर् m¹r³, ता वां चतस्भिर् r⁵r³, वा चा चतस्भिर् bfk, प्रवः पान्तं चतुर्भिस् (तु) r. Here we see not only how easily चतस्र is substituted for च तिस्र, but the masc. form चतुर्भिः for the fem. चतस्रभः in the BD.—चर्राभर् hm¹r³bfkr⁵r³, तु r.—ता वामित्यृचि hm¹r³br⁵r³, वाक्यमित्यृचि fk (॰त्यचि k), ऋषिस्वेत्यृचि r.—The end of the vargu is here marked by 8 in hdbfk, not in m¹.

5. Story of Dirghatamas (continued).

21. ^a His attendant slaves, being weary, bound the aged and blind Dîrghatamas and cast him down ^b into the waters of the river.

परिचारिणः hm¹r, परिचार्काः Bn.—बध्वा hdm¹r¹r⁴r⁶, वथा b, ग्रथ r, न्स्नी fk, ग्रप्नी n.—ग्रवाद्धः r¹r⁴r⁶ (RV. i. 158. 5), ग्रपाद्धः hm¹fkn, उपाद्धः r, श्राद्धः b.

- ^a The following four and a half ślokas (21-25^{ab}) are quoted in the Nītimañjarī on RV. i. 18. 1 and i. 158. 5; cp. Sāyaṇa on RV. i. 158. 3, 4.

 ^b Cp. RV. i. 158. 5: dāsā yad iṃ susamubdham avādhuḥ; cp. Nīrukta iv. 6: tritaṃ kūpe 'vahitam.
- 22. One among them, Traitana by name, tried to strike him away with his sword, and (in so doing) cut to pieces (nyakṛntata) his own head, shoulders and breast a.

नैतनो hm^1r (=RV. i. 158. 5), नैनतो $r^1r^4r^6$, नैत fk, नेतनो b. — अपाहनत् hdr, उपाहनत् m^1 , अपाहत fk, अपातह b, अपाहर्त् n.

- * Cp. RV. i. 158. 5: śiro yad asya traitano vitakṣat, svayaṃ dāsa uro aṃsāv api gdha.
- B 23. Now Dirghatamas having (thus) slain him (who had) involved (himself) in great sin, moved his limbs there (in the river), (though) excessively stupefied (unmohita) by the water (uda).
- महता Bn, सहसा m^1 .—वृतं $m^1r^2r^5r^7n$, वृतां fk, वृतः b.— •न्यनुद्श्चिव $r^2r^5r^7$, •न्यनुद्श्चिव fkn, •न्यनुद्श्चिव b, •न्यनुद्श्चिव m^1 .— तत्तोदोन्मोहित b, ततोदान्मोहितो $r^2r^5r^7$. तत्तोदोन्मोहित (भृंश्म्) m^1 , तत्रोदोन्मोहित (भृंश्म्) fk, न तु दानहतो n.— This śloka is omitted in hdr, but is found in $bfkr^2r^5r^7m^1n$.
- 24. Now the currents $(nadyah)^a$ threw him up in the neighbourhood of the Anga country.
- B Usij was employed b in the house of the king of Anga. Through desire of obtaining a son,
- तन्नप्र b, तं नृपं $\mathbf{r}^5\mathbf{r}^7\mathbf{n}(\mathbf{g})$, तचप्र $\mathbf{f}\mathbf{n}(\mathbf{a}\mathbf{b})$, तनयं \mathbf{n} , नदाः सर्वाः $\mathbf{h}\mathbf{d}\mathbf{m}^1\mathbf{r}$ (नदाः occurs in RV. i. 158. 5). That नदाः was in the original form of the text seems certain, and that सर्वाः was inserted later to supply the place of syllables which had dropped out (first तं after \mathbf{g} , and then the augment in समुद्विपत्) is highly probable.—समुद्विपत् $\mathbf{f}\mathbf{k}\mathbf{r}^5\mathbf{r}^7\mathbf{n}$, समुद्विपत् \mathbf{b} (the plural changed to the singular probably owing to the loss of the plural नदाः), समुत्विद् $\mathbf{h}\mathbf{d}\mathbf{m}^1\mathbf{r}$. The form उद्विपन् occurs again below, iv. 88.— युक्तां $\mathbf{m}^1\mathbf{r}^2\mathbf{r}^6\mathbf{r}^7$, सुक्ताम् \mathbf{b} , युक्तम् $\mathbf{f}\mathbf{k}$, दासीम् \mathbf{n} .—24° is wanting in $\mathbf{h}\mathbf{d}\mathbf{r}$, but is to be found in $\mathbf{B}\mathbf{m}^1\mathbf{n}$.
- ^a Cp. RV. i. 158. 5: na mā garan nadyo mātrtamāḥ, 'the most motherly streams did not swallow me up.'

 ^b I have changed this acc. in order to be able to separate this from the following śloka in translation.
- B 25. the king dispatched (this) slave (to Dirghatamas). The great ascetic observing her to be devoted (to him), after he had come out (of the water), begat (with her) the seer Kakṣīvat and others.

राज्ञा $\mathbf{m}^1\mathbf{r}^2\mathbf{r}^5\mathbf{r}^7\mathbf{n}$, राज्ञां $\mathbf{b}\mathbf{f}\mathbf{k}$.—प्रहितां दासीं भक्तां $\mathbf{r}^2\mathbf{r}^5\mathbf{r}^7$, प्रहिता दासी भक्ता $\mathbf{m}^1\mathbf{b}\mathbf{f}\mathbf{k}$, प्रहितां जात्वा शुडां \mathbf{n} .— मत्वा महातपा: $\mathbf{r}^2\mathbf{r}^5\mathbf{r}^7$, मत्वा मतपा: \mathbf{b} , मत्वा मतया: \mathbf{f} , मत्वा \mathbf{t} तया \mathbf{m}^1 , (कृत्वा) रमगुनि: \mathbf{n} .— 25^{ab} not in hdr, but in $\mathbf{B}\mathbf{m}^1\mathbf{n}$.—जनयामास चोत्याय hdr, सोऽजीजनह्म सैकान् $\mathbf{b}\mathbf{f}\mathbf{k}\mathbf{r}^2\mathbf{r}^5\mathbf{r}^7$ (°काद् $\mathbf{r}^2\mathbf{r}^5\mathbf{r}^7$), सा च कचीवतं जज्ञे \mathbf{n} .— 25^{cd} omitted in \mathbf{m}^1 .— The end of the varga is here marked by \mathbf{q} in hdb, by $\mathbf{\xi}$ in \mathbf{f} , not at all in $\mathbf{m}^1\mathbf{k}$.—In hd the varga has only three ślokas.

6. Deities of RV. i. 157-163.

26. And the seer praised with the two (157, 158) hymns (beginning) 'He is awake' (abodhi: i. 157. 1), the two Asvins: but with the two (159, 160) following (beginning) 'Forth' (pra: i. 159. 1), Heaven and Earth. That which comes next to these (etad-uttaram)

नुष्टाव चैव hm^1r , नुष्टाव विव bfk, नुष्टाविति व f (सुताभ्याम्) r^6r^7 .—॰व्यी नु hm^1r , ॰व्यी त b, ॰व्यी त fk, ॰व्या त r^6r^7 .

27. (beginning) 'Why' (kim: i. 161. 1) is addressed to the Rbhus. The two (162, 163) following (beginning) 'Not us' (mā naḥ: i. 162. 1) are a laudation of the sacrificial horse. In the (stanza) 'Full-haunched' (īrmāntāsaḥ: i. 163. 10) he extols the horse as he is being led.

bfkr⁵r⁷, **u**thm¹r. The former is obviously the correct reading, as both 162 and 163 are in praise of the sacrificial steed, and if **u**t were read, there would be no reference to 163 as a hymn.

28. And here also (i. 163. 10) the many steeds belonging to his troop ($svay\bar{u}thy\bar{a}h$) are praised: both the yoked and unyoked are incidentally ($prasaig\bar{a}t$) mentioned.

खयूष्यास् m1r, सयुष्यास् hdbf, सयुष्यास् k.—तस्य m1bfr, तच hd.

29. He speaks of him (though) not (yet) sacrificed as (already) sacrificed, of (his) future (state) as if past. Of his flesh $(m\bar{a}msa)^a$, of the basket $(s\bar{u}n\alpha)^b$, of the pots $(caru)^c$, and of the oblation $(havis)^d$,

मिवणं चाह भूतवत् $hm^1r^2r^5r^7$, भविष्यंतं च भूतवत् bfk (°तत् f), हिवणं चाह सूनवः r.— तस्य m^1 , तस्यन् hd, तिस्मिन् r, तत् bfk.— मांसस्य सूनस्य hm^1r , सीनस्य च मांसस्य bfk r^5r^7 (°नस्यं r^5r^7).— चरूणां r^5r^7 , चतुणीं hm^1r^3 , चतुषां r, वर्णां b, वर्णां fk.— हिविषस्य lm^1r^3r , क्ष विषानस्य lm^5r^7 , क्रिविया lm^6r^8 .

a Cp. i. 162. 9: aśwasya kravisak; see also 10, 12, 13. b The form occurring in the RV. (i. 162. 13) is sūnāk; if the reading of hm¹r is original, the gender has been changed, possibly because this form was taken as a masc.; but in its two other occurrences in the RV., the word, being used in the sing., is clearly fem. The reading of B, saunasya ca māṃsasya would mean 'flesh collected in the baskets'; cp. RV. i. 161. 10:

māmsam...sūnayāābhrtam. A's reading sūnasya is, however, more in keeping with the style of the present passage, in which every object is otherwise enumerated without an attributive adjective. C In i. 162. 13, where the form carūnām occurs. C Tho form havisah occurs in i. 162. 17.

30. and of the robe $(v\bar{a}sas)$ and upper covering $(adhiv\bar{a}sa)^a$, and of his body $(g\bar{a}tra)^b$ which is mentioned as about to be dissected $(vi\hat{s}asya)^c$, of the spit $(\hat{s}\bar{u}la)^d$ and the post $(sth\bar{u}n\bar{a})^c$, and of the axe $(svadhiti)^f$ there is here (atra) laudation.

यदिशस्यं च कीर्तितम् $hm^1r^3kr^2$, यदिशस्य च कीर्त्तनम् fb, यङ्घीशस्य च कीर्त्तनम् r^6 , स्वधितेश्व प्रकीर्त्तनम् r (by mistake from the next line).—गायस्य प्रुक्तस्यूणानां m^1 , गाय-प्रुक्तस्यूणानां (no च) hd, गायप्रुत्यस्युषाणां च r^2r^6 , गायश्चलस्युषानां च b, गायप्रुत्तस्युषानां च f.—The end of the varga is here marked by f in m^1 bfk, not in hd.

Both vāsas and adhivāsa occur in i. 162. 16.

Both vāsas and adhivāsa occur in i. 162. 16.

Cp. i. 162. 11: te. abhi sūlam nihatasya.

Cp. i. 162. 11: te. abhi sūlam nihatasya.

The word occurs in the singular occur in the singular occur in the hymn, but its equivalent aśva-yūpa is used in i. 162. 6, and svaru in 9.

The word svadhiti occurs in i. 162. 9, 18, 20.

7. Deities of RV. i. 164: the three Agnis; the year.

31. There is here also mention of the goat $(ch\bar{a}ga)^a$ (and) praise at the same time of Indra-Pūsan b.

The hymn which (begins) 'Of this benignant' (asya vāmasya: i. 164) c is stated to be addressed to the All-gods.

क्रागस्य hm¹r³bfkr⁵, भागस्य r.—सह सुति: m¹r, सह श्रुति: h, च कीर्तनम् fkr²r⁵, च प्रकीर्तनम् b.—चात्र इन्द्रा° r, चात्रेन्द्रा° MSS.—31^{ab} is omitted in d, 31^{cd} in f.

- a The goat is mentioned three times in this hymn, twice as aja (2, 4), and once as $ch\bar{a}ga$ (3).

 b In i. 162. 2 along with the goat.

 c The term $asyav\bar{a}m\bar{i}yam$ ($s\bar{u}ktam$) is also used in Rgvidhāna ii. 26. 2 and Manu xi. 251.
- 32. In it are various sayings $(prav\bar{a}d\bar{a}h)$ and here (too) mention of the gods.
- B In the stanza 'Of this' (asya: i. 164. 1) in the hymn, three brothers a are spoken of in the third person (parokṣa)—I will explain (them).

तच b, खन r, वन h d.— चान कीर्तनम् h m¹ r, चानुकीर्तनम् b.— 32^{ab} omitted in fk.— वच्चामि b m¹, वच्चा fk.— चतरस्त्रयः m¹, श्तरस्त्रयः b fk. The next śloka and the contents of RV. i. 164. 1 make the emendation **आतर**स् certain.— 32^{ed} wanting in hdr.

- ^a Another instance of the nom. being loosely used for the acc.; cp. i. 28 and Meyer, Rgvidhāna, p. ix.
- 33. Now the benignant, grey-haired one is Agni, while the middle brother is Vāyu. The third here is butter-backed (ghṛta-pṛṣṭha)^a: (his) seven rays are praised ^b.

भाता तु hdr, भा तु m^1 , भाता च bfk.— तृतीयोऽच hm^1r , तृतीयोक्तः r^5 , तृतीयोक्तं bfk.— सुताः hm^1r , सुताः bfk.

- ^a Cp. RV. i. 164. I: tṛtīyo bhrātā ghṛtapṛṣṭhaḥ, explained by Yāska, Nirukta iv. 26, as the terrestrial Agni: ayam agniḥ.

 ^b The expression saptaputram in RV. i. 164. I is explained by Yāska (ibid.) as the seven rays of the sun.
- 34. But the following (stanzas) tell of Λ gni, how he rains and protects a; and of days and nights (ahorātra), of days (dina), of months, and of revolving seasons b.

पाति hm^1r , वाति bfk, वानि r^2r^5 .— ग्रहोराचान् r^6 , ग्रहोराचा hbfk, ग्रहोराच॰ m^1r . — दिनान् hm^1r^6fk , दिवान् b.— च्छतूं $amma hm^1r$, रङ amma f amma f

- a Especially in RV. i. 164. 7. The same expressions are used of Sūrya in vii. 24. b Yāska, Nirukta iv. 27, explains trinābhi (RV. i. 164. 2) as referring to the seasons, dvādaśāra (RV. i. 164. 11) as referring to the months, sapta śatāni viņšatiś ca (ibid.) as referring to the days and nights in the year. Yāska does not, in his comment, use the expression dina, which, however, is here probably meant as an explanation of the three hundred and sixty spokes in the wheel of the year (i. 164. 48).
- 35. With the following (stanzas) a the seer celebrates the year (samvatsara) like a wheel (as) fivefold, and threefold, sixfold and twelvefold b;

च विधा $\mathrm{br^2r^5}$, च तृमा f, विविधा $\mathrm{hr.}$ —द्वाद्श्घेव च $\mathrm{hm^1r}$, द्वाद्श् वापि च bfk , द्वाद्श्घापि वा $\mathrm{r^5.}$ — 35^{ab} has the following form in Sāyaṇa: विधा द्वाद्श्घा षोढा पञ्चधा सप्तधा तथा.— कीर्त्तयत्वृधि: bs , कीर्त्तयत्वृधि: hr (°र्त° h), कीर्त्तयतृषि: f.— The end of the varga is here marked by $\mathrm{\mathfrak{P}}$ in hdbfk, not in $\mathrm{m^1}$.

^a That is, RV. i. 164. 12-16. ^b This śloka is quoted by Sāyaṇa on AV. xix. 53. 2, being introduced with the words tathā ca śaunaho'py āha.

8. Account of the contents of RV. i. 164 (continued).

36. and knowledge of the soul $(k \cdot setra - j \tilde{n} \tilde{a} n \alpha)^n$ and the cow $(dhenu)^b$, the buffalo $(gaur\tilde{i})^c$, $V \tilde{a} c^d$, Sarasvat \tilde{i}^e , and the ordinance (dharma) of former ages, the Sādhyas, and the troops of the gods f;

चेत्रज्ञानं hdr³b, चेत्रं ज्ञानं r⁵, चत्रज्ञानं m¹fkr.—गौरीं hdr, गौरी m¹bfk.—धर्म पूर्वयुगीयं च m¹r, धर्म पूर्वयुगौ पंच hdr³, धर्मपूर्वयुगानां च bfkr²r⁵.—साध्यान् hdm¹r, साध्यां b, साध्या fk.—देवगणांस् hdm¹r, देवगणां f, देवराणां b, देवराणां k.

- and cp. kṣetra-jña in the St. Petersburg Dictionary. The reference in the text is to i. 164. 16 ff., e.g. 18: manah kuto adhi prajātam?

 b Referred to by this name in i. 164. 26.

 c i. 164. 41.

 d i. 164. 45.

 i. 164. 49.

 i. 164. 50: devāh.

 dharmāni prathamāni... pūrve sādhyāh.
- 37. and the various activities of Agni, Vāyu, and Vivasvat (the Sun)^a, and the mighty power ($vibh\bar{u}ti$) of Agni and Vāyu in the stationary and moving world ^b;

कमीणि श्रियि॰ bfk, कमीणि विपि॰ hdr.—जगित bfk=²r⁵, जगती hm¹r.—स्थासु॰ br²r⁵, स्थासु॰ fk, स्थान॰ hdm¹r.

- ^a In i. 164. 44: vapata ekah.. viśvam eko abhi caṣṭe.. dhrājir ekasya dadṛśe na rūpam.

 ^b It is not clear what passage is here regarded as describing the powers of the two gods, Agni and Vāyu, in contrast with those of the three, Agni, Vāyu, and Vivasvat, in i. 164. 44; perhaps 47 is meant.
- 38. the taking $(haranam)^a$ of water $(v\bar{a}r)$ by the (Sun's) rays and its discharge again b. There is here also glorification of the activities of Parjanya, Agni c, and Vivasvat d (the Sun).

रिमिमिवीरो $bfkr^2$, रिमिमिवीरां r^5 , रिमिमिञ्चैव hm^1r .—विसर्गं m^1r , विसर्गः hd, विसर्गं b, विसर्गं fkr^2 .—चाच hdm^1br , चास्त्र fkr^2r^5 .

- ^a In i. 164. 51^{ab}: samānam etad udakam uc caity ava cāhabhiḥ. ^b Cp. above, i. 68 and ii. 19. ^c In i. 164. 51^{cd}. ^d In i. 164. 52.
- 39. Now mother and son are Vāc (Speech) and Prāṇa (Breath): the mother is Vāc, the son is the other (Prāṇa). Prāṇa is (meant by) 'Sarasvat'a, while Vāc they call Sarasvatīb.

वाकप्राणी hm¹r, वाक्याणी bfk.—प्राणो hr¹r³r⁴r⁶m¹, प्राणा bfr, प्राण k.— 39^d = ii. 51^d .

- a In ii. 51 Sarasvat is one of the names of the Middle Agni or Indra. Sarasvantam is here a quotation from the text of RV. i. 164. 52^d : sarasvantam avase johavīmi.

 b Op. ii. 51, where Sarasvatī is identified with Vāc in the same words.
- 40. The body joined with the organs of sense is designated ksetra. Prāṇa alone knows it: hence he (Prāṇa) is spoken of as 'he who knows the body' (ksetra-jña).

चैषं hrbfk, चारं m¹.—चेत्रज्ञ bfkr, चेत्र hd.—The end of the varga is here marked by \sqsubseteq in hdm¹bfk.

- 9. RV. i. 164 (concluded). RV. i. 165: Indra and the Maruts.
- B 41. Saka is (used) in (the sense of) cloud a; its $dh\bar{u}ma$ is water b or garment c. The bull d is Soma; and the three lords c (adhipa) are his purifiers f.

मेघे m¹kr², मेघे f, मेघ b, मेघ: r.—धूम: r, धूम b, धूमे m¹fkr².—वास r, यास f, पास b, पाश् k.—•धिपा: m¹br, •धिपा fk.—41 and 42 are not found in hdr¹r²(r³?)r⁴r⁶.

- a This is meant as an explanation of śakamayan dhūmam in RV. i. 164. 43. b Cp. Meghadūta 5: dhūma-jyotih-salila-marutām samnipātah. . meghah. c That is, as the envelope of the cloud; cp. op. cit. 61. d That is, in RV. i. 164. 43°. c That is, the trayah keśinah in RV. i. 164. 44. f As the present varga contains eight ślokas, the presumption is that three of them are later additions. That 41 is one of these is highly probable, because in the first place it has the general appearance of a gloss, and, secondly, because, after the consideration of the individual stanzas of RV. i. 164 has been concluded, it refers back to an earlier stanza.
- B 42. That (part of i. 164) which ends with (the stanza) 'The buffalo' (gaurīḥ: i. 164. 41) is addressed to the All-gods a; afterwards there may be (said to be) separate praise (prthak-stuti). The two (stanzas: 46, 47), 'Indra, Mitra' (indram mitram: i. 164. 46), are addressed to Sūrya b; the last (stanza) to Sarasvat (i. 164. 52) may optionally (vā) be addressed to Sūrya c.

खात् m^1r , खा bfk.—•जुति: m^1br , •जुति f, श्रुति k.—इमे सीयीं m^1 , इमी सीयीं r, इमे सीयों b, जमे सीयीं fk.—सीरी वान्या m^1b , सीरी चान्या r, सोरी चरत्या f, सीरं चरत्या k.

a Cp. Sarvānukramaņī: gaurīr iti . . etad-antam vaišvadevam.
b Cp. Sarvānukramaņī: indram mitram sauryau.
c Cp. Sarvānukramaņī: antyā sarasvate sūryāya vā. This and the two preceding quotations show that this śloka was known to the author of the Sarvānukramaņī, and it must therefore belong to the original text of the BD.

A 43. Now this hymn contains little praise ⁿ: it lauds knowledge. And because it contains many statements, water (salila) ^b is (also) mentioned (in it) ^c.

स्यस्तवं त्वेतज् $r^1r^2r^4r^6m^1$, स्यस्तवंद्येतज् hd.—ज्ञानमेव $r^1r^2r^4r^6m^1$, ज्ञानमेवं hd. r^2 must in R's note on this line be a mistake for r^3 , for bfk, with which r^2 regularly agrees, omit this śloka, while $hr^1r^4r^6$, with which r^3 otherwise agrees, have it.

- * The Sarvānukramaṇī has the same words, alpastavaṇ tv etat, adding atra prāyeṇa jāāna-..-praśaṇṣā ca. Hence 43^{ab} must have belonged to the original text. b Salilāni occurs in i. 164. 41. The meaning is: it is not surprising that among its multifarious contents this statement should also occur. c 43^{cd} looks like a later addition.
- 44. ^a (The hymn) 'With what?' (kayā: i. 165) is traditionally held to be the chief (parama) b dialogue of the Maruts and Indra. The odd (stanzas) are (the speech) of the Maruts c, all the even ones, including the last d, are Indra's,

मार्तेन्द्रसु fk, मार्तेवसु b, मार्तेन्द्रसु hdm^1r .— पर्मः स्नृतः hm^1r , पर्मस्तः fkr^2r^5 , पर्म स्थितः b.— सर्वाः hm^1r , तच $bfkr^5$.— सहगन्यया bm^1r , सहात्यया dfk, संहांत्यया h.

a Slokas 44-55 are translated by Sieg, Sagenstoffe, pp. 108 f.

b Sieg translates parama by 'following' ('das folgende Lied'); but para only (not parama) has this sense in the BD., and, as far as I know, elsewhere also. The meaning appears to be that this is the most important dialogue in the RV. between Indra and the Maruts, though there are other hymns of a similar character (e.g. i. 170).

c Cp. Sarvānukramaņī: trtī-yādyayujo marutām vākyam.

d That is, the last of the dialogue, the twelfth stanza; the last three stanzas not being regarded as part of the dialogue, but as addressed by the seer to the Maruts (see next śloka).

45. (as well as) the eleventh and the first. The next triplet (i. 165. 13-15) is addressed to the Maruts.

B But the authorship (kartṛṭram)^a of the triplet there b is attributed c to another d.

मार्तसृच hm^1r , मार्वासिस r^5r^7 , मात्वसिस b, मर्तसिर fk. — उत्तरः hm^1r^3 , उत्तराः br^5r^7 , उत्तसः f, उत्तमः kr (cp. Sarvānukramaṇ, श्रन्यसृचः).

^a With $kartrtvam = \bar{a}r\bar{s}akam$ cp. $krtv\bar{a} = dr\bar{s}tv\bar{a}$ in the obviously spurious line above, ii. 77.

^b At the end of RV. i. 165.

^c The authority here vaguely indicated is probably the $\bar{\Lambda}$ rsanukraman, i. 25, 26, where the Rishi of the even stanzas is stated to be Indra, the seers of the odd ones $(trtiy\bar{a}dyaynj\bar{a}m)$ the Maruts, while Agastya is the seer

of the last triplet (sūktasyāntye tṛce 'gastya ṛṣiḥ').

d That is, to one who is different from those of 1-12. I regard 45^{cd} as a later supplementary addition, both on account of the wording (kartṛtva) and because there was no special reason for mentioning the seer here in an index of deities.

B 46. A story of ancient events ($pur\bar{a}vrtta$) is (here) proclaimed by the seers ^a.

Satakratu (Indra), while roaming in the sky, fell in with the Maruts b.

रतिहास पुरावृत्त b, रितहासं पुरावृत्तं m^1 fkr. Sieg, p. 108, note 8 , gives रितहासः as the reading of b. — परिकोर्त्यंते m^1 b, परिकोर्त्यंये f, परिकोर्त्तये k, परिकथ्यते r. — मक्झिल् h m^1 r, मक्झिथ् bfk r^2 r 5 .

- This line (46^{ab}), as an introduction to the story of the relation of Agastya to Indra and the Maruts in the series of hymns i. 165-178, may be a later addition, as the author of the BD. usually begins a story without any introduction, and, i. 165 having already been described as a dialogue, there is no special reason for any introduction. Thus four, or possibly five, lines (41, 43^{cd}, 45^{cd}, 46^{ab}) in this varga are, in all probability, later additions. With these deductions, the varga would still have a whole śloka, or half a śloka, beyond the normal number.

 b The text of 46^{cd}-54 has been printed by Oldenberg in ZDMG. xxxix (1885), pp. 63, 64.
- 47. On seeing them Indra praised them, and they as seers addressed Indra. By the aid of austerity Agastya became fully (tattvatah) aware of their dialogue.
- ते चैन्द्रम् $r^2r^3r^5r^7$, ते चैन्द्रम् hdm^4 , ते चेन्द्रम् b, तचिंद्रम् fk.—चेद् hdm^4r , बोधि $fr^2r^5r^7$, बोधि bk (the former is probably the better reading; ep. विदित्वा तपसा below, 59).—तस्तः hdk, तत्ततः f, तत्त्वतः r, f तु तः b.
- 48. He quickly went to them after having prepared (nirupya) an oblation to Indra, and he praised the Maruts a also with the three hymns (i. 166–168) 'Now that' (tun nu: i. 166. 1).

निष्णेन्द्रं hm¹, निरूपेन्द्रं dr, निरूपेट्ट fk, निरूप्यमि b.— तन्विति hdm¹r³r¹r⁴r⁶, तिदिति fkr, विदिति b.—च विभिः bfkr, तु विभिः r¹r⁴r⁶, पञ्चभिः hm¹r³ (Sarvānukramaņī: मार्ति हि: hi=three). The latter reading was probably caused by the syllable चि dropping out and being wrongly replaced by **पं.**—The end of the varya is here marked by **Q** in hbfk, not in dm¹.

[&]quot; That is, with the last triplet of 165 as well as with the following three hymns.

- 10. Indra, the Maruts, and Agastya: RV. i. 169, 170.
- 49. And (with) 'Even from great' (mahaś cit: i. 169) he (praised) Indra, and with the (stanza) 'A thousand' (sahasram: i. 167. 1) he a wishes to give the oblation which he had prepared (niruptam) for Indra to the Maruts b.

इति चैवेन्द्रं hm¹r, इत्यनेनेन्द्रं b, इत्यनेनेन्द्रं r²r⁵r², इत्यनेनेंद्र fk.—सहस्रमिति चैतया hm¹r, सहस्रं त ऋचा व्ययं r²r⁵r², सहस्रं त द्वा वयं fb, सहस्र त द्वा चयं k.—िन्द्रां hm¹r, निक्सं f, निक्सं b, निक्तं k, निक्ष्य (यद्यविः) n.—इक्षति hdm¹r, इक्तः fbr⁵r²n, इक्ष्य kr².—Sieg, p. 109, note ², prefers the reading दक्तः, but it is not clear to me how he would construe this genitive, as it cannot depend on the following tad-bhāvam, which already contains a genitive in sense ('his intention').

- ^a The four and a half ślokas, 49^{cd}-53, are quoted in the Nītimalijarī on RV. i. 170. 1.

 ^b Cp. Nirukta i. 5: agastya indrāya havir nirupya marudbhyaḥ saṃpraditsāṃ cakāra; sa indra etya paridevayāṃ cakre.
- **50.** Indra recognizing his intention $(tad-bh\bar{a}vam)^a$ said to him regarding (avekya) it, 'Not' (na: i. 170. 1): 'there b is, indeed, not (anything for) to-morrow, nor for to-day: who knows that which has not been (adbhutam)'e?

तञ्चावम् $bfr^2r^5r^7$, तन्हवम् k, तञ्चयम् hdm^1r .— इन्द्रो $Bhdm^1$, त्विन्द्रो r. — तमत्र-वीत hdm^1r , ततो (त्रवीत Bn.

- ⁿ Cp. below, vi. 38: viditvā tasya tam bhāvam.
 ^b 50^{ed} closely follows the wording of RV. i. 170. 1: na nūnam asti, no švah: kas tad veda yad adbhutam? ep. Nirukta i. 6, where nūnam is explained by adyantanam, and śvas by śvastanam: see Roth, Erläuterungen, p. 6.
 ^c Yāska, loc. cit., explains adbhutam by abhūtam; cp. Oldenberg, op. cit., p. 61.
- 51. 'But the intention itself (cittam eva) of any one, in the uncertainty of purpose (artha-saṃcāre), comes to naught'a. Agastya (then) said to Indra, 'Why, us?' (kiṃ naḥ: i. 170. 2); 'they (the Maruts) are thy brothers' h.

a 51^{ab} is a paraphrase of RV. i. 170. 1^{cd} : kasya cit=anyasya, cittam eva=cittam uta ādhītam, arthasamcāre=abhi samcarenyam, vinasyati=vi nasyati. In Nirukta i. 6 ādhītam is explained by ādhyātam=abhipretam.

b Bhrātaras tava=RV. i. 170. 2: bhrātaro marutas tava.

52. 'Agree with the Marutsa; slay us not, Śatakratu'b. But in the (stanza) 'Why us, O brother?' (kim no bhrātaḥ: i. 170. 3) Indra reproached Mānya c (Agastya).

संप्रकल्पल fkr²r⁵n (ep. RV. i. 170. 2, कल्पल), संस्रकल्पल b, संप्रकल्प्यल hdm¹r.— न: br²r⁵r¹n, RV., नं f, न k, च hdm¹r.—इति लस्यां hm¹rfk, इति न्वस्यां b, इतितस्यां n.

- ^a Marudbhiḥ saṃprakalpasva; cp. RV. i. 170. 2: tebhiḥ kalpasva sādhuyā.

 ^b Vadhīr mā naḥ; cp. RV. ibid.: mā naḥ samaraṇe vadhīḥ.

 ^c Mānya, as the name of the poet, occurs in RV. i. 165. 14, 15. Cp. Sieg, p. 108, line 7.
- 53. But Agastya in the (stanza) 'Ready' (aram: i. 170. 4) pacified the agitated (kṣubdha) Indra. After propitiating him, he made over the oblation to them (the Maruts) a.

लर्मित्यस्थां hm¹rfk, लर्मित्प्रित्यां b, लर्मत्रीत्या n.— चुन्धम् hm¹r, चुद्रम् b, कुडम् fkr²r⁵r¹n.—प्रशासयत् hm¹r, प्रसाद्यत् br²r⁵n, प्रसाध्यत् r³, प्रसाद्यन् fk (cp. TB. ii. 7. 11 on RV. i. 165: tān. . kayāśubhīyena aśamayatām, and TMB. xxi. 14. 5: agastyo . . tena gśamayat, quoted by Ludwig, vol. v, p. 498). Further passages in Sieg, pp. 110, 111.— संवननं brn, सवनं fk, संगमनं Am¹.— The end of the varga is here marked by 90 in hdf, by 99 in b, not at all in m¹k.

^a The second line (53^{cd}) is probably meant to refer to the contents of RV. i. 170. 5, though Indra is there invoked to taste the oblations, not the Maruts.

11. RV. i. 171-178. Agastya and Lopamudra: RV. i. 179.

54. Then when the Soma had been pressed, Indra made them (the Maruts) drinkers of Soma (with him). Therefore one should understand that in (hymns) addressed to Indra the Maruts are incidentally praised.

थ B, च hm¹r.— निपातेन ऐन्द्रेषु r, निपातेनेन्द्रेषु hdm¹ bfk, निपातेषु ऐन्द्रेषु r^5r^7 .— महतः सुतान् m^1 , महत सुतान् hd, महतसु तान् r, महतः सुताः br^5r^7 , महत सुतिः k, महत सुतीः f.—Before 54, bfkr ($r^2r^5r^7$?) add the following śloka (wanting in $hr^1r^4r^6m^1$):

पूर्वया सांलयनिन्द्रो । ह्यगस्यं स्तेह काम्यया। एवं संवननं कला प्रादात्तिभ्यः स तज्ञविः॥

a r, सांत्वयादिद्रो f, सांत्वयादिंद्रो k, सांत्वयादंद्रो b. b r, ॰गस्य स्नेह॰ f, ॰गस्य स्नेय॰ k, ॰गस्य सेह॰ f. ॰गस्य स्नेय॰ k, ॰गस्य सेह॰ f. ॰गस्य स्नेय॰ k, ॰गस्य सेह॰ f. ॰गस्य सेय॰ k, ॰गस्य सेवः b. The correct form of the first line was probably पूर्वया सान्त्वयदिन्द्रमगत्यः स्नेहकाम्यया, 'with the previous stanza (i. 170. 4) Agastya conciliated Indra from a desire of his affection.' This śloka is clearly a later addition, being simply a repetition of the previous one, the second line being almost identical even in form with 53°d.

- 55. Pleased at heart the seer praised the Maruts again separately a in the two (171, 172) hymns, 'To you' (prati: i. 171. 1), but Indra with the six following ones (173-178).
- तांस् dr, तां hm^1bfk . पृथकपृथक् $bkr^2r^5r^7$, पुनः पृथक् hm^1r . प्रति fbm^1 , प्रेति hdr, प्रीति k. इन्हं षड्भः परेस्तु सः hdm^1r , गायत्पड्सः श्चीपतिः B (गायन् $r^2r^5r^7$).
- ^a That is, by themselves, without Indra, the repetition of prthak indicating the two hymns 171 and 172.
- B 56. And Indra in the four (stanzas) 'Praised' (stutāsaḥ: i. 173. 3-6) is praised with them a. Wherever Indra was with the Maruts, he was Marutvat (attended by the Maruts).
- तै: सह b, ते सह fm¹, ते सहा k.—This śloka appears in bfkm¹, but is wanting in hdr (Mitra having no note on the omission). It must be original, as the statement of the Sarvānukramaṇī, catasro 'ntyā marutvatīyāḥ, is based on it.
 - ^a Cp. Sarvānukramaņī: marutvāms tv indro devatā.
- 57. The seer began, from desire of secret union, to talk to his wife, the illustrious Lopāmudrā, when she had bathed after her courses (rtau) b.
- च्छतौ bfkr¹r⁴r⁶, च्छतु° hm¹r. च्छिष् hrbfk, ऋषेर् m¹. लोपासुद्रां has been misprinted लोपसुद्रां.—The end of the varga is here marked by 99 in hdbfk.
- ^a That is, Agastya.

 ^b The Nītimañjarī on RV. i. 179. 1 quotes ślokas 57-60;
 Oldenberg prints them in ZDMG. xxxix, p. 68; Sieg, Sagenstoffe, p. 120, translates them.

12. Agastya and Lopamudra. RV. i, 180-191.

- 58. She with the two stanzas 'During many' (pūrvīḥ: i. 179. 1, 2) expressed her purpose. Then Agastya, desiring to enjoy himself, satisfied her with the two (3, 4) following (stanzas).
- 59. The disciple (of the seer) becoming aware by austerity a of the whole condition of these two desiring to enjoy themselves, (but) thinking he had committed a sin (enas) in listening $(\&rutv\bar{a})$, sang the last two (stanzas: 5, 6).
- सर्व m¹ fr, सर्व hbk.— श्रुखैनं m¹, उत्केनं r(r¹ r⁴ r⁶), न खैन: hd, न खैतत् b, नखेन: r² r³, न खेन fk, न खेतत् r⁵ r⁷. The evidence of the Sarvānukramaņī (cp. also Sāyaṇa) leaves no doubt as to श्रुखैन: having been the original reading; see note ^b.

- ^a Cp. iv. 47: samvādam tapasā veda, and iv. 50: vijnāya . . tadbhāvam. ^b Cp. Sarvānukramanī: samvādam śrutvā antevāsī brahmacārī antye . . apašyat; and Sāyana on RV. i. 179. 5: sambhogasamlāpam śrutvā tatprāyaścittam cikīrsur uttarābhyām āha.
- 60. The preceptor and his wife $(gur\bar{u})$ lauding and embracing him kissed him on the head, and smiling both of them said to him, 'You are sinless, son'a.

प्रश्च hm¹ r³ r⁵, प्रशंख r, प्रशंख b, अशंसतां fk.—गुरू r, गुरू m¹ bfk, गुरूर् hd.— •विज्ञतः hm¹ r, •भिज्ञञ्चतः bf, •भिज्ञञ्चतः k.— •भावनागा असि bfkr, •भी ह्यनागी ६सीति Am¹.

- ^a RV. i. 179 is treated as a whole by Oldenberg, ZDMG. xxxix, pp. 65-68, and by Sieg, Sagenstoffe, pp. 120-126.
- 61. Then with the five hymns (i. 180-184), 'Your (coursers) through the regions' (yuvo rajāmsi: i. 180. 1), Agastya praised the Aśvins; but with the following, 'Which of the two'? (katarā: i. 185),

करोति परेण $hdr^1r^4r^6$, करोरण परेण m^1 , करोरण (only) b, सूक्तेन करोरण rfk, सूक्तेन करोरित r^5 .

62. (he praised) Heaven and Earth; with the hymn 'To our' (ā naḥ: i. 186), all the dwellers in the sky (viśvān divaukasaḥ)^a; (with) 'The draught' (pitum: i. 187), Food—'Kindled' (samiddhaḥ: i. 188) is an Āprī hymn b—and (with) 'O Agni, lead' (agne naya: i. 189), (he praised) Agni.

सूक्तेन आ r, सूक्तेना hm^1bfk . — समिङोऽवाप्रियो bf, समिङो ह्याप्रियो $kr^2r^5r^7$, सिमिङाप्पो hr, सिमिङाप्यो d, सामिङाप्यो m^1 (cp. Sarvānukramaņī: सिमिङ आप्रियः). — पिमपे नयेति च hm^1r , पे च नयापये $bfkr^2r^5r^7$ (Sarvānukramaņī: अपे नय . . . आप्रियम्).

- ^a That is, the All-gods (viśvān devān).
 ^b According to the reading of Λ, this statement as to i. 188 must be taken parenthetically, the following agnim being governed by tuṣṭāva in 61°. The reading of Λ is irregular in its Sandhi (samiddhāpryaḥ=samiddhaāpryaḥ), while in B the pratīka is imperfect: agne ca naya for 'agne naya' ca.
- 63. 'The resistless' (anarvāṇam: i. 190) is to Brhaspati. The following (hymn), 'Venomous creature' (kaṅkataḥ: i. 191)a, is of esoteric import (upaniṣat)b. Some consider this to be a praise of Waters, Grass, and the Sunc.

पर्म hm1r, परा: b, परा fkr2r5r7.— खुति hdrk, खुतिर् b, खुति f.

- ^a Another case of irregular Sandhi (as in the preceding śloka: kankatopanisat = kankata upanisat).

 ^b On the meaning of upanisat as used here, cp. Ṣaḍguruśiṣya on RV. i. 50.

 ^c Cp. Sarvānukramaṇī: kankataḥ..upaniṣad..ap-tṛṇa-sauryaṃ viṣaśaṅkāvān agastyaḥ prābravīt.
- 64. Or Agastya, in fear of poison a, saw this (hymn) as an antidote. The last couplet here of the hymn, however, contains no distinct name (adrstakhya) and its character is obscure be $(nastarapa)^c$.

दर्श तदगस्यो वा hm¹r, दर्शितदगस्यसु B.— श्रदृष्टाख्यो hm¹B, श्रदृष्टाख्यो r.— नष्टक्प: B, विश्वक्प: hm¹r. — सूत्राख्यान्यो hm¹B, सूत्राखांसो r. — दुच: m¹, द्व्युच: hdr³, दृच: bf, दिज: k, ख्रुच: r.— The end of the varga is here marked by 92 in bfk, not in hdm¹.

a Cp. the quotation from the Sarvānukramaņī in note on the preceding śloka. b No name of any deity appears in this couplet; and as to the only two names of living things, kuṣumbhaka and vṛścika, which occur in it, the sense of the former is quite uncertain, while that of vṛścika, though meaning scorpion in later Sanskrit, is somewhat doubtful. The expression naṣṭarūpa seems to mean that the sense is not obvious from the form of the stanzas themselves: cp. the expression tathā rūpaṃ hi dṛśyate which is used several times in the BD. (iii. 76 &c.). The fact that varga 12 contains seven ślokas does not indicate here that some of them are later additions; for as the end of a maṇḍala always coincides in the BD. with the end of a varga, the latter has sometimes more, sometimes less, than the normal number of five ślokas (cp. iv. 18, 25; v. 28; vi. 6, 25, 29; v. 19 is no exception, as ślokas 102, 103 there are an introduction to maṇḍala vi).

Mandala ii.

13. Deities of RV. ii. 1-12. Grtsamada, Indra, and the Daityas.

65. Gṛtsamada praised Agni (with) 'Thou' (tvam: ii. 1). Then 'With sacrifice' (yajñena: ii. 2) and 'Agni kindled' (samiddho agniḥ: ii. 3) are (respectively) addressed to Jātavedas and Āprī stanzas. Then with the seven (hymns: 4–10) 'I call' (huve: ii. 4) (he praised) Agni.

श्रस्तौद् hm^1r , स्तौति r^5r^7 , स्राति f, सिति k, वैत्ता b.—जातवेदस्थम् $bfkr^2r^3$, जातवेदसम् hd, जातवेदसम् m^1r .

66. ^a Having applied himself to austerity, he, with (bibhrat) a great body like that of Indra (aindra), in a moment appeared in heaven and air and here (on earth).

संयुज्य hm1rns, संयोज्य bfkr2r5r7.

- ^a The Nitimanijari on RV. ii. 12. I quotes 66-69; Sayana quotes 66-68, besides giving two other versions of the story.
- 67. Now the two Daityas of terrible prowess, Dhuni and Cumuri, thinking him to be Indra, both fell upon him armed.

इद्रमिति hm¹rn, इन्द्र इति bfks.—मला तु hm¹rks, मला दौ bn, मला ती fr⁵.— चोमी Bm¹ns, चैव hdr.

- 68. The seer becoming aware of the intention $(bh\bar{a}va)^a$ of these two bent on evil, proclaimed the deeds of Indra with the hymn 'Who when born' (yo $j\bar{a}tah$: ii. 12).
 - ⁿ Cp. above, 59: viditvā . . tayor bhāvam.
- 69. The deeds of Indra being (thus) declared, fear quickly entered them. Now Indra (saying) 'This is (my) opportunity,' struck them down (nibarhayat).

उत्तेषु hm¹rfb, की त्येषु r¹r⁴r⁶.—भीसावाणु विवेश ह hdm¹r, भीतौ सुषुपतुस्तदा Bn (the latter reading is more in keeping with RV. ii. 15. 9: svapnenābhyupyā cumuriņ dhuniņ ca jaghantha).—निवर्हयत् hdm¹, न्यवर्ह्यत् r, न्यवर्ह्यत् b, त्यवर्ह्यत् f.—The end of the varga is here marked by 93 in hdbf, not in k.

14. Grtsamada and Indra.

70. Having smitten them down, Sakra addressed Gṛtsamada the seer: 'Look upon me, friend, as one beloved; for you have become dear to me';

ऋषिं hm^1r , इदं br^5r^7 , इदं f, इन्द्र k.—मां hm^1bfk , मा $rr^1r^4r^6$.—पश्च hm^1rbfk , पश्च $r^1r^4r^6$.—प्रियत्वं hm^1bfkr^5 , प्रियस्त्वं $rr^1r^4r^6$ (Mitra thinks the correct reading of this passage should be: मांसं खे पश्चं प्रियस्त्वम्!!).—ह्यागतो hm^1r , यागतो bfk, चागतो r^5 .

71. 'Ask a boon of me; and may your penance never fail.' Bowing down the seer replied to him: 'For us, O chief of speakers',

वरं hm¹r, वरान् bfk.—वर् Am¹, वरः bfkr.

a The seer uses this form of address in support of one of the boons he asks, speech that stirs the heart.

72. let there be both security for our bodies and speech that stirs the heart. Let us abound in heroes a and wealth. We, O Indra, turn our thoughts $(dh\bar{\imath}mahe)^b$ to thee;

रक्ट धीमहे hdm^1 , इन्द्रमीमहे r^6 , इन्द्र धीमहि r, इन्द्र वामहे kr^2 , इन्द्रा वामहे f, इन्द्रा वीमहे b.

- a The expressions suvīrāh and vāh cāstu hṛdayaṇgamā were doubtless suggested by the last pāda of RV. ii. 12. 15: suvīrāso vidatham ā vadema, and by ii. 21. 6°ā: (dhehi) poṣaṇ rayīṇān, ariṣṭiṇ tanūnāṇ, svādmānaṃ vācah.

 b The evidence of the MSS. points to the form dhī-mahe (which I take to be the 1. plur. pres. middle of dhī, to think); dhīmahi in R is doubtless due to the influence of that form in the Sāvitrī (RV. iii. 62. 10).
- 73. and thee, O Indra, we discern in every birth a, and this my heart is fixed on thee; go not away: thou art the better chariot-fighter' (rathitarah) b.

खां च विजानीमो hm^1rb , खां परिजानीमो fk.—जन्मनि जन्मनि br, चन्मनि जन्मनि fk. ह्यजिन जन्मनि $hdr^1r^3r^4r^6m^1$ (ह्यजिन perhaps due to a transposition of syllables by a slip of the copyist of the archetype of Λ , that is, न्यजिन for जन्मनि).—खद्गतम् hm^1rb , खां ततम् $r^1r^4r^6$, वज्जतम् fk.—मापगास्त्वं m^1 , मापगास्त्वं fk. मापगास्त्वं fk. मापगास्त्वं fk. मापगास्त्वं fk. मापग्यास्त्वं fk. मापग्यास्त्वं fk.

- ^a That is, probably, in every form thou assumest.

 ^b This being a reason for Indra remaining with Gṛtsamada to assist him in his conflicts with Daityas; cp. the words used of Indra in RV. i. 84. 6: nakiṣ ṭvad rathītaraḥ.
- B 74. This choice (made by Gṛtsamada) is explained in the final (6) stanza (of RV. ii. 21), 'O Indra, the best' (indra śreṣṭhāni): he chose all this as a boon. The Lord of Śacī hearing that a,

तद्दं br, तद्वं fk, तद्मं m¹.—वार्यम् f, वायम् b, चार्यम् m¹, चार्यम् r.—श्रिष्ठान्य्या r, श्रिष्ठानि चान्य्या m¹, श्रिष्ठानिप्रयांत्यया b, श्रिष्ठानिप्रवांन्यया fk.—This śloka is not found in A, but bfkm¹r have it.—The end of the śloka is here marked by 98 in bfk, not in m¹.

^a That is, the prayer of Grtsamada stated in 72, 73.

15. Story of Indra and Grtsamada (continued).

75. the Swift Conqueror (turāṣāt) agreeing, grasped (him) by the right hand, and the seer, through his friendship for him, touched Indra's hand with his own.

तुराषाट् hdm¹, र्थांगं B.—तु Bhdm¹, लां r.—ऋषिश्वास्य hm¹rfb, स विश्वास्य k. U 76. And thus they went together to great Indra's abode. There the Destroyer of Forts (puramdara) himself affectionately honoured him,

चैवं hm^1r , ती च bfk.—•सद्नं hm^1r , •भवनं $br^2r^5r^7$, •भुवनं fk.

77. and paid reverence a to the seer with ceremony prescribed by rule b. And because of his friendship the Lord of Bay Steeds (harivāhana) again addressed him:

तमृषिं चाभ्यपूजयत् $r^2r^3r^4r^6$ त, तमृषिमभ्यपूजयत् $h\,m^1$, तमृषिश्चाभ्यपूजयत् r, तमृषिभ्याश्च पूजयेत् h (transposition for °षिश्चाभ्य॰?), तमश्चाभूपूजयत् f.

- ^a Cp. below, v. 79, where the same verb $(p\bar{u}j)$ is used of a king receiving a seer.

 ^b Cp. the same expression below, v. 24.
- 78. 'Since you, O best of seers, with your praise $(grnan)^a$ delight $(m\bar{a}dayase)$ us, therefore, being the son of Sunahotrab, you shall be (called) Grtsamada by name c.

त्वमसान् r, त्वगसान् b, त्वमसाट् $h dm^1$, यसान् (for the three words यसात्वम-सान्) f k.

- ^a Cp. Yāska's etymology, Nirukta ix. 5: gṛṭsa iti medhāvināma gṛṇāteḥ stutikarmaṇaḥ.

 ^b Cp. Ārṣānukramaṇī ii. 2: aurasaḥ śunahotrasya; and Ṣaḍguruśiṣya on Sarvānukramaṇī, introduction to Maṇḍala ii: śunahotraputraḥ.

 ^o Cp. Ṣaḍguruśiṣya, ibid.: paścād indreṇoktagṛṭsamadanāmā. The reference he makes to the 'Rṣyanukramaṇā can only be intended for a paraphrase of the corresponding passage in the Ārṣānukramaṇī, ii. 2-3^{ab}.
- 79. Then with the twelve (ii. 11-22) hymns (beginning) 'Hear' (*śrudhi*: ii. 11. 1) the seer praised Indra. And just as he was praising (him) he saw Brahmaṇaspati there.

त्रह्मण्यतिम् hdm¹r, त्रह्मण्यतिः bfk.—The end of the varga is here marked by 94 in hbfk, not in m¹.

16. Deities of RV. ii. 23-30.

80. Now he praised Brhaspati also in those (stanzas) in which (that form of) the name (linga) a appears. He praised him also b with the four (hymns) after this (ii. 23-26)

दृष्टिनिङ्गाभिरेव च hm¹r, दृष्टिनिङ्गस्तवैः सह r⁷, दृष्टिप्तिंगस्तुवैः सह b, दृषिनिङ्गस्तवै सह fk (cp. Sarvānukramaņī on ii. 23: बाईस्तत्यास्तु दृष्टिन्ज्ञाः).—तमप्यभि॰ bfr, तमव्यभि॰ k, तमस्यभि॰ $h\,d\,m^1\,r^1\,r^3\,r^2\,r^7$.—॰िभिरित $k\,r^5$, ॰िभिरित r^3 , ॰िभिरित $h\,d$, ॰िभिरित r^7 , ॰िभरत m^1fr , ॰िभरव b.

- ^a The Sarvānukramanī has the same word dṛṣṭalingā, which Ṣadgurusiṣya explains as follows: tatra bṛhaspate devanida ityādi-dṛṣṭa-bṛhaspati-śabdād bṛhaspatidevatyāh.

 ^b That is, Brahmaṇaspati as well as Indra: tam api referring back to brahmaṇaspatim in 79^c because 80^{ab} is parenthetical.
- 81. (beginning) 'Of the hosts' (gaṇānām: ii. 23. 1); in the (stanza) 'All' (viśvam: ii. 24. 12) Indra and Brahmaṇaspati together. Or a (he praised) Bṛhaspati incidentally (prasaṅgāt) and Brahmaṇaspati strictly speaking (eva) b.

सहेम्द्राब्रह्मण्यती hrbfk, महेम्द्राब्रह्मण्यती dm^1 .—•ितं प्रसङ्गाद्वा hm^1r , •ितप्रसक्त-लाद $bfkr^2r^5$.—•पितमेव च hm^1bfk , •पितमेव वा r^5 .

- a As an alternative way of stating what has been said in 80: that is, Brahmaṇaspati is sūktabhāj, while Bṛhaspati is rgbhāj (80) or nipātabhāj (81).

 b The Sarvānukramaṇī gives the deity of ii. 23-26 as Brahmaṇaspati, adding bārhaspatyās tu dṛṣṭaliṅgāḥ.
- A 82. He praised the different power of the two by (lauding) one and the same deed ".

To Mitra, Varuņa, Dakṣa, Amśa, Tuvijāta b, Bhaga, Aryaman,

- द्यो: hdr^3 , तयो: m^1r .— 82^{ab} is not to be found in $hfkr^2r^5$ (doubtless also r^7), that is, it belongs to A only. As the *varga* has six ślokas with this line included, the latter is probably a later addition. (p. note on 83^{cd} .
- That is, though praised under different names, their activity cannot be distinguished in these hymns.

 Though this word is an epithet of Varuna in RV. ii. 27. I where the names of the Ādityas are enumerated, it appears here to be meant as a proper name so as to make up seven Ādityas. In this the author doubtless had Nirukta xii. 36 in his eye, where tuvijātah is explained as bahujātas ca dhātā. In BD. vi. 147, 148^{ab} (B) twelve Ādityas are enumerated, including Dhātr.
- 83. the Ādityas, belongs the hymn 'These' ($im\bar{a}h$: ii. 27). (The hymn) 'This' (idam: ii. 28) is stated to be addressed to Varuṇa. (The stanza) addressed to Varuṇa beginning a 'Who me' ($yo\ me$: ii. 28. 10) is destructive of evil dreams and the like b.

वाब्रों bfkr⁵r⁷, वाब्रों hdm¹r³.— इत्याद्या hdm¹r³, इत्येषा br⁶r⁷.—स्वप्नादा॰ r³bfk, स्वप्नाद्य॰ hd.— ॰प्रणाशिनी k, ॰प्रणाशिनी fb, प्रणाशिनी: hdm¹r³.—83^{ed} occurs here in hdm¹r³, but in the B MSS, it is found after 92, where with reference to

RV. ii. 41. 20 it is quite out of place, but where its presence gives the varga five ślokas (a matter of no importance there: cp. above, iv. 64, note °). Its present position is necessary, though its inclusion gives the varga one line beyond the normal number of five ślokas. If any of the other lines are later additions, they are probably 82^{ab} , found in Λ only, and 81^{cd} , which could be spared from the text with advantage, though it is found in all the MSS.

a The reading of the B MSS. would mean: 'The (stanza) "Who me" in (this) hymn to Varuna.' The comparison of vi. 78 makes this reading vārune seem more likely to have been the original one than vārunā.

b The reading of m¹ looks like duhsvapnāgha°, 'the sin (caused) by evil dreams.' Some MSS. of the Sarvānukramanī add the words upāntyā duhsvapnanāsinī, and the Rgvidhāna, i. 30. r, describes this stanza as duhsvapnasamanī.

84. 'Upholders of law' (dhṛtavratāḥ: ii. 29) is addressed to the All-gods, but that which follows, 'Right' (ṛtam: ii. 30), is addressed to Indra. In the (stanza) 'His power indeed' (pra hi kratum: ii. 30. 6) Indra-Soma are praised together.

परं तु यत hm^1r , परं ततः br^5 , परं तमः f, परं यतः r^2 , परं मतः k.

85. But in the hemistich 'O Sarasvatī, thou' (Sarasvatī tvam: ii. 30. 8^{ab}) the Middle Vāc (is praised). 'Who us' (yo naḥ: ii. 30. 9) is (in) praise of Bṛhaspati; the stanza 'That of yours' (taṃ vaḥ: ii. 30. 11) is (in) praise of the Maruts.

मध्यमा तु r, मध्यमा नु h d m l b, माध्यमा नु f k r 2. — वृहस्पतिस्तृतियों नस् b, वृहस्पते सुतियों मास् f k r 2, वृहस्पते सुतियों उस् r 5, वृहस्पति तु यो नसु h d m l r. — तम्ब श्राङ्क r 5, खरे रिन् f k, तत्सविद् b, उत्तमा h m l r: the reading of the B MSS. is supported by the Sarvānukramaņī: yo no bārhaspatyā taṃ vo mārutī. — The end of the varga is here marked by $\mathbf{9}$ in h b f k, not in d m l.

17. Deities of RV. ii. 31-35.

86. 'Our' (asmākam: ii. 31) should be (regarded as) addressed to the All-gods; and the stanza at the beginning of (the hymn) 'Of this' (asya: ii. 32. 1) belongs to Heaven and Earth; the two following it (ii. 32. 2, 3) are addressed either to Tvaṣṭṛ or to Indra.

स्थाद् $bfkr^6r^7$, स्थात् hm^1r^3 , तु r— श्रादावस्थिति चास्य तु b, श्रादावस्थ चास्य नु स्थक् f, श्रादा स्थक् चान्तिमास्य तु r^6r^7 , सूक्तादावस्य चास्य स्थक् r^3 , सूक्तादावस्य चास्य स्थक् hd, सूक्तादावस्य त्वक् m^1 , सूक्तादावुत्तमस्य तु r.— •व्योस्त्वाध्यौ m^1 , •व्योस्त्वाध्यौ hdr^2 , •व्योस्त्वाध्यौ f, •व्योद्धे त्वाध्यौ r, •वीत्युचा $r^1r^4r^6$, (यावा) गृवि त्वाध्यो b.— $br^1r^4r^6$ have

ऋग् at the beginning of the line before दावा॰ (instead of at the end of the preceding line).—वाथ चेंद्र्यी m^1 , चाथ चेंद्र्यो h, वाथ चेंद्र्यो d, वाथ चैन्द्र्या r^3 (cp. Sarvānukramaņī: द्वे एन्द्र्यो लाध्र्यो वा), तथैवेन्द्र्यो r , वेंद्रियोथवां f, वेंद्वियोर्बचा b, चैन्द्री ववीं $\mathrm{r}^5\mathrm{r}^7$.

- 87. Two (stanzas) each belong to Rākā (ii. 32. 4, 5) and Sinīvālī (6, 7), while with the last (8) the six (goddesses) Gungū and the rest (are praised):
- B preceded by these (stanzas: $tatp\bar{u}rve$) there are two stanzas (beginning) 'Kuhū I' a ($kuh\bar{u}m \ aham$) traditionally held (to belong) to Kuhū.

षट् गुङ्गावास् h, षड् गुकावास् m^1d (षट् d), षड् गंगावास् b, षड्ंचावास् fk, षड् भुकाव $^{\circ}$ $r^1r^4r^6$, षड् केङ्योग्यास् r.—तथान्यया hm^1rhfk , $^{\circ}$ न्तया स्तुताः $r^1r^4r^6$.— $87^{\circ d}$ are found in B only, not in Am^1 .

- a In TS. iii. 3. 11⁵ the two stanzas to Rākā (=RV. ii. 32. 4, 5) are followed by the above₃ two stanzas to Kuhū, and are preceded by others to Anumati (TS. iii. 3. 11^{3·4}); these are again preceded by four to Dhātṛ (TS. iii. 3. 11^{2·3}).
- B 88. Followed by these (taduttare) there are two, anu nah (and) anv it, traditionally held to belong to Anumati. At the beginning in the same place there are four (stanzas) to Dhātr (beginning) 'May the Creator grant us wealth' (dhātā dadātu no rayim).

न्विति ते स्मृते ${\bf r^2r^5r^7}$, खिदिति स्मृतम् ${\bf b}$, खिति स्मृते ${\bf fk}$.—चतस्रस् ${\bf r^2r^5r^7}$, च॥ तिस्रस् ${\bf fk}$, च तिस्रस् ${\bf b}$.—तचादौ ${\bf fr^2r^5r^7}$, तचादा ${\bf k}$, सूचावो ${\bf b}$.—दधाति नो ${\bf r^2r^5r^7}$, ददाति ना ${\bf fk}$, ददा नो (ददातु नो ${\bf TS}$.).

89. Now 'To thee' (\bar{a} te: ii. 33) is addressed to Rudra (and) the following, 'Delighting in showers' ($dh\bar{a}r\bar{a}var\bar{a}h$: ii. 34) to the Maruts.

Seeing a beast $(mrgam)^a$ on his left, the seer himself approaching in fear $(bibhyad\ etya)^b$,

वामतसु $hm^1r^1r^4r^6$, वामदेवसु b, वामदेसु fk, वामदेवो r—मृगं hm^1r^3 , मृगान् $bfk\,r^1r^4r^6$ (मृगं $in\ RV$. ii. 33. 11).—बिस्मदेख ऋषिः स्वयम् $h\,dm^1$, विस्मतेख ऋषि स्वयम् f, विस्म तेस्य रिषि स्वयम् b, विस्मत्तेस्य ऋषिः स्वयम् r, (स्तौत्य) ध्विन निप्रस्थितांसुहि (the last two syllables come from the following line) $r^1r^4r^6$.

^a Or, 'beasts' according to six MSS.

^b Or 'afraid of them' according to several MSS.

90. praised the same in the (stanza) 'Praise the famous' (stuhi śrutam: ii. 33.11), propitiating him. Then in the following hymn (beginning) 'Unto' (upa: ii. 35) Apām napāt is praised.

तमेवास्तीत् hd, **मूनेवा**स्ती b, **रू**ने चास्ती f, **र्द्रमस्ती**त् r³r⁵r⁷.—90^{ab} is omitted in m¹r.—ततः परे hdr, त्वतः परे br⁷, त्वः परे fk.—The end of the varga is here marked by 9% in bfk, not in hdm¹.

18. Deities of RV. ii. 36-43. Indra as a Kapinjala.

91. There are two hymns (ii. 36, 37) addressed to the Seasons (beginning) 'To thee' (tubhyam: ii. 36. 1). After one addressed to Savitr (38) follows one to the Asvins (39). With the last (stanza: 6) of (the hymn) to Soma-Pūṣan (40), Soma, Pūṣan, and Aditi as well, are praised.

°त्यार्तवे hbk, °त्यर्त्तवे f, °त्यार्भवे r.—सोमापौष्णे b, सोमपौष्णयो (स्तुताः) f, स्रोमा-पूष्णे hm¹r (सोमापौष्णम् Sarvānukramaņī).

92. And (at the beginning of ii. 41) there are two (stanzas) to Vāyu (1, 2), one to Indra-Vāyu (3); next (come) five triplets (4-18) addressed to the Prauga deities a. The stanza 'Forth' (pra: 19) praises the two Soma carts: Agni is there incidental (nipāta-bhāj). 'Heaven and Earth' (dyāvā: 20) (praises) Heaven and Earth; then follow (21) the two Soma carts b.

॰वायवी पञ्चाथ A, ॰वायव्यं व्यञ्जन्ते b, ॰वायव्यं विवात्त f, (वेन्द्र) वायव्या श्वन्यासु r.—प्राउगास् b, प्रउगास् hdm¹rfk.—श्रपिस्तव hrfk, श्रपिस्तव b.

- ^b According to the Sarvānukramaņī, the whole of the last triplet (19-21) is addressed to either Heaven and Earth or the two Soma carts, while Agni is optional in 19°.
- 93. Now a Indra again desiring praise, became a francoline partridge, and taking up a position on the right quarter of the seer as he was about to set out b, uttered a cry $(vav\bar{a}\acute{s}a)^c$.

जुतिं $\rm hm^1rs$, जुतं $\rm bfkr^2$.— ववाशास्थाय दिचणाम् $\rm hm^1rs$, ववासे प्रति दिचणाम् $\rm r^2r^5r^7$, चवाशे प्रति दिचणाम् $\rm b$, ववासे प्रति दिच $\rm f$.

^a This and the following śloka are quoted by Sadgurusisya (p. 104) on RV. ii. 43. ^b Cp. Nirukta ix. 4: gṛtsamadam artham abhyutthitam kapiñjalo 'bhivavāśc, cp. Sarvānu-

kramanī on RV. ii. 43; Rgvidhāna i. 31. 3, 4; Max Müller, RV.² vol. ii, p. 8. ^c Though, according to Roth, Erläuterungen, p. 125, the passage of the Nirukta quoted in note b is an interpolation, it was evidently known to the author of the BD. The stanza which Yāska goes on to quote for hapiñjala is the first of the khila after RV. ii. 43.

- 94. He (Grtsamada), with the eye of a seer, recognizing him (Indra) in the form of the bird, praised him in the two following hymns (ii. 42, 43), 'With repeated cry' (kanikradat: ii. 42. 1).
- पराभ्यामभि• hm¹r, एताभ्यामभि• s, पराभ्यामिति bfk.—The end of the varga is here marked by 9⊏ in bfk, not in hdm¹.

Mandala iii.

19. The seer Viśvāmitra. Deities of RV. iii. 1-6.

95. The son of Gāthi a who, after ruling the earth b, attained by penance to the position of a Brahman seer (brahmarṣi) and (obtained) a hundred and one sons c, uttered the hymn which is addressed to Agni, 'Of Soma me' (somasya mā: iii. 1), and the two following (iii. 2, 3)

प्रशास्त्र hm^1rb , प्रशास्त्रं f.—गां यस् b, गायंस् r, गाय fk, गायस् hd, गायिस् m^1 .— °स्यगक्ट् hdr, °ध्यगक्ट् b, °ध्यगक्र्न् r^5r^7 , °ध्यगक्त् f.—गाथिपुत्रस् hd, गाधिपुत्रस् r, गायिपुत्रस् fk, गाधिपुत्रस् b.—यत्परं च hm^1r , यत्परिति च f, यत्परिति च b, तत्परं च $r^2r^5r^7$.

- ^a That is, Viśvāmitra, seer of Maṇḍala iii. Ṣaḍguruśiṣya (p. 104) gives a somewhat different and more detailed account of Viśvāmitra.

 ^b This remark of course refers to Viśvāmitra having originally belonged to the warrior class.

 ^c Cp. AB. vii. 18. 1.
- 96. addressed to Vaiśvānara. 'With every log' (samit-samit: iii. 4) is an Āprī hymn (āpryaḥ). There follow here two hymns (iii. 5, 6) addressed to Agni: Heaven and Earth, the Dawnsa, the Waters, the Gods, the Fathers, and Mitra are incidentally mentioned deities (nipātāḥ) b.

वैश्वानरीये **u** fk r² r⁶ r⁷, वैश्वानरीये **a** b, वैश्वानरीयेति r, वैश्वानरायेति hd m¹ (the pratika of iii. 3). I have omitted the syllable **u** because it is redundant after यत्परे च, and because it would give the pāda thirteen syllables according to the reading of the B MSS. R's reading विश्वानरीयेति is impossible, while that of hdm¹ यत्परं च। विश्वानरायेति I regard as a corruption: यत्परे च having become यत्परं च, the following विश्वानरीये had to be changed to विश्वानरायेति. This reading gives both a wrong and an

- a On the Sandhi out उपसो see introduction to Sarvānukramaņī, p. x, and footnote ²; Aufrecht, Aitareya Brūhmaṇa, p. 427, last §.

 b Nipāta is here used = nipātin.
 The last three pādas of 96 are quoted by Ṣadguruśiṣya, p. 105.
- 97. In (hymns) addressed to Agni, Vaiśvānara, Varuṇa, Jātavedas are seen to be praised a. Wherever (here) one (of them) may be praised or there is no (actual) praise b, one should know that they are intended to be incidental or to serve as a comparison.

स्तू येतेका hm^1r , सूर्यतेको B.—यचासुितवी hm^1r , तचान्यसुितवी B.—निपात्यधीयो॰ hdm^1 , निपात्यधीयो॰ $r^1r^3r^4r^6$, निपात्यास्थो॰ b, निपात्यास्थामु॰ fk, निपात्यांसांस्थो॰ r.—•पमार्थास्थ hdm^1 , ॰पमार्थास्थ r, ॰पमार्थास्थ fk.

- ^a The first pada has only ten syllables.

 ^b That is, when the deity is not invoked, but the name is merely mentioned, as in a simile.
- 98. The royal seers a, the Gṛtsamadas, the Vasiṣṭhas, the Bharadvājas, the Kuśikas, and the Gotamas, the All (gods), the Aśvins, the Aṅgirases, the Atris, Aditi, the Bhojas b, the Kaṇvas, the Bhṛgus, the Two Worlds (rodasī), the Regions (diśaḥ) c,

कुश्चिता bfk, कुश्चितो hdm^1r —गोतमाञ्च hd, गौतमाञ्च m^1bfkr —भोजा hm^1rb , भाजा fk—कुश्चिता m^1 , कुश्ची hdr, कुश्चा b, कुश्चा k $r^2r^5r^7$, कुश्चा f.

- Rodasī, and Aditi.

 b That is, liberal patrons, here spoken of as a class (as in RV. x. 107).

 c Mentioned below also (viii. 128) as incidental in hymns to the All-gods.
- 99. when praised at the beginning, end a, or middle of a hymn, in (hymns) addressed to Savitr, Soma, the Asvins, or the Maruts, to Indra or Agni, to Rudra, Sūrya, or Uṣas, do not interfere (vyāghnanti) with the deities who own the hymn (sūktabhāj) b.

॰सीम्या॰ hdr, ॰सीर्या॰ B.—॰मारतेषु ऐन्द्रा॰ r, ॰मार्गते धेन्द्रा॰ hdm¹, ॰मार्गतेसैन्द्रा॰ b, ॰मार्गसेन्द्रा॰ fk.—॰सीर्योषसेषु r, ॰सीर्योषसेषु hd, ॰सर्वोषसेषु m¹, ॰सीर्योषसेषु r² r⁵r r.

सीम्योषसेषु b, सीम्योषसेषु f. — सुतासु hm^1r , सुतास्ताः r^5r^7 , no f or f or f in hfk. — देवताः सूक्तभाजः r, देवताः सूक्तभाजाः hm^1r^3 , देवता सूक्तभागिनी hfk, देवतां सूक्तभागिनीम् r^5 . — The end of the varya is here marked by f0 in hfk h0.

^a Cp. above, iii. 52; also i. 22 and below, v. 171.

^b That is, such incidental deities do not interfere with one particular god being the chief deity of the hymn.

20. Deities of RV. iii. 7-29.

100. The seventeenth Adhyāya (RV. iii. 7-29) is Agni's. 'Stand erect to aid us' ($\bar{u}rdhva\ \bar{u}\ su\ na\ \bar{u}taye$: i. 36. 13, 14)—these two stanzas of Kanva are addressed to the sacrificial post ($yaup\bar{\imath}$), and the five (beginning) 'They anoint thee' ($a\tilde{n}janti\ tv\bar{a}^{\bar{u}}$: iii. 8. 1-5).

एते br, ये ते hm^1fk .—कारवाव्r, करवाव्hd, करवव् m^1 , काल्वाव्bfk.—यौष्याव्hd, योष्याव् m^1bfk , यौष्यी ह्य r.

The correct pratika is $tv\bar{a}m$, but $tv\bar{a}$ (tveti) has been substituted for the sake of the metre.

101. The rest^a (are addressed) to many posts, while the eighth stanza is addressed to the All-gods; the last (stanza) of this (hymn) is that which is said to be concerned with cutting (the post)^b. The sixth (hymn: iii. 12)^c is said to be addressed to Indra-Agni.

श्रेषा बज्जस्यो fkr, श्रेषास्यो बज्ज (यूपेस्यो) hd, श्रेषेस्यो बज्जस्यो m¹ r³, श्रेषो बज्जस्यो b.— व्रश्ननी योक्ता hdm¹, व्रश्नना योक्ता bfkr⁶, व्रश्ननाः योक्तुं॰ r⁵ r⁷, व्रश्चिनी योक्ता r.—षष्टमै-न्द्राममुख्यते hdr, (योक्तें) द्रापी ऐन्द्राममुख्यते r⁵ r⁷, रुन्द्रापेन्द्रावसु b, रुन्द्रामीद्रावसु - - fk.

^a That is, all but the eighth and the eleventh stanzas, which are excepted; according to the Sarvānukramaṇī the eighth is optionally excepted: añjanti yūpastutiḥ: ṣaṣṭhyūdyūbhir bahavo, ntyū vraściny, aṣṭamī vaiśvadcvī vā.

^b The text of the Sarvānukramaṇī (also Sāyaṇa) has vraścinī, but Ṣaḍguruśiṣya (adhikaraṇe lyuṭ) must have read vraścanī.

^c That is, the sixth hymn of the Adhyāya (cp. 100).

102. (The stanza) 'Agni, Dawn' (agnim uṣasam: iii. 20. 1) is addressed to the All-gods; (they are) also (invoked) with the (stanza) 'Dadhikrā' (dadhikrām: iii. 20. 5). But the stanza 'Agni and Indra' (agna indraś ca: iii. 25. 4) is addressed to Agni-Indra. The following triplet (iii. 26. 1-3) is addressed to Vaiśvānara.

स्विमुष्सं वैश्वदेवी hdm¹r¹r³r⁴r⁶bfkr², वैश्वदेव्यपिमुष्सं r: the latter reading is doubtless a correction owing to the metrical irregularity of a pūda of nine syllåbles (cp. Sarvānukramaņī: agnim uṣasam ādyāntye vaiśvadevyau).—दिधकामिति Am¹, दिधका-टिणेति fkr, दिधकानिति b.—इन्द्रश्चर्क r⁵r³, इन्द्रश्चर्क b, इद्रश्चक f, इन्द्रिति hm¹r.—परो hdbfk, परा r.

103. And (the triplet) 'Let them go forth' (pra yantu: iii. 26. 4-6) is addressed to the Maruts^a. The last (stanza), 'With a hundred streams' (śatadhāram: iii. 26. 9), is (in) praise ôf a preceptor^b. 'Forth your food' (pra vo vājāḥ: iii. 27. 1) praises the seasons; 'Rub ye' (manthata: iii. 29. 5) praises the priests.

मार्तम् Bhm¹, मार्ताम् r.— ऋत्विज स्तीति hd, ऋत्विजः स्तीति r, ऋत्विजञ्चैव br²r⁵r⁷, ऋत्विजञ्चव fk.— मन्यत hdm¹fk, मन्यतः br.

- ^b Cp. Sarvānukramaņī: tṛcau vaiśvānarīya-mārutau: the last word is explained by Ṣaḍguruśiṣya with dvitīyasya (tṛcasya) māruto 'gniḥ. See Geldner, Vedische Studien, iii, p. 160.

 ^b Cp. op. cit., pp. 159, 160.
- 104. But in the (stanza) 'Misty' (purīṣyāsaḥ: iii. 22. 4) he (the seer) lauds the fires on the altar (dhiṣṇya). Now they are there to be recognized as the Divine Sacrificers.

चेयासैव hdbr, यूपासैव fkr².—तच तु hm¹r, तच ह bfkr²r⁵.—The end of the varga is here marked by $\mathbf{20}$ in bdm¹f, not in k.

21. Deities of RV. iii. 30-33. Viśvāmitra, Sudās, and the Rivers.

105. The twenty-three a (hymns) after this (beginning) 'They desire' (ichanti: iii. 30) are addressed to Indra. But in the hymn 'Forth' (pra: iii. 33) Viśvāmitra and the Rivers engaged in a dialogue b.

इङ्नोति hm^1r , इङ्नि ला bk, इत्यंति ला f.—विश्वामित्रः $r^3bfkr^2r^7n$, ॰िमत्र hd, ॰िमत्रं r.—समूदिरे hrbfk, समूहिरे $r^2r^3r^7$, ॰श्च संवदन् m^1 , स संवदन् $r^1r^4r^6$.

- That is, RV. iii. 30-53, not 30-52, because iii. 33 is excepted; for similar statements cp. v. 12 and 105.

 b 105^{cd} and 106^{ab} are quoted in the Nītimañjarī on RV. iii. 33. 1.
- 106. The seer going with Sudās—being his domestic priest for the sake of sacrifice—to the confluence of the Vipāś and the Śutudrī addressed these two (rivers) with (the words) 'Be propitious' (śam).

सिन्नगार्थं hm¹rn(m), संनिज्यार्थं fk, संनिष्ठार्थं b, स र्ज्यार्थं n.—सुदासा सह चनृषिः b, सुद्सा सह चनृषिः f, सुदास सा ह चनृषिः hdm¹, सुदासः सोऽहर्जनम् rn.—श्रमित्येते hdm¹, श्रमित्येते r, श्रमत्येते f, श्रमेत्येते b, श्रत्येते k.

107. In that (hymn) there appear statements ($prav\bar{a}d\bar{a}h$) in the dual, plural^a, and singular: in the hemistich 'Unto' (acha: iii. 33. 3^{ab}) or in the (successive) pādas (pacchah) 'Down to thee' ($ni\ te: 10^{\circ}, 10^{d}, 11^{a}$), in the singular (ekavat) in (reference to) the rivers ^b;

पच्छी वा hdr, पच्छे वा m^1 , पञ्ज वं b, पछ वं f, पछं वं k. — ॰विन ते hdm^1 , ॰विन ते bfk, ॰विन ते r.

- ^a Cp. Nirukta ii. 24. ^b Which speak in the plural in iii. 33. 10^a.
- 108. in the dual (dvivat) in the first distich (iii. 33.1, 2) besides a hemistich (3°d), the speech (being that) of Viśvāmitra a according to the sacred text (śrutch) b. Or (on the other hand) the rivers addressed the seer in the plural (bahuvat) with these (following) stanzas,

॰वचः श्रुतेः hdm¹r, ॰वचसृचे b, वचरूचे fk.—एताभिर्ऋग्मिवी hd, एताभिर्ऋग्मि वा f, एनाभिर्ऋग्मिवी r, एताभिर्भिपिवी b, एताभि वा k.

- ^a According to the Ārṣānukramaṇī iii. 7 (followed by the Sarvānukramaṇī) stanzas 4, 6, 8, 10 are spoken by the rivers (nadīvacaḥ), the remaining nine by the seer (viśvā-mitravacāṃsi). The Sarvānukramaṇī has in this passage clearly borrowed from the Ārṣānukramaṇī.

 ^b The same expression (śruteḥ) is used in the Sarvānukramaṇī in stating that Viśvāmitra is optionally the author of RV. iii. 31 (see AB. vi. 18. 2); the Ārṣānukramaṇī (iii. 5) has the expression yathā śrutiḥ with regard to that hymn (cp. Ṣaḍguruśiṣya, p. 106).
- 109. (viz.) with the sixth, the eighth, the fourth, and the tenth; the rest $(itar\bar{a}h)$ are the seer's. The two gods who are celebrated in the seventh stanza and in the sixth ^a

षष्ट्या hf, षष्टाष्टस्या dm¹, षष्टाष्टस्यां b, षष्ट्याष्टस्यां k, षष्ट्यष्टङ्योग् r.—चतुर्थ्या च द्शस्या hdm¹f, चतुर्थ्या च दशस्यां rbk.—The end of the varga is here marked by २0 in m¹, by २९ in hdf, not at all in bk.

a Indra and Savitr are mentioned in the sixth, and Indra in the seventh. The Sarvānukramaņī says: sasthīsaptamyos to indrastutiķ.

22. RV. iii. 31: an adoptive daughter. Viśvāmitra and Śakti.

110, 111. are to be recognized as incidental. In the last (hymn)^a there is (a stanza)^b addressed to Indra-Parvata. How one makes a daughter what is called an adoptive child ($putrik\bar{a}$) or in that sense ($tath\bar{a}$) impregnates her c, that is told in the (hymn) 'Teaching' ($s\bar{a}sat$: iii. 31)^d. In the stanza 'Not' (na: iii. 31. 2) the giving of inheritance to a daughter is forbidden c.

श्रेयों खै॰ hdr, श्रेयं चै॰ b, श्रयावे॰ fk.—नाम fkr²r 5 r 7 , तामु b, नारी hdm 1 r.—111. तस्यां hm 1 r, तस्या bfk.—रेतो वा hdm 1 r, रेतोधा bfr 5 r 7 , रेतोदा k.—तच्छासदिति hm 1 r, तत्सदिति b, तस्यासदिति f.—प्रतिषध्यते hm 1 r, प्रतिषधित fk, प्रतिषेचित b.

^a That is, of the series of twenty-three (above, 105), viz. iii. 53. ^b That is, iii. 53. 1. ^c Siñcati reto is meant for the equivalent of sekam rñjan in RV. iii. 31. 1^c. d RV. iii. 31. 1 is commented on by Yāska, Nirukta iii. 4; cp. Sāyaṇa on RV. iii. 31. 1, 2; see Geldner, Vedische Studien, iii, pp. 34, 35. ^c RV. iii. 31. 2 is commented on by Yāska, Nirukta iii. 6.

112. And (the sear) says that her son (who is) younger (than she) is a brother like an eldest (brother) a.

At a great sacrifice of Sudās, by Śakti b Gāthi's c son (Viśvāmitra) d

तस्याश्चाह B, तस्याश्चेव A.— जुतम् m¹, सुतम् the rest.— श्राप्तिना hm¹ r¹ r³ r⁴ 16, दिचिणा r, दिचिणां bfk.—गाथि॰ hdm¹, गाधि॰ bfkr.

a That is, he inherits property from his grandfather through his mother, just as much as if he had been an eldest brother of the latter. I take jyesthavat to be jyestham (bhrātaram) iva.

b Son of Vasistha.

The form Gāthi (not Gādhi) is supported by the AB. and Sarvānukramanī, introduction to Mandala iii.

d 112^{cd}—116^{ab} are quoted by Sadgurusisya on RV. iii. 53, the first two lines, however, only in an adapted form; cp. Indische Studien, i. 119 f.; Muir, Sanskrit Texts, i. 343.

113, 114. was forcibly deprived of consciousness. He sank down unconscious. But to him the Jamadagnis a gave Speech called Sasarparī, daughter of Brahmā or of the Sunb, having brought her from the dwelling of the Sun. Then that Speech dispelled the Kuśikas' c loss of intelligence (a-matim).

निगृहीतम् hm^1r , गृगीलाथ bfk, गृहीला $r^2r^5r^7$. — बनाञ्चेतः hm^1r , वनाञ्चेतः b, वनाञ्चेतः fk, बज्जनाञ्चेतः $r^2r^5r^7$. — वसीद्द hm^1r , वासीद्द bfk. — तसी bfr, तस्री k, तस्रा

hdr1r4. — ब्राह्मी त hm1rs, ब्राह्मी च bfk. — 113ed and 114 are quoted by Sayana on RV. iii. 53. 15 (112°d and 113°d being paraphrased by him as well as Sadgurusisya).— $_{114}$. मूर्यचयादिहाह्र्य $\Lambda\,\mathrm{m}^1$,॰चयादिहादृत्य b, ॰चयादिहावृत्य fk , ॰चयादिहाग्र्य r , सूर्य-विदमन आहत्य s. — दद्खी hm^1r , तां ददुर् $r^2r^5r^7$, दद्वै s, दद्र fk, दद् b. — अमितं तामपाहनत् $\mathrm{hm^{1}r}$, श्रमतिं तामपानुदत् s , श्रमति प्रामवावत b , श्रमतिग्रीमचावयत् f.— The end of the varga is here marked by 22 in hdbfk, not in m1.

b Sasarparī is called sūryasya duhitā in RV. iii. 53. 15. ^a Cp. RV. iii. 53, 15, 16. ° That is, the other Kusikas, as well as Visvamitra, had been rendered unconscious by d The word occurs in RV. iii. 53. 15 (sasarparīr amatim bādhamānā). S'akti.

23. Viśvāmitra and Vāc Sasarparī. Spells against the Vasisthas.

115. And in the (stanza) 'Hither' (upa: iii. 53. 11) Viśvāmitra restored the Kuśikas to consciousness (anubodhayat). And gladdened at heart by receiving Speech he paid homage to those seers (the Jamadagnis),

उपेति चाखां m1r1r4, उपेति चाखा b, उपेति चाखां hd, उपेति याखा f, उपेख चाख्यां r, उपेत्य वाचं r^5 , उप प्रतिति (the fuller pratika) s.— बुबोधयत् $h m^1 r$, न्वयोजयत् s, न्वचेतियत् b, त्वचेत् fk: the latter two readings probably stand for न्वचेतयत्, as RV. iii. 53. 11 contains the form चेतयध्यम्. I have corrected बुबोधयत् to नुबोधयत्, as the syllable a could only be accounted for by a (not a), and unaugmented forms are not uncommon in the BD. (e.g. above, 113, avasīdat).—हप्रात्मा hmlrs, प्रतिष्ठात्मा b, प्रति-ष्टात्मा fk.—तानुषीन्त्रत्यपूजयत् hm1rbfk, तानुषीनन्वचेतयत् r5r7, जमदपीनपूजयत् ह.

116. himself praising Speech with the two stanzas 'Sasarpari' (sasarparih: iii. 53. 15, 16). (With the stanzas) 'Strong' (sthirau: iii. 53. 17-20) (he praised) the parts of the cart and the oxen, as he started for home.

116 comes before 115 d in bfk.—•नदुह्य bfkr5, •नदुहं च hm1r (RV. iii. 53. 18 has अन्दात्स): though all the MSS. have ड, consistency requires क in the text.— गृहान्त्रजन् hm¹r, गृहान्प्रजन् b, गृहात्प्रजन् f.—After 116°d bfkm¹r (not hdr¹r³r⁴) add the line:

यनसोऽङ्गानि चोत्याप्यानङ्गाही गृहाताजी।

117. And then going home he deposited (them a there) in person (svaśarīrena).

But the four stanzas which follow (iii. 53. 21-24) are traditionally held to be hostile to the Vasisthas b.

ततस्र bfkr, तन्वस्र hdm^1 . — खग्रीरेण bfk, खग्रीरं च r, खां ग्रीरं च hdm^1 . — आक्टपरीददे m^1 , आक्ट्यरीददे hd (= गक्न्परीददे), स खयमाप ह r, ख समाप ह h, स समाप ह f. — The following line is added in B after 117^{ab} :

रथं च खग्ररीरेण¹ गृहान्गं क्रन्परीददे³।

1 fkm¹r, **भारो**ं च b. ² br, आहं fm¹, अहं k. ³ bm¹fk, पराद्दे r. This line and that which appears in B after 116^{cd} seem to be corruptions of the lines which they respectively follow, and which are common to A and B. In m¹, 116^{cd} and 117^{ab} appear as follows (117^{ab} thus having three forms in this MS.):

- —•द्वेषिखः स्नृताः $\ln m^1 r^1 r^3 r^4 r^2$ (?), •द्वेषिणीर्विदुः r, •द्वेषिणी विदुः f b, •द्वेषिणी विधिः k.
- That is, the cart, its parts, and the oxen. Cp. RV. iii. 53. 20: ā gṛhebhyaḥ..ā vimocanāt, until we reach home and unyoke. b On 117°d-119 cp. Indische Studien, i. 120; Muir, Sanskrit Texts, i, p. 344; Roth, Zur Litteratur, pp. 107, 108; Sāyaṇa on RV. iii. 53. 21; Ṣaḍguruśiṣya (p. 108), who quotes Ḥgvidhāna ii. 4. 2; Max Müller, RV.² vol. ii, p. 23.
- 118. They were pronounced by Viśvāmitra; they are traditionally held to be 'imprecations' (abhiśāpa). They are pronounced to be hostile to enemies a and magical (abhicārika) incantations.

ताः प्रोक्ता bfk, तु प्रोक्ता r¹r³r⁴r⁶r², याः प्रोक्ता hm¹r (ep. Sarvānukramaņī: ग्रामिस्ताः).—The reading of 118^{ed} in the text is that of B; instead of it A has: दिदेषिण्यः स्नृता विद्यादमिचारेषु श्रूब्दते.—दिषदेषासु f, देषदेषाःसु b, विदेषिणः hdm¹, विदेषिणः r¹r³r⁴r⁶.—विद्या चैवाभिचारिकाः b, विद्यां चैवाभिचारिः f.—The end of the varga is here marked by २३ in hdbfk.

^a Cp. Rgvidhāna i. 19. 4; i. 20. 1.

24. RV. iii. 53. 21-24. Deities of RV. iii. 54-60.

119. The Vasisthas will not listen to them. This is the unanimous opinion of their authorities $(\bar{a}c\bar{a}ryaka)^a$: great guilt arises from repeating or listening (to them)^b;

ता न hm¹r, तु न b, सु न fk.—महा॰ hdm¹fk, महान् br.—•दोषश्च जायते hd, दोष: प्रजायते bfkr.—119^{cd} is omitted in r¹r⁴.

- ^a That is, the authorities among the Vasisthas are unanimous on the injurious effect of these stanzas on the Vasisthas. The word ācāryaka is quoted only in the sense of 'the position of a teacher'; here it must have some such sense as 'body of teachers.'

 ^b That is, on the part of Vasisthas.
- 120. By repeating or hearing (them) one's head is broken into a hundred fragments; the children of those (who do so) perish: therefore one should not repeat them a.

कीर्तितन hbrs, कीर्तिसीन m¹, कीर्त्तनन fk.—श्रुतन bfkrs, गुणेन hdm¹, corrected on margin to श्रुतेन in h.

- This śloka is quoted by Ṣaḍguruśiṣya to show why the Vasiṣṭhas do not listen to these stanzas. Roth, Zur Litteratur, p. 108, cites the śloka; cp. Max Müller, RV.² vol. ii, p. 23.
- 121. The seer praised the All-gods with the four (hymns) 'To him' (imam: iii. 54-57).
- B He praised them all with his whole soul, thinking of the highest Abode,

121cd is found in B and m1 only.

B 122. while he uttered 'Great is that unique mysterious power of the gods' (a devānām asuratvam tad ekam mahat)^b.

The Asvins, Mitra, the Rbhus are (the respective deities of) 'The milch-cow' (dhenuḥ: iii. 58), 'Mitra' (mitraḥ: iii. 59), and 'Here, here, of you' (ihcha vaḥ: iii. 60).

- ^a That is, the refrain of iii. 55 slightly altered (mahad devānām asuratvam eham). ^b 122^{ab} is found in B and m¹ only. This and the preceding line may very well be later additions as they contain no new statement. If we deduct them, as well as 123^{ab} (A) and 124^{ab} , the two vargas, 24, 25, have only five and a half ślokas. They may thus originally have formed one varga only.
- A 123. (The stanza) addressed to Mitra, 'To Mitra five' (mitrāya pañca: iii. 59. 8)^a, should be recognized as addressed to the All-gods ^b.

But the last triplet here in the hymn to the Rbhus (iii. 60. 5-7) is addressed to Indra and the Rbhus.

खवाभीवे in all MSS. and r.— मूत उत्तमः hd, मूत उत्तम b, मूत उत्तमे fk, मूतः स उत्तमः r.—The end of the varga is marked by २४ here (after उत्तमः) in h (२५% nd), but in m¹bfk at the end of the next line (after पञ्चमात्), where the number of the sloka is also given by m¹ as \mathbf{u} (= $\mathbf{\xi}$ 0 \mathbf{u}).

^a The All-gods are mentioned in it: sa devān viśvān bibharti. There is no reference to this statement in the Sarvānukramaņī.

^b 123^{ab} is found in hdm¹r only, being omitted in bkr²r⁵.

25. Deities of RV. iii. 61, 62.

B 124. In the preceding couplet (iii. 60. 3, 4) Indra is incidental. After 'O Uṣas, with strength' (uṣo vājena: iii. 61) the fifth a

(hymn), which is addressed to Dawn, there follow in the final (hymn: iii. 62) six triplets addressed to separate deities: the first (1-3) is addressed to Indra-Varuna, and the following one (4-6) to Brhaspati;

124 ab is found in bfkm1r, but is omitted in hdr1r4r2(?).— पूर्वे हुचे br, पूर्वदृचे f.— पश्चमात् r, पचमात् m1, पश्चगीत् bfk.— श्रीषसाट् b, श्रीषस्याट् m1, श्रीषस्याट् hd, उषासा fk, उषसाट् r (Sarvānukramaņī on RV. iii. 61: उषस्यम्).— उत्तरास्त्वन्ये षट् पृथग्देवता- स्वृचा: Am1r2 (oni: स्वृता: m1), उत्तर् षघृथग्देवता चा: b, उत्तर् षड्भ यं - गदेवता - च fk, उत्तरे षड्भि: स्तृता ऋग्देवता तृचै: r.— तथा पर: hdm1r3, तत: पर: r, तदुत्तर: r5, (बाईस्थाय) उत्तर: bfk.

^a This must mean the fifth hymn of the group iii. 57-62, the seer of which is Viśvāmitra, while the seer of the preceding three (54-56) is Prajāpati Viśvāmitra or Vāeya. It could not mean 'the fifth hymn to Uṣas,' as iii. 61 is the sixth hymn in the RV. addressed to that deity.

125. and (then come three respectively) addressed to Pūṣan (7-9), Savitṛ (10-12), Soma (13-15), while the last (16-18) is addressed to Mitra-Varuṇa. And with that (final triplet) Jamadagni a praised the two gods who delight in law (rtāvṛdhau) b.

मैनावर्ण उत्तम: hm¹r, ष्णामन्यसु यसृचः bfkr⁵r⁷.— °पिस् A, °पिसु B.—The end of the varga is here marked by २५ in bf, not in hdk.

According to the Ārṣānukramaṇī, followed by the Sarvānukramaṇī, Jamadagni is the alternative seer of this triplet.

b This epithet of Mitra-Varuṇa occurs in RV. iii. 62. 18 as rtāvṛdhā.

Mandala iv.

26. Deities of RV. iv. 1-15.

126. He (Vāmadeva) for whom, when he cooked the entrails of a dog for the sake of honouring the Gods, the Seers, and the Fathers, the Vṛtra-slayer (Indra), in the form of an eagle, brought the mead a,

पपाचान्ताणि यक्तुनः $\Lambda\,\mathrm{m}^1$, य त्रान्तार्णपचक्तुनः Bn .— यस्र वे $\mathrm{hm}^1\mathrm{r}$, यस्र च $\mathrm{r}^2\mathrm{r}^5\mathrm{r}^7\mathrm{n}$, यस्र व b , यस्र य fk .—॰ण त्राहर्द् n , ॰ण चहर्द् r , ॰ण चहर्द् $\mathrm{r}^2\mathrm{r}^5\mathrm{r}^7$, ॰णाहर्द् hb .

- ^a Cp. RV. iv. 18. 13: śuna äntrāņi pece... adha me śyeno madhu ā jabhāra. Cp. Manu x. 106; Sieg, Sagenstoffe, p. 79.—126 is quoted by the Nītimañjarī on RV. iv. 18. 13.
- 127. that seer, descendant of Gotama, praised Agni with fifteen hymns (beginning) 'Thee' ($tv\bar{a}m$: iv. 1-15), and Indra with the following sixteen, 'Hither' (\bar{a} : iv. 16-32) a.

सूर्तेरिति तु hr3r4m1b, सूर्तेरिति च r5r7, खप्तीरिति च b, तप्तीरिति च fk, सूर्तेरितेसु r.

- The series, being interrupted by iv. 27 (syenastuti, below, 136), extends to 32; cp. above, iv. 105, and below, v. 12, 105.—126 and 127 are translated by Sieg, Sagenstoffe, pp. 78, 79.
- 128. In the three a (stanzas) 'As such, thy brother' (sa bhrātaram: iv. 1. 2-4) Agni is incidental (nipātabhāj); others say that (the seer) praises the incidental (nipātin) Agni together with Varuṇa b.
- ॰सीत्याङर् bfk, ॰सीति चाङर् r, ॰सीतीत्याङर् bd, ॰सीति त्याङर् m^1 . ऋये निपातिनम् m^1br , ऋने निपातिनम् hd, ऋग्ये निपातनं f, ऋगे निपातने k.
- ^a This must be an old mistake for catasṛṣu (often confused in MSS. with ca tisṛṣu), as the vocative agne occurs in all the four stanzas (iv. i. 2-5), and the Sarvānukramaṇī has upādyāś catasraḥ.

 ^b Hence the statement of the Sarvānukramaṇī that Agni alone or Agni and Varuṇa are the deities of iv. i. 2-5.
- 129. Some (say) that the two hymns 'Agni, upon' (praty agnih: iv. 13, 14) are addressed to the divinities mentioned by their characteristic names (lingoktadaivata)^a. But with the two (stanzas) 'He noted' (bodhat: iv. 15. 7, 8) the seer praises Somaka only.

प्रत्यिदेव तु hm¹r, प्रत्यिपित्युते b, प्रत्यिपित्युभे r⁵, प्रत्यिपित्यते fk.—After 129^{ab} bfk have the following corrupt śloka:

उत्तमामुषसं देवी मध्यमं पुनक्त्तमम्। पृथक् च सह च स्तीति कर्मणी तत्रविल्हतम्॥

—सोमकमेव तु hm¹r, सोमकमूपतिम् br⁸r⁷, °पतिः fk.—The end of the varga is here marked by २६ in hbfkm¹.

^a Cp. Sarvānukramaņī: lingoktadaivataņ tv eke.

27. RV. iv. 18-30. Indra's birth and fight with Vamadeva.

130. And with a view to (long) life for him the Asvins are praised with the two following (stanzas: iv. 15. 9, 10). Her unborn child (garbham) who said, 'I will not be born in the straightforward way (añjasā)'a,

चायुषोऽर्थाय ${\rm Bhm^1}$, चायुर्थाय ${\rm r.--}$ ग्रज्ञसा न जनिष्ये हं ${\rm hm^1b}$, ग्रजंसा न जनिष्ये हं ${\rm f}$, ग्रज्ञसा न जनिष्ये हं ${\rm f}$, ग्रज्ञसा न जनिष्ये। ${\rm r^1r^4r^6}$, जनिष्याण ${\rm r^3.--}$ ब्रुवाणं ${\rm hrfk}$, ब्रुवाण ${\rm b}$, ब्रुवाणा ${\rm m^1.--}$ गर्भमेव ${\rm Am^1r^2n}$, गर्भ एव ${\rm kr}$, वार्भमेव ${\rm b}$, गर्भवंतं ${\rm f.--}$ तु ${\rm Ar^2}$, तम् ${\rm bkn}$.

- ^a Cp. RV. iv. 18. 2: nāham ato nir ayā durgahaitat. On 130-132 cp. Sieg, Sagenstoffe, p. 179 f.; cp. also Pischel, Vedische Studien, ii, pp. 42-44. The Nītimañjarī on RV. iv. 18. 13 quotes 130^{cd} and 131^{ah}.
- 131. (that is), her son Indra, Aditi, anxious for her own welfare, admonished $(anvaśat)^a$. But he (Indra), as soon as born, challenged the seer to fight.

अन्वशाद् r^5r^7 , अन्वज्याद् bfk, अन्वगा त्य् r, अन्वगात्व hdm^1 , अन्वगाद् n.—जातमाची hm^1b , जातमाचम् $r^1r^2r^3r^4r^6$, जामंची fk.—॰जुहाव तु hm^1 , ॰जुहाव तम् bfkr.

- ^a That is, in RV. iv. 18. 1: $m\bar{a}$ $m\bar{a}taram$ $amuy\bar{a}$ pattave kah. Dr. Sieg, Sagenstoffe, p. 80, line 1, and 82, note ⁴, would read $anvay\bar{a}t$ in the sense of 'yielded' (nachgeben); but this would be like using the German 'sie ging ihm nach' in the same sense.
- 132. Vāmadeva, engaging him, after he (Indra) had thus done violence to himself (the seer)^a, for ten days and nights, vanquished him with might.

योधयन hm^1r . योधयेत् $r^1r^4r^6r^2$ (?), याचयन् fk, यावयन् b. — रात्रीश्व r, रात्रांश्व f, रात्रिश्च m^1 , रात्र्यां च bk, रात्र्यश्च A.

- " That is, after violence had thus been done to him by Indra = indrena balātkṛtaḥ.
- 133. Gautama, selling a him in the assembly of seers in the (stanza) 'Who this' (ka imam: iv. 24. 10), himself for that

purpose (tena) b praised (him with the stanza), 'None, O Indra' (nakir indra: iv. 30. 1);

ख्यं तेना॰ hm¹r³, ख्यमेवा॰ kr⁵r³, ख्यमेव (यभि॰) f, ख्यनेय॰ b, स्यमेवा॰ r.

- a Cp. Sāyaṇa on RV. iv. 24.9; Sieg, Sagenstoffe, pp. 90-96. b I take tena to refer to vikrīṇan; Dr. Sieg, however (who translates 132-134), Sagenstoffe, p. 95, takes it with the pratīka of iv. 30, =tena sūktena, 'with the whole hymn iv. 30'; against this is the fact that the hymn as a whole has already been mentioned (127) as one in praise of Indra, that the author in the present passage otherwise refers to single stanzas, and that it is contrary to the style of the BD. to refer with tena to a following pratīka instead of saying nakir indrety anena or etena.
- 134. and in the (stanza) 'What! then art thou' (kim ād utāsi: iv. 30. 7) he halfway (ardhe) a dispelled his wrath. Then the seer his (Indra's) form and heroic deeds, his valiant exploits,

मन्युमधे Λm^1 , मन्युमध्ये $bfkr^2$, मन्युं मध्ये r.—धेर्यकार्याणि hm^1r , वीर्यकार्याणि fbk, धेर्यायाच्याणि r^1 , धेर्यायद्याणि r^4r^6 .—तान्युषिः hm^1r , तानृषिः $bfkr^6$, चारिषु $r^1r^4r^6$.—The end of the varga is here marked by \mathfrak{S} 0 in hm^1b , not in k.

- a The reading madhye is probably an explanation of audhe.
- 135. and his various deeds proclaimed to Aditi. 'I' (aham: iv. 26) is self-praise in a triplet: for there is praise (in it) as if of him (Indra)^a.

संसावस् hdm¹ r³, °संसावस् bfkr² r⁵. — सुतिर्वास्य हि 1⁶ r⁷, सुतिर्द्धतस्य हि hdr, सुतिचिवस्य हि b, सुतिविसस्य हि fkr².

- ^a That is, the seer praises himself as if he were Indra; cp. Sarvānukramaņī: indram ivātmānam rṣis tuṣṭāvendro vātmānam. Cp. Geldner, Vedische Studien, iii, p. 160, note ³, and Sieg, Sagenstoffe, pp. 87 and 95, note ³.
- 136. With the following nine stanzas (beginning) 'Before all birds this' (pra su sa vibhyah: iv. 26. 4-7; 27. 1-5) there is praise of the eagle. In the hymn of five stanzas 'Thee' (tvā: iv. 28) Indra is praised together with Soma.

लेति br, लेन m^1 , लेन hr^1r^4 , ले fk.— सोमेनेन्द्र: स्नुत: सह bkr, सोमेनेद्र स्नुत: सह f, सोमेन्द्री च स्नुत: सह hdr^3 , सोमेन्द्री च सह स्नुती m^1 , सोमेन्द्र: संस्नुत: सह r^1r^4 .

137, 138. Kraustuki regards this praise to be chiefly addressed to Soma; while with the triplet 'Even of the Sky' (divaś cid: iv. 30. 6-11) the teacher Śākaṭāyana considered the middle Dawn

to be praised with Indra. And in the stanza here 'Good wealth' $(v\bar{a}mam: iv. 30. 24)$ Bhaga, Pūṣan, and Aryaman are praised:

सोमप्रधानाम् br, ॰प्रधानम् Am¹fkr².—क्रीष्टुकिर् hd, क्रोष्टुकिर् fkm¹r, क्रोष्टुकः r¹r⁴r⁶, क्रोष्ट्रकः b.—चैतेन Am¹, चानेन fbr, चान्येन k.—तुचेनेन्द्रेण संसुताम् hm¹bfkr, ते दुचेनेन्द्रसंसुता r¹r⁴r⁶.

- r_{3} 8. मेने त्राचार्यः bfk, मेन त्रा॰ $r^{2}r^{5}r^{7}$, मेने त्वाचार्यः $hm^{1}r$ —वाममृचि जुतास्राच hd, वामित्युक्जुतास्राच r, वामित्युचि संजुता B.—भगः hd, भनः b, नभः k, नभः नभः f
- B 139. Pūṣan is (here) called 'Karūlatin'a: according to a Vedic text (śruti) he is 'toothless.' Āśvalāyana says that (the stanza) 'Of us most excellent' (asmākam uttamam: iv. 31. 15) praises the Sun c.

करूनतीति fkr, क्रमूबांतीति b.— सौतीत्याहा° r, सौतीचाहा° b, सौताश्वाहा° f, सौतीचाहा° k.—This śloka (139) is not found in A.—m¹ omits 138° d as well as 139, probably owing to 138° and 139° ending similarly (शाकट)।यनः and (श्वन)।यनः.—The end of the varga is here marked by २८ in bf, after शाकटायनः (138°)₁ in m¹, after 138° d in hd, not at all in k.

^a The word occurs in RV. iv. 30. 24, which is commented on by Yāska, Nirukta vi. 30, 31; cp. Roth, Erläuterungen, pp. 96, 97.

^b That is, SB. i. 7. 4⁷, quoted by Yāska, Nirukta vi. 31.

^c There is no reference to this statement in the Sarvānukramaņī.

29. The steeds of the various gods.

140. The horses of Indra are Bays (hari), the horses of Agni are Ruddy ones (rohit); those of Sūrya are Fallows (harit), and those of Vāyu Teams (niyut)^a.

हरवो हाश्वा hm¹rb, हरवा हाश्वा f, हरवाश्वश्वा k.— अपेरश्वासु r¹r⁴r⁶bfkr²r⁶, °श्वसु hdr, °श्वस्व m¹ (cp. द्वारस्व in v.r. on i. 107).—हरितश्वेव hm¹r, हरित: प्रोक्ता B

- * This and the following two ślokas closely follow Naighantuka i. 15.
- 141. The Ass a is associated (sahita) with the Asvins, and Goats are the steeds (vājin) of Pūṣan, but Dappled mares (pṛṣatī) are the horses of the Maruts, while ruddy (aruṇī) Cows are those of the Dawns.

रासभो fkr²r⁵r⁷m¹, रासभौ hdr³, रासभा br (the Naighantuka has रासभावश्विनोः, but the °तो before श्विश्याम् in all the MSS, seems decisive in favour of रासभो).— सहितो hdm¹r³, महितो fk, मोहितो r²r⁵r⁷, रोहितो br (this is an evident substitution in order to get a plural agreeing with रासभाः).—पूष्ण्य hm¹r, पूष्ण्यु B.—पृष्टि br⁵r⁷, वृषषीत्या of, वृषयोत्या ok, पृषती hm1r.—तथोषसाम् B, तथोषसः hdm1r (अर्खो गाव उपसाम् Naighantuka).

- a Cp. my 'Vedic Mythology,' p. 50.
- 142. The steeds of Savitr are Duns $(\dot{s}y\bar{a}v\bar{a}h)$; the Multiform $(vi\dot{s}var\bar{u}p\bar{a})^a$ is (the steed) of Brhaspati. Now these too are praised with (their) deities, otherwise b but seldom.

श्चावा hm^1rf , श्चामा $r^1r^4r^6$, स्वावा bk. — देवताभिसु hm^1r , देवताभिस् B. — सूचनी μ प्रस्ति μ hm^1r , सूचनि μ प्रस्ति μ सूचनि μ प्रस्ति μ हे सूचनि μ एवं μ हे सूचनि μ है सूचनि μ है

- ^a Conceived as a cow; cp. above, iii. 85, 86 (the nectar-yielding cow of Brhaspati).

 ^b That is, when mentioned alone, without being associated with the gods.
- 143. (The god) whose weapon and vehicle appear here in a laudation should be recognized as the one praised; for that (god) is in many ways the soul (ātman) of it a.

तमेव तु br, तमेव त hd, तमेव (no तु) fk.—विद्यात्तस्था॰ hm¹r, विद्यासस्था॰ b, विश्वास्था॰ fk.

- a That is, manifests himself in the weapon or vehicle; cp. above, i. 73, 74.
- 144. 'Two small girls' (kanīnakā: iv. 32. 23, 24), the remainder of the hymn a, is here called a praise of the two Bays (of Indra)b. And the four (words) after it c, (viz.) vidradhe (and the rest) are to be recognized as liable to phonetic combination (apragrhyāṇi)d.

हयों b, हयों: r, हया fk, धर्धम् hm¹ r³, धर्धस r¹ r⁴ r⁶.— इहोच्यते bfk r, उच्यते hm¹.— चलार्थतस्य वि॰ hr, चलार्र परमा bfk r² r⁶ r³.— ॰ ज्ञेयान्यप्र॰ hrfk, ॰ ज्ञेयान्यप्र॰ b, ॰पेयान्याप्र॰ r² r⁶ r³.— विद्धे hdm¹, विद्धे: r, विद्धे: b, विद्धः f, विंद्वः k.—The last pāda is repeated in fk as follows: ॰न्यप्रगृह्यानि विद्धः (विंद्वः k)॥ न्या प्रतिगृह्यानि विः॥— The end of the varga is here marked by २९ in hm¹ bf, and by ३९ in k.

That is, the hymn which as a whole has already been stated (above, 127) to be an Indra hymn, and of which these are the last two stanzas.

Decrease Cp. Nirukta iv. 15: aśvayoḥ saṃstavaḥ, and Sarvānukramaṇī: antyābhyām indrāśvau stutau. The list of the steeds of the gods given in 140-142 is by way of introduction to the statement about iv. 32. 23, 24.

Ataḥ, that is, after the word kanīnakā in the text of iv. 32. 23.

That is, the four words vidradhe nave drupade arbhake are to be taken not as duals, but as locatives singular, in agreement with the Pada text and Sākapūṇi's opinion stated by Yāska in Nirukta iv. 15 (on RV. iv. 32. 23): kanyayor adhisthānapravacanāni saptamyā ekavacanānīti śākapūṇih. Cp. Vedische Studien, iii, p. 88, note 2; Oldenberg, Prolegomena, p. 532 (middle). Owing to the corrupt readings of b in BD. iv. 144, Meyer, Rgvidhāna, p. xxvi, was erroneously led to suspect the existence of a khila after RV. iv. 32.

1. Deities of RV. iv. 33-52.

1. (With) 'Forth' (pra: iv. 33. 1) begins a group of five hymns addressed to the Rbhus (iv. 33-37). Following that are three (hymns) addressed to Dadhikrā (iv. 38-40); but the stanza which is at the head of the hymns addressed to Dadhikrā (iv. 38. 1) praises Heaven and Earth.

दाधिकाणां hdb, दिधिकाणां r^3r^5 , दाधिकाञ्णां m^1r , दाधिकाञ्णा f, दाधिकाञ्ण k, दिधिकाञ्गां r^2 — मुखे तु या hm^1r^3r , (॰णाम्) उतो हि वाम् (pratika of iv. 38. 1) br^5 , जुती हि वाम् fkr^2 . The reading मुखे तु या (cp. मुख्या iii. 37) seems to be favoured by the Sarvānukramaņī: दाधिकं हि यावापृथिकादा.

2. Then with indirect (parokṣa) expressions (vāc) and names the three, Agni, Vāyu, Sūrya, are praised in the stanza, 'The Swan dwelling in light' (haṃsaḥ śuciṣat: iv. 50. 5).

श्वमृतो dr, श्रमृता m¹, श्रमृतोर् hb, श्रसुतोर् fk (the र् is doubtless due to that of the preceding परोचैर् and the following वाग्मिर्).— नामिश्व hd, नामिश्व br, नामिश्व m¹, नाममृभि fk.—•त्यचि A, •त्यंचा B.

B 3. In the Aitareya (Brāhmaṇa) 'The Swan' (haṃsaḥ: iv. 40. 5) is prescribed as having Sūrya for its deitya. Now (there follow) two hymns addressed to Indra-Varuṇa (iv. 41, 42), then three (iv. 43-45) addressed to the Aśvins (beginning) 'Who?' (kaḥ: iv. 43. 1).

सूति hm¹r, इन्हास bfk, इन्हात r⁶ (this represents the pratīka of iv. 41. 1, इन्हा).— श्विनानि वा: r¹r³r⁴r⁶br², श्विनानि च hdm¹, श्विनासिकः (!) r.— 3^d is omitted in fk.— 3^{ab}, though found in Bm¹ only, is probably original, as it is supported by the statement of the Sarvānukramaņī: अन्या सीरी. Without it the varga would have an odd line; with it the varga has six ślokas, like the first varga of the first and of the second adhyāya.

- ^a In AB. iv. 20. 5 this stanza is connected with the sun (hamsa).
- 4. In the (hymns) 'The best' (agram: iv. 46. 1), 'O Vāyu' (vāyo: iv. 47. 1), 'Enjoy' (vihi: iv. 48. 1-5) seven stanzas are declared to be addressed to Vāyu; and nine are addressed to Indra-Vāyu, (viz.) 'Indra' (indrah: iv. 47. 2-4) being three, (and) 'With a hundred' (śatena: iv. 46. 2-7) being six.

विहीलेषु hdm^1r , विहीणाखाः b, विहीमांत्या r^6r^7 .—fk omit 4^{abc} .—इन्द्र स् Ab, इन्द्रास् fk, ऐन्द्रास्.

5. 'This' (idam: iv. 49), addressed to the deities mentioned in it a, (and) the last couplet (10, 11) of 'He who has propped' (yas tastambha: iv. 50)—these eight stanzas b are traditionally held to be (in) praise of Indra-Brhaspati.

तखभोत्तमो b, तखंभेत्वंतमो m¹, तंखंभोतिमो hdr³ (°भो° r³), खंभोक्रमो fk, तु खभोत्तमो r.

- a That is, Indra and Brhaspati. b That is, 49. 1-6 and 50. 10, 11.
- 6. That a hymn, however, is addressed to Brhaspati; the two next (beginning) 'That' (idam: iv. 51, 52) are addressed to Usas. In the triplet 'Surely that king'b (sa id rājā: iv. 50. 7-9) laudation of the function of the appointer of priests (purodhātuh) is expressed.

मूत्रं तु बाईस्पत्यम् hm¹b, मुराक्तं भू बाइस्यम् f, मुराक्तं भू वाइस्यम् k, बाईस्पत्यं तु तत्मुक्तम् r.—In most of the MSS. the syllable तद् has dropped out after तृ, partly perhaps owing to a misunderstanding of the following द्दम्; in the reading of R the words have been transposed to normalize the metre (cp. above, iv. 102).—परे m¹bfkr, परं h, परं d.—परोधातुः br, परोधातु fk, परोधातु hd, परोधानुः m¹.—कर्मग्रंसा m¹r, कर्मग्र्सा f, कर्मग्र्या h.—The end of the varga is here marked by 9 in hbfk, not in m¹.

^a That is, RV. iv. 50.

^b Cp. AB. viii. 24-26, especially 26. 2; also Sāyaṇa, introduction to RV. iv. 50. 7.

2. Deities of RV. iv. 53-58.

7. There are two hymns addressed to Savitr (beginning) 'That' (tat: iv. 53, 54); 'Who?' (kaḥ: iv. 55) is addressed to the Allgods, while that which follows (viz.) 'The mighty' (mahī: iv. 56) is addressed to Heaven and Earth. But (in the hymn) 'Of the field' (kṣctrasya: iv. 57) the (first) three (stanzas) are addressed to the Lord of the Field, while the next stanza, 'Prosperously the steers' (śunaṃ vāhāḥ: iv. 57. 4), has Suna as its god.

परं तु यत् A, परं यत् m¹, तत्परं च r, तदात्परं च b, चमुत्तरं च fk.—तिस्नः चेत्रपत्थाः br, तिस्नः चेत्रपत्थाः fk, चेत्रपत्थासृचसु hdm¹r³ (चे॰ r³): the reading of the Sarvānukramaṇī तिस्नः चेत्रपत्थाः has decided me in favour of the reading adopted in the text (cp. above,

- iii. 111). The त which has dropped out after तिस्रस् (making the pada one syllable short) I have restored from the reading तृचसा. युनदेवी hm¹r, युनदेव br²r⁵r⁷, युन् देव fk.— खुगुत्तरा m¹, व्युन्तरा fr²r⁵r⁷, चिगुत्तरा k, पृगुत्तरा: b, खुगुत्तमा r, खगुत्तमा hd.
- 8. Śuna here is Vāyu, Sīra is Sūrya: (for) they say that Śuna and Sīra are Vāyu and Sūrya. Yāska, however, considered Śunāsīra to be Indra^a, (and) Śākapūṇi thinks those two (Śuna and Sīra) to be Sūrya and Indra^b.

यास्त इन्द्रं तु hm1r, इन्द्रं यास्त्रस्तु bfs.—मूर्येन्द्री तौ hr, मूर्येन्द्री तु s, इन्द्रामूर्यी h, इंद्रामूर्यो k.

- ^a His view, in Nirukta ix. 40, agrees not with this, but with the explanation given in 8^a: śunāsīrau: śuno vāyuḥ (śu ety untarikṣe), sīra ādityaḥ saraṇāt. Yāska does not quote Sākapūṇi's view.

 ^b This śloka is quoted by Ṣaḍguruśiṣya on RV. iv. 57.
- 9. Now these two, Śuna and Sīra, are praised in the fifth (stanza: iv. 57. 5), while there are two (6, 7), the sixth and the seventh (stanzas), to Sītā. The verse ($p\bar{a}da$) 'Prosperously' our shares' (śunaṃ naḥ phālāḥ: iv. 57. 8") praises agriculture; 'Prosperously the ploughers' (śunaṃ kīnāśāḥ: iv. 57. 8"), men who live by agriculture.

द्वे तु सीतायै षष्टी Λ , द्वी तु सीतायै षष्टी \mathbf{m}^1 , सीतायै षष्टी त्वथ \mathbf{bfkr} (भ्री॰ \mathbf{b} , भ्रि॰ \mathbf{k}).

10. Parjanya is here praised in the third verse (iv. 57. 8°), while the seer pronounced the last (verse) with a desire of wealth (iv. 57. 8°). Or (it may be said) the whole hymn praises agriculture. 'From the ocean' (samudrāt: iv. 58) belongs to the Middle Agni.

स्तुतः पादे ऽच पर्जन्यस् Λm^1 , शुनं पादे पर्जन्यं bfkr. — ॰ यं त्यस्त्वृषिर् m^1 , ॰ यं त्यस्त्वृषिर् hd, श्वन्त्यस्त्वृषिर् $r^1r^4r^6$, चीनृषिः bfr, तीनृषिः k. — धनकामो hm^1r^3 , धर्मकामो $r^1r^4r^6$, छिषकामो bfkr. — छिषं वा hrbfk, छिषवढ् $r^1r^4r^6$.

11. As mentioned in a Brāhmaṇa it is indicated as addressed either to the Sun (āditya) or to Agni; for it appears as an Ājya hymn^a; or some speak of it as (in) praise of Waters or (in) praise of Ghee, (or) as addressed to Cows, (or) to Sūrya^b.

भापेयम् $fkr^2r^5r^7$, ह्यापेयं Λm^1b .—वाष्याज्यसूत्तं $m^1r^1r^4r^6$, वाप्राज्यसूत्तं hdr^3 , यदा-ज्यसूतं r, यवायसूत्तं r, याज्यायसूत्तं b.—हि दृष्टं Λm^1b , प्रदिष्टम् $fkr^2r^5r^7$.—गव्यमेके

सीर्यमेतद्दिन्त Λm^1 , गवां खुतिं वा सूक्तमेतद्दिन्त r, गवां खुति वा सूक्तमेतद्दिन्त f, गवां रक्तित वा सूक्तमेतद्दिन्त k, गवां खुतिं च गवा सूक्तमतद्दिन्त b.—The end of the varga is here marked by \mathbf{z} in $h\mathbf{m}^1\mathbf{b}\mathbf{f}\mathbf{k}$.

a RV. iv. 58 in AB. v. 16. 6 is stated to be the Ājya S'astra of the seventh day: samudrād ūrmir...iti saptamasyāhna ājyam bhavati. (The reading of hdr³ alludes to AB. v. 16. 1: yad vā āiti ca praiti ca tat saptamasyāhno rūpam.)

b Cp. Sarvānukramaņī: samudrād...āgneyam..sauryam vāpam vā gavyam vā ghṛtastutir vā.

Mandala v.

3. Deities of RV. v. 1-28. Story of Tryaruna and Vrsa Jana.

12. The Atris having dispelled the eclipse of the sun decreed (dṛṣṭam) by Svarbhānu, praised Agni with the twenty-seven hymns 'He has awoke' (abodhi: v. 1-28) a.

स्वर्भानुदृष्टं hm¹rbfk, स्वर्भानुदिष्ट॰ r²r⁶r⁷.—•स्वापहृत्य hm¹, •स्य ग्रपहृत्य r, •स्वा-पाचन्ये b, •स्वापचन्ये r²r⁵r⁷, •स्वाचन्य k •स्वापाचन्ये f.

- ^a That is, including 28, because the Apri hymn, v. 5, is left out of account; ep. note ^a on iv. 16.
- 13. Traivṛṣṇa (Tryaruṇa), Trasadasyu, Aśvamedha, Rṇaṃcaya may be observed as objects of praise in various passages in the (hymns of the) Atris a.

च स्थानेध m¹r, चायानेध hd.— ऋणंचय: hdm¹, also in bfkr²r⁵ (where this śloka comes later), **इति चय:** r.— परीच्या: hdr, परीचा m¹f.—This śloka is omitted here by B(bfkr²r⁵), but occurs after 28 in the following form:

वैवृष्णस्त्र्यर्णो राजावाश्वमेध ऋणंचयः। सूयमानाः परीच्याः स्युरविष्वेते क्वचित्क्वचित्॥

m¹ (also r) has this śloka, both here with the reading of A, and afterwards with that of B, viz.:

चैवृष्णस्त्र्यक्णो राजा श्रश्वमेध ऋणंचयः। सूयमानाः प्रतीच्या स्युरिचिवेव क्वचित्क्वचित्॥

n The general remark made in this śloka serves as an introduction to the story of Tryaruṇa. I do not agree with Sieg, Sagenstoffe, p. 74, note 2, in thinking this śloka more appropriate after 28, nor in reading **ξ** (त चर्य: instead of चर्णचर: In my text, however, the third varga in this way has six ślokas and the sixth only four, instead of both having five.

14. King a Tryaruṇa, son of Trivṛṣṇa, of the race of Ikṣvāku, was riding in his chariot, and his domestic priest, Vṛśa, the son of Jana, took the horses' reins.

ऐन्लाकुस् Am¹n(gh), ऐन्लाकस् fkrn(abem), ऐन्ला b. — संजया॰ MSS., स जया॰ n. — वृश्वो fkr².

- a This story (14-23) is quoted in the Nītimanjarī on RV. v. 2. 9. It is also given by Sāyaṇa on RV. v. 5. 1, in two metrical forms, as derived from the Sāṭyāyana and the Tāṇḍya Brāhmaṇa. The whole story is examined by Siog, Sagonstoffe, pp. 64-76. Cp. Hillebrandt, ZDMG. xxxiii, pp. 248 ff.; Geldner, Festgruss an Roth, p. 192; Oldenberg, SBE. xlvi, pp. 366 ff.; Ludwig, Ŗg-veda, iv, p. 324.
- 15. The chariot, as it went along, cut off the head of a Brahman boy, and the king said to his domestic priest, 'You are guilty.'

चैव hm¹r, चैनं bfkn.—राजैनं A, राजा तं B.

16. He (Vṛśa) having had revealed to him Atharvan spells and having (with them) brought the boy back to life, left the king in anger and betook himself to another country.

शिशुं A, सुतं bin, सुतं k.— अन्यदेशं hm1fkn, अन्यं देशं br.

17. In consequence of the departure of the seer, the heat of his (the king's) fire also disappeared, for none of the oblations cast on the fire were (any longer) cooked.

ननाशास्य $hm^1r^3fkr^2r^5r^7n(ab)$, ननाशास्त्र b, ननाशास्त r, ननाशास्त्र n(c). — ऋषेः Ab, ऋशे fk, गुरोः r^5r^7n . — प्रास्तानि $hm^1rbfkr^2r^5$, प्राप्तानि $r^1r^4r^6$. — ह्यानि hm^1r , प्रयानि $r^1r^4r^6$, श्वानि fkr^2 , वाक्यानि b, चाज्यानि r^5n . — ह्यपच्यत $bdr^1r^4r^6$, द्यपच्यनि m^1 , व्यपच्यन्त b, व्यवहंते fkr^2 , जीर्यन्ते r^6n . — The end of the varya is here marked by \mathfrak{F} in hbf, not in m^1k .

4. Story of Tryaruna (continued).

18. Hence the king distressed went to Vṛśa Jāna, propitiated and brought him back, and again made him his domestic priest.

सो hbfkn, wanting in r.—तम् hm¹r³r⁵r¹n, जम् b, तं(?)f, नाम् k, च r.—आनीला hm¹r, आनीय bfkn.—वृशं जानं hdr, दृशं जानं m¹, दृशं यातं fkn, दृशं यानं b: the Sarvānukramaņī and the Tāṇḍya Brāhmaṇa have the form वृशो जान: (see Max Müller, RV.² vol. ii, p. 35, near bottom). Mitra, however, has the marvellous note: सवृषं यान-मित्येव पाठो भवितुमईसि (sic).

19. Vṛśa being propitiated sought for the heat a of the fire in the king's house, and he found a Piśācī as a wife of the king.

स प्रसन्नों br, प्रसन्नों स hd, प्रसन्नों $(no\ H)\ m^1$, श्रप्रसन्नों n, स मत्तों f, स मतों g, त्विक्षद्रम् m^1 , विक्षद्रम् hdr, विक्षन्हर्म् g, त्विक्षन्दर्म् fk.—पिशाचीं तां $r^3br^5r^7$, पिशाचीन्तां f, पिशाचीं च r, पिशाची त्वं hd, पिशाचित्वं m^1 .

- ^a I take this word (*haram*) for the neuter word *haras*, 'heat,' irregularly used as a masculine. Sieg, p. 68, regards it as another word (*hara*, masc.), meaning 'robbor' (Räuber). This does not seem likely, especially as *haras* again occurs (in 21) in the sense of 'heat.'
- 20. Having seated himself with her upon the cushion on a stool, he addressed her with the stanza, 'Whom do you here?' (kam etam tvam: v. 2. 2).

निषमः hm^1r , निषमेः b, निचासः f, निवासः kn.— आसंद्यां $hm^1bn(ab)$, आसद्यां f, मासं द्यां rn(c), मासादां k.— त्वमिति त्वृचा hm^1r , त्वं युवत्यूचा b, त्वं युवेत्यूचा r^5n , त्व युमेत्यूचा k, त्व युवेत्यूचा f.

21. Speaking of the heat (haras) in the form of a boy a he addressed her (thus). And when he had uttered the (stanza) 'Far with light' (vi jyotiṣā: v. 2.9) the fire suddenly flamed up,

हर: hm1rbfkn, नर: r1r4r6.-- ब्रुवंस r2n, ध्रुवंस bfk, वृश्वस hdr, दृश्स m1.

- ^a Sieg, Sagenstoffe, p. 70, note ¹, compares ayni kumāra, giving references.
- B 22. repelling (sahamāna) him who approached and illuminating what was (already) bright;

and it burned the Piśācī where she sat.

 22^{ab} is in B only (bfk $r^2r^5r^7$).—समायान्तं $fr^2r^5r^7$, समायातं bk.— प्रकाश्यन् $r^2r^5r^7$, प्रकाश्यत् b, प्रकाश्यान् fk.— तां स hdr. तां स m¹, तां तु bkn, तं तु f.— यत्रोपविवेश् hbr, यत्र चोपर्विश् f, यत्र यत्र निवेश् n(c), यत्र यत्र निवाश् n(abm).— The end of the varga is here marked by $\mathbf 8$ in bfk, not in hm¹.

5. References to RV. v. 2. 2, 9 in other works. Deities of RV. v. 29-40.

- 23. This couplet a is mentioned (parāmṛṣṭa) in the Brāhmaṇa of the Bhāllavins:
- B such is the Vedic passage (*śruti*) (quoted) in the work entitled Nidāna of the Sāmavedins ^b (*chandoga*).

माज्ञवित्राह्मणे b, माञ्चवित्राह्मणो r^5 , माञ्चाभित्राह्मणो $fk\,r^2$, माञ्चवित्राह्मणो $h\,m^1\,r$, बज्ञविद्वाह्मणे $n\,(c)$, बज्जविद्वाह्मणे $n\,(a\,b)$, मञ्जवित्राह्मणे $n\,(b)$, मञ्जवित्राह्मणे $n\,(c)$, वज्जविद्वाह्मणे $n\,(a\,b)$, मञ्जवित्राह्मणे $n\,(b)$, मञ्जवित्राह्मणे $n\,(c)$, वज्जविद्वाह्मणे $n\,(c)$, मञ्जविद्वाह्मणे $n\,(c)$, मञ्जविद्वाह्मणे

- ^a That is, the two stanzas v. 2. 2 and 9. ^b That is, the Nidāna book contains a quotation mentioning these stanzas from the Bhāllavi Brāhmaṇa. If the Nidāna-sūtra is meant, the quotation in question cannot be traced in the published text: see Sieg, Sagenstoffe, p. 65.
- 24. The mention (of them) is probably (bhaved eva) with reference to this hymn (as a whole); for exoteric $(b\bar{a}hya)^a$ formulas are to be found enjoined by the requirements (drsta) of a ceremonial rule (vidhi).

भवेदेव $h\,m^1r$, भवेदेघ b, भवेदेश $f\,k$.—व्योचया $h\,m^1r$, विवचया $b\,fr^2r^5r^7$, विवक्ष्या k.—वाक्यान्येषां हि $A\,m^1$, वास्या हि $b\,fk$, बास्या मन्त्रा हि $r\,(r^2r^5r^7)$: this looks as if two syllables had dropped out in B, and मन्त्रा had been supplied in some of the MSS. from the following line (ब्राह्मणे मन्त्रा).—विधिदृष्टेन $A\,m^1$, विधिश्रब्देग r, विविश्रब्देग $b\,fk$.—चोदिता $A\,m^1k$, चोदिताः $b\,fr$.

- ^a That is, a Brāhmaṇa sometimes applies mantras from a Veda other than its own, if the ritual necessitates their use. I am, however, very doubtful about the emendation $b\bar{a}hy\bar{a}h$, which may entirely vitiate the sense of the line.
- 25. Formulas (thus) appear in a Brāhmaṇa pointed out in a particular passage (*ekadeśa*): so the Āprī stanzas of Jamadagni a and the stanzas relating to the drops of ghee (*stokīya*) in the Aitareya.

एकदेशे hm¹r, एकदेश fk, एकदेशं b.—जामदग्यसयाप्यस् m¹, जामदग्यसयैवाज्यः r¹r⁴r⁶, जामदग्यसथैप्य h, जामदग्यो यथाप्रियः r, जामदग्यो यथाप्रीयः r³, जामदग्यो यथाप्रीय f.—स्रोकीयाश् Br³, स्रोकीयाश् hm¹, स्रौतीयाश् r.

- That is, RV. x. 110, quoted in TB. iii. 6. 3¹ as well as in VS. xxix. 25; cp. above, ii. 156, and below, viii. 37.

 BV. i. 75 and iii. 21, quoted in TB. iii. 6. 7¹ as well as in AB. ii. 12. 3, 6 (cp. commentary, Aufrecht, p. 258).
- 26. Now the fifth hymn here is (made up of) the \bar{A} prī stanzas 'To the well-kindled' (susamiddhāya: v. 5. 1). The stanza 'Thereon' (edam: v. 26. 9) is optionally $(v\bar{a})^a$ addressed to the All-gods, and the last (stanza) in the last hymn but one b (v. 27. 6) is addressed to Indra-Agni.

आप्रियः fkr, आप्रिवः b, आप्र्यः hdm¹, आप्प्रः r¹ r³ r⁴ r⁶.— अत्र तु hm¹ r, अतिषु B.— एदम् Af, होदम् kr², पदम् b, एतद् r.—वा अन्या r, वांत्या hfb, षांत्या k.

- ^a The Sarvānukramaņī has antyā lingoktadevatā, but the commentator Jagannātha explains: antyā vaiśvadevī vā.

 ^b Cp. above, v. 12.
- 27. There are twelve hymns addressed to Indra (beginning) 'Three' $(tr\bar{\imath}: v. 29-40)$; but here Uśanā is praised with the verse $(p\bar{a}da)$ 'Uśanā' $(uśanā: v. 29. 9^a)$ and also with that (which begins) 'When together to you two' $(sam\ ha\ yad\ v\bar{a}m: v. 31. 8^d)$.

ऐन्द्राणि द्वादश बीखु॰ m^1 , वीणीखु॰ hdr, त्रान्यु॰ b, वीद्राद्वादशं सूक्ताखु॰ f, द्वादशा-क्यादीन्यु॰ r^5r^7 .— त्वव Λm^1r^2 , यव bfkr.— उश्नेति तु bm^1r , उश्नेति च bfk.— पादेन सं ह यद्वामनेन च Λ , पादो यः सं ह यद्वां परश्च यः B (परस्त्रयः r^5r^7).— The end of the varga is here marked by \mathbf{u} in bfk, not in hdm^1 .

6. Atri's praise of gifts.

- 28. And in the (stanza) 'O Indra and Kutsa (indrākutsā: 5. 31. 9) Indra is praised with Kutsa; and in the five stanzas 'When thee, O Sūrya' (yat tvā sūrya: v. 40. 5-9) the feat of the Atris is celebrated a.
- ^a After this B (bfkr 2 r 5) and m 1 add the śloka which in A forms an introduction to the story of Tryaruṇa (see note on v. 13).
- B 29. In a the (hymn) addressed to Agni, 'With a wagon' (anasvantā: v. 27), the seer Λtri himself, pleased with his gifts, proclaimed these (kings) b as royal seers c, so say some (authorities).

स्वयम् bfkr, ॰स्वयम् m1. - राजधीन् br, राजन्यान् m1, राजसान् fk.

- The following seven and a half ślokas (29-36^{ab}) are not found in A. b Referring to the four kings mentioned in v. 13, which in B immediately precedes the present śloka. Ŗņaṃcaya, however, does not appear in this hymn (cp. below, 33). This must mean that Atri merely introduces the subject of their gifts to him, but that the three kings are the seers of the hymn as a whole, according to the view of some authorities. According to the main statement of the Sarvānukramaņī the three kings are the seers of the hymn; and according to the Ārṣānukramaṇī, v. 13, 14, Tryaruṇa and Trasadasyu are the seers of v. 27, 1-3, and Aśvamedha of 4-6.
- B 30. There also appears (here) a prayer to Agnia on their behalf (ebhyah) in consequence of (their) request (adhyeṣaṇāt)b. Ten thousand, three hundred and twenty kinec,

श्राशीरध्येषणाचैभ्यो r, श्राशीरषणाचैभ्यो b, श्राश्र्षणाचैत्यो fk, श्राश्र्षणाचैत्सो m1.— अपि br. पि m1k.—विश्वति b, विश्वति: m1rfk.

- * In RV. v. 27. 1, 2, 3. b That is, to the seers to officiate for them; the reference is probably to RV. v. 27. 4. ° Cp. RV. v. 27. 1, 2: daśabhih sahasraih . . . šatā ca viņīšatim ca gonām.
- B 31. (and) a golden wagon with two oxen a, king Tryaruna gave to Atri. And Asvamedha (gave) a hundred oxen, Trasadasyu much wealth.

सौवर्ण fm1, श्रीवर्ण k, सीपर्ण b. - नृपोऽचये r, तृपोत्तये b, नृपोत्तमे fk, नृपोत्तमः m1. - अश्वमेध: m1, अश्वमेध fkr, अश्वमेव b. - चोरणां m1, चोष्णां fb, चोचां k, चोष्टांस r (RV. v. 27. 5 भ्रतम . . उज्राह्म:).—The end of the varga is here marked by & in bfk, not in m1, nor of course in hd.

^B Cp. RV. v. 27. I: anasvantā . . gāvā.

Rnamcaya's gifts to Babhru. Deities of RV. v. 41-51.

B 32. Others say that he (Atri) addressed this hymn to the kings, for one cannot give to oneself a, (and) the seer received (the gifts) from (each) king.

बभाष r, बभास m1, वभास bfk.— भाता हि नातने bm1, श्राता हि नातने k, त्रात्मा हितात्मने r.— भगहीन्पतेर्ऋषिः r, भगहान्षितो दृषिः m1, अग्रहान्षित ऋषिः f. **श्रयहानुषतेर्ऋषेः** b.

- ^a This alternative view, that Atri is the seer of the whole hymn, is stated on the same ground by both the Sarvanukramanı (natmatmane dadyad iti sarvasv atrim kecit) and in the Arsanukramani (v. 14, 15): 'or Atri Bhauma alone is here the seer; for in the act of giving (read dānakriyāyām) one and the same person cannot be proclaimed (na śasyate) as both giver and receiver.' Cp. Sadgurusisya, p. 115.
- 33. Rnamcaya chose the seer Babhrua, son of Atri, to officiate as priest at a Soma sacrifice in which a thousand sacrificial fees were bestowed. So he (Babhru) sacrificed for him (Rnamcaya)^b.

अवेः सुतमृषिं वसुम् rn, गौरीवीतिमृषिं शात्व्यम् m1, गौरीवीतिमृषिं श्रुत्व्यम् b गौरीचिनिम्ष शक्त्याम् f.—सोऽप्ययाजयत rn, सोऽप्यजायत bfkm1.

* Gauriviti (the reading of bfm1) cannot be right, as he is the seer of v. 29, while the hymn in question is v. 30 (see 36), in which Rnamcaya and Babhru are mentioned together (v. 30. 14); ep. Sarvānuksamaņi on v. 30: babhrur: ṛṇaṇicayo 'py atra rājā b 33-36 are quoted in the Nitimanijari on RV, v. 30, 15. stutah.

B 34. And the king of the Ruśamas a (rauśama) gave him four thousand four hundred (cows) b and a golden caldron a (mahāvīrā).

ददी च रीश्रमो n, ददी न रीश्रनी fk, ददै रागो रीश्रनी b, ददी तदीश्रनी r, ददी तदाश्रनो m^1 (cp. note *).

ⁿ Cp. RV. v. 30. 14: rnamcaye rājani rusamānām.
^b Cp. RV. v. 30. 12: gavām catvāri dadātah sahasrā rnamcayasya.
^c Cp. RV. v. 30. 15: gharmah . . taptah pravije . . ayasmayah.

B 35, 36. And he received golden caldrons a for the Pravargya rites. And having received (them), the seer as he went along was questioned on the way by the Middle Agni as well as by Indra b; and he related (all) this with the four (stanzas) 'This good' (bhadram: v. 30. 12-15)c.

The next elevend (hymns) after this (beginning) 'Who pray of you two?' (ko nu vām: v. 41-51) are addressed to the All-gods.

प्रविश्व m¹n, प्रविश्व b, प्रविश्व fkr.—प्रतिगृह्य ऋष्र m¹nr, प्रतिगृह्यमृषिर् b, प्रतिगृह्य प्रषिर् fk.—36. तत् fbm¹r, यत् kn.—°देवानि एका॰ r, °देवीन्य एका॰ b, °देवान्य एका॰ hr¹.— पराख्यतः hm¹r, पराणि तु bfkr⁵r⁷.— The end of the varga is here marked by one line.

^a $Mah\bar{a}v\bar{v}ra$, otherwise gharma, is a kettle for heating milk at the Pravargya or introductory ceremony of the Soma sacrifice.

^b This is to explain how Agni is addressed in stanzas 12, 13, 15 of RV. v. 30, which is a hymn addressed to Indra.

^c That the preceding passage $(29 \text{-} 36^{ab})$ belonged to the original text of the BD, is, in the first place, supported by the fact that it must have been known to the author of the Sarvānu-kramaṇi; for the remark $n\bar{a}tm\bar{a}tmane\ dady\bar{a}t$ is clearly borrowed from 32^{a} ($\bar{a}tm\bar{a}$ hi $n\bar{a}tmane\ dady\bar{a}t$) while the words $sarv\bar{a}sv$ atrim hecana are probably due to 32^{ab} ($r\bar{a}jm\bar{a}h$ $prati\ ca\ tat\ s\bar{u}ktam\ babh\bar{a}sa\ iti\ kecana$). In the second place, the four $vargas\ 6-9$ have, in hd, only six ślokas (instead of the normal number, twenty), and yet the end of the ninth varga is indicated in the same place (after 45^{d}) and with the same figure in hd as in b.

^d Cp. Sarvānukramaṇi: $vaisvadevam\ vai\ tad\ (vai=5,\ tad=6)$.

8. Detailed account of RV. 41-43.

37. (Then come) ten (hymns) addressed to the Maruts a (beginning) 'Forth' (pra: v. 52-61). Ila, however, is praised in the stanza 'To' (abhi: v. 41. 19).

B In the third stanza 'Up' (ut: v. 42. 3) Savitr (is praised), Saunaka said.

प्रित दलाभीत्यृचि तु खुता r, प्रितिकाभीत्यृचि तु खुता m^1 , प्रितीकाभीत्यृचि तु संजुता hd, प्रितीहाभीत्यृचि तु संजुता r^3 , प्रितीलाभि न ऋचा खुता $br^2r^5r^7$, प्रितीलाभि न ऋखुता f.— 37^{cd} in Bm^1 only.— उदित्यृचि तृतीयायां m^1 , द्वितीययान्यया खुतः r, द्वितीयायां सिवता शीनको त्रवीत् is the whole line in f, and द्वितीयायां शीनकोऽत्रवीत् in f.

- " Cp. Sarvānukramaņī on v. 52: mārutam ha tat (ha=4, tat=6).
- 38. The triplet 'Invoke' (upa: v. 42. 7-9) is addressed to Bṛhaspati; the next stanza (v. 42. 10) is addressed to the Maruts; 'Praise him' (tam u stuhi: v. 42. 11) is addressed to Rudra. But in the stanza 'Forth the fair praise' (pra sustutih: v. 42. 14),

hm¹bfk have no यो (the pratīka of v. 42. 10), which makes the first pāda one syllable short: I conjecture that त has dropped out before तृचो. The reading of R, उपेति वाईस्एत्यसृचो यो, makes the first pāda end in the middle of तृचो.— रौद्रो तु A, रौद्रो स्थात् fkr, रौग्यात् b.

B 39. the deity is variously stated by Śaunaka and other teachers. Śākapūṇi (considered) Iļaspati, Gālava Parjanya-Agni,

39^{ab} is found in bfkm¹ only: there is no reference to it in R (though some of his MSS. must have it).—•रिता m¹k, •रिता: bf.—इळस्पति: hd, इजस्पति: r, इजस्पति m¹, इजस्पति fk, इजस्प b.

40. Yāska thought Pūṣan, Śaunaka Indra to be praised, Bhāguri Vaiśvānara. 'This' (eṣaḥ: v. 42. 15) is addressed to the Maruts; 'Together' (sam: v. 42. 18) is addressed to the Aśvins b.

मार्खेष समाश्विती Am bfk, मार्खीषसमाश्विनम् r.

- RV. v. 42. 14 is not commented on in the extant text of the Nirukta.

 b The Sarvānukramaņī gives no details about RV. v. 42 except on stanza 11: ekādaśi raudrī.
- 41. 'Adhvaryus' ($\bar{a}dhvaryavah$: v. 43. 3) is addressed to Vāyu; 'The ten' (daśa: v. 43. 4) is addressed to Soma, while that which follows (v. 43. 5) is addressed to Indra.
- B The following (6) 'They deck' (anjanti: 7) (praise respectively) Agni (and) the Kettle (gharma), and the stanza 'Hither' (acha: 8) praises the Asvins.

ऐन्ह्री परा तु या hm¹r, ऐन्द्र्यर्गसाविति r⁵r⁷, ऐन्द्युगेसावि ते b, ऐड्युखे सावि ते f, ऐड्युखे सावि ते f, ऐड्युखे सावि ते k (ऋसावि ते is the pratika of v. 43. 5).—घर्म m¹b, धर्म fkr.—परा-झन्ति r, पराजैन्द्य° bfk, पराजंति m¹.—41^{ed} in Bm¹ only.—The end of the varga is here marked by ⊏ in bfk, not in hdm¹.

9. Deities of RV. v. 43 (continued), 44, 45.

B 42. 'Forth' (pra: v. 43. 9) (praises) Vāyu and Pūṣan. In the first hemistich (of) 'Hither' (\bar{a} : v. 43. 10^{ab}) Agni is here mentioned, and in the second (10^{cd}) the celestials (divaukasah)^a are praised.

प्रेति वां r, प्रति वा b, प्रेत वा fk, प्र तव्यसः m¹.—पूषणं चोर्डचें b, पूषणं वोर्डचें f, चोर्डचें k, पूषणं वार्धचें m¹, पूषणं या चेत्यर्डचें r.—सुता एति r, सुताविति bfk, सुवाविति m¹.—This śloka is found in Bm¹ only.

This probably means the All-gods (cp. iv. 62): the expression in the text of RV. v. 43. To is visve marutah.

43. 'Hither' (\bar{a} : v. 43. 11) praises the Middle Vāc, then another (12), Bṛhaspatia,

B 'The higher one' $(jy\bar{a}y\bar{a}msam: v. 44. 8)$ praises the Sun $(\bar{a}ditya)$. Vāyu is here spoken of (in) 'Forth to you' $(pra\ vah: v. 44. 4)$.

43^{ab} in m¹ follows 45^{ab}.

B 44. 'Him as of old' (taṃ pratnathā: v. 44. 1)^a is addressed either to Soma (or) the Gods, or Indra, (or belongs) to Prajāpati. Kauṣītaki himself^b has spoken of this (hymn) as one in which the All-gods are indirectly addressed (parokṣā).

सौमी वा दैंथेन्ट्री वा r, सौमी वांदैत्येंद्री वा fk (ना k). सोमी वा दैंथेंद्री वा b. सौमी वां तथेंद्री वा m¹.—प्रजापतेः bfkr, प्रजायते m¹.—कौषीतिकः br, कोषीतिकः fk.

^a The Sarvānukramaņī gives no details for v. 43.

^a There is no statement about this stanza in the Sarvānukramanī.

^b That is, Kausītaki Brāhmana xxiv. 9, where it is stated that three hymns, RV. i. 122; v. 44; i. 121, which are indirectly addressed to the All-gods (and, not having any deity specified, belong to Prajāpati) are inserted in place of others: prājāpatyāny aniruktāni parokṣa-vaiśvadevāny avadhīyante.

B 45. Among these it is spoken of as the third a: after it comes the (hymn) 'I invoke the gods' (devān huve: x. 66) b.

In the couplet 'The Spouses of the Gods' (devānām patnīḥ: v. 47. 7, 8), the spouses of the gods are praised.

इदं परम r, इदं पुरम bfk, इदं पुरा m¹.— °रिति तु hm¹r, °रिति च bfk.— The end of the varga is here marked by Q in hbf, not in m¹k.

That is, I suppose, according to its position in the RV.: it is second in the order in which the Brāhmaṇa enumerates them (see above, 44, note a).

That is, Kauṣītaki afterwards (in xxiv. 9) enumerates three hymns which are directly (pratyakṣam) addressed to the All-gods, viz. RV. x. 65; x. 66; x. 36: x. 66 corresponding to v. 44.

10. Deities of RV. v. 51-60.

46. And with three a of the four b (beginning) 'This' (ayam: v. 51. 4-7) Indra-Vāyu are praised, while 'O Vāyu, come' (vāyavā yāhi: v. 51. 5) (praises) Vāyu (only)d. With the stanza 'The car' (ratham: v. 56. 8) is here praised Rodasī, whose (husbands) the Maruts—she being the spouse of the Rudras —are praised (in the whole hymn).

वायवा याहि hdm¹, वायवृणोति b, वायवृक्केति r, वायु वृण्णौति f, वायु वृष्णौति k.— तृचा fk, त्युचा b, द्व्युचा r, त्वृचि m¹, तृचं hd.—यस्था br, यस्था fkd, यस्थात् hm¹.—Instead of this tristubh r¹r⁴r⁶ have a sloka, which m¹ has in addition to it:

श्रयं चतुर्णामिति च इन्द्रवायू विभिः सुती । वायवा याहि [वै] वायुं रूपं न्विति तु रोदसी ॥

 1 °युस् ${\rm m}^1$, °यु ${\rm r}^1{\rm r}^4{\rm r}^6$. 2 ${\rm m}^1$, वायुर्द्धितीययान्त्येका ${\rm r}^1{\rm r}^4{\rm r}^6$. 3 रथं त्वृचि ${\rm m}^1$, रथान्विति ${\rm r}^1{\rm r}^4{\rm r}^6$.

- ^a For tisṛbhiḥ.

 ^b For catasṛṇām. The iti should follow ayam, not caturṇām.

 ^c Here R has in connexion with his corrupt reading ṛkkā iti one of his marvellous references to the RV. (vii. 37. 4, where the word ṛkvā occurs).

 ^d The Sarvānukramaṇī makes no statement about these stanzas.

 ^o Cp. 47.

 ^f The Sarvānukramaṇī has no statement about this stanza.
- 47. But in the (stanza) 'Hither, O Rudras' (ā rudrāsaḥ: v. 57. 1) the host of the Rudras is praised a. Now this is the name of the host of the Maruts: they are called Rudras.

॰स्रेतन्नाम Abk, ॰स्रेतं नोम f, ॰स्रेतन्ना m¹, ॰स्रेते नामा r.—स्रताः A, स्तुताः B.

a There is no reference to this stanza in the Sarvānukramaņī.

- 48. Now that Agni and this, (viz.) both the middle and the terrestrial Agnis, are praised with the Maruts in the (stanza) 'O Agni, with the Maruts' (agne marudbhiḥ: v. 60. 8)^a.
- ॰प्रियं $m^1br^5r^7$, ॰प्रियं fk, ॰पिरियं hd, ॰पिरिमी r.—चोमी ल॰ hdr, वोमाव॰ bf, चोमाव॰ r^5r^7 .— 48^{cd} in the text follows the reading of Am^1 ; in B (also m^1) the line has the following form:

यदुत्तमे तृचेऽर्धर्च र्केऽपिं संसुतौ हुचे (b, हुचै m¹fkr)।

- Or according to the reading of B: 'In the triplet "Whether in the highest" (yad uttame: v. 60. 6-8), and in "I praise Agni" (ile 'ynim: v. 60. 1) in a hemistich (in each of these four stanzas), being (thus) addressed in (altogether) two stanzas' (direc: i.e. $\mathbf{1}^{ab}$, 6^{cd} , 7^{ab} , 8^{ab} , Agni being mentioned in these four hemistichs; but Vaiśvūnara is also mentioned in 8^d , so that this statement would not be quite correct). The Sarvānukramaņī has: \bar{a} gneyaṃ ca $v\bar{a}$, i.e. the Maruts, or the Maruts and Agni.
- B 49. Vāc (may be) middle, all female goddesses (striyah) (may be middle), and every male (deity may be) middle, as well as all groups (gana), (such as) the Maruts, respectively according to their different qualities a.

मध्यमा m¹r, माध्यमा b, मध्ये भा fk.—This śloka is not found in A, but in B m¹ only.—The end of the varga is here marked by **90** in bfk, not in hd; in m¹ it is marked after **भध्यमी** (48^b), after which that MS, adds the B form of 48^{cd}.

^a This general remark is evidently suggested by the preceding sloka where the middle Agni, as specially connected with the Maruts, is distinguished from the terrestrial Agni.

11. Story of Śyāvāśva.

50. There was a royal seer famous by the name of Rathavīti Dārbhya. That king being about to sacrifice went to Atri and propitiated him a.

दार्सी all MSS. and n, दान्स: Sarvānukramaņī, Ṣadguruśiṣya, n(gh); ср. Max Müller, RV.² vol. ii, p. 45.—श्रुत: hm¹rnṣ, श्रुति: bfkr⁵r¹n(gh).— राजियम् hdṣ, राजियम् m¹, राजियम् n, राजियु br, राजियु fk.

^a This story is quoted in the Nītimañjarī on RV. v. 61. 17, and by Sadgurusisya on RV. v. 61, with the omission of occasional ślokas, from here to the end (50-79). Sāyaṇa, introduction to RV. v. 61, tells the story in another metrical form. Sieg, Sagenstoffe, PP. 50-64, treats of the story as a whole; he also states the relation of its various forms, P. 51, note ³.

51. And making known his identity and the object he had in view, as he stood with folded hands, he chose the seer Arcanānas, the son of Atria, to officiate as (his) priest.

कार्यमर्थ hm1rns, कार्यवन्तं bfkr5r7.— ॰ लि: स्थित: fkr, ॰ लि स्थित: hm1bs.

- a Sāyana on RV. v. 61 speaks of him as atri-kula-nandana.
- 52. He, accompanied by his son, went to the king for the performance of the sacrifice. Now the son of Arcanānas, Atri's son, was Śyāvāśva,

भ्यगक्तं hm^1frs , भ्यगक्तं bkn— स्थावाश्वश्चा॰ hm^1r , स्थावाश्वश्चा॰ f, स्थावाश्वस्त्व॰ g, स्थावाश्वस्था॰ n— 52^{cd} is omitted in $br^1r^4r^6$.

53. who had been gladly taught by his father all the Vedas with their members (anga) and subordinate members $(up\bar{a}nga)$. Then Arcanānas having gone with his son, performed the sacrifice for the king.

This śloka is omitted in b and r¹r⁴r⁶.

54. And as the sacrifice was in progress, he saw the illustrious daughter of the king. The thought occurred to him that the princess might become his daughter-in-law.

यद्ये च hdm1rbfkn, यद्ये (प Ṣadguruśisya (one MS. यद्ये च).

55. Then the heart of Śyāvāśva too became fixed on her; and so he said to the institutor of the sacrifice: 'Ally yourself with me, O king.'

 55^{ab} is omitted in b and $r^1r^4r^6$, while the whole śloka is repeated in m^1 .—The end of the varga is here marked by 99 in b, not in hdm¹fk. It is marked by 99 in h (not in d) after **भाय्या** (59^b), and after 58 in f.

12. Story of Śyāvāśva (continued).

B 56. The king wishing to give his daughter to Śyāvāśva, said to his royal consort: 'What is your opinion? I (desire to) give the girl to Śyāvāśva.

ते मतमहं Ṣadguruśiṣya, n (and, I believe, m¹, but I have not specially noted the reading of that MS.), त महमहं fk, ते पुत्रीमहं r.—56-58 (three and a half ślokas) are wanting not only in A but in b. That they were an addition to the original text of the BD. is also indicated by their general character, by their being unnecessary to the narrative, and by the fact that without them the varga would have the normal length of five ślokas. But that they were a comparatively old addition is proved by Ṣadguruśiṣya having them.

B 57. For a son of Atria would be no contemptible $(adurbala)^b$ son-in-law for us.' She on her part said to the king: 'I have been born in a family of royal seers;

अविपुत्रो m¹fkrs, अविपीत्रो n.

- * Strictly speaking, 'a grandson of Atri,' according to the correction of the Nītimañjarī MSS.

 * As the MSS. do not use the avagraha, durbalo is ambiguous in form, but the context shows that it stands for adurbalo.
- B 58. one who is not a seer should not be our son-in-law; this (youth) has not seen formulas. Let the girl be given to a seer: she would thus become a mother $(amb\bar{a})^a$ of the Veda; for a (certain) seer b regards one who sees formulas as a father of the Veda c.'

नी तु m¹n s, नी हि fkr.—चेद्खां वा m¹rn, all MSS. of Şadgurusisya but two (which have देवखां वा), न्वेद्खां वा f, वेद्खां वा k.—तथा m¹fkrn, three MSS. of Şadgurusisya, यथा four MSS. of Ṣadgurusisya.— ऋषिर् s, ऋषि fkm¹, ऋषिं rn.

- This emendation, which I made in Sadgurusisya (in 1886), still appears to me the only possible one.

 b Vasukarna; cp. my explanatory note on Sadgurusisya, § 1.3, p. 177. Sieg, p. 52, note 2, would read rsim mantradrsam, but the two words in agreement would be tautological.

 c Cp. Sadgurusisya, p. 58, note 11.
- 59. The king, after conferring with his wife, refused him (saying), 'No one is worthy to be (our) son-in-law who is not a seer.'

प्रत्याचष्ट स hm^1r , प्रावोचत्तथा $r^2r^5r^7$, प्रावोचत्यथ f, प्रावोचतय k, प्र⁻ चन च b; the whole line in Sadgurusisya runs: इति तद्दचनं श्रुत्वा प्रत्याचष्ट मुनिं नृपः ।. — नैव hm^1r^3s , नौ नं brn, नो न fk.

60. The seer, being rejected by him, returned, when the sacrifice was over; but the heart of Syāvāsva returned not from the girl.

वृत्ते यद्ये hrs, वृते यद्ये m1, यद्ये वृत्ते bfkn.—कन्याया hdm1, कन्यायां bfkrns.— नैव न्यवर्तत m1rns, नैवं न्यवर्तत hd, न सा निवर्तते fkr2r5r7, न म सिन्नवर्त्तते b.

- 61. So these two returned; they both met B Śaśiyasi and Taranta and king Purumilha.
- ततस्ती $\mathrm{Am^4}$, ततस्तु ती bn , ततस्तु तो fk , ततः स्तुतौ $\mathrm{r^2r^5r^7}$. निवर्त्धायु r , विवर्त्धायु hd. निवतेत Bn. The emendation निवतेताम is based on the reading of B, on the necessity of a dual middle form, and the assumption that in A the second d dropped out, and that निवर्तामुं became corrupted to निवर्त्धाय, as a gerund seemed required for the construction, and My is often used thus (see index of words sub voce āśu). Then oniage became affange, which is very pleonastic after an a; the causative for the simple gerund is also clearly wrong. - नुभावेवाभि॰ b, उभावेवाभि॰ n, उभावेवापि fk, तावतायभि॰ hdm¹r.—61 ab is altogether different in Sadgurusisya.—61 d is found here in m1bfkn; in A this line appears at 80°d, where it is repeated in m1.—61°d is not in Sadgurusisya.
- 62. Now the two kings Taranta and Purumilha were seers, sons of Vidadaśva. These two kings themselves paid homage to the two seers.

वैदद्ख्युषी rn, वैख्युषी fk, वैद्श्राख्षी b, वैदद्खिनौ Am1: the Sarvānukramaņī has वैददश्वी; the form of the name in the RV. is वैददश्वि, while वैददश्विन् is not found elsewhere. - gual m1br, gual hr1r4r6k, gual f.

63. And the king (Taranta) showed the seer's son to his royal consort; and with Taranta's approval she gave manifold wealth,

तं नूपः $m hm^1r$, वै नूपः $m bfkr^2r^5n$. — तरनानुमता चैव $m Am^1$ (॰वं m hd), तरनानुमतेनैव bfk.—प्राहाद m1fkrns, अदाद hd, आदाद b.—The end of the varga is here marked by 92 in bfk, not in hdm1.

13. Story of Śyāvāśva (continued).

64. goats and sheep, cows and horses, to Śyāvāśva, did Śaśīyasī. Father and son, (thus) honoured by the institutors of the sacrifice, went to their hermitage to Atri.

- B 65. And they saluted Atri, the great seer, of brilliant splendour. (But) Śyāvāśva thought: 'Because I have not seen (any) formula, '
- B 66. I have, alas! not obtained the maiden beautiful in all her limbs. Could I but become a seer of formulas, my joy would be great.'

°वानहं m¹fk, °वानिमां r, °वांसु तां Ṣadguruśiṣya.— ऋषहं r, Ṣadguruśiṣya, ऋषाहं m¹, ऋष हे fk.

B 67. To him as he thus reflected in the forest the host of the Maruts appeared.

He saw standing at his (ātmanaḥ) side, quite (iva) similar in form तुन्नक्पानिवातानः Am¹bfkr², तुन्नक्पानाहातानः rns.—64°d-67°ab are not found in the Nītimañjarī.

68. and equal in age, the Maruts, with gold on their breasts. Seeing the gods similar in age, with the figures of men,

68°d is not found in Sadgurusisya.

69. Śyāvāśva, astonished, then asked the Maruts, 'Who are ye?' (ke ṣṭha: v. 61. 1). Then, however, he became aware that they were the divine Maruts, the sons of Rudra.

के ष्ठिति hd, केव्विति bfkr.— हद्र मृनूनबुध्यत A, हद्र पुत्रानबुध्यत ह, ऋषिस्तानन्वबुध्यत br, ऋषित्वानन्वबुध्यत fk.

70. Having observed (this), he also praised them with the (stanzas) 'They that ride' (ya im vahante: v. 61. 11). For the seer considered it a great transgression on his part,

इत्याभिर्बुद्धा $r^1r^3r^4r^6$, इत्याभिर्बुध्धा hdm^1 , इत्यादिभिर्बुद्धा s, इत्युग्मिः षड्भिः bfrk.— तांखाथा hdr, तांखतः b, तांसुतः fk, तानृषिः s.— ऋतिक्रमं rs, ऋविक्रमं b, ऋतिक्रामं hdm^1fk .— तं मेने ऋषिर् s, तं मेने छ्युषिर् hd, तं मेने m^1 (I have not noted whether ऋषिर् or ह्युषिर्), तमृषिभैने bfkr.

71. that, as soon as he had seen them, he did not praise them, and that he asked them, 'Who are ye?' Being praised and being delighted with their praise, the sons of Pṛśni (the Maruts) as they went along,

यत fkr, यात r¹r⁴r⁶, यत्र hdm¹, यह s, य b.—यह bfkrs, यांस् A.—69^{cd}, 70,71^{ab} omitted in n.—सुत्या तथा hbfk, सुत्यानया m¹r.—71^{cd} omitted in Sadgurusisya.—The end of the varga is here marked by 93 in m¹bfk, not in hd.

14. Story of Śyāvāśva (continued).

72. taking off the gold from their breasts, gave it to him. Now when the Maruts had gone thence, the illustrious Śyāvāśva

अवमुख खवचोभ्यो hm^1r , खवचीभ्योऽवमुख s, श्रामुख ते खकाछेभ्यः r^5 , श्रमुखत खकाछेभ्यो fkr^2n , श्रमुख सूकंवेभ्यो b. The line in Ṣaḍguruśiṣya runs: श्रथास महतो हकान खवचोभ्योऽवमुख ते.—तदा द्दुः hm^1r , द्दुसदा bkn, तदुसदा f.—सुमहायशाः n ss, तु महायशाः hm^1r , सुमहातपाः B.—Ṣaḍguruśiṣya has an additional line after $r2^{ab}$, and Sāyaṇa another after $r2^{cd}$.

- ^a Sāyaņa on RV. v. 61. 17 quotes 72^{cd}-79^{ab}.
- 73. went in thought to the daughter of Rathavīti. He only just (sadyaḥ) a seer a, wishing to declare himself to Rathavīti,

स सव ऋषिर् hdrk, 'Ṣaḍguruśiṣya (w¹), स सव किष् f, स संध ऋषिर् b, स सत्यमृषिम्s, प्रादुर्भूतिर्षम् n.—प्रवच्यन् Λs , संदेच्यान् b, देचान् k, देचां (नथ॰) f, विवचू $r_{\$}$.

- ^a Sieg, p. 53, note ⁷, wishes to read *rsim*, but this is against the MS. evidence, and unnecessary.
- 74. commissioned Night on a message with the two (stanzas) 'This my song of praise' (etam me stomam: v. 61. 17, 18); and to her (Night) who did not see a Rathavīti, he discerning (him) with the eye of a seer,

°त्यास्यां Anss, °त्युग्स्यां b, (स्तोम)मृग्स्यां f, (स्तोम)मृग्स्यां k.—दौत्ये hm^1rns , दूत्ये r^2r^5s , देवीं b, दिवीं f, दिवी k.—न्ययोजयत् hm^1r , न्ययोजयत् bfk, न्यवेदयत् nss.—तपस्यन्तं hm^1rs , श्रपश्चन्तं g, श्रपश्चन्तं hm^2rs , श्रपश्चन्तं g, श्रपश्चनंतं g

- ^a Cp. Sieg, p. 53, note ⁹, and p. 57, line 2.
- 75. said, 'Here he dwells' (eṣa kṣeti: v. 61. 19) 'on a delightful ridge of the Himavat'a. Urged by the goddess Night, after learning his instructions,

पृष्ठे bfk, पृष्ठ hm1r. - प्रचोदितः hrfkss, प्रवोदितः b, प्रणोदितः n.

a Cp. RV. v. 61. 19: esa kṣeti rathavītiķ . . . parvatesv apaśritaķ.

76. the son of Darbha, taking the girl with him, approached Arcanānas, and after clasping his feet, standing bent forward with folded hands,

दार्भ hrfk, दाश्यं b, दाल्भ्य s, दातुम ns.—स्थित: hdm¹r, स्थिता Bnss.—The end of the varga is here marked by 98 in bfk, not in hdm¹.

15. Story of Śyāvāśva (concluded).

77. he announced his name (saying), 'I am Rathavīti, son of Darbha: inasmuch as I refused you formerly when you desired an alliance with me,

संगतिम् hm¹rs, संयोगम् bfkns.—प्रत्याचित्रं यत् s, प्रत्याचित्रं यत् hd, प्रत्याचित्रं यत् m¹bfk, प्रत्याचित्रीय four Ṣaḍguruśisya MSS., प्रत्याचित्रिपत् two Ṣaḍguruśisya MSS.

78. forgive me for that. I pay homage to you; and do not, adorable one, be wroth with me. You are the son of a seer, a seer yourself, you are, adorable one, the father of a seer.

मा च मे hm¹rks, म वै मे b, मे मा सा ns.— क्रुधः Bşs, क्रुडः n, क्रुधाः hm¹r.— स्वयमृषः hm¹rnss, स्वयं चर्षः kr²r⁵r⁷, स्वयं चर्षः f, स्वयं वर्षः b.—भगवत्रृषः hm¹rs, भगवन्रषः fkn, भगवान्रषः hs.

79. Come, accept this (girl) as a daughter-in-law.' So said the king, and himself honouring him with water to wash his feet $(p\bar{a}dya)$, with the water of hospitality (arghya) and with a mixture of honey $(madhuparka)^a$,

सुषामिष्टेवम् hrs, सुषामिष्टेवम् ns, सुषा तेऽस्विति B.—पूजयिला खयं hdm¹, पूजियलाथ तं bfkr, चार्चनाना खयं r¹ r⁴ r⁶.

- ^a 79^{cd} appears in a modified form in Sadgurusisya: the better reading there is pādyārghyamadhuparkam (instead of pādyārghyam madhuparkam) because pādya and arghya are different honorific gifts; cp. AGS. i. 24. 7: vistaraḥ, pādyam, arghyam, ācamanīyaṃ, madhuparko, gauḥ.
- 80, 81. and giving him a hundred white $(sukla)^n$ steeds, he dismissed him to his home. And the seer, on his part, having praised Śaśīyasī, and Taranta, and king Purumīļha with the six (stanzas) 'May she gain' (sanat: v. 61. 5-10), departed to his abode.

Now the following eleven b (hymns beginning) 'With law' (rtena: v. 62-72) are addressed to Mitra-Varuna.

युज्ञम् hdrks, युज्ञम् b, युन्वाम् f.— अनुजन्ने hm¹r, सोऽनुजन्ने b, सोऽनुजन्ने k, सेऽनुजन्ने b, सोऽनुजन्ने k, सेऽनुजन्ने b, सोऽनुजन्ने b, सोऽनुजन्ने k, सेऽनुजन्ने b, सोऽनुजन्ने b, सोऽनुजन्ने k, सेऽनुजन्ने b, सोऽनुजन्ने k, सेऽनुजन्ने b, सोऽनुजन्ने b, सोऽनुजन्ने k, सोऽनुजन्ने b, स

* Sieg, p. 54, note 5, wishes to read śułkam for śułkam, but there seems to me to be no necessity for the correction: śułka is quite appropriate as an attribute of horses (=Vedie śułka, which one MS. has); while there is no reason why a familiar word like śułka should have been changed to śułka.

* Cp. Sarvānukramaṇ on RV. v. 62: maitrāvaruṇaṇ vai tat (vai=5, tat=6).

16. RV. v. 73-78. Story of Saptavadhri.

82. There are six (hymns) addressed to the Asvins (v. 73-78). There is (here) a mystic (upanisat) praise consisting of five a stanzas (v. 78. 5-9) with a view to childbirth.

गर्भार्थं hd, गर्भार्था fbkr.—पञ्चर्चां hm^1r^3 , पञ्चर्जू fr, पञ्चर्ज् bk.

¹⁶ Cp. Sarvānukramaņi: antyāh pañca garbhasrāviny upaniṣat. Ṣaḍguruśiṣya, with reference to this, remarks (p. 122) that upaniṣat is used in the singular because the five stanzas are specified as an aggregate (pañcarcasamudāyopudiṣṭatvāt). According to Sāyaṇa the last three stanzas only (7-9) are garbhasrāviny upaniṣat. Aufrecht, in his abstract of the Sarvānukramaṇi, has '5-7': this should be corrected to '5-9.'

82^{cd}-84. There is a sacred tradition (śruti) that the secra after incurring seven failures (aparādhān) b was appointed c (again) by (king) Aśvamedha of the race of Bharata, his wedlock being childless. On the eighth failure, however, the king casting him, in a trough (made) of a tree (vṛkṣadroṇī)^d, into a chasm (ṛbīsa)^c kept him down (in it) when he leapt up at night. (Then) the seer praised the Lords of Light (śubhaspatī) with the hymn 'Ye Aśvins' (aśvinau: v. 78).

 82^{cd} . सप्त कलापराधान्ते $r^1r^4r^6$, सप्तकलोऽपराधान्ते hdm^1r^3 , सप्तकलोऽपराधि तु r, सप्तकलोऽपराधि तु r, सप्तकलोऽपरादि तु b, सप्तकलोऽपरादि तु fk. — 8_3 . ऋषिः कतो r, ऋषिं कला hdm^1 , ऋषिं कला r^3 , ऋषिस्ततो fkr^5r^7 , ऋषिस्ताता॰ b. — वै श्रुतिः hdr, नः श्रुतम् $bfkr^5r^7$. — तमष्टमे A, ततोऽष्टमे r, ततो चमे b, तताश्मे f, तताश्म k. — 8_4 . ऋवीसे ना r^4r^6 , ऋषीसे ह b, ऋषोत्से ह fk, ऋषोन्से ह r^5r^7 , ऋषिं से ह hr, ऋषिं सेह d, ऋषिं चेह m^1 . — स्तर्ने hm^1rfk , स्वितं b, राजी (राजी) $r^1r^4r^6$. — न्यधारयत् bfkr, न्यधावयत् Δ .

- That is, Saptavadhri, the seer of RV. v. 78.

 b This being an explanation of the seer's name, Sapta-vadhri, as 'seven times impotent.'

 c That is, commissioned according to the custom of niyoga; the verb kr being used as above in iv. 110 ($putri-k\bar{u}m$ kr).

 d This is an attempt to explain the situation in RV. v. 78. 5, 6, where the Asvins are described as releasing Saptavadhri by rending a tree (vrksa).

 This word occurs in the preceding stanza (v. 78. 4), where the Asvins come to the rescue of Atri in a chasm ($rb\bar{v}sa$).
- 85, 86. They, raising him out of that (chasm), made him productive again. The triplet 'Like the wind' (yathā vātaḥ: v. 78. 7-9) is with a view to a child (garbha) for himself who like a child (in the womb) slept (in the tree)^a; but the other two stanzas^b are to be known as for the Aśvins^c.
- B This is also recognized (drstam) as a consecrating prayer for children issuing from the womb $(sravat\bar{a}m)^d$.
- 85. समुद्धृत्य hm^1bk , समुद्धृत्य f, समुद्ध्य r.—gचः स्वस्थित m^1 , gच स्वस्थित hd, विच-स्वस्थित hd, चिच-स्वस्थित fk, चिच-स्वस्थित r^5r^7 .— गर्भार्थ hdm^1 , गर्भार्थ $bfkr^6r^7$.— स्वप-तस् hm^1rb , स्वपतस् r^5r^7 , स्वपतस् f, तपतस् k.—86. ज्ञिये व्यथिश्यामितरे ऋची hm^1r , ज्ञियाविश्वश्यामितरी द्वृची B.— 86^{cd} = viii. 66^{ab} . This line is wanting in A, but is found in m^1 as well as B.— The end of the varga is here marked by 9ξ in bfk, not in m^1 or hd (as the line is wanting in these two MSS.).
- The versified story told by Sāyaṇa, in his introduction to RV. v. 78. 5, is different from the above. Here the seer is placed in a box at night by enemies and kept from intercourse with his wife, but is rescued from his confinement by the Aśvins.

 That is, v. 78. 5, 6, the first two of the five specified in 82.

 The Aśvins are invoked in these two stanzas.

 d Cp. Rgvidhāna, ii. 17. 1cd-4ab, quoted by Ṣaḍguruśisya, p. 123.

17. Deities of RV. v. 79-87. Khilas.

B 87. But it a may likewise (tadvat) be (regarded as) concerned with the evolution of becoming ($bh\bar{a}va-vrtta$) b, for it evidently has such a character: that it has this character ($r\bar{u}pa$) is evident from the two words afterbirth ($jar\bar{a}yu$) and embryo (garbha) d.

तद्दत्थात् m^1 , तत्तस्थात् b, तत्वस्था fk, तत्तस्थास् r. — जरायु॰ bm^1 , जरायु॰ fk, जरायुर् r. —This śloka is not found in A, but m^1 , as well as B, has it. — $87^b = iii$. 76^d ; iv. 18^b ; vi. 94^b ; viii. 62^d .

That is, this aggregate of five stanzas (tad in 86^d).

That is, it has also a more general sense; see bhāvavṛtta in the index of words.

Which occurs in RV. v. 78. 7.

88. The two (hymns) 'To great' (mahe: v. 79, 80) are addressed to Dawn; the two 'They yoke' (yuñjate: v. 81, 82) are addressed to Savitr. (In) 'Unto' (acha: v. 83) Parjanya is praised; but in 'Verily' (bat: v. 84) the Middle Earth a is praised.

ऋहिति वे A, ऋहा वद B.—विक्रिति त्वस्मिन् A, तु बिक्रत्येति B.—सुता B, तु वाक् A.

- ^a In Nirukta xi. 37 (on RV. v. 84. 1) Prthivî is one of the deities of the middle sphere (madhyasthānā striyaḥ: xi. 22-50); see Naighantuka v. 5.
- B 89. The (stanza) 'For us to-day, god Savitr' (adyā no deva savitaḥ: v. 82. 4) destroys evil dreams.
- 'Forth to the sovereign lord' (pra samrāje: v. 85) is addressed to Varuṇa. The following one 'O Indra-Agni' (indrāgnī: v. 86) is addressed to Indra-Agni.

इयं दु:स्वप्तनाशनी bf, °नाशिनी kr, हुचं दु:स्वप्तप्रशासनम् m¹.— °राजे इंद्रा° hdb, °भाज इंद्रा° fk, °राजे घट्सम् r.— इन्द्राग्येन्द्रा° hm¹ B, घट्समेन्द्रा° r.— °यमुत्तरम् hm¹r, °पमुच्यते r² r⁵ r³, °ग्न्युमच्यते f, °ग्न्यमुच्यते k, °प्र उच्यते b.— 89ab is not found in A, but m¹, as well as B, has it.

- 90. The following hymn 'Forth' (pra: v. 87), the last (of the Mandala), is addressed to the Maruts while making incidental mention of Viṣṇu (viṣnu-nyaṅga).
- B It is called Evayāmarut^a, being the antecedent (prati- $p\bar{u}rvaka$)^b in the (case of the) Indra hymn 'As Heaven' (dyaur na: vi. 20).

विष्णुं न्यङ्गं hrfk, विष्णुन्यगं d, विष्णुं नंगं m^1 , विष्णुन्यंङ्ग b. — उत्तमम् hr^2 , उत्तरम् dbfkr. — निद्धे fb, निद्धे k, निन्धे r. — go^{cd} is not found in A or m^1 .

- ^a Because this word is the refrain in the second pada of every stanza of the hymn. ^b That is, the hymn for which another may be substituted. That this must be the meaning of the word (which has not been noted elsewhere) appears from AB. vi. 30. 15 and the comment, on that passage, of Sāyaṇa, who remarks that, at the midday libation, instead of the Evayāmarut hymn an Indra hymn, 'dyaur na' (vi. 20), which makes mention of Viṣṇu-nyaṅga), should be substituted.
- 91. But the hymn of Fortune $(śr\bar{\imath}s\bar{\iota}kta)^a$ is a benediction: the following six^b are connected with fortune and sons c. Or that (hymn) may be (regarded as) meant to banish ill-luck. Agni is incidentally praised (nipātabhāj) in it.

॰वादसु hm^1r , ॰वादो स्थात् hkr^2 , ॰वादो स्था f, ॰वादास्य r^5r^7 . — श्रीपुवाणां Abf, श्री: पुवाणां r^5r^7 , स्त्रीपुवाणां $kr^{(2)}$. — षट् $bfkr^5r^7r^1r^4r^6$, तु hdr. — तत्स्याद्या॰ hm^1r , तस्त्राद्या॰ $r^1r^4r^6$, स्त्राद्या॰ $bfkr^2$, (no तत्). — ॰ ल स्म्यपनुदम् hm^1r , ॰ ल स्म्यपनिनोद्दे $r^1r^4r^6$, ॰ ल स्म्यपनिनोद्दे bf, स्त्रीं पतेनोद्दे kr^2 , ॰ ल स्म्यपनिनोद्दे r^5r^7 . — तच A, त्वच B. — The end of the varga is here marked by a in $bfkm^1$, not in hd.

^a This khila after RV. v. 87 is printed by Aufrecht, RV.² p. 676, where it has twenty-three stanzas, and by Max Müller, RV.2 vol. iv, pp. 523-528, where it has twentynine stanzas, the first fifteen with a commentary. In Rgvidhana ii. 18. 1 it is stated to consist of fifteen stanzas (the śloka in which this is stated reappears in the khila itself, sixteen in Max Müller, twenty-two in Aufrecht); this statement is confirmed by the text of the hymn in the Kashmir MS. collection of khilas (ii. 6-8), which has only fifteen stanzas, agreeing with the first fifteen in Aufrecht and Max Müller. Cp. Meyer, Rgvidhana, b This must refer to the six khilas which follow the śrisūkta in the Kashmir MS. of the khilas, viz. (1) ya ānandam samāvišat (four stanzas), (2) ciklīto yasya nāma (five stanzas), (3) mayi śleso mā vadhīh (five stanzas), (4) sam sravantu marutah (five stanzas), (5) ā te garbho yonim (seven stanzas), (6) agnir etu prathamo devatānām (five stanzas). The next khila in the collection is that which comes after RV. vi. 45 (=viii in Aufrecht), beginning cakşus ca. ^o The last three of these six khilas are mentioned in the next sloka (92), sam sravantu being charms for the prosperity of cattle, ā te and agnih for the d Under the name of Jatavedas. attainment of sons.

18. The Khilas of Prajavat and Jivaputra. Employment of formulas.

92. Or a the two (hymns of) Prajāvat b and Jīvaputra c (may be) used together as praise (saṃstutau) in the ceremony of pregnancy (garbhakarman). (In the hymn) 'Flow together' (saṃ sravanti) d various kinds of females having milk are praised together.

प्रजावज्ञीवपुनौ hdm¹, प्रजावज्ञीवपुनो r¹r³r⁴r⁶bfkr², प्रजावान् जीवपुनो r, प्रजान् वान् जीवपुनो r⁵. °पुनो I believe to be due to a misunderstanding of the following वा. I have decided on the dual because of संसुतौ at the end of the line, and because AGS. i. 13. 6 has the dual.—पर्याखन्यः r, पर्याखन्य b, पश्चिन्य fk, राष्ट्राश्चिन्यः hm¹r³r².— संस्रवन्तीति hdm¹rf, संश्चवंतीति k, संश्चवतीति b.—92^{cd}-102 are omitted in r¹r⁴r⁶.

a That is, they may have this special application; cp. AGS. i. 13. 6: prajāvajjīvaputrābhyām haike; cp. Stenzler's note, p. 34; Meyer, Rgvidhāna, p. xxv. b This
khila, called by the name of its author, has seven stanzas in the Kashmir MS., and is
there described thus in the Λnukramanī: 'ā te,' sapta, prajāvān, garbhārthāśīstutiḥ. Its
first stanza is quoted by Stenzler in his critical notes, AGS., p. 48.
C This khila,
also called after its author, coming immediately after that of Prajāvat in the Kashmir MS.,

has five stanzas, and is thus described in the Anukramanī: 'agnih,' pañca, jīvaputra, āgnivāruņam. The first stanza is quoted by Stenzler, critical notes, p. 48; and the first two are quoted in Pāraskara GS. i. 5. 11. The first is almost identical with AV. iii. 23. 2. Cp. Meyer, Rgvidhāna, p. xxi; Indische Studien, v. 315.

d As all the MSS. agree in reading sam sravanti iti, this may be a various reading of the pratīka, and not a corruption of sam sravantv iti; but the Kashmir MS. of this khila has sam sravantu as well as AV. ii. 26. 3, which is almost identical with this stanza. The five stanzas of this khila occur in AV. ii. 26. 1-5, the first three in a different order (2=AV. 1, 3=AV. 2).

93. In benedictions a, in (enumerations of) technical names, in leading ritual forms b, a deity is incidentally mentioned ($nip\bar{a}ta-bh\bar{a}j$). One familiar with formulas should here observe (it) carefully from the statement of its characteristic name (linga).

॰संस्थासु देवता $hm^1 b$, ॰संस्था तु देवता fkr^2 , ॰संस्थासु देवताः r.— ॰वाक्यात् m^1br , ॰वाक्या hdr^3fkr^2 .— 93^{ab} =iii. 82^{ab} .

- ^a Such as the śrīsūkta, in which Agni is incidental (see above, 91).

 ^b Cp. above, iii. 82.
- 94. (In the case) of the application of a formula and the formula (itself), the application is the more important. There should be careful observation of the rule (vidhi) regarding the two. The formulas should be (regarded as) making (only) statements (abhidhāyaka)^a.

मन्त्रयोगमन्त्रयोः br, मन्त्रप्रयोगमंत्रायाः fk, मन्त्रप्रयोगमन्त्राणां hdm^1r^3 .—॰धा-यकाः br, ॰धानकाः r^2 , ॰धा - काः f, ॰धानकाः k, ॰धानिकाः hdm^1r^3 .

- ^a That is, they merely contain statements about deities, but give no rule (vidhi) as to their employment (viniyoga), as the Brāhmaṇas and Sūtras do.
- 95. Hence (there may be) a disagreement of the formulas with the (application). But the words (pada) occurring in them (the formulas), which have a generally understood meaning $(sam-vij\tilde{n}\bar{a}na)$, may express what is secondary $(guna)^n$.

गुणाभिधायकानि r, गुणभिधायकानि b, गुणाभिधायनानि $\mathrm{hm}^1\mathrm{f.}$ — संविज्ञान॰ $\mathrm{hm}^1\mathrm{bf}$, सविज्ञान॰ r.— 95^{cd} is omitted in k.

^a For instance, Jātavedas might in a formula be generally understood to mean Agni, but the specific sense might be the primary one in the ritual. Cp. Nirukta vii. 13: yat tu saṃvijāāna-bhūtam syāt prādhānya-stuti.

96. The formulas being secondary and the rites primary, the deities may be primary or secondary a: this is (to be) understood.

प्रधानगुर्णभूताः खुर् r, प्रधानगुर्णभूता खुर् hdbf.—The end of the varga is here marked by 9 = in hbf, not in m¹dk.

a That is, according as they are applied in the ritual or are mentioned in the formulas.

19. Story of the birth of Bhrgu, Angiras and Atri.

97. Prajāpati^a, desirous of offspring, offered a sessional sacrifice (sattra) lasting three years, accompanied by the Sādhyas and the All-gods, we are told (iti).

सर्च MSS.—विश्वेदेवैः सहिति च ABn, विश्वेश्वेविति नः श्रुतम् Şadgurusisya.

- ^a The following story, as an introduction to RV. vi, is quoted in the Nītimañjarī (97-102) and by Ṣadguruśiṣya (97-101).
- 98. Thither came Vāc in bodily form to the ceremony of initiation. On seeing her there simultaneously Ka's (Prajāpati's) and Varuṇa's

जगाम भ्रोरिणी bns, ॰जगामाभ्रीरिणी hdm1rfk.

99. semen was effused. Vāyu scattered it in the fire at his will. Then from the flames Bhṛgu was born, (and) the seer Aṅgiras among the coals $(a \dot{n} g \bar{a} r a)^a$.

तद्वायुर् hdm¹ इ, तद्वायुर् b, तद्वाय्यम् f, दद्वाय्यम् kn, तद्वाथाम् r.—प्राखद् इ, प्रास्त hdm¹ rⁿn, प्राक्षं fkr², प्राय्तं b, प्रास्तं r.—र्चिश्यो hdm¹ rfk इ, र्चिश्यां b, र्विषो n.— सङ्गरिष्वङ्गिरा hdm¹ r³ इ (Nirukta iii. 17), अङ्गरिश्योऽङ्गिरा rn, अङ्गरिश्योगिरा b, सङ्गार्थागिरा kr², यंगार्खागिरा f.

- ^a Cp. Nirukta iii. 17 and AB. iii. 34. 1 (ye 'ngārā āsaņs te 'ngiraso 'bhavan).
- 100. Vāc, on seeing the two sons, herself being seen, said to Prajāpati: 'May a third seer also, in addition to these two, be (born) to me as a son.'

प्रजापति सुती s, प्रजापति सुती n, प्रजापति तु ती b, प्रजापतिसु ती hdm¹ rfk.— दृक्षा दृष्टा bfrn, दृष्टा दृष्ट s (two MSS.), दृक्षा तृष्टा s (one MS.), दृक्षा दृष्टा k, दृक्षा दृक्षा hdm¹.—भवेद hm¹ rbfkn, भवत्व s. 101. Prajāpati (thus) addressed, replied 'So be it' to Bhāratī (Vāc). Then the seer Atri was born, equal in splendour to Sun and Fire.

तथिखुक्तः hrbfkn, तथेखुक्ता m¹, तथेत्याह s.— प्रत्यभाषत bfkrn, भाषमाणां तु s, भाषमाणं तु hdm¹.—The end of the varga is here marked by **92** in m¹bfk, not in d.

Mandala vi.

20. Origin of Bharadvāja. Deities of RV. vi. 1-46.

102. Bṛhaspati was the son of the seer who was born from the coals (Angiras). Bṛhaspati's (son) Bharadvāja a, who is called Vidathin,

विद्योति m¹fbrbn, विद्यीति hdrk.

- ^a As the account of the sixth Mandala really begins with the mention of its seer, we have here no exception to the rule that the beginning of a Mandala coincides with the beginning of a varga in the BD.
- 103, and who was a preceptor among the Maruts, was (thus) the grandson of Angiras. Now this sixth Mandala is stated to be his and his sons' a.

महत्स्वासीट् r, महत्स्वासीर् b, महत्सित fk, महत्स्वित hd, महत्वित m¹.—गुहर्यय r, गुरोर्यय hdm¹, गुहर्यस्य fbk, गुरोर्यस्य r² r³, भुवन्यस्य r¹ r⁴ r⁶.— सपुवस्य तु तस्रेट् fbkr, ससपुवस्य तस्रीतन् A.

- a Bharadvāja is the seer of the great majority of the hymns of Mandala vi; a few hymns are also attributed to six seers with the patronymic Bhāradvāja.
- 104. In it there are thirteen hymns addressed to Agni (beginning) 'Thou, O Agni' (traṃ hy agne: vi. 1-6, 10-16), while there are three (beginning) 'The head' (mūrdhānam: vi. 7-9) to Agni Vaiśvānara.
- 105. After this (i.e. vi. 16) there are here exactly twenty-nine (hymns)^a addressed to Indra (beginning) 'Drink' (piba: vi. 17. 1). The two gods who (occur) in the (stanza) 'O Agni, he dwells' (agne sa kṣeṣat: vi. 3. 1) are incidentally mentioned (nipātita).

एकान्नचिंश्देवाच ${
m r}^5$, एकाप्पचिंश्देवाच ${
m b}$, एकाप्पचिंश्देवाच ${
m fk}\,{
m r}^2$, एकान्नविंश्तिर्थैव ${
m hdr}$, एकोनविंश्तिर्थेव ${
m m}^1$.—देवौ यौ ${
m A}$, दौ देवौ ${
m B}$.

- This makes vi. 46 the last of the Indra hymns (allowing for vi. 28 as gavām stuti), thus leaving the deity (Indra) of the greater part of vi. 47 unspecified. It would therefore have been more correct to say thirty instead of twenty-nine.
- 106. But these two stanzas 'Bring to aid' (protaye: vi. 21. 9), 'Now my' ($n\bar{u}$ me: vi. 21. 11)^a are traditionally held to be addressed to the All-gods. The hymn 'Hither' (\bar{u} : vi. 28) is (in) praise of cows, the second stanza (vi. 28. 2) and the last verse (vi. 28. 8^a) being addressed to Indra ^b.

नू में hdr, न म m¹r¹r⁴r⁶, न म b, च म f, त म k.—सृते br⁵, सृतौ fk, तु ते hm¹r.—
106^{cd} is omitted in fk.—The end of the varga is here marked by **२0** in b, not in hdm¹fk.

a 106^{ab} is quoted by Sāyaṇa on RV. vi. 24. 5 in the following form: protage 'nyad iti tv ete vaiśvadevyāv reau smṛte: that is, the stanza anyad (vi. 24. 5), not nū me (vi. 21. 11), is stated to be addressed to the All-gods. There is nothing in the MSS. of the BD. to support this reading, while the Sarvānukramaṇī on RV. vi. 21 makes the express statement navamyehādaśyau vaiśvadevyau, saying nothing about vi. 24. 5.

b Cp. Sarvānukramaṇī: dvitīyaindrī vāantyaś ca pādaḥ.

21. Deities of RV. vi. 37, 44, 45, 47.

107. In the (stanza) 'Bringing hither' (āsasrāṇāsaḥ: vi. 37. 3) Vāyu and Indra are praised together a.

B Or else Indra is here predominantly praised, while Vāyu is incidental $(nip\bar{a}tabh\bar{a}j)$.

वायुरिन्द्र संसुती hm^1r , रन्द्रवायू सह सुती br^5r^7 .—107 ab omitted in k.—वाच br, चान m^1f , omitted in k.—107 cd is found in B and m^1 only.

a There is no reference to this stanza in the Sarvānukramaņī.

B 108. The triplet 'This god' (ayam devah: vi. 44. 22-24), which is addressed to Soma, some say is addressed to Indra^a.

But the triplet 'Above' (adhi: 31-33) of the (hymn) 'Who brought' (ya ānayat: vi. 45)^b is (in) praise of Bṛbu c.

 108^{ab} is found in B and m¹ only.—य आनयदित लख A, ग्रिरं चनुरित्यसां $m^1 r b f k$ (चन् t b, वन् t fk).— तृची ऽधीति बृबुसुतिः t कार् प्रीतं बृबोः सुतिः t, चिने वीति प्रवास्तुतिः t, तृचे ताति बुवास्तुतिः t, चिने तात चवास्तुतिः t.

^a The Sarvānukramanī makes no mention of this triplet.

b The reading of B (śarīraṃ cakṣur ity asyāṃ, tṛce 'dhīti bṛbustutiḥ) would mean: 'The body (is praised) in II.

the stanza "The eye" (cakşuh), in the triplet "above" (adhi) there is praise of Bṛbu.' Cakṣuh is the pratīka of the khila which precedes RV. vi. 45. In Aufrecht's RV. (p. 676 f.) it contains three stanzas. But in the Kashmir collection of khilas (ii. 15) it has only one stanza (identical with the first in Aufrecht), followed by the words ya $\bar{a}nayat$ $par\bar{a}vatah$ (the pratīka of RV. vi. 45); and in the Anukramanī at the beginning of Adhyāya ii it is described with the words: cakṣur, $ak\bar{a}$ (= $ck\bar{a}$), $\bar{a}tmastutih$.

Cp. Sarvānukramanī: trce 'ntye bṛbus $takṣ\bar{a}$ daivatam.

109. And Śamyu^a praises his father in the last verse (pada) of the triplet. The five stanzas (beginning) 'Sweet, indeed, is this' (svāduṣ kilāyam: vi. 47. 1-5) which follow (the Indra hymns)^b are addressed to Soma^c.

पितरं kr, पितर् hb, पितरः d.—ग्रंयुय hm¹r, मंपुलु b, वांयलु fk.—तृचस्थान्धे m¹, तृचस्थाने hdr, सूक्तस्थाने B.—स्वकत् B, स्वयम् hdm¹r.—°ित तु सीम्यः पञ्चर्च उत्तरः hdr¹r³r³r6m¹, °िखेताः पञ्चर्चः सीम्य एव वा bfkr.

- The seer of RV. vi. 44-46, 48: there is nothing in the last pada of 45 to indicate that Samyu's father is praised. Sadgurusisya, however, remarks that according to a Vedic authority Brbu was a relative (bandhu) of Samyu.

 That is, the group of Indra hymns ending with vi. 46; cp. above, v. 105.

 The reading of A agrees in matter with the Sarvānukramaṇī, which makes no mention of Indra as an alternative deity for 47. 1-5; on the other hand the wording of B (etāḥ pañcaṛcaḥ saumyaḥ) agrees more closely with that of the Sarvānukramaṇī: pañcaṇdau saumyaḥ.
- B 110. Or else Indra is here predominantly praised, while Soma is incidental; for in the Aitareya (Brāhmaṇa)^a they are stated to be Anupānīyā stanzas addressed to Indra.
- ा10^{ab} is nearly identical with 107^{cd}. इन्द्रखेन्द्रो b, इद्रखेद्रा f, इन्द्रखेन्द्रा k, इन्द्रखेन्द्रा e, इन्द्रखेन्द्रा fk, निपातनि m¹, निपातोऽयं r.—श्रूयने b, सूयने m¹fkr.—110 is found in B and m¹ only.
- ^a In AB. iii. 38. 1 it is stated that the four stanzas RV. vi. 47. 1-4 are to be repeated as anupānīyā stanzas to Indra: svāduş kilāyam madhumāň utāyam itīndrasyaindrīr anupānīyāh samsati.
- 111. (In) 'Destitute of pasture' ($agavy\bar{u}ti$: vi. 47. 20) one verse ($p\bar{u}da$) praises the Gods, the next one (the second) the Earth , the third Brhaspati, the last verse (pada) Indra.

तृतीयजु लिन्द्रम् hm¹r¹r⁵r7, तृतीयोऽसौदिन्द्रम् bfk, तृतीयोऽसौत्विन्द्रम् r.—The end of the vargu is here marked by २१ in bfm¹, not in hdk.

a 111^{ab} is quoted by Ṣadguruśiṣya on RV. vi. 47. b The reading tṛtīyas tu tv indram furnishes a clear case of a particle inserted to avoid the hiatus.

22. Deities of RV. vi. 47 (continued) and vi. 48.

112. The (verse) which follows, 'O Lord of Wood, be firm in body' (vanaspate vīḍvaṅgaḥ: vi. 47. 26^a), the teachers state to be evolutionary (bhāvavṛtta). But the (whole) three stanzas (26-28) relate to the stroking of the car^a, while the three here (beginning) 'Forth' (upa: 29-31) are (in) praise of the Drum.

परं यत्तद् hdm¹, पदं यत्त b, पदं यत्ततद् f, पदं यत k.— ऋचसु तिस्रसु hdm¹, ऋचस्य तिस्र b, ऋत्वस्य तिस्रो fk.—With 112 begins a lacuna of fifteen ślokas (112-126) in R; cp. Sieg, Sagenstoffe, p. 39.

^a See AB. vii. 9. 2; AGS. ii. 6. 5; Sadgurusisya on RV. vi. 47.

113. And the hemistich 'Together, winged with steeds' (sam aśvaparṇāḥ: vi. 47. 31°d) is addressed to Indra a. The ten (stanzas) at the beginning of the Tṛṇapāṇi hymn b (vi. 48. 1–10) are to Agni; the following triplet (11–13) in (this) hymn to Pṛśni is addressed to the Maruts, and, again, the following couplet (14, 15) is addressed to the All-gods.

The text of 113^{cd} and 114 follows the reading of bfk owing to the confusion and corruption of these six padas in hd and m¹:

- 113°. त्युचः परो b, त्वचः ॥ पुरो fk.—मार्तः bfk.—पृश्चिसूते b, पूश्चिसूते f, पूष्णि-सूते k.—In hdm¹ the whole pāda reads आदित्यो वा मर्तः पृश्चिसूते । आदित्यो वा being taken from 114°.
- 113^d . हुचः परो b, हुचा परो fk.—वैश्वदेव fb, वैश्वदेवं k.—In h $\,\mathrm{dm^1}$ this pāda reads प्रगाथस्वत्र बक्रदैवतोऽन्यः ॥
- ^a There is no statement as to the deity of vi. 47. 6-19 and 21; cp. above, 105; on 22 ff. see below, v. 140.

 ^b Cp. Saryānukramaņī: tṛṇapāṇikaṃ pṛśnisūktam; see Ṣaḍguruśiṣya on RV. v. 49 and vi. 48.
- 114. Or it may be addressed to the Adityas or to the Maruts a. The four (stanzas) 'To me, O Püṣan' (ā mā Pāṣan: vi. 48. 16-19) one should know to be addressed to Pūṣan, (and) the following couplet there (20, 21) to be addressed to the Maruts; the last

(stanza) is a celebration of Heaven and Earth or is (meant) for Pṛśni (22)^b.

- 114^a . वा खाद् fb, वा सा k.—This pāda in hdm¹ reads आ मा पूर्षतिति पौष्ण-सतसस् = 114^b .
- 114^b. त्रा मी पूर्वनिति पौष्णाश्चतस्रः b, त्रा मी पूर्वनिति पाष्णाश्च तिस्रः f, च मी पूर्वनि स्ति पाष्णाश्च तिस्रः k.—This pāda in hdm¹ reads तृचः परी मार्तः पृश्चिमूके = 113^c.
- 114^c . तत्र विद्यात् fk, तत्र विद्याद् b.—This pada in hdm^1 reads आदिखो वा मारत एव वा स्थाद= 114^a .
- 114^d. श्रायर्युभ्वोः b, युत्युत्वोः f, युत्वोः k.—कीर्त्तना पृश्रये च b, कीर्तिता प्रियाश्रये च fk.—This pāda in hdm¹ reads श्रान्या युभूकीर्तितं पृश्रयो वा॥—The end of the varga is here marked by २२ in hbf, not in dk.
- ^a The only practical difference between the above statements about RV. vi. 48 and those of the Sarvānukramaṇī is, that in the latter the option of $lingoktadevat\bar{a}$ includes stanza 13. Cp. BD. vol. i, p. 122, note ⁶. Sadgurušisya remarks that the wording of the Sarvānukramaṇī, $anty\bar{a}$ $dy\bar{a}v\bar{a}bh\bar{u}myor$ $v\bar{a}$ priner $v\bar{a}$, is in imitation of another Anukramaṇī: the passage meant is undoubtedly BD. v. 114^d .

23. Deities of RV. vi. 49-62.

- 115, 116. After this the four hymns 'I praise' (stuse: vi. 49-52) are addressed to the All-gods: the second stanza (vi. 49. 2) (praises) Agni, and the fourth (49. 4) Vāyu, then the fifth (49. 5) the Aśvins, but the seventh here praises Vāc (49. 7), the eighth 49. 8) Pūṣan, the ninth (49. 9) Tvaṣṭṛ, 'Of the world' (bhuvanasya: 49. 10) Rudra, then the two next (49. 11, 12)
- 116. स्तौत्यृक् तु सप्तमी hdm¹, स्तौत्यृक् यावीरवी b, स्तोत्पृथक्यावीरवी fk (i.e. पावी-रवी, the pratika of vi. 49. 7).—°थोत्तरे hdm¹b, °थोत्तरम् k.
- 117. are addressed to the Maruts. (With) 'Who the spaces' (yo rajāṃsi: vi. 49. 13) the seer sang of Viṣṇu a. 'To' (abhi: vi. 50. 6) is addressed to Indra, and 'Hither' (ā: vi. 50. 8) is addressed to Savitṛ. There is one to Rodasī (vi. 50. 5), one to Agni (9) as well as to the Aśvins (10) (beginning) 'And' (uta: vi. 50. 9, 10)b.

मार्खी यो hd, मार्खो यो b, मार्खो यौ m¹, मार्खौ (no यो) fk.—जगावृषिः hd, जागावृषिः m¹, जगावृषिः b, जगावृषिः f, जगावृषिः k.— अर्थेन्द्रोति स b, अर्थोद्धाति च

f, श्वस्यौद्राचि च k, श्वहिर्बुध्यार्क hm^1 , श्वहिर्बुर्क d.— रौदस्यापेयुताश्वनी b, रोदस्यापेयुताश्वनी hdf, रोदस्यायेयुताश्वनी k, रोदस्यापियुताश्वनी m^1 .

- a The Sarvānukramaņī gives no details for RV. vi. 49. b Both 50. 9 and 50. 10 begin with uta, and as this pratīka is placed between āgneyī and āśvinī, it is probably meant—dehalī-dīpa-nyāyena—to refer to both. There is no pratīka for raudasī, for as Rodasī is mentioned in 5 only, the pratīka ā (50. 4, 8 as well as 6) would not apply here also.—The Sarvānukramaṇī gives no details for vi. 50.
- 118. 'O Agni and Parjanya' (agnīparjanyau: vi. 52. 16) a belongs to those two (deities), and the two stanzas 'Upward that' (ud u tyat: vi. 51. 1, 2) are addressed to Sūrya b. 'We' (vayam: vi. 53-56) are four (hymns) addressed to Pūṣan, as well as that which comes next (58) to the one addressed to Indra-Pūṣan (57).

सौयों चोदु त्यद् b, सौयों चोदु त्यद् fk, मूर्यों वोदु त्यद् hdm¹.—The text of 118^{cd} follows hdm¹, वयं पौष्णानि यं चें नेंद्रात्पींष्णमुपोत्तमं b, वयं भेष्ण्योत्तमं f, वयं भूष्णम-योत्तमौ k, that is, probably = वयं पौष्णानि पञ्चि[ता]नेंद्रापौष्णमुपोत्तमम्, 'there are five hymns to Pūṣan beginning "Wo" (53-56, 58), the last but, one (57) being addressed to Indra-Pūṣan.' The meaning would thus be identical with that of the reading in the text.

- ^a No reference to this stanza in the Sarvānukramaņī.

 b The Sarvānukramaņī makes no mention of these two stanzas.
- B 119. Some declare the stanza 'Him chief of charioteers, with braided hair' (rathītamaṃ kapardinam: vi. 55. 2) to be addressed to Rudra.

'I will now proclaim' (pra nu vocā: vi. 59, 60) are two hymns addressed to Indra-Agni. 'She' (iyam: vi. 61) is addressed to Sarasvatī; 'I praise' (stuṣc: vi. 62)

119^{ab} is found in bfkm¹, not in hd.—ऐन्हाये bfk, ऐन्हायं hd.—The end of the varga is here marked by २३ in bfh, not in dk.

24. Deities of RV. vi. 63-74. The seven treasures.

120. are two (62, 63) addressed to the Aśvins; and there are also two (64, 65) addressed to Dawn; but 'A wonder now' (vapur nu: vi. 66) is addressed to the Maruts.

B And in the couplet 'Unto' $(upa)^a$ he (the seer) proclaims adoration of the Asvins.

चौषसे चैव hdm¹, वौषसे वोवोद b, वोषसे वोचेंद्र fk.—तु वपुर्न्वित hd, तु पुनन्वित m¹, स्वाद्यपुन्न तत् b, स्वद्यपुन तत् f.—120^{cd} in bfk only.—श्विभ्यां fk, स्त्रिभ्यां b.—रार्बनं b, रार्बानं fk (cp. vii. 44).

^a There is no stanza beginning with upa in or near RV. vi. 66.

121. There is one to Mitra-Varuṇa, (viz.) 'Among all beings your' (viśveṣāṃ vaḥ satām: vi. 67). 'Obediently' (śruṣṭī: vi. 68) is addressed to Indra-Varuṇa; the following one, 'Together' (sam: vi. 69) is addressed to Indra-Viṣṇu.

समैन्द्राº hd, संसंद्रा॰ b, सं वामैद्रा॰ f.—पर्म hdm¹, ततः bfk.

122. Heaven and Earth (70), Savitr (71), Indra-Soma (72), Brhaspati (73) are respectively praised in the following hymns; (in) 'O Soma and Rudra' (somārudrā: vi. 74) those two (gods) are praised.

सवितेन्द्रासोमी hd, सवितेन्द्रासौमी m¹, सवितेतीन्द्रो सोमो bfk.— ती खुतौ b, ता खुतौ fk, संखुतौ hd m¹ (ep. 118^a).

B 123. Discus, car, jewel, wife, territory, horse, and elephant—these are the seven treasures of all emperors (cakravartin)^a.

सर्वेषां चक्रवर्त्तानाम् fk, सर्वेषां चक्रवर्तिनाम् m¹, पूर्श्वेषी चक्रवर्त्तानीम् b.—This śloka is found in bfkm¹, but not in hd, nor presumably in the other A MSS. (cp. above, 112, note).—The end of the varga is here marked by २४ in bfk.

a This sloka is meant to explain the expression sapta ratnā in RV. vi. 74. 1, and serves at the same time to introduce the story of the conqueror Abhyāvartin.

25. RV. vi. 75: Story of Abhyāvartin and Prastoka Sārnjaya.

124. Abhyāvartin Cāyamāna and Prastoka, son of Sṛñjaya b, having been conquered in fight by the Vārasikhas c, came to bharadvāja d.

सार्ज्ञयः $h\,m^1$, सर्ज्ञयः d, साञ्जयः f, श्वार्ज्ञयः h, याञ्जयः h, मार्ज्जयः h.— श्राजग्मतुर् hd m1 (this would make a $p\bar{n}$ da of nine syllables).— वार्शिखैर् hd m1, वार्शिशिर् hd m1, वार्शिशिर् hd m1, वार्शिशिर् hd m1, मिव fd hd m1, मिव fd hd m1, मिव fd hd m2, स्वि hd m3, स्वि hd m4, स्वि hd m5, स्वि hd m6, स्वि hd m7, स्वि hd m8, स्वि hd m9, स्व h0, स्व h0,

^a Cp. RV. vi. 27. 5, 8. ^b Cp. RV. vi. 27. 7; vi. 47. 22, 25. ^c This is the form of the name in RV. vi. 27. 45. ^d This varya (124-128) is quoted in the Nitimanjari on RV. vi. 27. 4.

125. Having approached and propitiated him and mentioning their names, the two said to him: 'O Brahman, know that we have been wanquished by the Vārasikhas in fight.

श्वभिगम्योचनुस्तौ hm^1k , श्रभिगम्य ततसी b.—तं hm^1b , तु fkn—प्रसादा॰ hm^1bfk , प्रणम्या॰ n.—वार्श्यिषुँर् n, चार्श्यिषुँर् b, वार्श्यिषुँर् fk, वार्श्यिषुँर् hdm^1 .

126. With you as our domestic priest we could conquer the warriors ($k\bar{s}atrabandh\bar{u}n$).' That is to be recognized as $k\bar{s}atra$ (warrior caste) which protects the everlasting brahma (priestly caste).

चनबन्धून् n, चनबन्धुं hdm1, चेनबन्धून् k, चेनबंधुन् f, चेनवन्तु b.

127. The seer saying 'yes' to them, addressed his son Pāyu: 'Make these two kings unassailable to their enemies.'

तौ तु $\mathrm{hdm^1}$, तु तौ bfkrn .—कुरुष्वेतौ $\mathrm{hdm^1n}$, कुरुष्वेतौ bfr , कुरुष्वेतौ k , कुरु

128. Saying 'yes' to his father, he consecrated their implements of war individually with the hymn 'Of a thunder cloud' (jīmūtasya: vi. 75).

जीमृतस्थिति bkrn, जीमृतस्थिव hdr³, जीमृतीयेन r¹ r⁴ r⁶.—पृथत्ति॰ hm¹r, पृथक् ते॰ fkn, पृथकि॰ b.—॰नान्वमन्त्रयत् brn, ॰नान्यमन्त्रयत् hd, ॰ना च मन्त्रयत् fk.—The end of the varya is here marked by २५ in bfk, not in hd.

26. Deities of RV. vi. 75 in detail.

129. The first (stanza) of this hymn praises the warrior in his coat of mail (1), the second is (in praise) of the bow a (2), the third consecrates the bowstring (3)^b.

धनुषञ्च Λ , धनु स्तीति B.—द्वितीया तु hm^1r , द्वितीया च bfk.— ॰मन्तिणी Afk, ॰मन्त्रणी b.

- ^a The genitive dhanuṣaḥ would here, as often in the BD., mean 'belongs to,' is connected with,' or it may possibly be governed by abhimantriṇī to be supplied from jyābhimantriṇī.

 ^b This varga (129-133) is quoted in the Nītimañjarī on RV. vi. 75. I.
- 130. The fourth stanza praises the ends of the bow (4), the fifth praises the quiver (5). With half of the sixth the charioteer, with the (other) half the reins are praised (6).

स्तौत्यृगार्त्री चतुर्थी A, स्तौति चार्त्री चतुर्थी Bn.—तु hdm¹, तुग् b, च r¹r³r⁴r⁶, चर्ग् fkrn.—सार्थि hdm¹rbfn, सार्थि k.—संसुताः hm¹r, तु सुताः bn, त सुताः k, त्त सुताः f.

131. The seventh praises the horses (7), the eighth the arsenal (8), the ninth the guards of the car (9), the tenth the deities of battle (10).

चर्यां जु hm¹r, अञ्चानत् b, चर्या दि.—स्तीति आ° rn, स्तीत्या hdm¹, स्तोत्या ofk.

132. The eleventh praises the arrow (11), the twelfth is a praise of the cuirass (12), the thirteenth praises the goad (13), the fourteenth the handguard (14).

इषुं चैकादशी hm1r3, इषुधिं चैकादशी r1r4r6, इषुमेकादशी bfkr.

133. In the first verse of the fifteenth (stanza) the poisoned arrow is praised (15^a), in the second (15^b) the iron-tipped (arrow), but in the following half (of the stanza) the missile of Varuṇa (15^a).

दिग्ध r, दिग्ध hdr^3 , दिख b, दिख f, विश्व k.—इषु: स्तृत: r, इषु स्तृत: hdr^3r^5k , इषु स्तृत: f, इष स्तृत: b.— अथोमुखी hm^1rb , ॰मुखो fk.— तु अधेंऽस्त्रं hdm^1r , त्थें सं b. लाई सं fk, अर्धर्च r^5 .—परे hdm^1bfkr^2 , पर्म r.—The end of the varga is here marked by २६ in m^1bf , by २६ in k, not at all in hd.

27. RV. vi. 75 (continued).

- 134, 135. In the sixteenth (stanza) of this hymn the arrow discharged from the bow is praised (16); in the seventeenth (there is praise) of the beginning of the fight (17), while the eighteenth is to be known as (in) praise of the mail of him who ties it on (badhyatah); the last (19) is (in) praise of him who is about to fight; and in the last verse (19^d) the seer utters prayers on his own behalf.
- 134. षोळाखां B, षोळाखां Λ .—युद्धादे: $h \, dm^1 \, r$, युद्धदेखां $r^1 \, r^4 \, r^6$, योद्धादे: r^5 , याद्धादे fk, योद्धादे b.— कवचस्य तु $h \, db$, केवचस्य तु fk, कवचस्य च r.— बध्यत: Λ , बद्धात m^1 , वन्तत b, वथता fk, बन्धनम् r.
- $_{135}$. खुतिब्त्तमा $\mathrm{Am^{1}}$, देव्युगुत्तमा r , दैिवगुत्तमा bf , दौविगुत्तमा k .— स्विष्ट् $\mathrm{m^{1}b}$ $\mathrm{fk\,r^{5}}$, ह्युषिर् $\mathrm{hd\,r}$.— आस्राव आसिषः $\mathrm{hd\,m^{1}\,r}$, आश्चिमात्मनः $\mathrm{bf\,k}$.

136. a Now the seer having with this hymn praised the implements of battle of these two (kings), sent them forth again against the Vārasikhas.

वारिश्रखान् bn, वारिश्रिखान् hd, वारिश्रिखां m^1 , (पुन) द्वारिश्रिपान् f, (पुनर) र्था-रिश्रपान् k.

^a This and the following two ślokas (136-138) are quoted in the Nītimañjarī on RV. vi. 27. 4.

B 137. With the four stanzas 'This here of thee' (etat tyat te: vi. 27. 4-7) Bharadvāja praised (Indra) from a desire of aiding the king (Cāyamāna). Pleased thereby the Fort-destroyer,

चतस्मी m¹bfkrn(aghm), च तिस्भी n(bc).— °काम्यया m¹bfkn, °काङ्क्या r.— मितृष्टाव m¹fkr (Sarvānukramaņī on vi. 75), पि तृष्टाव b, हि तृष्टाव n.— This and the following śloka are not found in A, but only in B and m¹.

B 138. the Lord of Śacī, coming to Abhyāvartin on the bank of the Haryupīyā river, slew them in company with Cāyamāna.

श्रमेत्य m¹bfkn, श्रासाद्य r.— हर्युपीया° f, हर्युपीपा° b, हर्खुपीया° r, हर्खुपीपा° k, पर्युपीया° m¹ (हर्यूपीया RV. vi. 27. 5). — जघानेनान् m¹rn(m), जिघानेनान् fk, जिघानेनां b, जघानेनां n.— क्वीपतिः bn, श्र्चीपतिः fkr.— The end of the varga is here marked by २७ in fk, by ९७ in b; in m¹ it is marked by २७, but at the end of 136 (after प्रति).

28. Story of Cayamana and Prastoka (concluded).

139. ^aNow these two, Abhyāvartin and Sārñjaya, having conquered the Vāraśikhas, gave manifold wealth to their preceptor Bharadvāja.

तौ तु Am¹, एवं Bn.—ततो Am¹fk, ताव् r, wanting in b.—भ्यावर्तिसार्झयौ hm¹r, भ्यावर्त्तिसार्झयौ b, भ्यावर्त्तिझससीयौ f, भ्यावर्त्तिनः श्रश्ली k, प्रस्तोकः श्लार्झयो मृधे n.—दद्तुर्विविधं वसु hm¹rbfk, विविधां दिचणां ददौ n.

- This and the following śloka are quoted in the Nītimañjarī on RV. vi. 47. 22.
- 140. Bharadvāja and Garga^a, being seen by Indra on the road, proclaimed that gift with the (stanzas)^b 'Two' (dvayān: vi. 27. 8) (and) 'Prastoka' (prastokah: vi. 47. 22).

दयान् Am¹, दी च B.—तद्वे A, तसी B.

- a Garga, son of Bharadvāja, is stated by the Sarvānukramanī to be the seer of RV. vi. 47, and Pāyu, son of Bharadvāja, of RV. vi. 75; agreeing with the Ārṣānukramaṇī, vi. 6, 8. b Though the number of stanzas is not mentioned, the plural ābhih, together with the contents of the passage in the RV., indicates that vi. 47. 22-25 (cp. Sarvānukramaṇī) are meant.
- B 141. The seer on his part praised the gift of that (Cāyamāna), himself proclaiming what had been given (by him) with the one stanza, 'Two, O Agni' (dvayān agne: vi. 27. 8).

This sloka is not found in A or m¹, but only in bfkr²r⁵r⁷: after it bfk repeat 140, thus making up five slokas for the varga.

142. The deities who in this hymn a are occasionally b $(prasang\bar{a}t)$ celebrated, Rāthītara regarded as hymn-owning $(s\bar{u}ktabh\bar{a}j)$ in praise $(stutau)^c$.

प्रसङ्गान्तिह m^1 , प्रसङ्गा त्विह Λ , प्रसङ्गानिह b, प्रसङ्गान्तिह f, प्रसंगानिह k, प्रसङ्गान्तिह f, प्रसंगानिह f, प्रसङ्गानिह f, प्रसङ्गानिह f, प्रसंगानिह f, प्रसङ्गानिह f, प्रसङ्गानिह f, प्रसंगानिह f, प्रसङ्गानिह f

^a That is, RV. vi. 75, as the one under discussion.

^b That is, Heaven and Earth, Pūṣan (10), Soma, Aditi (12), Parjanya (13), Brahmaṇaspati, Aditi (17), Soma, Varuṇa (18).

^c On a somewhat similar use of stutau cp. vi. 16 and viii. 100.

Mandala vii.

29. Pedigree of Vasistha. Kaśyapa's wives.

143. ^aThe son of Prajāpati was Marīci, Marīci's son was the sage Kaśyapa. He had thirteen divine wives, the daughters of Dakṣa:

मारीचः m^1rbn , मारीचिः hdfk.—मुनिः Λ , भवत् B.—जाया hm^1rbfk , जाता $r^1r^4r^6$.

- ^a The following passage (143-155) is quoted in the Nītimañjarī on RV. vii. 104. 16.
- B 144. Aditia, Diti, Danu, Kālā, Danāyu, Simhikā, Muni, Krodhā, Viśvā and Variṣṭhā, Surabhi and Vinatā,

दनुः काला r, दनुद्दाला m^1 , दनुष्ठाला f, दनुष्ठाला g, तुष्ठावला g, दनुष्ठी g, दनुष्ठी g, दनिया g).—सिंहिका मुनिः r, सिंहिकाविगी m^1kr^2n , सिंहिकाविगी f, सिंहिकावि g).— कोधावशा g, गोधा वृष्या g0, गोधा वृष्या g1, गोधा वृष्या g2, निर्मि g3, निर्मि g4, निर्मि g5, निर्मि g5, निर्मि g6, निर्मि g7, निर्मि g7, निर्मि g8, निर्मि g8, निर्मि g8, निर्मि g8, निर्मि g9, निर्

- m¹.— विनता m¹ bn, वितता fk.—This sloka and 145^{ab} are wanting in A, but they are found in B and m¹.
- a The names of the thirteen daughters of Daksa enumerated in 144 and 145 are the same as those given in Mahābhārata i. 2520, with the exception of Varisthā and Surabhi, instead of which Pradhā and Kapilā appear in the epic, where the corresponding passage reads as follows:

aditir ditir danuh kālā danāyuh simhikā tathā, krodhā pradhā ca visvā ca vinatā kapilā munih, kadrūs ca.

Thus the first line (excepting the last word) is identical in both, while the second and third begin with the same word. The question whether these three lines originally belonged to the text of the BD., or were interpolated from the Mahābhārata, is of critical importance. Without them the varga would have only three and a half ślokas. Cp. Muir, Original Sanskrit Texts, i. 122 and i. 116 f.

B 145. and Kadrū by name: (these) daughters he (Dakṣa) gave to Kaśyapa.

From them the Gods and Asuras, the Gandharvas, the Serpents, the Rākṣasas,

बद्भीवेति bm^1n , बद्भीवेति kr.— ॰सुराश्चिव hm^1r , ॰सुराः सिज्ञाः bn, ॰सुरा सिज्ञा fk.— r_{45} d = vii. 68 b .

146. Birds, Piśācas, and other classes (of beings) were produced. Now among these (daughters) the one goddess Aditi produced twelve sons.

देवी hm¹r, नाम fkn, नीम b.— द्वादगा Bn, दन्द्वग्रो A.

B 147. (These were) Bhaga, Aryaman, and Amśa, Mitra and Varuna, Dhātr and Vidhātr, and Vivasvat of great brilliance,

°र्यमांश्य r, °र्यमांस्य fk, °र्यमांश्य m¹bn.—This śloka is found in B and m¹ only.—The end of the varga is here marked by २0 in bfk, not in m¹ (nor in hd, as the śloka is wanting in these MSS.).

30. Story of Mitra-Varuna and Urvasī.

B 148. Tvaṣṭṛ, Pūṣan, and also Indra; the twelfth is called Viṣṇu. (Thus) that pair was born of her—Mitra and Varuṇa.

तिका से $h\,m^1$ r, जशांति $b\,r^5$, जशें $s\,w$ n, यशों $s\,w$ fk.— मित्रश्च वर्णश्च ह rn, मित्रश्च वर्णः सह $h\,d\,m^1$, मित्रश्च वर्णः सह f, मित्रश्च वर्णः सह k, मित्रणं वर्णे सह b, मित्रश्च वर्णस्थ च $r^1\,r^6$, वर्णः सह $r^2\,r^3$.

149. ^a Of these two Ādityas, when they saw the nymph Urvaśī at a sacrificial session, the semen was effused ^b. It fell into a jar containing water that stood overnight.

सचि ns, सचे ABm1. — तत्कुभे hr3r5r7ns, त: कुभे m1k, त कुभे f, तस्क्षे b, कुभे तु r. — न्यपत् e hm1rs, ह्यपत् fkr2r6r7n, वपत् e b.

- a The following passage (149-155^{ab}) is quoted by Sāyaṇa on RV. vii. 33. II (translated by Sieg, Sagenstoffe, p. 105 f.).

 b Cp. Nirukta v. 13: tasyā darśanān mitrāvaruṇayo retaś caskanda; also Sarvānukramaṇī i. 166: mitrāvaruṇayor dīkṣitayor urvaśīm apsarasaṃ dṛṣṭvā vāsatīvare kumbhe reto 'patat. Cp. above, v. 99.
- 150. Now at that same moment two vigorous ascetics, the seers Agastya a and Vasistha, there came into being.
 - ^a On the story of the birth of Agastya see Sieg, Sagenstoffe, pp. 105-108.
- B 151. Now the semen having fallen in various ways—in a jar, in water, on the ground—the sage Vasiṣṭha, best of seers, was produced on the ground a;

पतिते युक्रे m¹rfkn, पतितं रेतः bs.—क्लग्नेऽथ m¹bkr, कलग्ने च s.—संभूत ऋषि॰ m¹rs, संबभूवर्षि॰ n, स बभूवर्षि॰ bk, स भूवर्षि॰ f.—This sloka is found in B and m¹ only.

- ^a As this does not agree with 149 and 155, we probably have a later addition in these three lines (151, 152^{ab}).
- B 152. while Agastya was produced in the jar, (and) Matsyaa, of great brilliance, in the water.

Then Agastya, of great glory, arose being the length of a peg $(\$amy\bar{a})$.

महाद्युतिः brs, महामुनिः n, महः fk, भवसहान् m^1 .— महायशाः A, महातपाः Bns.— 152^{ab} is found in B and m^1 only.—The end of the varga is here marked by 30 in $h\,m^1$ fk, not in bd.

^a Cp. Sieg, Sagenstoffe, p. 106, note ².

31. Birth of Agastya and Vasistha.

153. Because he was meted with a measure, he is here called Mānya^a; or else (because) the seer was born from a jar ^b. For measurement is made with a jar also:

हि मीयते hm1rfks, महीयते b, (कुभे नावी)ह मीयते r1r4r6.—153cd is omitted in n.

- a In RV. vii. 33. 13 Māna appears to be a name of Agastya; cp. Sieg, Sagenstoffe, p. 106, note ⁸, and p. 108, top.

 b That is, Agastya was called Mānya either because he was samyāmātra or because he was produced from a jar which is used as a measure of capacity.
- \sim 154. by 'jar' (kumbha) the designation of a measure of capacity ($parim\bar{a}na$) is indicated.

Then, as the waters were being taken up (gṛhyamāṇa), Vasiṣṭha was (found) standing on a lotus (puṣkara)^a.

- ॰धानं तु hm^1rbfkn , ॰धानं च s.— लच्चते $br^1r^4r^6ns$, लचते fk, लच्चएम् hdr, (परिमाणं सु)लचणम् m^1 .
 - ^a This is analogous to the lotus of Brahmā.
- 155. There on every side the All-gods supported the lotus a. Arising out of that water he (Vasistha) then performed great austerity.

सर्वत्र पुष्करं तत्र Λm^1 , सर्वतः पुष्करं तत्र पुष्करं तञ्च b f k n, सर्वतः पुष्करं तं हि s.

- " Cp. RV. vii. 33. 11: viśve devāh puṣkare tvādadanta; explained by Yāska, Nirukta v. 14, with the words: sarve devāh puṣkare tvā adhārayanta; cp. Roth, Erläuterungen, p. 64.
- 156. His name arose, with reference to his virtue (guṇataḥ), from the root vas expressive of pre-eminence: for he once upon a time, by means of austerity, saw Indra who was invisible to (other) seers.

श्रीष्टाकर्मणः hm^1r , श्रीष्टाकर्मणः b, श्रीष्टाकर्मणा fr^5r^7 , श्रीष्टाकर्मणि k. — हीन्द्रं hm^1r , br^5r^7 , चन्द्रं fk.

- 157. The Lord of Bay Steeds (Indra) then proclaimed to him (that he should receive) shares in Soma.
- B For this appears from the Brāhmaṇa (passage) 'The seers (saw not) Indra' (ṛṣayo vā indram) a.

सोमभागांच्य Δm^1 , सोमभागांचातस् B.—त्राह्मणात्तिः m^1 r, त्राह्मणा ति g bfk.— 157^{cd} is found in B and m^1 only.—The end of the varya is here marked by 9 in m^1 b, by 90 in fk, not at all in hd (as the last line is wanting in these MSS.).

^a TS. iii. 5. 2¹: ṛṣayo vā indram pratyakṣam nāpaśyan; tam vasiṣṭhaḥ pratyakṣam apaśyat...tasmai etānt stomabhāgān abravīt.

32. Vasistha and his descendants. Deities of RV. vii. 1-32.

158. Vasiṣṭha and the Vasiṣṭhas thus (became) Brāhmans in the office of Brahman priest a, most worthy of fees in all rites at sacrifices.

वसिष्ठश्च वसिष्ठाश्च B, वसिष्ठाश्च वसिष्ठाश्च Am^1 .—ब्रह्मकर्मणि hm^1bfk , वै ततोऽभवन् r.—यश्चेषु hm^1r , याश्चेषु b, जातेषु fk.—द्शिणीयतमास्तथा Am^1 , द्शिणीयास्ततो भवत् fk, दाश्चणीयास्ततोऽभवन् r.

- * Cp. RV. vii. 33. 11: uta asi maitrāvaruņo vasisthaurvasyā brahman manaso 'dhi jātaḥ; TS. iii. 5. 2¹: tasmād vāsistho brahmā kāryaḥ.
- 159. Therefore one should honour with fees all such descendants of Vasiṣṭha who may at any time even to-day be present at a sacrificial assembly, so (says) a sacred text of the Bhāllavins.

येऽद्यापि ${\rm Am}^1$, श्रद्धापि ${\rm B.}$ —सदस्याः स्युसु ${\rm A}$, सदस्यास्त्विह ${\rm B.}$ —किहिचित् ${\rm Ab}$, कर्मणि ${\rm fkr.}$ —श्रहंयेद् ${\rm hdr}$, श्रहंये ${\rm m}^1$, पूजयेद् ${\rm B.}$ —भाक्षवेयी श्रुतिस्त्वयम् ${\rm Am}^1$, वृद्धर्थं भाक्षवी श्रुतिः ${\rm B.}$

160. Now the seer, the son of Mitra-Varuṇa (Vasiṣṭha), with the following sixteen a hymns (beginning) 'Agni' (agnim: vii. 1. 1) praised Agni; 'Enjoy our' (juṣasva naḥ: vii. 2) here are Āprī stanzas.

तुष्टावाप्रिम् hdm¹, तुष्टाब चाप्रिम् r, तुष्टाव वाप्रिम् bfk.—लप्रिम् hdm¹, no तु in bfkr (इत्यप्रिम्).—आप्रयस्त hdm¹r, ऋाप्रियस्त fk, ऋाप्रियस्य b.

- ^a That is, vii. 1-17, deducting vii. 2 as an Aprī hymn; on this method of stating the figures, cp. above, iv. 16; v. 12, 105 &c.
- 161. Then 'Forth to Agni' (prāgnaye: vii. 5), 'Forth of the sovereign lord' (pra samrājaḥ: vii. 6), the second 'Forth to Agni' (prāgnaye: vii. 13) which consists of three stanzas—these are addressed to Vaiśvānara. Then those which follow, (beginning) 'In thee, indeed' (tve ha: vii. 18), are addressed to Indra,
- 162. being fifteen hymns (vii. 18-32): praise of the Maruts is incidental (in them). In the (stanza) 'No one Sudās's' (nakiḥ sudāsaḥ: vii. 32. 10) the gift of Paijavana (Sudās)

The end of the varga is here marked by 32 in m1bfk, not in hd.

33. Deities of RV. vii. 33-38.

- 163. is proclaimed by Vasistha, as well as in the four a (stanzas) 'Two from the grandson' (dve naptuh: vii. 18. 22-25). 'Whiterobed' (śvityańcah: vii. 33) they pronounce to be a dialogue or a hymn addressed to Indra.
- चतुर्मिसु Λ , चतुर्च्चामः B.—संवादसूत्रम् b, संवादः सूत्रम् $h \, d \, m^1 \, r$, संवादे सूत्रमेन्द्रे $f \, k \, r^2$, संवादमेन्द्रसूत्रं $r^5 \, r^7$.—श्वित्यंचसु $h \, d$, °श्वित्यंवसु $r^1 \, r^3 \, r^4 \, r^6$, श्वित्यंतसु b, °श्विन्यं तत्तु r, स्वित सु r, स्वितस्व r.
- a The mase. caturbhih, as in several other passages, being used for the fem. catasr-bhih (see index of words under catur).
- 164. Here is proclaimed a dialogue of Vasistha and Agastya with their sons and also with Indra, and (their) greatness, birth, and action (are celebrated).
- 165. The following four (hymns) 'Forth' (pra: vii. 34-37) are addressed to the All-gods. There, however, the stanza 'Born in the waters' ($abj\bar{a}m$: vii. 34. 16) praises the Dragon (ahi), and there 'May us not' ($m\bar{a}$ nah: vii. 34. 17) (praises) the Dragon of the Deep (ahi budhnya)^a.
- तव तु Bhdm¹, यानि r.—श्रहिं तव hm¹r, श्रहिं देवं bfk.—मा नोऽहिर् hdm¹r, मा नोऽहिं b, मा नोऽहि fk.—बुध्यम् hdb, बुध्य m¹r, मध्यम् fk.
- * The reading adopted in the text is supported by the Sarvānukramaņī: 'abjām' aher, ardharca uttaro 'hirbudhnyāya.
- B 166. The Dragon (ahi) strikes (āhanti) the clouds, or he goes a in the midst among them. The Dragon is of the deep (budhnya), for he is born in the deep (budhna), the air b.
- चहिराहन्ति m¹br, चहिः सदंसि fk.—मेघान्स r, मेघांस b, मेघांसि m¹, मेघांसि fk.—एति वा bkr, एवति वा f, एतीता m¹.—तेषु मध्यमः r, न्येष मध्यमः m¹, तेषमधीनः b, तेषमधानः fk.—बुध्ने हि bf, ¯ हि k, वुध्नेति r, वुध्ने हि m¹.—This śloka is not found in Λ, but only in B and m¹.
- ^a Ahi in Nirukta ii. 17 is derived from ayana, 'going,' or āhanti: ahir ayanād: etiantarikṣe...nirhrasitopasarga āhan'iiti.

 ^b Cp. Nirukta x. 44: yo'hiḥ sa budhnyo: budhnam antarikṣam, tannivāsāt.

167. 'On high that' (ud u syah: vii. 38) is a hymn of Savitr. Here the couplet 'Blessed for us' (sam nah: vii. 38. 7, 8) has Steeds as its divinities, and the hemistich 'On Bhaga the mighty' (bhagam ugrah: vii. 38. 6 ° d) is addressed to Bhaga, so a sacred text (states).

सूतं hm¹r, सूते bfkr²r⁵.— °दैवतः hdm¹, °देवतः B, °देवताः r.— धर्चस भागो hm¹r³B, धर्चस पादो r.— इति श्रुतिः m¹fr²r⁵r⁷, इति श्रुतः hdr³, इति खुतिः bk.—167^d in r reads प्रथमायामृचि खुतः by confusion with the second pāda of the next line.—The end of the varga is here marked by 33 in m¹bf, not in hdk.

34. Deities of RV. vii. 38-43.

168. And the third verse in the fifth (stanza) here (vii. 38. 5°) a has the Dragon for its divinity.

B As the hemistich 'On Bhaga the mighty' (bhagam ugraḥ: vii. 38.6°d), so also is 'Now Bhaga' (nūnaṃ bhagaḥ: vii. 38. 1°d)b:

तृतीयोऽच hm^1r , तृतीयोऽस्य bfk.— पञ्चम्यामहिंदैवतः Am^1 , प्रथमायामृचि सुतिः bfk, प्रथमायामृचि सुतः r.— 168^{cd} is wanting in A and m^1 .— जूनं भगो m^1r , ज्ञनं भगो b, ज्ञन भगो न भगो f, न भगो न भगो k.

^a There is no reference to this pada in the Sarvanukramani.

^b That is, the latter hemistich as well as the former is addressed to Bhaga as a form of Savitr (cp. next śloka).

B 169. according to (the stanza) 'May that Savitr produce treasures' (RV. v. 82. 3), he (Savitr) may $(v\bar{a})$ be (regarded as) Bhaga b.

'Upright' (ārdhvaḥ: vii. 39. 1) is (the first of) five (hymns) addressed to the All-gods (vii. 39-43). Bhaga is the divinity of the five stanzas

स वा brk, सर्व $\| f$.—पञ्चोर्धः Am^1r^2 , पञ्चोर्धः r, पञ्चोर्धः b, पंचार्धः f, पंचार्धः k.— पञ्चमीं भगदेवताः f, पञ्चमीं भगदेवताः g, पञ्चमीं भगदेवताः g, पञ्चमीं भगदेवताः g, पञ्चमीं g is wanting in g and g.

^a The whole pāda in RV. v. 82. 3 is: sa hi ratnāni dāśuse suvāti savitā bhagaḥ.
^b It is perhaps owing to this remark that the Sarvānukramaṇī states the deity of RV.
vii. 38.6^{cd} to be Savitr or Bhaga: bhagam iti bhāgo vārdharcaḥ.

170. (beginning) 'Winning at morn' (prātarjitam: vii. 41. 2-6). The last (stanza) is addressed to Dawn (vii. 41. 7), or else a prayer a for the seers (draṣṭṛ) b is here (expressed). Some, however, pronounce Bhaga only to be (the deity) in the (stanza) 'At morn' (prātaḥ: vii. 41. 1) c.

- a Asir for āsīr on account of the metre. b Cp. na uṣāsaḥ . . uchantu, 'may the Dawns shine on us,' in RV. vii. 41. 7. c Whereas according to 169 this stanza would be addressed to the All-gods; cp. Sarvānukramaṇī: ādyā lingoktadevatā.
- 171. Now the seers at the beginning and end (of hymns) proclaim (deities) in an occasional manner^a (prasangatah): (thus) in this hymn there are some deities (here) and others (there) in that place (tatra)^b.

श्रादावन्ते तु hd, श्रादावन्ते च m¹, श्राद्यान्तेषु $r^6 r^7$, श्राद्यातेषु fk, श्राह्यन्तेषु b, श्राद्यान्त्ये ते तु r.— ह्युषयः hd, ह्युष्य b, ह्युष्य fk, ह्युष्यः fk, (च) ऋषयः fk, (ते तु) ऋषयः fk, स्तिष्यः fk, स्तिष्यः fk, स्तिष्यः fk, श्राद्यास्ति fk, श्राद्यासि fk

- ^a Cp. above, iii. 52 (note also the v.r. there, prātaryogāt).

 ^b That is, at the beginning and end of the hymn: Agni, Indra, Mitra, Varuṇa, Aśvins, Pūṣan, Brahmaṇaspati, Soma, Rudra, as well as Bhaga, occur in the first stanza, and Uṣas, besides the deities of the refrain yūyaṃ pāta, in the last stanza of this hymn, which as a whole is addressed to Bhaga.
- 172. Other deities are proclaimed because they belong to the same world or because they are associated a, or else again because they share praise ($samstav\bar{a}t$), because of the sphere of (their accompanying) troop (gana)b, or because of a (common) attribute (bhaktitah)c.

सालोक्यात् hdm¹r, कालाद्वा B.—गणस्थानाद् hdm¹r, गेणस्थानाद् b, गणस्थान॰ f, गुणस्थान॰ k.—भिक्ततो hm¹r, भिक्ततो b, भिक्तिनो fk.—न्यासु hm¹r, न्यास bfk.—The end of the varga is here marked by 38 in m¹fk, by 28 in b, not at all in hd.

11.

^{* 172&}lt;sup>a</sup>=i. 19^a, 98^a; vii. 144^c.

Thus Indra is associated with the troop of the Maruts.

Cp. i. 73, 76, 77.

35. Deities of RV. vii. 44-49.

173. Next (come) one (hymn) addressed to Dadhikrā (vii. 44), one to Savitr (vii. 45), one to Rudra (vii. 46) in succession. But the deities proclaimed as belonging to the first (stanza) of (the hymn) addressed to Dadhikrā (vii. 44. 1)

दाधिकं hdbr, दिधकं fk.—रौद्रम् hdr, सैद्रम् bf, सेंद्रम् k.—दाधिके hd, दाधिके b, दिधिके m¹fk, दिधकां r.—प्रथमायासु Am¹, प्रथमायां तु B.

174. may be recognized a. 'O Waters' (āpaḥ: vii. 47) should be (regarded as) addressed to the Waters. The first triplet (of the next hymn) is addressed to the Rbhus (vii. 48. 1-3). The last (stanza: vii. 48. 4) is pronounced to be addressed either to the All-gods or to the Rbhus.

॰देवी वा hdm1rbfk, ॰देवी तु r1r4r6.-174d is omitted in r1r4r6.

- ^a That is, by their names occurring in the stanza; cp. Sarvānukramaņī: $\bar{a}dy\bar{a}$ lingohtadevatā.
- 175. For it is thus that this entire (hymn) addressed to the Rbhus is chanted on the tenth day in the litany to the All-gods a. 'Whose chief the sea' (samudrajyeṣṭhāḥ: vii. 49) is (in) praise of the Waters.

श्रुद्धे hm¹, शास्त्रे r³, सर्वे f, मर्बे k, श्रुद्ध br.—समस्तं hm¹, समस्तं च bfkr.—समुद्रञ्चेष्ठा अपां hr, समुद्रञ्चेष्ठित्यपां r¹r⁴r⁶, समुद्रादित्यपां bf, समुद्रादित्यपा k.—175^{abc} omitted in r¹r⁴r⁶.—The end of the varga is here marked by ३५ in m¹bfk, not in hd.—The last pāda is not repeated here in either b or f.

a See ĀSS. viii. 12. 24, quoted by Sāyaṇa on RV. vii. 48. 4: dasame 'hni vaisvadeva-sastra ārbhavanividdhānaṃ; sātryate hi: rbhukṣaṇa ity ārbhavam iti; cp. below, vi. 108.

1. Deities of RV. vii. 50-66.

- 1. Now with the hymn 'Guard me' (\bar{a} $m\bar{a}m$: vii. 50) the deities are praised in successive stanzas:
- B Mitra-Varuna (1), and Agni (2), the (All)-gods (3), as well as the Rivers (4).
- गदस् m^1 r, मदस् fb, मथस् k.— 1^{cd} is not found in A, but only in B and m^1 . It must be original as the detailed statement of the Sarvānukramaņī is founded on it: \bar{a} $m\bar{a}m$: maitrāvaruny, \bar{a} gneyī, vaiśvadevī, nadīstutih.
- 2. Two triplets (vii. 51, 52) have the Ādityas for their deities. The triplet which (begins) 'Forth' (pra: vii. 53. 1-3) is to the Two Worlds (rodasī). There are (then) four (stanzas: vii. 54. 1-3, 55. 1) addressed to Vāstospati; the seven (following: vii. 55. 2-8) are traditionally held to be lullaby stanzas.

°देवत्यौ bfkdr, °देवत्यो m¹, °दैवत्यौ h.— वास्तोप्पत्याम् hd, वांस्तोप्पत्याःम् b, वास्तोप्पत्यम् r, वास्तोप्पतिम् fk.—चतस्रसु Am¹, चतस्रस्र fkr, चतस खुः b.—प्रखापन्य स्रचः स्नृताः B (प्रखापन्यो मृचः b, प्रखापत्यो मृच f, प्रशापत्यो मृचः k, प्रखापिन्य स्रचः r), लष्टौ प्रखापिनी स्नृताः A (°पनी स्नृताः r¹r³r⁴r⁶, ॰पिनी स्नृताः hd), सप्त प्रखापिनी स्नृताः m¹.

- * Cp. Sarvānukramaņī on vii. 55: aṣṭau: vāstoṣpatyādyā.. seṣāḥ prasvāpinya upaniṣat. The reading of B is too vague, 'there are stanzas traditionally held to be lullabies,' while the reading of A would include the first stanza, 'eight are traditionally held to be a lullaby.' The reading of m¹ alone gives the correct sense clearly: 'seven are traditionally held to be a lullaby.' सप्त perhaps dropped out owing to the following syllables प्रस्त, अधी being then supplied in A and सर: in B.—In Rgvidhāna ii. 26. 5 this hymn is described as prasvāpanam.
- 3. After this there are four hymns addressed to the Maruts (beginning) 'Who, pray?' (ka im: vii. 56-59); the last stanza of these (vii. 59. 12) praises Tryambaka^a, the divine father.

परं Am¹, ततः B.

- ^a There is no mention of Tryambaka in the Sarvānukramaņī, which describes this stanza as raudrī mṛtyuvimocanī.
- 4. With the seven hymns beginning 'When' (yat: vii. 60-66) Mitra-Varuṇa are praised; but with the following eight (beginning) 'To meet your' (prati vām: vii. 67-74) the divine Aśvins.

खुतौ त br, खुतौ सु fk, खुतौ तौ hm1.—परेर् Am1, खुतौ B.

5. (In) 'When to-day' (yad adya: vii. 60) one (1), (in) 'Aloft the sun' (ut $s\bar{u}ryah$: vii. 62) three (1-3), (in) 'Aloft he goes' (ud v eti: vii. 63) four and a half (1-5 ab) are addressed to Sūrya, while (in) 'That eye' (tac cakṣuḥ: vii. 66. 16) ab the eye (of the sun) is sung as the deity.

^a There is no statement about this stanza in the Sarvānukramaņī. Cp. below (9).

2. Deities of RV. vii. 66-85.

B 6. Śaunaka has stated that the two stanzas 'Thus of you to-day' (tad vo adya: vii. 66. 12, 13) belong to the Ādityas, while all the other stanzas, 'When to-day' (yad adya: vii. 66. 4-11) and the rest, are proclaimed (by him) to be addressed to Sūrya.

अन्याः सर्वा ऋचः सौर्या br, अपत्या सर्वा ऋचः सार्य fk, अपत्या ऋचः सर्वास्ता m¹ (the plural of सौरी would be more consistent with 5 and 9 than that of सौर्या).—This and the following three ślokas (6-9) are found in B and m¹ only.

- ^a Cp. below (8), where it is stated that these stanzas 'are traditionally held to be addressed to the Ādityas.'
- B 7. 'These chastisers' (ime $cet\bar{a}rah$: vii. 60. 5) and the rest... these nine are traditionally held to belong to Aryaman, Mitra, and Varuṇa.

इमे चेतार् fkm¹r, इमे चेतार्म b.— Of the second pāda consisting probably of pratīkas only, I have been able to make nothing. The readings of the MSS are as follows: सत्ते मिचो f, स ते मिचो k, स तेन्त मिचो b, सचे मिचो r, चढ़ते मिचो m¹.— मिचजु तत् m¹bfk, मित: जुत: r.

B 8. The ten stanzas beginning 'When to-day the sun's' (yad adya $s\bar{u}rah$: vii. 66. 4–13) are traditionally held to be addressed to the $\bar{\Lambda}$ dityas; or else Savitr, Aditi, Mitra, Varuṇa, Aryaman, Bhaga

वादितिर् $m^1bfkr^2r^5$, चादितिर् $r = r^7$).

B 9. are praised. The three stanzas which then follow, 'Aloft that' (ud u tyat: vii. 66. 14-16), are addressed to Sūrya. The teacher Śaunaka has stated the stanza 'That eye' (tac cakṣuḥ: vii. 66. 16) to be a prayer^a.

- a That these two ślokas (8,9) belonged to the original text is supported by the fact that the wording of the Sarvānukramaņī is clearly based on them: BD. yad adya sūra ityādyā daśādityāḥ, Sarvānukramaṇī caturthyādyā daśādityāḥ; and both have tisraḥ sauryaḥ.
- 10. Now Dawn (is praised) with the seven (hymns) 'Forth the Dawn' (vy uṣāḥ: vii. 75-81); but the four hymns following these, 'O Indra and Varuṇa' (indrāvaruṇā: vii. 82-85), are (in) praise of Indra-Varuṇa.

एभ्यः m¹rbfk, एभिः hd.—°द्रावर्णिति Am¹, °द्रावर्ण्यती° b, °द्रावर्णानि r; the whole line is चलारोंद्रोवण्यो सुतिः in f, चलारिंद्रो सुतिः in k.—The end of the varga is here marked by २ in bfk, not in hdm¹.

3. Vasistha and the dog of Varuna: RV. vii. 86-89.

B 11. In the hemistich 'Aloft the light' (ud u jyotiķ: vii. 76. 1^{ab}) the Middle (Agni) is praised.

During^a the night Vasistha in a dream^b approached the house of Varuna^c.

- 11^{ab} is not found in A or m^1 , but only in B.— खन्न স্থাব্ব hm^1r , खन्नमाच्रत् fkn(egh), खन्नमाच्रन् bn(am)s, खन्नवस्त् n(b), चौर्यमाच्रत् r^5 .
- a 11^{cd}-15^{ab} are quoted in the Nītimañjarī on RV. vii. 55. 2; and 11^{cd}-13 in Sāyaṇa on RV. vii. 55. 3. b See Vedische Studion, ii, p. 56 (cp. 55). c Cp. RV. vii. 86. 6: svapnaś caned anytasya prayotä; and vii. 88. 5: byhantam mānam, varuṇa, . . sahasradvāram jagamā gyham te.
- 12, 13. He then entered. A dog there ran at him, barking. B Pacifying the hound which was making a din and running (up) with intent to bite, he lulled him to sleep a (vyasusvapat) with the two (stanzas) 'When, O bright one' (yad arjuna: vii. 55. 2, 3).

He sent him b as well as the other attendants of Varuṇa to sleep c.

तं तच bfkrns, तं त्वच hd, त्वं तच m¹.— • अधावत Am¹, • अवर्तत Bns.—12^{cd} and 13^{ab} are not found in A, but in B and m¹ only.— दष्टुम् m¹n(h) s, दंप्टुम् fk, दृष्टुम् b, दृष्टुम् rn.—13. द्वाश्यां m¹bfks, चिभिः rn.— व्यसुष्वपत् m¹bfr, व्यसुप्ययत् k, व्यसूषुपत् n, ह्यसूषुपत् s.— स तं Am¹, एवं Bns.— प्रस्वापयामास bfrn. प्रस्नापयामास k, प्रस्थाप-यामास hdm¹s.

- The anomalous form vyasusvapat is evidently based on the refrain of RV. vii. 55. 2-4, ni su svapa. I was therefore tempted to make the emendation nyasusvapat. b The reading of B evam connects 13^{cd} with 13^{ab}, that of A sa tam, 13^{cd} with 12^{ab}. c Cp. Vedische Studien, ii, p. 56, note 2.
- 14, 15. Then king Varuṇa bound him with his fetters. Bound (thus) he (Vasiṣṭha) praised his father (Varuṇa) with the next (itah) following four (hymns) 'The wise' $(dh\bar{\imath}r\bar{a}$: vii. 86-89). Then his father released him.

A As soon as the (stanza) 'Thee in the fixed' ($dhruv\bar{a}su\ tv\bar{a}$: vii. 88. 7) had been uttered, the fetters dropped (pramocire) of from him.

स्वैः पाग्नैः प्रत्यबध्यत Am¹ (प्रति॰ m¹), स्वान्पाग्नान्प्रत्यमुद्धत Bn.—स वद्ध hm¹rfkn, स बुद्ध r¹r⁴r⁶, स बुध्धा b.—॰भिरित hdr, ॰भिर्त bfk.

15. तत: पिता hm¹bf, वध: पिता k, तथान्यया n.— 15^{od} is the reading of Am¹; instead of it, but after 14^{ab}, Bm¹ read:

बद्धः स¹ वाद्योः पाग्रैर्धुवासु खेति² दृश्यते ।

¹ fr²r⁵r7, वहै सा k, तद्दः स b. ² r²r⁵r7, ष्ट्रवासुलेति b, ऋचासुलेति fk.

Both forms of the line are omitted in n.—The end of the varga is here marked by \mathfrak{Z} in \mathfrak{m}^1 , after $\mathfrak{15}^{ab}$ ($pit\tilde{a}$) in bfk (as the B form of $\mathfrak{15}^{cd}$ comes before $\mathfrak{15}^{ab}$), not at all in hd.

A Here the root bandh is conjugated as an Ātmanepada of the fourth class; cp. v. 134 and vi. 23 (duhyati in A).

B That is, after the group 82-85 mentioned in 10.

C The anomalous form pramocire must be meant for the 3. plur. perfect passive (by false analogy from forms like pecire). The whole line has been adapted from RV. vii. 88. 7: dhruvāsu tvā āsu kṣitiṣu kṣiyanto vy asmat pāśaṃ varuņo mumocat. The reading of B would mean: 'In the stauza dhruvāsu tvā he appears bound with the fetters of Varuṇa.'

4. Deities of RV. vii. 90-96.

16. The next three hymns, 'Forth with longing for the heroes' (pra vīrayā: vii. 90-92), are addressed to Vāyu. Now in this praise those (stanzas) are addressed to Indra-Vāyu in which there is praise in the dual (dvivat)^a.

तास्वै॰ $\rm A\,m^1$, ताञ्चै॰ $\rm B.$ —॰वायवाः सुतौ $\rm m^1r^1r^3r^4r^6$, ॰वायवाः सुतो $\rm hd$, ॰वायव्याः ऋचो $\rm r$, ॰वायव्या भवो $\rm bfk$.—यासु $\rm hm^1r$, यासु $\rm r^2r^5r^7$, यास्त $\rm fk$, यात्सु $\rm b$.

* See Sarvānukramaņī on RV. vii. 90: aindryas ca yā dvivad uhtāh; cp. also Ṣadgurusisya.

B 17. 'Forth with longing for the heroes' ($pra\ v\bar{\imath}ray\bar{a}$: vii. 90. 1) is spoken of in the Aitareya (Brāhmaṇa) as a stanza addressed to Vāyu belonging to the Praüga litany ($pr\bar{a}\bar{u}g\bar{\imath}$): the predominance of Vāyu is (thereby) expressed in contravention ($vyatyayam\ krtv\bar{a}$) of one of its verses (pada)^b.

वायव्या m¹bfk, वायव्याः r.—प्राउगी॰ m¹r, प्रानुगी॰ b, प्रासुगी॰ fkr².

- ^a That is, AB. v. 20. 9. ^b That is, the first pāda of vii. 90. I contains the dual form $v\bar{a}m$, so that judged by this the whole stanza would be addressed to Indra as well as Vāyu.
- B 18. 'These with true' (te satyena: vii. 90. 5-7) being a triplet, 'As long as strength' (yāvat taraḥ: vii. 91. 4-7), again, being a quatrain, 'Eager' (uśantā: vii. 91. 2), being one, and the stanza 'Forth the presser' (pra sotā: vii. 92. 2)—these are traditionally held to be the nine (stanzas) belonging to the two (Indra-Vāyu)^a.

प्रसोता चर्ग br, प्रसोता चर् f, प्रसोता च m^1k .—The words एता नव स्तृताः occur above, vi. 7^d .—17, 18 are not found in A, but in B and m^1 only.

- a The details given in this sloka are not mentioned in the Sarvānukramaņī.
- 19. The two (hymns) 'The pure' (śucim: vii. 93,94) are addressed to Indra-Agni; the two following, 'Forth' (pra: vii. 95, 96), are addressed to Sarasvatī. Sarasvat (is praised) with the stanza 'He' (saḥ: vii. 95. 3) and with the three 'Longing for wives' (janīyantaḥ: vii. 96. 4-6).

हुचे सरखान्स र्ति B (हुचे bfkr², देचा r⁵r²), जुतश्चेव सरखांजु Am¹. I have preferred the reading of B (with the emendation ऋचा for हुचा) because it is supported by the Sarvānukramaņī on RV. vii. 95, 96: तृतीया सरखते . . पराजिस्रो गायत्रः सर्खते.—च तिस्भिः hdr³, चतस्भिः m¹r¹r⁴r⁶, चतुर्ऋचैः r, चतुभेवे b, चतुभेवे fk.—The end of the varga is here marked by 8 in bfk, not in hdm¹.

5. Story of Nahusa and Sarasvatī: RV. vii. 95, 96.

20. King Nāhuṣa a in former days wishing to consecrate himself for a thousand years, travelled over this (earth) with a single chariot, saying to all streams:

वर्षसहस्राय hm¹ r³ B, वर्षसहस्राणि r.— °र्धनेमां hdr, °र्धनेमान् b, °र्धन मा fk.— ब्रुवन् r, ब्रुवंत् hd, ब्रुवत् fk, क्रावन् b.

- * The story of Nāhusa and Sarasvatī is briefly referred to by Sāyana of RV. vii. 95. 2.
- 21. 'I am about to offer sacrifice; bring me shares (for it), either in pairs or singly.' The rivers replied to the king: 'How can we, who have but very little power,

वहत br^5 , हत fk, पहत $r^1r^4r^6$, वहथ hdm^1r^3 .—भागाने hdm^1r^3 , मां संत्री $r^1r^4r^6$, मां सर्वी fk, माः सर्वी: r^5 , माः सर्त्री b.—वाथवैकशः Am^1r^2 , प्रथवैकशः b, थथवैकश् fk (°स k), वाथवेकशः r.—नदाः स्वल्प॰ hm^1bfk , नदाशाल्प॰ r.

22. bring you all the shares for a sacrificial session lasting a thousand years? Resort to the Sarasvatī: she will bring them for you, Nāhuṣa.'

भागान्सवीं स्ति hdm¹, भोगान्सवीं स्ति r, स्वीन्भोगां स्ति bfk.— सचे all MSS. and r.— वार्षसहस्रिके hdm¹rb, वर्षसहस्रके r^2r^6 , वर्षे सहस्रके fk.— ति B, त्वा A.— नाऊष m^1r , नाऊष: hdf, नाऊत: k, न्यद्याः b.

23. Saying 'So be it,' he quickly went to the river Sarasvatī; and she received him and yielded (duduhe) (him) milk (and) ghee.

जगामाणु Am¹, जगामाण B.— आपगां A, पावनीं B (b, °नां fkm¹).— सर्खतीम् all but m¹, which has समुद्रगाम्.—23^{cd} is the reading of B; प्रतिजयाह सा चैनं पयः सिपेश्च दुह्यति is that of Am¹. I have preferred the former as it more closely follows the words of RV. vii. 95. 2: घृतं पयो दुदुहे नाज्ञषाय.

24. This exceedingly marvellous act of the Sarasvatī towards the king, the son of Varuṇa (Vasiṣṭha) proclaimed with the second (stanza) of the first (of the two hymns, viz. vii. 95. 2).

No MS. marks the end of the varga; but that it ends here is indicated by the fact that the figure **u** is in b placed after 26^{ab} , which in that MS. by mistake ends similarly, viz. प्रथमस्य तृतीयया (see critical note on 26).

6. Deities of RV. vii. 97-104.

25. 'In the sacrifice' (yajñe: vii. 97) is addressed to Bṛhaspati; (then comes) a (hymn) addressed to Indra (vii. 98); but the two following (99, 100) after that are addressed to Viṣṇu, and the

three (stanzas) 'Wide' (urum: vii. 99. 4-6) should be (regarded as) addressed to Indra as well. The two next (hymns) 'Three' (tisrah: 101, 102) are addressed to Parjanya.

यज्ञे बाईसात्यमेन्द्रं hm^1r^3 , यग बहस्समेंद्रं च f, यग वहस्समेंद्रं च k, वाईसात्यमेंद्रं च b (no यज्ञे), दे वाईसात्ये ऐन्द्रे च r, ऐन्द्रे यज्ञे दिवः सूक्ते $r^1r^4r^6$.—तु परे ततः Λm^1 , च ततः परे B.—उर्मेन्द्रास् hm^1 (उर्मित्येन्द्रास् S), उत्तमेन्द्रास् r, उत्तमेन्द्रास् bk, उत्तमेन्द्रास् f.—तिम्नः स्यु: br, तिम्न स्य f, तिम्नस् hdm^1k .

- A 26. Now the first (stanza) here a (vii. 97. 1) praises Indra, the second and the rest (2, 4-8) (praise) Brhaspati.
- B In 'At the sacrifice' (yajñe: vii. 97) the first (stanza) praised Indra alone, but the last both Indra and Bṛhaspati.
 - * 26^{ab} is the reading of A m¹; instead of this line B has:

आशीर्ऋक् प्रथमा तत्र प्रथमस्य तृतीयया ।

 $^{\rm b}$ r, आशीर्भव ${
m m}^{\rm l}$ f, आशी भव k, आशी b.

The first pada here is probably a corruption of 26^a (the last five syllables being practically identical), while the second seems to be due to a confusion with 24^d .

- 26^{cd} is not found in A, but in B and m¹ only. 26^b is redundant, as stanzas 2, 4-8 would already be addressed to Brhaspati by 25^a; while 26^c repeats the statement of 26^a; on the other hand 26^d is necessary to the sense (ep. Sarvānukramaņī). The original reading of 26 thus seems certainly to have consisted of the single line: खौतीन्द्रं प्रथमा त्वच अन्या त्वन्द्रावृष्यती। cp. Sarvānukramaņī on vii. 97: यज्ञे.. ऐद्यादि बाईष्णत्यमन्येन्द्री च.
- 27. The third and the ninth (vii. 97. 3, 9) praise Indra and Brahmanaspati. (The hymn) a 'For a year' (samvatsaram: vii. 103) (praises) the frogs; but that which follows (vii. 104) is addressed to Indra-Soma.

स्तीतीन्द्रा॰ $A\,m^1$, सहेन्द्रा॰ B.— मण्डूकान् $bfk\,Ss$, मणुकान् m^1 , मण्डूका $r^2\,r^5\,r^7$, माण्डूकम् A. I have preferred the former reading as being supported by the Sarvānu-kramaņi: मण्डूकांसुष्टान

- ^a 27 ^{ab} and 28 are quoted by Sāyaṇa in his introduction to RV. vii. 104.
- 28. The seer, when his hundred sons had been slain by the followers of Sudās, full of pain and overwhelmed with grief for his sons, saw (this hymn) for the destruction of demons a.

राजोझं m¹ r¹ r⁴ r⁶ b r⁵ nS, s (v.r.), र्जोझं hrfks.— 28^{cd}, occurring here in B and hdr³ (but omitted here in m¹ r¹ r⁴ r⁶), is repeated at 34^{ab}, with वस्छो (A) in place of सोट्रास: (B).— तस्मिन् hd, कुद्ध: Bs.— The end of the varya is here marked by & in m¹ bf, not in hd k.

^a 28^{ab} is quoted in the Nîtimanjari on RV. vii. 104. 16.

7. Detailed account of RV. vii. 104.

29. The stanza 'Who the simple' (ye pākašaṃsam: vii. 104. 9) is addressed to Soma; the next (10) after that is addressed to Agni; the eleventh is addressed to the All-gods (11); the couplet which follows it (12, 13) is addressed to Soma.

श्रापेयी m1dr, सापेयी h, ॰पेयी b, ॰पेया fk.

30. The stanza 'As if I' (yadi vāham: vii. 104. 14) is addressed to Agni, while 'Who me' (yo mā: 16) is traditionally held to be addressed to Indra; 'She who strides forth' (pra yā jigāti: 17) is addressed to the pressing stones, while 'Spread out' (vi tiṣthadhvam: 18) is addressed to the Maruts.

ऐन्द्री यो मित तु स्नृता hm^1r , यो मेतीन्द्र सुतो दयोः bk, यो मेतींद्रसतौ दयोः f, यो मेतीन्द्रः सुतोऽर्द्धया r^6r^7 .—याञ्जी hdm^1r , वराप्री b, वराष्ट्री f, वरीब्री k.

31. Five (stanzas, beginning) 'Hurl forth' ($pra\ vartaya$: vii. 104. 19-22, 24) are addressed to Indra, while the last stanza is addressed to Indra-Soma. In the stanza 'May not the demon us' ($m\bar{a}\ no\ rakṣas$: 23) the seer invokes a blessing ^a

॰सोमो लृगु॰ hm², ॰सोमोत्यृगु॰ r, ॰सोमो लगु॰ f, ॰सोमो न्वृगु॰ b, ॰सोमी हुगु॰ k.— लाभिषम् bkr, लाभिष hdm².—लृचि hdr, त्यृचि bfk, हुचे r²r⁴r⁴.

- * I have preferred the reading āśiṣam to āśiṣah because it is supported by the Sarvānukramaṇī on RV. vii. 104: pra vartayeti pañcaindryo mā no rakṣa ity ṛṣer ātmana āśīḥ.
- 32. and protection in heaven and earth on his own behalf. 'The owl-fiend' (ulūkayātum: vii. 104. 22) (prays) 'Slay these night-walkers of various forms'a.

दिवि चैव hdm¹, दिवश्चैव br, दिविश्चेव fk.— पृथिव्यां च hdm¹, पृथिव्याश्च br, पृथिव्याश्च fk.— पालनम् m¹ bkr, पाइतम् hd.— उनुकायातुं rs (and RV. vii. 104. 22),

उजुक्यातु all the MSS. (॰यान्तु r⁷) except r⁵.—This śloka is omitted in r¹ r⁴ r⁶ according to R, p. 163, note ⁹, but this statement contradicts his preceding note ⁸.

- a 32°d is quoted by Sāyaṇa on RV. vii. 104. 22, who adds a line which is not found in any of the MSS. of the BD.
- 33. Now in the fifteenth and in the eighth (stanza) of the hymn the son of Varuna (Vasiṣṭha), while as it were lamenting, his soul being overwhelmed with pain and grief, utters a curse.

सूक्तस्या ग्रष्टस्यां hd, (॰स्यi) ग्रष्टस्यां $r^1r^3r^4r^6$, सूक्तस्याप्टस्यां m^1fk , सूक्तस्याप्टस्यां b, सूक्तस्याप्टस्यां r.

34. Vasiṣṭha was at that time pained, as his hundred sons had been slain by Sudāsa who, in consequence of a curse, had been transformed into a demon (rakṣas); such is the sacred tradition.

तिसान् hdr, नासान् m¹, कुद्धः B.—विसष्ठो hdm¹r, सौदासैर् b, सौदासेर् f, सौदासे k.—दुःखितस्तदा hrbfk, दुःखितः सदा m¹.—34^{ab}=28^{cd} (cp. v.r. there).—वै श्रुतिः Am¹, नः श्रुतम् B.—The end of the varga is here marked by $\mathfrak D$ in bfk, not in dm¹.

^a For Sudās, as above, iv. 106, 112.

Mandala viii.

8. Story of Kanva and Pragatha.

35. ^a Kanva and Pragatha were two sons of Ghora. When they had been dismissed by their preceptor they dwelt together in the forest.

°দ্মানাবুষন্; hdr, °দ্মা স্মাষন্; b, °নানা তাষন্; fk. It would have been more consistent to print °দ্মানা তাষনু; (cp. iv. 96° and note a).

- ^a The following four ślokas (35-38) are quoted by the Nītimañjarī on RV. viii. 1. Ṣadguruśiṣya (p. 136 f.) gives a metrical form of the story which is differently worded.
- 36. Now while these two dwelt there the younger (brother) of Kaṇva (i.e. Pragātha), having placed his head while asleep (svapat)^a on the lap of Kaṇva's wife, did not awake.

काखपत्याः rn, काखः पत्याः fk, काखपत्या b, काखपत्यां $h d m^1$. — खपत् $h d m^1 r^3$ fr^2n , खयत् k. (शिरो) खपत् n, श्रमात् $r^1r^4r^6$, खपन् br. — काखस्रोत्संगे $h m^1$, काख-स्रासंगे d, काखशांगे b, काखस्रुत्संगे f, काखस्

- * The MS. evidence for t, that is for the neuter participle agreeing with siras, is overwhelming, though svapan would be more natural.
- 37. Now Kanva, enraged by suspicion of a sin (and) wishing to curse him, awakened him with his foot, as though about to consume him with his fiery energy.

श्रुकामसु hrbfk, हन्तुकामसु n.— पापाभिशङ्कया hmlrb, पापातिशंकया f, पापातिशंकया n.—बोधयामास hdrn, वोवयामास b, योजयामास fk.—दिधचन्निय mlrn, दिध्चन्निव hd, विधनुन्निव f, विधनुन्न k, दिवनुन्निव b.

38. Pragātha, becoming aware of his intention a, stood with folded hands and chose the couple for his mother and father.

तं भावं hrb, तं भा d, भावं तं fk.—प्रगाथः hdrk, प्रथमः b.—प्रांजलि खितः bk, प्राजलि खितः f, प्राञ्जलिः खितः hdr.

- ^a Cp. above, iv. 50, 59.
- 39. The seer, being (thus) the son of either Ghora or Kanvaⁿ, saw, in company with many other members of his family, the eighth Mandala.

घौरो hm^1r , घोरौ bfk, घोरो $r^1r^2r^4r^6$.— काखो hdf, काखौ b, कारावो k, कखो m^1r .— बद्धिः सह hdm^1b , बद्धिव सह fk, बद्धिः पितुः r.— सहित ऋषिर् hdm^1r (°तः r), सहितः सखि b, सदिच्छिषि f, सदितिरिषि k.— The end of the varya is here marked by rack in bfk, not in hd.

^a Cp. Sarvānukramani on RV. viii. 1: sa ghaurah san bhrātuh kanvasya putratām agāt; Ārṣānukramanī viii. 3: pragātho ghorajo munih, sa hi ghorasya kanvasya bhrātā san putratām gatah.

9. Deities of RV. viii. 1-21.

- 40. There are four hymns addressed to Indra (beginning) 'Not at all' (mā cit: viii. 1-4): in the stanza 'Downward his mighty' (anv asya sthūram: viii. 1. 34), Śaśvatī, daughter of Angiras, living (vasantī) as his wife (nārī) b, praised her husband c.
 - $_{\pm}$ वसन्ती $m hdm^{1}r$, वसंती $m kr^{2}$, वसती $m bfr^{5}$.
- That is, living with him as his wife, though he had been turned into a woman.

 b On Sasvatī and nārī, see above, ii. 83 and note.

 cāsya āngirasī śaśvatī puņstvam uralabhya enam prītā antyayā tustāva.

41. The seer turned that Āsaṅga, who had been a woman, into a man (again) a. With the four b stanzas 'Praise' (stuhi: viii. 1. 30-33) his own gift (to the seer) is proclaimed (by Āsaṅga).

तमासंग सुतवान् hdm^1 , तमासङ्गः सुतवान् r; तं मासंतं क्वतवान् br^5r^7 , तं मासं क्वतं क्वतवान् f, तं मासं क्वतं क्वतवान् k.—स्वस्य A, तस्य B.— सुहीत्यृग्भिश्चतुर्भिः परि- कीर्तितम् all MSS. (सुहि सुहीति चतस्रभः S).

- a Cp. Sarvānukramaņī on RV. viii. 1: āsango yaḥ strībhūtvā pamān abhūt sa medhyātithaye dānam dattvā stuhī stuhīti catasṛbhir ātmānam tuṣṭāva. The story of Āsanga is related by Sāyaṇa on RV. viii. 1. 1 and 34. Āsanga, son of king Playoga, was, he relates, owing to a curse of the gods, turned into a woman, but afterwards was, by the favour of Medhyātithi, restored to manhood by the power of penance. He consequently bestowed much wealth on the seer (30-33) and was praised by his wife Saśvatī, daughter of Āngiras (34). See also Ṣadguruśiṣya, p. 137; Sieg, Sagenstoffe, pp. 40, 41.

 b Though caturbhih is, as we have seen, frequently used alone as an alternative for catasṛbhiḥ (cp. next śloka), it seems hardly possible that rgbhiś caturbhiḥ could have been the original reading. I was therefore much tempted to emend the MSS. reading to catasṛbhiḥ prakīrtitam. With reference to this passage (RV. viii. 1. 30-33) the Sarvānukramaṇī has catasṛbhiḥ, the Nītimañjarī rgbhiś catasṛbhiḥ (Sieg, p. 41), and the Ārṣānukramaṇī rcāṇ catasṛnām. In the Rāmāyaṇa, however, caturbhiḥ occurs in juxtaposition and agræment with a feminine noun (see St. Petersburg Dictionary, under catur).
- 42. But with the two stanzas 'Bestow' (śikṣa: viii. 2. 41, 42) that of Vibhindu, king of Kāśi (kāśya)a, is proclaimed, while with the four (stanzas) 'Which' (yam: viii. 3. 21-24) the (gift) of the liberal Pākasthāman is praised.

काश्रस्य hbr, वास्तस्य d, वामस्य fk.—पावस्यामसु hm^1r , °स्थामस्य br^2r^5 , °स्थानस्य fk.—भोजस्य hm^1r , भोजस्य b, भोजस्य f, भोजस्य k.

- a Cp. Sarvānukramaņī on RV. viii. 2; antyābhyām medhātithir vibhindor dānam tuṣṭāva.
 b See note b on 41.
- 43. The two pragātha couplets (beginning) 'Forth' (pra: viii. 4. 15–18) Śākaṭāyana thinks are addressed to Pūṣana; Gālava, however, (thinks) the former (15, 16) is addressed to Indra only, the latter (17, 18) to Pūṣan.

द्वी hm1rs, त B.—उत्तरम् hm1r, उत्तराम् h, उत्तमम् fkr5.

- ^a 43 ^{ab} is quoted by Ṣaḍguruśiṣya on RV. viii. 4.
- 44. In the last triplet of the last of the Indra hymns here (viii. 4. 19-21), the gift of king Kurunga is praised (with the words) 'Abundant wealth' (sthūraṃ rādhaḥ: 19).

ऐन्द्राणामिह hm¹r, °णां लिह k, °सां लिद f, °णां न्विह b.—The end of the varga is here marked by Q in m¹bfk, not in hd.

10. Deities of RV. viii. 5-18.

45. In the hymn addressed to the Aśvins, 'From afar' (dūrāt: viii. 5), the thirty-seventh stanza, (that is) the hemistich 'As' (yathā: 37°d), and the final couplet (38, 39) are traditionally held to be (in) praise of the gifts of Kaśu^a.

सप्ततृंशतमी b, °विश्ततमी f, °विंसतमी k, °तृंशतमा hd, विंशत्तामे r, °विंशतमा m^1 .— इत्यर्धचीं hm^1B (°ची f), तवार्धचीं r.— दानस्तुति: b(S), नावस्तु f, (क्षिा)निस्तु k, दानस्तव: hm^1r .— स्मृता b, omitted in fk, स्मृत: hm^1r .

- a Cp. Sarvānukramaņī on RV. viii. 5: antyāh pañcārdharcās caidyasya kasor dānastutiķ.
- 46. 'Great' (mahān: viii. 6) is addressed to Indra: in (the stanza) containing (the word) 'ancient' (pratna: viii. 6. 30), Śākapūṇi, as well as Mudgala, son of Bhṛmyaśva, thinks Agni Vaiśvānara is praiséd.

पिं वैश्वानरं खुतम् br, पिर्वैश्वानरः खुतः Λm^1 .— 46^{abc} is omitted in fk.—महानिन्द्रं प्रतवत्थाम् Am^1 , महानिन्द्रं प्रनेवत्थाम् b, महानितीन्द्रदैवत्थम् r.—भार्म्यश्ववि r^5 . भार्म्याश्ववि hm^1br , भार्म्यश्ववि f, भार्यख् k.

- ^a The eleventh as well as the thirtieth stanza contains the word, but the latter only can be meant.
- 47. But in the triplet 'A hundred' (śatam: viii. 6. 46-48) the gift of Tirindira is recorded. 'Forth' (pra: viii. 7), the following (hymn), is addressed to the Maruts; and the three 'Hither to us' (ā naḥ: viii. 8-10) are addressed to the Aśvins.

तैरिंदिरं hdm^1r , नैरिंदिरं bfk.—प्रेति आ r, प्रेत्या hdm^1bfk .—°श्विनानि च hm^1r , °श्विनान्यतः B.

- ² Cp. Sarvānukramaņī: tṛco 'ntyas tirindirasya pārśavyasya dānastutiḥ.
- 48. 'Thou' (tvam: viii. 11) is addressed to Agni. 'Which, O Indra' (ya indra: viii. 12. 1) are six (12-17) addressed to Indra; but in a hemistich of the last (stanza) but one of the last (viii. 17. 14^{ab}) the god Vāstoṣpati is praised.

49. 'This' (idam: viii. 18) has the Ādityas as its deities: with three a (of its stanzas), the sixth, the fourth, and the seventh, Aditi is praised; the eighth stanza, 'And' (uta), is addressed to the Asvins.

॰दितिः सुता hm^1r , ॰दितिस्तथा B.— पञ्चा चतुर्था सप्तम्या $r^1r^4r^6$, पथ्चां चतुर्थी सप्तम्याम् hd, पञ्चा चतुर्थीसप्तम्योर् m^1 , षञ्चां चतुर्थीसप्तम्योर् B.— The end of the varga is here marked by **90** in m^1bfk , not in hd.

a The Sarvanukramani does not specify these three stanzas.

11. RV. viii. 19: praise of Trasadasyu's gifts.

50. (In) 'Blessing' (śam: viii. 18.9) the three (gods) Fire (agni), Sun (sūrya), Wind (anila)^a are (respectively) praised in successive verses (pac-chaḥ). The pragātha couplet 'Whom' (yam: viii. 19. 34, 35) is (in) praise of Varuṇa, Aryaman, and Mitra

पक्स्व॰ Λ , पच्छोखाम् r, षक्काखोम् f, षष्ठासोम् k, षाक्काखोम् b.—॰िमचाणां Am^1 ॰िमचास्तं bfk.—प्रगाथो Am^1 , प्रगाथे B.—
इति सुतिः r, इति सुताः B, इति सदा hdm^1 , इति तदा r^3 .

^a Cp. Sarvānukramaņī on RV. viii. 18: parā (9) agnisūryānilānām.

51. a in the (hymn) addressed to Agni. 'He has given' (adāt: viii. 19. 36, 37) are (two stanzas in) praise of the royal seer Trasadasyu.

B He gave fifty maidens b and three herds of seventy (saptatīḥ) cows,

खुती hdr, खुति bfk.—सप्ततीः br, सप्तमी fk, सप्ततिः m¹, सप्तयः n.— 51^{cd} - 57^{ab} are not found in A, but in B and m¹ only.

^a The following six and a half ślokas (51-57^{ab}) are quoted in the Nītimañjarī on RV. viii. 19. 37.

^b Cp. RV. viii. 19. 36: adāt . . pañcāśatam trasadasyur vadhūnām.

B 52. horses, and camels, and he also (gave) various garments, jewels, a brown bull, the lord that led those (herds)^a.

श्रश्रीष्ठाणां $m^1 fkrn$, श्रश्रीराह्राणा b.—तथैवासी m^1 , तथैवासी b, तथैवासी fkn, उर्भाणां r.— वृषमं fkr, वर्षमं b, विविधं m^1 .— श्रावं $m^1 n(m)$, श्रांवं n, श्रावं n(h), श्रांवं k.—श्रियेसरं $m^1 frn(a)$, श्रियेश्रं kr^2 , श्रियेचरं b, श्रासेसरं n.—पितम् r, पित $m^1 fkr^2 n$, पिथ b.

- * See RV. viii. 19. 37: tisṛṇāṃ saptatīnāṃ śyāvaḥ praņetā.. diyānāṃ patiḥ; cp. the enumeration of gifts in RV. viii. 46. 22, 23.
- B 53. Having wedded, the seer as he went on his way proclaimed (all) this to Indra, and with the hymn 'We' (vayam: viii. 21) (praised) Śakra. Pleased thereby the Lord of Śacī

•श्रंस च m¹bfkn, •श्रंस ह r.—श्रकं च all MSS. r and n (ep. v. 137).—श्रचीपति: m¹bfkr, पुरंदर: n (ep. v. 137^d).

B 54. (said), 'O seer, choose a boon.' Humbly the seer replied to him: 'I (will) enjoy, O Lord, simultaneously the fifty maidens a of the race of Kakutstha b,

तमृषिर् br, तमृषिम् fm¹, तमृषीम् k.—काकुत्स्थ rn, काकुस्थ b, काकुत्स्थः k, काकुः सुत्स्यः f.—कन्याः पञ्चाश्रद् frn, कंन्याः पंचाश्रद् b, पंच कन्याश्रद् k.—रमंचे bfkrn(h), रमचेत् m¹, रमच n.— 54^{ed} , 55 omitted in r^7 .—The end of the varya is here marked by 99 in bfk.

a This most probably refers to the pañcāśatam vadhūnām mentioned above (51). Note the nom. pañcāśat used for the acc.

b This word is printed by Mitra as a vocative, but it is impossible that this patronymic should be applied to Indra. The word is, however, probably used in the text owing to the close association of Kakutstha with Indra (see St. Petersburg Dictionary, under kakutstha).

12. The boons chosen by the seer. Story of Sobhari and Citra.

B 55. (and choose) the assumption of many forms at will, youth, and everlasting enjoyment, the conch treasure a, the lotus treasure b always remaining in my house.

यौवनं m¹bfkr, युगपत् r⁵.—मद्गृहेष्व॰ m¹r, मद्ग्रेहेष्व॰ n, मृगृहेष्व॰ fk, मृष्व॰ b.

- a Prosperity departs with its disappearance: cp. Pañcatantra, ii. 10; Indische Sprüche, 3950.
 b That is, 100,000,000 pieces of money.
- B 56. May the famous (asau) Viśvakarman fashion (for me) palaces of gold by thy favour, and a flower garden with celestial trees for (each of) those (spouses) separately;

प्रासादान् m^1 frn, प्रसादान् bk.— °कर्मासौ m^1 bfkr, °कर्मा तु n.— कुर्वीत m^1 bn, कवीत fk, करोतु r.— °वाटीं च m^1 kn, °वाटां च f, °वाटी च b, °वाटीश्व r.— सुरद्भैः r, सुरद्भैः b, सुरद्भे fk, सुरद्भुमः m^1 .

B 57. and let there be no co-wife rivalry among these (fifty spouses).' And he (Indra) said, 'All this shall be (fulfilled).'

'Come, hither' (ā ganta: viii. 20) is a hymn addressed to the Maruts; the next one, 'We' (vayam: viii. 21), is addressed to Indra.

॰सर्धासां m^1bn , ॰सर्द्धासां f, ॰सास्पर्ज्ञासं k, ॰सर्धायां r.—॰द्रमुत्तरम् Am^1 , ॰द्रमतः परम् B.

58, 59. When a Sobhari, son of Kanva, was sacrificing with members of his family in Kurukṣetra, rats devoured (his) corn and various oblations. (So) he (Sobhari) praised Indra, Citra, (and) Sarasvatī,

B with the stanza 'Or Indra' (indro vā: viii. 21. 17), proclaiming (Citra's) power of giving b.

सोमरेश्वेव Am^1 , सीमरेश्वेव B.—यवान् जजुर् m^1 r, यवा जजुर् hd, यवां चजुर् bfk.—59. °तृष्टाव रम्हं r, °तृष्टविंद्रं hd bfk.— आखवः Bn, आखुं च Am^1 .—59^{cd} is not found in A, but in B and m^1 only.—The end of the varya is here marked by 92 in bfk.

^a 58^{cd} - 62^{c} are quoted in the Nītimañjarī on RV. viii. 21. 18. ^b 59^{cd} seems necessary, as without it, there is no reference in Λ to stanza 17 being part of the $d\bar{a}nastuti$ (cp. Sarvānukramaņī: antye dvrce).

13. Story of Sobhari and Citra (continued). RV. viii. 22-25.

B 60. And the king of the rats, rejoiced at heart, from self-satisfaction himself,

Citra, being praised like a god, gave, to the seer, of cows a

संस्तृतो $h\,m^1\,r^3fk\,r^2\,r^6\,r^7$, स स्तृतो r.—चित्र ऋषये तु गवां ददी $h\,m^1\,r$, चित्रो यहदी तद् हुचेन ह $r^6\,r^7\,n$, चित्रो ददी गा ऋष्ट्रचेरिह b, चित्रो दादो गात्र चृत्र्युचेरिह fk (चुत्यु 0 k).

- The wording of the Sarvānukramaņī, antyc dvrce citrasya dānastutiķ, would seem to favour the reading of B (citro yad dadau tad dvrcena ha).
- 61. a thousand myriads. Praising (him) the seer accepted (the gift). And rejoicing in heart (Citra) addressed the seer, 'I do not deserve the praise of a seer,

सहस्रं वे hbr, सहस्रं तु n.—निजयाह m¹, विजयाह hd, निर्जयाह brn.—चोवाच hdm¹r, प्रोवाच br⁵n.—ऋषे: hdr, ऋषे m¹b, ऋचि n, चि (सुति) fk.—This śloka is omitted in fk with the exception of thethree syllables चि सुति (sic).

62. having been begotten in an animal womb. Do you (rather) praise the gods.' And (yet) with the last (stanza, viii. 21. 18) he (the seer) praised him again. And with the hymn 'Hither that' (o tyam: viii. 22) (he praised) the Aśvins^a.

समुत्यन्नो Λm^1 , समुद्भुतो Bn.—देवता b, देवता: n, देवना: f, देवाना: f, देवतां f, देवनो f0 (doubtless due to the preceding f0 पन्नो), देवं नो f3, देवनो f0 f1.—Instead of f2 and f3 as given in the text (according to f3 hdm f1 fb fk), f1 f4 fb read:

(स्तुत्वा) चित्रं सूत्तैः परैस्त्रिभिः। श्रिश्वनाविपिमिन्द्रं चाभितुष्टाव देवताः॥

hd, but not m¹, add these three pādas after those in the text (which they have also), marking the lacuna of one pāda by six (h) and eight (d) short horizontal strokes at the top of the line. These pādas are probably based on a marginal gloss with reference to 62^b (देवता सोतुमहींस).

- ^a With 62^d and 63^a cp. Sarvānukramaņī: o tyam āśvinam . . . īļiṣva . . āgneyam.
- 63. The (hymn) 'Laud thou' (*iliṣva*: viii. 23) is addressed to Agni, and the next one 'O friends' (sakhāyah: viii. 24) is addressed to Indra, but the last triplet, 'As to Varo-suṣāman' (yathā varo suṣāmṇe: viii. 24. 28-30), is addressed to Dawn a.

यथा वरो सुषाम्ण hdbfk (चरो fk), यथा वर: सुसाम्बे r.

- ^a The Sarvānukramaņī says nothing about this triplet being addressed to Uṣas, but states that it is a dānastuti of Varu Sauṣāmṇa, of which nothing is said here.
- 64. Now it is these eight deities altogether who cleft Vala: Uṣas and Indra and Soma, Agni, Sūrya, Bṛhaspatia,

ऋषी तु hm¹r, ऋषी च b, ऋषा च fk.—सहितास्वेता hm¹bfk, सहिता एता r.— वसम् bk, बसम् fr, वश्म् hdm¹.—सोमञ्जाद्यः hdbfk, सोमञ्जाष्यः r (ep. r in vi. 33).

- ^a This remark is suggested by the mention of Vala in the last stanza of RV. viii. 24.
- 65. Angiras and Saramā. Now at the beginning of the next hymn 'You two as such' ($t\bar{a}\ v\bar{a}m$: viii. 25) there are nine (stanzas) addressed to Mitra-Varuṇa, but the next twelve a

The end of the varga is here marked by 93 in m1 bfk, not in hd.

* According to the Sarvānukramaṇī only 10-12 (not 10-21) are addressed to the All-gods.

14. Deities of RV. viii. 26-31. viii. 29 is prthak-karma-stuti.

66. are addressed to the All-gods; and the wealth which king Varu gave to the seer is proclaimed in the triplet 'A bay from Ukṣaṇyāyana' (rjram ukṣaṇyāyane: viii. 25. 22-24) a.

वरू hm^1r , चतू h, चक्क fk.— यद्यादाद् hm^1r , यहदाद् h, यददा (षये) f, यददा (प्रये) k.—After 66^{ab} r adds (apparently from $r^1r^4r^6$) the line:

द्न्द्रो वित्येतयची तु दानग्रित्रप्रकाग्रनम्।

which is not found in hdm¹bfk nor in r²r³r⁵, and which R already has (with slight variations) as 59°d. The line in that place is found in B and m¹ only (see note b on vi. 59).— कीर्तितं तु तृचे (विस्मन्) hm¹r, कीर्त्तन तिच्चे fk, कीत्तिचतिद् चिवे b.— विस्मन् hm¹bfk, तिस्मन् r.— ऋजमुख्यायने hdr, ऋजमुख्य णोयने f, ऋजमुख्य ायने b.

- ^a The pratīka must be read with vyūha, rjram ukṣaṇi āyane, on account of the metre.— The Sarvānukramaṇī makes no mention of a dānastuti here.
- B 67. (What) the Asvins, being pleased, bestowed on Suṣāman, is told here a: (viz.)
- 'Of you two' (yuvoḥ: viii. 26) is addressed to the Aśvins: 'Do thou yoke b' (yukṣva: viii. 26. 20-25) (and) the (stanzas) which (come) next are addressed to Vāyu.

तिहि ते br, तादिहों ते fk, ताविहों ते m¹.— सुषामणि f, सुवामणि b, सुसामनि r.—67^{ab} is not found in A, but in B and m¹ only.— युवोर्युच्च r, युवोर्युच fk, युवोर्युच्च bm¹, युवोर् षू hd (the fuller pratika of viii. 26. 1).— वायव्या उत्तरासु याः hdm¹r, वायव्या उत्तरी तृची bf, वायव्यावृत्तरी नृची k.

- a This must refer to the following hymn: Suṣāman is mentioned in the second stanza.

 b The pratīka yukṣva is necessary in A, as there would be no clue to the stanzas meant: cp. Sarvānukramaṇī viṃśyādyā vāyavyāḥ. The reading of B, uttarau tṛcau is, however, more definite.
- 68. Manu, as he was named, whom Savarṇā a obtained as a son from Vivasvat b, uttered the five hymns (27-31) addressed to the

All-gods (and beginning) 'Agni at the laudation' (agnir ukthe: viii. 27).

सवर्णा bfkrs, सर्प्यू hdm¹. — मनुनाम all MSS., r (s, v.r.), मनुं नाम s. — The text of 68^{cd} follows the reading of hdm¹rbfk; the reading of r¹r⁴r⁶ is: वैश्वदेवानि सूतानि जगादाधिरित स्वयम.

- ^a I have followed B in reading savarņā, as this is supported by Ṣadguruśiṣya, p. 139: manur nāma vivasvataķ savarņāyām saranyūchāyāyām jātaķ; the metronymic, too, of Manu is sāvarņi. Cp. BD. vii. 1.

 ^b 68^{ab} is quoted by Ṣadguruśiṣya on RV. viii. 27.
- 69. 'Brown is one' (babhrur ekaḥ: viii. 29)—these are ten dvipadās with characteristic marks (lingataḥ); for in them the deities are praised, each separately, by their activities a.

विता hm1r3B, विधान r.—ह्यासु कर्मिनः hm1rbfk, ह्यासां नविभः r1r4r6.

- ^a Cp. above, iii. 40-43.
- 70. Now where the deities are praised by their respective actions and qualities, there is what is called separate praise of action (pṛthak-karmá-stuti). Such a (hymn) is addressed to the All-gods.

यत तच hm¹bfk, यत यत r.—70^{cd} follows the reading of Am¹; the reading of B is: पृथक्कमंसुती युक्तं तदिवादेश्वदैवतम्.—The end of the varga is here marked by 98 in bfk, not in hd.

15. Detailed account of RV. viii. 29, 31. Deities of viii. 32-34.

- 71. Now of these (dvipadās) the first 'Brown' (babhruḥ: viii. 29. 1) is addressed to Soma, but the next stanza (2) is addressed to Agni; (then comes) one addressed to Tvaṣṭṛ (3), and Indra (4) and Rudra (5), Pūṣan (6), Viṣṇu (7), a stanza addressed to the Aśvins (8);
- 72. the ninth is addressed to Mitra-Varuna (9), the tenth stanza is (in) praise of the Atris a. And in connexion with the institutor of the sacrifice (in) 'Who' (yah: viii. 31) the sacrifice ($ijy\bar{a}$) b is here praised.

मैचावब्ख्यं bfkr, मैबावब्खी त्वृग् hdm¹.—इग्रम्यश्विसंखवः m¹, दश्म्याश्वश्व संखवः h, दश्म्याश्व संखवः d, दश्मी मिबसंखवः b, दश्मी मिबसंखवा r, दश्मी संखवः fk.—

॰प्रसङ्खास hm¹r, ॰प्रसङ्खान्त b, ॰प्रसंगा त fk. —य द्रत्यव चयी स्तृता hdm¹, यजिरेवाव संजुता r, यजे वाच प्रकीर्तिता b, यज्ञे पाच प्रकीर्त्तिता fk.

a The ddities in the text of RV. viii. 29. 10 are in the plural: according to Sayana's comment they are the Atris. The readings mitra and asvi are undoubtedly corruptions of atri, every letter of which occurs in one or other of the corruptions. conjecture 'ya' ijyā atra is supported by the Sarvānukramaņī, which describes the hymn thus: yo yajāti .. atra ijyāstavo yajamānaprasamsā ca. The reading trayī stutā may be a corruption of prakirtitā.

B 73. In the couplet 'Who sacrifices' (yo yajāti: viii. 31. 1, 2) Sakra, the Lord of sacrificers, is lauded. In the couplet 'Glorious his' (tasya dyumān: 3, 4) the sacrificer (is praised), also in the four (stanzas) 'Swiftly' (makṣu: 15-18).

यजताम br, यज्ञानाम m1fk.—यज्ञा r, यज्ञाम् b, यद्गा m1, यज्ञा f, युज्ञा k.— मचित r, मजित b, मचिति fk, यष्ट्रिति m1.—This sloka is not found in A, but in B and m1 only.

B 74. The five stanzas 'The couple who' $(y\bar{a} \ dampat\bar{i} : viii.$ 31. 5-9) are (in praise) of husband and wife a sacrificers. 'Hither protection' ($\bar{a} \pm \alpha rm\alpha$: 10) is a prayer. The two following 'May hither come' (aitu: 11, 12) are addressed to Püṣanb; while (in) 'Since' (yathā: 13) Mitra, Aryaman,

यज्वनोर् br, यज्जिश्र्र fk, यहाशीर् m1.—या दंपती ऋचः m1, या दंपतीत्व्यः br, या दंपती - च: f, या दंपती तुचः k. - आ श्रमीशीरैत r, आ श्रमीसीर्पि तु b, आ श्रमाशीरपां m1, अर्थश्रमासिरपी fk (॰वी k). —पीष्णी परे b, पीष्णी परि m1f, पीष्णी परि k.—मिनोऽर्यमा bfkm1, मिनार्यमा r.—यथा bfkr, तथा m1.—This śloka is not found in A, but in B and m1 only.

* Cp. Sarvānukramani, yā ityādi panca dan patyoh, which is probably based on the above, dampatyoh pañca yā dampatī reah. b Pūsan is mentioned in 11 (aitu), but not in 12.

B 75. and Varuna, the Adityas, are praised; 'Agni' (agnim: 14) is to Agni.

The three following hymns after this, 'Forth the deeds' (pra krtāni: viii. 32-34), are addressed to Indra.

स्तास्वच m1bfk, स्तास्वच r.—75ab is not found in A, but in B and m1 only.— The end of the varga is here marked by 98 in hdbfk. - A has only two and a half slokas in this varga.

16. Indra and Vyamsa's sister. Deities of RV. viii. 35-46.

76. In 'Downward' (adhaḥ: viii. 33. 19) a girl addressed Indra (who appeared) with the characteristics of a woman *a; for the chastiser of Pāka (Indra) made love to that Dānava maiden b,

ऋध इत्यच r, ऋध्य इत्यच b, ऋध्यय इत्यच fk, ऋष इत्याह hdm¹.— कन्या तं bkr, कन्यां तं f, तस्यां तु hdm¹.— स्त्री लिङ्गेनेन्द्र मत्रवीत् hdm¹br, स्त्रा लिगतं। खत्मत्रवीत् f, स्त्रा लिगतं। खत्मत्रवीत् k.

- a That is, this stanza is addressed by a Dānavī to Indra who has assumed the form of a woman. According to Sāyaṇa on RV. viii. 33. 19 this stanza is addressed to Āsaṅga Plāyogi when he was a woman (cp. above, vi. 41).

 b And had assumed the disguise of a woman because Vyaṃsa was his enemy.
- 77. the eldest sister of Vyamsa, by reason of his (Indra's) youthful desire (yuva-kāmyā)a. 'By Agni' (agninā: viii. 35) is a hymn addressed to the Aśvins. Then follow two hymns (36, 37) addressed to Indra.
- यंसख r^2r^7 , प्रुसख $r^1r^4r^6$, यंसथ b, यंथ f, यसथ k, पुंसथ hdm^1r^3 . तखैव hm^1br , तख व f, तखेवं k, तयैव d. युवकाम्यया $hdm^1r^3fkr^2r^6r^7$, वुवकाम्यया b, वधकाम्यया $r (=r^1r^4r^6)$. पर ततः hdm^1r , ततः पर bfk (cp. vi. 25 and 79).
- a The reading of r, tasyaiva badhakāmyayā, seems more natural: 'because of his (Vyaṃsa's) desire to slay (Indra),' or possibly, 'because of his (Indra's) desire to slay (Vyaṃsa)'; his making love to the sister being, in that case, a ruse. Kāmyā at the end of a compound in the BD. otherwise governs the preceding word in an objective sense (='desire for'). The original reading here was, therefore, perhaps yuddhakāmyayā.
- 78. The following (38) is addressed to Indra-Agni, (then) one to Agni (39), one to Indra-Agni (40); the following two (41, 42) are addressed to Varuṇa; but in the latter (42) Varuṇa hymn the last triplet 'Hither you two' (ā vām: viii. 42. 4-6) is addressed to the Aśvins.

ऐंद्रायं (परम्) $\Lambda\,\mathrm{m}^1$, ऐंद्रायात् b, ऐन्द्राग्न्यात् fkr.—ऐन्द्रायं $\Lambda\,\mathrm{m}^1$, ऐन्द्रायाद् b, ऐन्द्राग्न्याद् fkr.—वार्शे $\mathrm{m}^1\mathrm{b}\mathrm{fkr}^1\mathrm{r}^4\mathrm{r}^6$, वार्शं $\mathrm{hd\,r}^3$.

79. The two hymns, 'These' (ime: viii. 43), 'With fuel' (sam: viii. 44), are addressed to Agni; the two which then follow after these (45, 46) are addressed to Indra.

Now what Kānīta Pṛthuśravas gave to Vaśa Aśvya a

इमे समापेये hdm^1bfkr , इमे तु चापेये $r^1r^4r^6$.—ऐन्ट्रे ततः परे B, ऐन्ट्रेति चोत्तरे Am^1 .—वशायास्त्राय qs, वशायास्त्राय hdm^1r , वशायास्त्राय bf, वसाथासाय k.

- * 79^{cd} and 80^{ab} are quoted by Sadgurusisya on RV. viii. 46 and by Sāyaṇa on RV. viii. 46. 21.
- 80. as a gift is here praised in the (stanzas) beginning 'Hither he' (\bar{a} sa: viii. 46. 21-24). The two pragātha couplets 'Hither to our' (\bar{a} $n\bar{a}h$: 25-28) are addressed to Vāyu as well as the last (stanza) but one of the hymn (32).

स द्विवमा॰ hm¹r, स एलेवमा॰ ss, श्रयेत्वेवमा॰ b, श्रयेत्वेचमा॰ f, स चेंत्वेचमा॰ k.—•दिभिः Am¹ss, •दिना B.—The end of the varga is here marked by १६ in m¹ bfk, not in hd.

17. Deities of RV. viii. 47-56.

B 81, 82. In the couplet 'Well led indeed' (sunītho gha: viii. 46. 4, 5), Mitra-Aryaman (and) the Maruts are praised.

Pleased by (the hymn) containing forty-two stanzas (viii. 45) the Fort-destroyer (Indra), after cutting through the mountain with his bolt, gave to Triśoka the cows which had been carried off by the Asuras. The seer has stated this himself in the (stanza), 'Who clave' (yaḥ kṛntat: viii. 45. 30).

मुनीयो घ r. मुनीयो व m^1bfk .—ि द्विचलारिशकात् br, द्विचलारिशका fk, °रिशके m^1 .—82. गिरिं निक्कत्य m^1r , गिरिं निक्कत्य b, गिरिं नि r, गिरिं नि r k.— वज्रेण m^1r , वज्रेण bfk.—हताः r, हता bfk, हताम् m^1 .— ऋषिसु स्वयम् r, ऋषिशुन्सूयम् b, ऋषिसु स्वयम् fk, ऋषिसु तूयम् m^1 .—81, 82 are not found in A, but in B and m^1 only.

83. In (the hymn) 'Great' (mahi: viii. 47), of which the Ādityas are the deities, Aditi is praised with the ninth (stanza). The last five (stanzas: 14–18) should be (considered as addressed) to Dawn as well (api)^a. 'Of the sweet' ($sv\bar{a}doh$: viii. 48) is traditionally held to be addressed to Soma.

°दिखदैवते hdm^1 , °दिखदेवते fbr, °दिखदेवता k. — खादोरिति स्नृतम् hm^1r , खादोरमचितम् fk, खादोरमचित् b.

- a The Sarvānukramaņī has borrowed the words antyāh pañcosase'pi.
- 84. Now the following eight hymns (viii. 49-56), by seers of ardent brilliance, are addressed to Indra^a; but the twenty-

sixth pragatha couplet here (viii. 54. 3, 4) is addressed to many deities.

पराखष्टी तु Am¹, पराणि चाष्टी B.—तिग्मतेजसाम् hm¹r, तिग्मचेतसाम् b, तन्म-तेजसा f, तिग्मतेजसा k.—ऐन्ट्राख्य hdm¹, ऐंद्राख्यति b, ऐन्ट्राख्यमि kr, ऐंद्राख्युमि f.—वज्ञदैवतः hdm¹bfk, वज्जदेवतः r.

- ^a In the reading aindrany abhi, the latter word is of course the pratika of the first Vālakhilya hymn (viii. 49). Cp. below, 86, note ^a.
- 85. The last stanza, 'Agni has appeared' (acety agnih: viii. 56. 5), is to Agni; the last verse (pada) a sang of Sūrya (viii. 56. 5^d). Whatever wealth Praskanva gave to Pṛṣadhra,

ऋगन्द्यापेर्॰ $h m^1 r$, ॰न्द्यापेख॰ b, ॰न्द्यापेय॰ fk.— पूर्यमत्त्यं पहं $r^5 r^7$, मयमत्यं पहं b, पूर्यमत्यं पहां f, सूर्यमत्यपहां f, सूर्यमत्यपहां f, सूर्यमत्यपहां f, पूर्वमत्यपहां f, पूर्वमत्यपहां f, पूर्वभ्रः f, प्रविद्यम् f, प्रविद्यम् f, यहस्तु f, यहस्त

^a Or, with A, 'with the last verse (pad) he (the seer) sang of Sūrya'; pad, however, is not elsewhere used in the BD. with this sense, while pada is often so used.

18. Deities of RV. viii. 60-67.

86. all that is here praised with the two hymns 'Great indeed' (bhūrīt: viii. 55, 56).

A Now after (a hymn) addressed to Agni (viii. 60)^a there follow here six addressed to Indra (beginning) 'Both' (ubhayam: viii. 61-66).

Bhāguri says that the stanza 'The giver to me' (dātā me: viii. 65. 10) (contains) incidental mention (nipāta) of the Gods;

तद्भूरीदिति m^1 br, तद्भूरीति fk, भूरीदिति तु hd.—िखह संखुतम् Λm^1 , परिकीर्ति-तम् B.— 86^{ab} is not found in $bfkr^2r^5$.—िनपातमाह hm^1r , निपातानाह fkr^2 , निपातनेह r^5r^7 , निपातानेहद् b.

^a It is to be noted that the BD. makes no mention of the last Vālakhilya hymns (viii. 57-59). This is in agreement with the Kashmir Khila collection, which (Adhyāya iii. I-I4) only contains the first eight (viii. 49-56), introduced with the words: bālakhilyāḥ pare'ṣṭau (ii. 19): 'in the following (adhyāya) the eight Vālakhilya hymns (are given).'—

The eleventh Vālakhilya hymn (viii. 59) has already been referred to above (iii. 119) as one (the sixth) of the eleven Suparna hymns.—Only two of the MSS. of the Sarvānukramaņī used by me notice the Vālakhilya hymns, and viii. 58 is omitted even in these two MSS.

87. Yāska, however, considers this triplet (viii. 65. 10-12) to be addressed to the All-gods. But the hymn which here follows, 'Now these' ($ty\bar{a}n\ nu$: viii. 67), has the Ādityas as its divinities.

ऋचं यास्त्रज्ञृचं तेतं hdm¹ r³, तृचे यास्त्रज्ञृचग्तितं r, यास्त्रोऽस्रोऽधं तृचं चैनं r⁵, यास्त्रोऽस्रोऽधं तृचं चैनं b, यास्त्रो चें तृचं चैनं fk (चिचं k).— त्याद्गित्रत्यच r, त्यान्त्रित्यच hdm¹, त्यानित्यच b, त्यानित्यं तु k, त्यानिं तच f.

B 88. Fishermen, having by chance seen fish in the water of the Sarasvatī, cast a net, caught them, and threw them upon^a the dry land out of the water.

मीनान् m^1 r, मीनां bf k.—जालं m^1 r, जाले k, जलं b.—बुद्वोद्चिपन् r, बध्वा चाचिपन् m^1 , बहुा चाचिपंत् f, बध्वा चाचिपत् k, वाद्वाद्चिपन् b.—88-90 a^b are not found in A, but in B and m^1 only.

a Udaksipan: cp. samudaksipan in iv. 24.

B 89. And they, frightened by the fall of their bodies, praised the sons of Aditi. And they (the Ādityas) then released them, and graciously conversed with them (the fishermen),

श्ररीरपातभीतासी br, श्ररापातांसु ते मत्या k, श्ररापातांसी मत्या f.

B 90. (saying) 'O fishermen, be not afraid of hunger,' and 'Ye shall obtain heaven.'

In that hymn (tatra: viii. 67), Aditi, the mother of these (Ādityas), is praised with the triplet 'And' (uta: viii. 67. 10-12).

धीवरा: fkr, वीवरा b, धीवरान m¹.— जुद्भयं मा वो br, जुद्भयं मा वो f, जुद्भयं मा वो k, जुधमावो m¹.— भूत् bfkr, भू: m¹.— स्वर्ग r, स्वर्ग च m¹, स्वर्ग fk, सर्ग b.— तचैषां hdm¹, चैतेषां br, चैतेषा fk.— The end of the varga is here marked by 9 m in bfk, not in hd.

19. Deities of RV. viii. 68-75.

91. Because she is their mother she may be praised in every praise of them owing to (this) connexion. 'Hither these as a car' (ā tvā ratham: viii. 68-70) are three hymns addressed to Indra; (the stanza) 'Near to me six' (upa mā ṣaṭ: viii. 68. 14) a praises the seasons b.

श्वभिसंबन्धाद् hdr³, श्राप्तिसंबन्धाद् m¹, श्वितिसंबन्धाद् r¹r⁶, र्ति संबन्धाद् r⁴, श्वभि-संबंधा f, श्वभिसंबंधा k, [मातृत्वा omitted] दिभिसंवन्वा b, गर्भसंबन्धात् r.—सूचेतेषां r, सूचेतेषां hd, सूचतेषां m¹, सुवन्धेनां r²r⁶r², सुवत्धेजी b, सुवत्धोजा fk.—सौत्यृतून् hm¹r, स्तौत्यार्चम् b, स्तोत्यार्चम् fk.

- ^a Upa mā ili sat owing to the metre for upa mā sat iti.

 b The Sarvānukramaņī says nothing of the Litus in RV. viii. 68. 14, but includes that stanza in the dānastuti (14-19). Ṣaḍguruśiṣya explains the discrepancy as due to the Devatānukramaņī (quoted by him, p. 141), which includes 14 in the dānastuti. In this connexion he quotes 91°d and 92°d (on RV. viii. 68).
- 92, 93. The five following (stanzas) in this hymn (atra) are (in) praise of the gifts of Rkṣa and Aśvamedha (viii. 68. 15–19). The first hemistich (11^{ab}) of the couplet 'He has drunk' (apāt: viii. 69. 11, 12) is (in) praise of Indra, Agni, and the All-(gods); the rest (11^{ad}, 12) has Varuṇa as its divinity. 'Thou' (tvam: viii. 71, 72) are two (hymns) addressed to Agni; or the latter hymn (72) is (in) praise of oblations,

च्छर्वाश्वमेधयोर्व hd (ऋषाश्वमेधयोर् S), त्रार्वाश्वमेधयोर्व m¹r, त्रार्वपत्व-श्वमेधाय b, त्रार्चपत्वश्वमेधाय f.—पराः hdm¹bṣ, परा fkr.— त्रपादिन्द्रस्य hm¹r, त्रपादिन्द्रस्य bfk.—93. शेषो वृष्णदेवतः hdbfk, शेषो वृष्णदेवतः r³m¹r²r⁵, शेषा वृष्णदेवताः r.—मूक्तमृत्तारं Am¹, सूक्तमृत्तारे b, सूक्तमत्तारे f, सूक्तमतरे k, सूक्ते उत्तरे r.

94. and of milk, kine, and plants; for it evidently (dṛśyate) has this character. 'Up' (ut: viii. 73) is addressed to the Aśvins. The two following hymns, 'Of every house' (viśo-viśaḥ: viii. 74, 75), are addressed to Agni.

पयःपश्चोषधीनां च hm¹r, •धीनां वा bfkr²r⁵.—94 b =iii. 76 d ; iv. 18 b ; v. 87 b ; viii. 62 d .

95. With the two stanzas 'I' (aham: viii. 74. 13, 14) the seer praises himself.

- B Having praised himself, he praises the gift of Śrutarvan a
- 95^{ed} and 96^{ab} are not found in A, but in B and m¹ only.—The end of the varga is here marked by 90 in bfk.
- a 95° d was probably known to the author of the Sarvanukramani: cp. antyas tisrah... śrutarvano danastutih.

20. Deities of RV. viii. 76-90.

B 96. and the great river Paruṣṇī in connexion with what he has received $(\bar{a}d\bar{a}na)^a$.

With the following (stanza he praises) the Paruṣṇī b (viii. 74. 15); Indra with the three hymns, 'Now this' (imam nu: viii. 76-78).

श्रात्मादाना॰ bfkr, श्रात्मदाना॰ m^1 .— पर्या पर्ष्णीमिन्हं Am^1b , पर्या पर्ठी-धिर्मिंहं f, पर्या मार्क्धीमिंहं k, पर्ष्णीं पर्या चेन्हं r.—िन्नित r, त्निति hdbfk.

- * This line considered in connexion with the next seems very redundant and is probably a later addition.

 * The Sarvānukramaņī makes no mention of the Paruṣṇī here.
- 97. 'This active' (ayam kṛṭnuḥ: viii. 79) is addressed to Soma. The three following this (beginning) 'Truly not' (nahi: viii. 80-82) are addressed to Indra. In the first of these (80) the stanza 'He has exalted' (avīvṛdhat: 10) is addressed to the All-gods.

श्रयं इतुरिदं सीम्यं $h \, m^1 \, b$, श्रतुरिरं सीम्यं f, श्रंतुरिरं सीम्यं k, सीम्यस्य खयमित्यस्य r. — चीख्येन्द्राणि पराख्यतः $h \, m^1 \, b$, पराख्येन्द्राणि यानि तु r. — चैश्वदेव्युगवीवृधत् $h \, d r$, वैश्वदेव्युग्वधीगवात् m^1 , वैश्वदेवस्मवीवृत् b, वैश्वदेवे स्मवीवृधत् f, वैश्वदेवेन समवीविधृत् k.

98. 'Of the gods' (devānām: viii. 83) is to the Gods; the next, 'The dearest' (prestham: viii. 84), is addressed to Agni. 'Hither to my' (ā me: viii. 85-87) are three addressed to the Aśvins, and 'Him' (tam: viii. 88-90) are similarly (iti) (three) addressed to Indra.

पेष्ठमापेयमुत्तरम् hm¹rbfk, ऋषियं तु ततः परम् r¹r⁴r⁶.—The text of 98° d follows the reading of Am¹; the reading of B, चीव्याश्विनानि सूत्तानि श्रा म ऐन्ट्राणि तं तथा, seems preferable in itself. The second इति in A must be intended to mean 'so,' 'similarly' (that is, 'three' = तथा in B).—The end of the varga is here marked by २० in bfk, not in hd.—It is to be noticed that the varga has, even in B, the abnormally small number of three ślokas. This is probably due to the intention of beginning the story of Apālā with a new varga.

21. Story of Apālā.

99. a There was once a girl Apālā, daughter of Atri, who suffered from skin-disease. With her Indra fell in love, having seen her in the lonely hermitage of her father.

लग्दोषिणी hdr, लग्दूषिणी b, लाग्दोषिणी fk.—दृष्टा hrbfk, दृष्ट्या r1r4r6.

- ^a The following passage (99-106) is quoted in the Nītimañjarī on RV. viii. 91. 7 and Ṣadguruśiṣya on RV. viii. 91 (pp. 142 f.): see BD. vol. i, p. 135. Cp. Sāyaṇa in his introduction to RV. viii. 91, where he gives a prose version of the story, besides quotations from the Sātyāyana Brāhmaṇa in his comment on RV. viii. 91. 1, 3, 5, 7. See also M. M., RV.² vol. iii, pp. 33-38, where extracts from the BD., Ṣaḍguruśiṣya and the Nītimañjarī are quoted; Aufrecht, Indische Studien, vol. iv, p. 1 ff. quotes and translates this BD. passage.
- 100. Now by penance she became aware of all Indra's intentions. Taking a water-pot she went to fetch water.

श्रपामधे जगाम सा hdr, श्रपामन्ते जगाम सा b, पातुं जगाम तेजसा n, तेन सार्ध तु साप्यगात् s.—100 cd comes after 103 ab in A; it is omitted in fk.

B 101. Seeing Soma at the edge of the water, she praised him with a stanza in the forest. This matter is related in the (stanza) 'A maiden to the water' $(kany\bar{a}\ v\bar{a}h: viii. 91. 1)$.

कथितस्ततः m¹ fn, कथित स्तुतः bk, कथितः स्तुतः r.—This sloka is not found in A or s, but in B and n; 101^{ed} is in m¹ also.

- 102. She pressed Soma in her mouth;
- B and having pressed it she invoked Indra with the (stanza), 'Thou that goest' (asau ya esi: viii. 91. 2);

and Indra drank it from her mouth,

सा सुषाव मुखे hdm¹, सा सुषाव मुखात r, सा सुषाव सुषात bfk, सा सुषाव तथा n, सुषाव स्वमुखे s.—इन्द्रश्च m¹ bfkns, इन्द्रश्च A.—102^{bc} are not found in A, but in B only. Şadgurusisya has two entirely different pādas in place of 102^{bc}.

103. after he had eaten cakes and meal from her house. And she praised him with stanzas, but with a triplet (viii. 91. 4-6) she addressed him (saying),

स तब्रहात् hdr, स तब्बहात् m1, शतकतु: Bn.— जगादैनं तृचेन तु hm1r, जगादिनं

विचेत सा b, सोममिंद्र तृचेव सा f, श्रसी ब्रूते द्वचेन सा r⁵r⁷, कुर तात चिकीर्षितम् n. Ṣaḍguruśiṣya has these two lines in the following considerably modified form:

, निरगात्म क्रचित्पूर्वं भचयित्वा गृहायुनेः । ऋग्भिः सुत्वा जगादेन्द्रं कुरु मा सुत्वचं त्विति ॥

The last $p\bar{a}$ da here is nearly the same as 104^b .—The end of the varga is here marked by 9 in bfk, not in hd.

- 22. Story of Apala (concluded). Deities of RV. viii. 92, 93.
- 104. 'Make me, O Śakra, to have abundant hair, (and) to be faultless-limbed, (and) fair-skinned.'
- B Hearing this speech of hers, the Fort-destroyer was pleased with it.

मुल्बम् hm¹n ș, मुल्बां br, मुल्बां f.—तेन m¹ bfkr, तसे n.—104^{ed} is not found in A or ș, but in Bm¹n only.—Ṣaḍguruśiṣya omits 104^a also, but has 104^b in a slightly modified form (see note on 103).

105. Indra passing (praksipya) her through the carriage aperture (between the body) of the car and the yokeⁿ, drew her forth three times. Then she became fair-skinned.

रथिक्ट्रिण ताम् all MSS., r and n(hm), रथिक्ट्रि गताम् s, रथे अद्गिणा ताम् n.— मुखक् सा तु ततो s भवत् hm^1rs , ततः सा सुखचाभवत् $bfkr^5r^7n$.

- a Without a knowledge of the construction of cars at the period when this passage was written, the exact meaning must be uncertain, but the wording indicates that the two genitives express the two parts between which there was an aperture (ratha-chidra).
- 106. Her first skin which was cast off became a porcupine ($\hat{s}alyaka$), but the next became an alligator ($godh\bar{a}$), and the last a chameleon ($krkal\bar{a}sa$).

106ab follows the reading of Am1; the reading of Bn is:

तस्यां खिच व्यपेतायां सर्वस्थां श्रस्थकोऽभवत्। (सर्व॰ bfkn, पूर्व॰ r)

The reading of A is favoured by that of Sadgurusisya:

तस्याः पूर्वहता या त्वरजातिः सा श्रन्थकोऽभवत्।

107. Yāska and Bhāguri call this hymn a story a (itihāsa), while Saunaka calls 'A maiden' (kanyā: viii. 91) a (hymn) addressed to Indrab, as well as the two which come next (beginning) 'As one who drinks' (pāntam: viii. 92, 93).

इतिहासिमं $A\,m^1$, इतिहासिममं B.— यास्तभागुरी $A\,m^1$ (°री hd, °रि: $m^1r^1r^3r^4r^6$), यास्तमाउरी r, यास्तमातरी bfk, यास्तगातवी r^5r^7 .— सिद्धं पानित्युत्तरे च ये $h\,m^1r^1$, मूक्ते पानित्युत्तरे परे bfkr.

- ^a Cp. Vedische Studien, i, p. 292 f.

 ^b The Sarvānukramaņī combines the two statements in describing the hymn as an *itihāsa aindraḥ*.
- B 108. But the last (stanza) of the latter (viii. 93. 34) is pronounced in the Aitareya (Brāhmaṇa) a to be addressed to the Rbhus; for on the third Chandoma (day) b this hymn is chanted (śasyate) as one addressed to the Rbhus c.

खार्भवी m¹b, खार्भवंवी f, चार्भवी r.— उत्तरखेतरेयके br, रुद्र रखेतरेयक m¹, (प्रोक्ता) त्तखेतरेयके f.— छान्दोगिके r(m¹?), छंदोगिक b, छंदोमिके f, दंदोमिके k.— This śloka is not found in A, but in B and m¹ only.— The end of the varga is here marked by २२ in bfk.

AB. v. 21. 12; cp. Sarvānukramaņī: antyaindrārbhavī. b See chandoma and chāndomika in the St. Petersburg Dictionary; in the smaller Dictionary Böhtlingk accepts the reading chāndogika here = Chāndogya Brāhmaṇa. c Cp. BD. v. 175.

23. Story of Soma's flight from the gods.

109. The following hymn, 'The cow' (gauh: viii. 94), is addressed to the Maruts; the following six, 'Hither to thee' (ā tvā: viii. 95-100), are addressed to Indra.

B In the second hymn of these (96) they say there is a story $(itih\bar{a}sa)$:

^aSoma, oppressed by fear of Vrtra, fled from the gods;

आ लै॰ br, ह्या ले॰ Am¹fk.—इतिहासं fkr, इतिहास्य b.—109^{cd} is not found in Am¹, but in B only.—अपक्रस्य तु Am¹s, अपचक्रास B.

- The following passage (109^{ef} -115) is quoted by Sāyaṇa on RV. viii. 96. 13 (cp. RV. i. 130. 8): cp. var. lect., M.M., RV.² vol. iii, p. 39 f. See Vedische Studien, vol. iii, p. 49 f. The story refers to RV. viii. 96. 13-15.
- 110. and he betook himself to a river named Amsumatīa in (the country of) the Kurus. Him approached, with Brhaspati only b, the slayer of Vrtrac,

नाम्ना $h \, d \, m^1 \, b \, f \, k$, नामा $r^1 \, r^3 \, r^4 \, r^6 \, n$, (॰ती॰) नाम्नीम् r, नाम s.—॰स्यतिष्ठत् $h \, m^1 \, r^2 \, r^6 \, s$, ॰स्यातिष्ठन् b, ॰स्यतिष्ठत् f, ॰त्यतिष्ठत् $r^1 \, r^3 \, r^4 \, r^6$, न्यतिष्ठत् n.—कुक्न् $r^2 \, r^5 \, n \, s$, कुत्तन् b, कुत्त f, गुक्न् f, श्वेनात्ययाद् f, ॰वेनात्ययाद् f, ॰वेनात्ययाद् f, ॰वेनात्ययाद् f, ॰वेनात्ययाद् f, सोऽभ्ययाद् f, सोऽभ्यगाद् f.

- Cp. RV. viii. 96. 13: ava drapso amsumatīm atisthat.

 b Cp. viii. 96. 15: bṛhaspatinā yujendrah sasāhe; cp. AB. vi. 36. 14: bṛhaspatinaiva yujā.

 sloka is quoted by the Nītimañjarī on RV. viii. 95. 7.
- 111. being about to fight a in company with the greatly rejoicing Maruts, armed with various weapons. Soma, seeing them approaching, stood in array with his forces,

योत्स्यमानः br, योन्स्यमाण्य् $\mathbf{r}^1\mathbf{r}^4\mathbf{r}^6$, योत्स्यमानं \mathbf{h} dm $^1\mathbf{f}$ ks.—सुसंह्रष्टेर् hrbfk, च संह्रष्टेः $\mathbf{r}^1\mathbf{r}^4\mathbf{r}^6$.—तानायतः सोमः hdrb, तानायतः सोम f, तानायतांत्सीमं $\mathbf{r}^1\mathbf{r}^4\mathbf{r}^6$.—व्यवस्थितः hdrbk, व्यवस्थितं $\mathbf{r}^1\mathbf{r}^4\mathbf{r}^6$.

- The accusative yotsyamānam cannot be right, as this would imply that Soma was already about to fight, and that he was accompanied by the Maruts, while dṛṣṭvā tān āyataḥ would then become unintelligible. The situation appears to be this. Indra, accompanied by Bṛhaspati alone among the gods whom Soma had left, approaches the latter, while on a warlike expedition in association with his allies the Maruts. Soma, on seeing Indra's host, takes it for Vṛṭra's army and assumes the defensive. Bṛhaspati then comes forward and explains that it is Indra with his Maruts.
- 112. thinking Vrtra was approaching with a hostile host, intent on slaying (him). To him, arrayed and ready with his bow, Brhaspati spoke:

मन्वानी वृत्रमायान्तं hdm1rbfk, मन्वानं पुत्रमायान्तं r1r4r6.

- 113. 'This is the Lord of the Maruts, O Soma; come back to the gods, O Lord.'
- B Hearing the speech of the preceptor of the gods, which was unavailing because he believed it was Vṛṭra,

सोम एहि m¹r, सोमैहि hdfb, सोमैसहि k, सोम मैहि r¹r³r⁴r⁶, सोम प्रेहि s.—113^{cd} is not found in A, but in Bm¹ only.— अनर्थ kr, अन्यर्थ b.— The end of the varga is here marked by २३ in bfk. The varga has five and a half ślokas, but 113^{cd} is probably a later addition; for it is both superfluous and omitted not only by Sāyaṇa but also by m¹, which almost invariably has the additional readings of B.

24. Story of Soma's flight (continued).

114. he replied 'No.' (So) the mighty Sakra, taking him by force, went to the gods in heaven. The celestials (then) drank him in due form.

स्वर्ग एव A, श्रोजसैव m^1s , श्रोजसैव b, र्नर्जसैव f.—देवानादाय $A\,m^1s$, देवाना- यन्तं br, देवानातं f.

115. And having drunk (him) they slew in battle nine times ninety a demons. All this is related in the triplet 'Down' (ava: viii. 96. 13-15)b.

श्रव इष्टिक्संजृचे ${
m hdm^4}$, श्रिप य तिसंजृचे ${
m r^1r^3r^6}$, श्रिपव द्रप्प इत्यिसिन्द्रुचे ${
m s}$, श्रिपव द्रप्प इत्यिसिन्द्रुचे ${
m s}$ ।

- ^a Cp. vi. 51; vii. 51. ^b 109^{cd}-115 is translated in Vedische Studien, vol. iii, p. 50.
- B 116. (The seer praises) Indra, and the Maruts, and also Brhaspatia: for these are the deities of the triplet; Saunaka says that Indra alone (is the deity).

इन्ह्रं च $bfkm^1$.— वृहस्पतिम् bkm^1 , •पति f.— 116^{ab} is found in $bfkm^1$ only.— ह्येता hm^1r^3B , तस्य r.

- ^a In connexion with the following line, 116^{ab} seems necessary. Mitra makes no reference to it, though it must be in his B MSS, also. As the names are in the accusative in the MSS, I have assumed the ellipse of *stauti*, which has frequently to be supplied in the BD, though hardly ever in so forced a way as here.
- B 117. But in the Aitareya (Brāhmaṇa) a it (the triplet) is said to be addressed to Indra-Brhaspati.

With the triplet 'Here I' (ayam: viii. 100. 1-3) Nema, son of Bhṛgu, praised b Indra without seeing him c.

उत्तो m^1 bfk, उत्ता r.— 117^{ab} is found in B and m^1 only.— तृचेनेन्द्रम् hrbfk, तृचेनेन्द्रम् dr^5r^7 .— अपश्चंतं hdm^1 bf, अपश्चन् तम् r^5r^7 , अपस्चंते k, श्चदृश्चन्तम् $r^1r^4r^6$.

- AB. vi. 36. 12. Tuṣṭāva from 118a. a Apaśyaṃs tam is necessary because it is Nema who does not see Indra.
- 118. And Indra (then) with a couplet (4, 5) (says), 'Here I am, behold me, seer a.'
- B For Nema, being alone (eka) while praising (Indra), had also said, 'There is no Indra b.'

हुचेनायम br, हुचेनाहम् m¹fk, पराभ्यां तु hd.—श्रहं पश्च च मामृषे br, श्रहं पश्च च मामृषे br, श्रहं पश्च च मामृषे m¹, श्रहं पश्च च मा तृषे f, श्रयमस्रोति मामिति hd.—118^{cd} is found in B and m¹ only.—सुवन्नेव r, सुवंनेन b, सुवन्तेन m¹, सुवंतेन fk.—The end of the varya is here marked by २४ in bfk.

a Cp. RV. viii. 100. 4: ayam asmi jaritah pasya mā iha.
b Cp. ibid., 3: nendro astīti nema u tva āha.

241] —vi. 123 TRANSLATION AND NOTES [-RV. viii. 100

25. Details regarding RV. viii. 100. Visnu helps Indra.

B 119. Indra, on hearing that, praised himself with two stanzas (4, 5) as he showed himself^a.

The seer on seeing him was greatly rejoiced, and in the couplet 'All this of thee' (viśvet $t\bar{a}$ te: viii. 100. 6, 7)^b

दर्शयन् fkr, दर्शयत् b.— r_{19}^{ab} are found in B and m¹ only.—ऋषिसं दृष्टा hd m¹, ऋषिसु दृष्टा r, तं दृष्ट्रिष $br^2r^5r^7$, तं दृष्ट्रार्थिश्व f.—सुप्रीतो hdr, संप्रीतो fk, संप्रीतो b-

- A Though somewhat redundant 119^{ab} is probably original, as it appears to have been known to the author of the Sarvānukramaņī; cp. the statement there: ayam iti dvr-cena indra ātmānam astaut.

 b This and the further details $(119^{cd}-124^{ab})$ as to RV. viii. 100 are passed over in the Sarvānukramaņī.
- 120. lauds both the gift of Indra and his various deeds. But (the stanza) 'Swift as thought' (manojavāḥ: viii. 100. 8) is addressed to the Bird (suparṇa), while 'In the ocean' (samudre: 9) is (in) praise of the Bolt.

दानम् hm1rb, पानम् fk.—सीपर्णी hm1r, सीवर्णी bfr2r5, सीवर्णि k.

121. In the couplet 'When Vāc' (yad vāk: 10, 11) he (the seer) praises the divine all-pervading Vāc.

Having a tormented these three worlds Vrtra remained (unassailable) by reason of his fury.

°तिष्येमान् Λ , °वृत्येमान् $r^2r^5r^7$, °वृत्येमां f, °वृत्तीमां h, °वृत्तीमां h

- ^a The following three ślokas $(121^{cd}-124^{ab})$ are quoted by Sāyaṇa on RV.viii. 100. 12: cp. M. M., RV.² vol. iii, p. 41.
- 122. Him Indra could not slay. Going to Visnu he said, 'I wish to slay Vrtra; stride forth to-day and stand at my side.

तं नाशकडन्तुम् hds, तं नाशकं हन्तुम् r, तन्नाशदंतुम् b, तन्नाशकं तुं fk.—हिनिष्टे तिष्ठस्व विक्रम्याच Am¹s, हनाव विक्रम्य तिष्ठस्वाच B.

123. May Dyaus make room (antara) for my outstretched bolt.' Saying 'Yes,' Viṣṇu did so, and Dyaus gave him an opening (vivara).

उदातसीव m¹, उदातसिव h dr¹ r⁴ r⁶, उदातस्य तु bfrs, उदातस्य तु k.—123^{bc} is omitted in fk.—The end of the varga is here marked by २५ in bfk, not in hd.

Тi

11.

26. Details regarding the deities of RV. viii. 101.

124. All this is proclaimed in the stanza 'Friend Viṣṇu' (sakhe viṣṇo: viii. 100. 12). But the first four stanzas of the hymn (beginning) 'Specially' (rdhak: viii. 101. 1-4) are addressed to Mitra-Varuṇa;

प्रोक्तं Bs, सर्वं A.—ऋषिणोक्तं संखेत्यृचि A, संखे विष्णविति त्वृचि B, संखे विकुविति त्यृचि b, विष्णविति संखे त्वृचि r, संखे विष्णो इति त्वृचा s.

125. and the three verses a of 'Forth' $(pra: 5^{abc})$ are to Mitrab, Aryaman, and Varuṇac, the fourth (5^d) is to all the Ādityas: such is (here) the praise.

वा पादाश् r, पादश्च Λ , पादो (॰र्घ॰) m^1 , पादस्ख् bfk.—चार्घ॰ rhd, (च) श्रर्घ॰ $r^1r^2r^3r^4$, (॰दो) र्घ॰ m^1 , (॰त्व्) श्रर्घ॰ bfk.—चयश्रुर्घः hdbk, चयश्रर्घः f, म यश्रुर्घः r, यश्रुर्घः m^1 .

- The MS. evidence favours the singular $(p\bar{a}das'ca)$, but this with the following trayah is very forced: 'pra is a verse to Mitra, (and one) to Aryaman, (and one) to Varuṇa, (altogether) three.'

 The dative $mitr\bar{a}ya$ is probably used beside the genitives aryamnah and varuṇasya because the stanza begins with pra $mitr\bar{a}ya$.

 According to the Sarvānukramaṇ, Mitra and Varuṇa only. The name of Aryaman occurs in 5^a .
- 126. But the following stanza (6) has the Ādityas as its deities. 'Hither to me' (ā me: 7, 8) is a couplet addressed to the Aśvins; there are (then) two addressed to Vāyu (9, 10), two to Sūrya (11, 12), one to Uṣas (13), or (the seer here praises) the light a of the sun and moon.

परा त्वादित्य° h m¹r, पर्गादित्य° b, बरामादित्य° f.—सीर्थे m¹, सीर्थ (wrong sandhi for सीर्थे) hr³B, सीर्थी (dual of सीरी) S, चोत्तरे (सीर्थे) r.— उषस्या bfS, उबस्या k, श्रीषस्या r²r⁵r², उषसा hdr³, सीर्थे (श्रीषसी) r.— प्रमां वा r³bfr²r⁵r², प्रमा वां hd, प्रमा वांग्य k, प्रभा वाग्य m¹ (सूर्यप्रमासुतिवी S).—चन्द्रसूर्ययोः hm¹r³B, (श्रीषसी) त्वृगियं परा r.

- ^a Another instance of the elliptical use of the accusative ($prabh\bar{a}m$) governed by stauti to be supplied: cp. note on 116 ab.
- 127. 'Generations truly' ($praj\bar{a}\ ha$: 14) is addressed to Pavamāna, while with the two stanzas 'The mother' ($m\bar{a}t\bar{a}$: 15, 16) the Cow is praised. 'Thou, O Agni, great' ($tvam\ agne\ brhat$:

P

viii. 102, 103) are two hymns addressed to Agni. But in a stanza of the latter (pare) is praised Agni,

128. the Middle, together with the Maruts and Rudras, (viz. in) 'Come, O Agni' (āgne yāhi: viii. 103. 14).

B Or in the first hemistich, 'Generations truly' (prajā ha: viii. 101. 14), Agni is here named,

च आपे r, चापे hdm1fk, चपे b.—128ed and 129 are not found in A or m1, but in B only.

129. in the third verse $(p\bar{a}da)$, the Sun $(\bar{a}ditya)$, and in the fourth the Middle (Agni) is praised a: for so it has been explained in the esoteric (rahasya) Aitareya Brāhmanab also.

व्याख्यातं r, व्याख्याता bfk.—The end of the varga is here marked by २६ in bfk.

^a The Sarvānukramaņī makes no reference to this alternative of B. b That is, in the Aitareya Āranyaka, ii. 1.

Mandala ix.

27. Deities of RV. ix. 1-86.

130. Now Soma Pavamāna is praised here in the ninth Mandala a. (In the hymn) 'Kindled' (samiddhah: ix. 5) the Āprī deities (āpryah) are praised like Pavamāna b.

नवमे लिह मण्डले B, नवमे मण्डलिधिः Am^1 (hdr^3 ; ॰लेऽधिंभः $r^1r^4r^6m^1$).— ॰वदाप्रयस्त hm¹r, ॰वदाप्रियः f, ॰वदाप्रीयः bkr².—॰स्तुताः MSS., ॰स्तः r.

- b That is, Cp. Sarvānukramaņī: navamam maņdalam pāvamānam saumyam. as if they were forms, not of Agni, but of Soma Pavamāna.
- 131. And in the three stanzas 'O Agni, life' (agna āyūmṣi: ix. 66. 19-21), Agni is incidental (nipātabhāj), while in the triplet 'Our protector' (avitā nah: ix. 67. 10-12) he (Pavamāna)a is praised together with Pūṣan.
- a Pūsan is directly mentioned in 10, indirectly as kapardin in 11, and aghrni in 12; ayam somah pavate occurs in 11, ayam . . pavate in 12; cp. Sarvānukramanī: avitā nas tisrah pausnyo vā, that is, the three stanzas 10-12 are addressed to Pūsan or Pavamāna.

132. Then two later stanzas in this hymn (atra), 'which of thee' (yat te: ix. 67. 23, 24), are addressed to Agni; 'By both of these' ($ubh\bar{a}bhy\bar{a}m$: 25) is addressed to Savitr; the next stanza (26) is addressed to Agni and Savitr.

साविची भागि॰ r, साविच्यपि॰ hm¹, साविच्यापि॰ d (but the ā of ॰च्चा॰ is obliterated with yellow pigment), साविच्याग्न्या॰ bfk. The Sarvānukramaņī has साविच्यपिसाविची (also in Sāyaṇa's quotation), but ॰च्यपि॰ is probably a misprint, as my index has āgnisāvitrī.

- According to the Sarvānukramaņī the deity of 25 is Agni or Savitr, of 26, Agni or Agni and Savitr.
- 133. 'May they purify me' (punantu mā: ix. 67. 27) is addressed to the All-gods, while the stanza 'Near to the friend' (upa priyam: 29) is addressed to Agni, and the two next, 'Who' (yaḥ: 31, 32), are (in) praise of the student of recitation a (svādhyāyādhyetr).

उत्तरे च य इत्येते hr3, जत्तरे च इत्येते d, षडुत्तरा य इत्यव r, सप्तोत्तरा य इत्यव B.

- ^a Cp. Sarvānukramaņī: te pāvamāny-adhyetṛ-stutī (RV. ix. 67. 31, 32 begin with the words: yaḥ pāvamānīr adhyeti). With regard to the reading of the B MSS. in 133° cp. Meyer, Ŗgvidhāna, p. xxiii (middle).
- 134. In the hymn 'At the rim' (srakve: ix. 73), when interpreted (nirukte) a, the demon-slaying Agni b (is spoken of), and 'The filter' (pavitram: ix. 83) is called a praise of the Kettle (gharma) as (representing) the Sun ($s\bar{u}rya$) and the Soul ($\bar{a}tman$) c.

निक्ते hdm¹r, निक्त b, विर्क्त fk.—सक्केऽपि r, सक्केति hdm¹, अक्के पी bf, सके पी k.—°वद्यापि Am¹ (°वर्चापि r¹r⁴r⁶), °वद्याच B.—चोच्यते hm¹r, वाच्यते bk.—The end of the varya is here marked by २७ in m¹bfk, not in d.

I was for a long time inclined to adopt the emendation niruktal, meaning in the hymn srakve the demon-slaying Agni is explained (as the deity); but I have retained nirukte as the roading of the best MSS. and as giving an adequate sense.

b There is no mention of Agni raksohan here in the Sarvānukramanī; but Sāyana on RV. ix. 73. 5 explains apa dhamanti... tvacam asiknīm by rākṣasam... apaghnanti.

c There is no reference to this statement in the Sarvānukramanī. Cp. Nirukta xiv. II, where gharma is one of the concrete (bhūta) names of the Great Soul (ātman).

28. Deities of RV. ix. 87, 96, 112.

- B 135. The verse 'Deft, wise' ($rbhur\ dh\bar{\imath}rah$: ix. 87. 3^b) should be held to be addressed to Rbhu^a. Now three gods are here b mentioned incidentally ($nip\bar{a}ta$) in three verses ($p\bar{a}da$) c:
- श्चार्भवसु r, श्चार्भवस्त fk, श्चार्भवस्तु m^1 , श्चार्त्तवसु b.—भवेत्पाद fr, भवेत्याद k, भवे पाद m^1 , भेवेत्पाद b.—ऋभुधीर r, ऋप्तवीर m^1 , ऋतवीर bfk.—निपातेसु विभिः पादैः r, निपाने चाष्टाद्यास् fk, निपातेनेवाष्टाद्यास् bm^1 .—इहोद्ताः bfkr, रहेरिताः m^1 .—135 is found in B and m^1 only.
- There is no reference to this pada in the Sarvanukramani.

 This line must be an introduction to what follows in regard to RV. ix. 96. 6, stating in a more general way what is said in 136^{ab}. It is not clear to me of what 135^c, according to the reading of bfkm¹ (which is one syllable short), is a corruption.

 That is, RV. ix. 96. 6^{abo}.
- 136. three (deities) are mentioned a with these three (verses), each containing a couplet b, (beginning) 'The Brahman of the gods' ($brahm\bar{a}\ dev\bar{a}n\bar{a}m$: ix. 96. 6^{abc}); or rather it is Soma who is (here) praised as (representing) the Sun and the Soul^c.

तिस्रोक्तास् $\mathbf{m}^1\mathbf{r}$. तिस्रोक्ता h d, तिस्रोक्तां b, तिस्रोक्तं fk.—िविभस्त्वेते \mathbf{t} , विभिस्त्वेते h, वृभिस्त्वेते b, °त्वेतेर् f.—हुचा हुचैः h d \mathbf{m}^1 , हुचैर्च्चचैः \mathbf{r} , हुचै नचा b, हचैर्च्चचा \mathbf{f} k.—सूर्यवचात्मवचापि h d, सूर्यवचीत्मवचीपि $\mathbf{r}^1\mathbf{r}^4\mathbf{r}^6$, सूर्यवचीत्मवचायम् B.—सोम एव वा $\mathbf{A}\mathbf{m}^1$, सोम इत्थपि B.— $\mathbf{1}36^c=\mathbf{1}34^c$.

- a Tisroktāḥ irregularly contracted for tisra uktāḥ; cp. i. 50; iii. 94, &c. b I understand this to mean that each pāda here consists, as it were, of a couplet: brahmā devānām, padavīḥ kavīnām; rṣir viprāṇām, mahiṣo mṛgāṇām; śyeno gṛdhrāṇām, svadhitir vanānām. c RV. ix. 96. 5, 6 are commented upon in the Nirukta Pariśiṣṭa, ii. 13, 14, where Soma is explained as the Sun (sūrya) and the Soul (ātman). The Sarvānukramaṇī makes no reference to RV. ix. 96. 6.
- 137. Now while a drought was prevailing, the Lord of Sacī asked (the) seers a, 'In this great time of distress, by what activity do you live b?'

वर्तन्यां hdr, वर्त्यन्यां f, वर्त्तन्या k, वर्त्ततां b. - जीवथ b, जीवथा fk, जीवथ hdr.

^a That is probably, the seers of the ninth Mandala: cp. 141. ^b This is meant as an introduction to RV. ix. 112; but it misrepresents the situation, as there is no reference to a drought in the hymn. Cp. Nirukta vi. 5: indra ṛṣīn papracha, durbhikṣe kena jīvatīti; teṣām ehaḥ pratyuvāca.

B 138. 'A cart, a field, kine, tillage, water that does not flow away (asyandana)^a, a forest, the sea, a mountain, a king—by these means (evam) we live b.'

कृषिर् br, क्रमर् m¹, सूर् fkr² (जालम् Nir.).— अखन् ं bm¹ (Nir.), अखन् ं fr, अखन् ं kr².—वनम् bfm¹r (Nir.), द्नम् kr².—समुद्रः all MSS., उद्धिः Nir.—पर्वतो br Nir., पर्वता m¹fk.— In place of एवं जीवामहे वयम्, the Nirukta has दुर्भिचे नव कृत्तयः.—This śloka is not found in A.

- ^a I take asyandanam to be a noun, as, according to the reading of the Nirukta, nine means of livelihood are here enumerated.

 ^b This is, of course, the answer of the seers; cp. 137, note ^b. The context indicates that this śloka, though found in Bm¹ only, is appropriate here, while its obviously un-Vedic character shows it to be out of place in the Nirukta. Hence there can be little doubt that it is an interpolation from the BD.; this is more likely than that it should have been introduced into both works from some other common source. Durga does not comment on the śloka. Cp. Indische Studien, ii. 158. Somewhat similar enumerations are found in Manu x. 116 (daśa jīvanahetavaḥ); and Yājňavalkya iii. 42 (āpattau jīvanānī): cp. the Mitākṣarā on this passage.
- 139. In praising (Indra) the seer Śiśu, son of Aṅgiras, declared (this) to him with the hymn 'Variously' (nānānam: ix. 112) in the presence of the (other) seers.

सुवन्नेव Am^1 , ऋष सुवन् B.— ऋषिर् fk, रिषिर् b, ह्यृषिर् hm^1r .— ऋषिणाम् f, रिषिणाम् b, ह्यषीणाम् hm^1r .— एव Am^1 , र्व B.— The end of the varya is here marked by \mathbf{v} in bfk, not in d.

29. Indra and the seers. Value of penance.

140. Now to all of them Indra said: 'Do ye perform very severe penance; for without penance this distress cannot be removed.'

लाह सर्वासु Λm^1 , लब्नवीत्सर्वास् bfk, (°द्रः) प्राव्नवीत्सर्वास् r.— तपध्वं hm^1r , तपर्च b, तप्यस्व f. — न ह्यृते तपसः श्रक्यमिन्द्रं b, न गृह्यते तपः श्रक्यमिद्ं fk, न ह्यृते तपसा श्रक्यं विना hd, न ह्यृते तपसा श्रक्यं व्यना m^1 , न ह्येतत्तपसा श्रक्यं विना $r^1r^3r^4r^6$, नातप्रतपसः श्रक्यमिदं r.— क्रष्ट्रं bfk, क्रत्नं hm^1r .

141. Now all of them, desirous of obtaining heaven, performed penance. Then in consequence of fierce austerity they pronounced stanzas relating to (Soma) Pavamāna ($p\bar{a}vam\bar{a}n\bar{i}$).

ब्रुवन् hm1r, ब्रवन् b, ब्रजन् f, व्रजन् k.

142. One who is not envious, is studious, obedient, and practises penance, purifies ten ascendants and descendants as well as himself.

पूर्वापरान् hdr, पूर्वापरत् f, पूर्वान् परान् bm^1 .—वंश्वान् hm^1r , वंशान् bfk.—च hm^1r , ताः bf, ता k.

143. And whatever sin he has committed with mind, speech, body, and food—purified from all that, he enjoys the fruit of Vedic study ^a.

यद्या॰ hm^1r , यथा॰ bfk.—॰वाग्देहभोजनैः r, ॰वाग्देहभोजनैः f, ॰वागृहभोजनैः b, ॰वाग्देहतो जनैः hdr^3 , ॰वाग्देहदो जनैः $r^1r^4r^6$.—स्वाध्यायफलमञ्जूते Λ , ऋषिसालोकामा- मुयात् B, ऋषिसलोकतामियात् m^1 .

- a Or, according to the reading of B, will attain to the same world as seers. The reading of A is somewhat favoured by that of the Rgvidhana (iii. 2.5), which with reference to the Pāvamānī verses says: svādhyāyapunyam atulan pūtah prāpnoti cākṣayam.
- A 144. The Pāvamānī Gāyatrīs a are the supreme Brahma, the bright, eternal light b. He who here at his latter end (ante), restraining his breath c, intent on them,

नो m¹r, नथे hd.—This sloka is not found in B, but in A and m¹ only.

- ^a Cp. Rgvidhāna iii. 1. 1: svādisthayeti gāyatrīh pāvamānīr japed dvijah; cp. Nirukta v. 2, 3. ^b Cp. RV. ix. 113. 6, 7: yatra brahmā ..., yatra jyotir ajasram. ^c Cp. Rgvidhāna iii. 3. 5: prāṇān āyamya ca dhyāyed ante devān pitṛn ṛṣīn; cp. also iii. 4. 2, 3.
- 145. and he who should meditate on Pāvamāna, the Fathers, the Gods, and Sarasvatī a—to his fathers milk, melted butter, honey, and water will flow (upavarteta).

धायेवस् hm1r, धायेभ्यस् fk, वायेभ्यस् b.—•स्योपवर्तत hbfkr, •स्योपतिष्ठेत r5r7.

- ^a Cp. Rgvidhāna iii. 3. 6: sarasvatīm cārcayīta payo 'mbumadhusarpiṣā; and iii. 2. 3: akṣayyam ca bhaved dattam pitṛbhyah paramam madhu.
- B 146. This Maṇḍala, addressed to Soma, containing one hundred and fourteen hymns, is called 'Pāvamāna,' and seven lessons (anuvāka) are (contained in it)^a.

सूतं शतं bfkr.—पावमानम् r, वीजमात्रम् bfkr².—अनुवाकासु fkr, °कास्र b.— The end of the varga is here marked by २६ in bfk. a This śloka is not found in A or m¹, but in B only. Nevertheless it is probably original, as the wording of the introduction to the ninth Mandala in the Sarvānukramaņī appears to be based on it: navamam mandalam pāvamānam saumyam. As the varga comes at the close of a Mandala the abnormal number of seven ślokas is hardly sufficient to throw doubt on the genuineness of some of the latter. (Cp. above, v. 102, note a.) If any of them is a later addition, 144 is the most likely to be such.

Mandala x.

30. Deities of RV. x. 1-8. Trisiras and Indra.

147. Trita saw seven hymns addressed to Agni (beginning), 'Before' (agre: x. 1-7), but Trisiras, son of Tvaṣṭṛ, the next hymn (beginning) 'Forth with his banner' (pra ketunā: x. 8).

लाष्ट्रसु hm1r, लाषुसु f, लाब्रसु k, तु लाष्ट्रस् b.

148. Now six (stanzas) of this (hymn) are addressed to Agni (x. 8. 1-6), while with the triplet which follows, 'Of him' (asya: 7-9), he praised Indra at the end of a dream: such is our sacred tradition.

खर्थ hdr, तस्र br⁵.—This śloka is omitted in fkr².

149. Trisiras, who could assume all forms (viśvarūpadhṛk), being the son of a sister of the Asuras, became the domestic priest of the gods from a desire of (rendering) a service (to the former)^a.

स हि hm^1rb , स ह fkr^2r^5 .—प्रियकाम्यया Am^1 , चयकाम्यया B.—•रूपधृक् hdm^1fk , •रूपवृक् b, •रूपभृत् r.

- ^a Or, according to B, 'from a desire for their (the gods') destruction.'
- 150. Now Indra became aware that the seer (Trisiras) had been sent by the Asuras among the gods. He then with his bolt quickly struck off a those three heads of his.

तमृषिं प्रहितं bfr, तमृषिं प्रहितो k, तमृजन् प्रहितस् $r^1r^4r^6$, महितस् r^3 , तं स्पृश्ना-हितस् hd, तं स्पृश्नप्रहितस् m^1 . — बुबुधे hm^1r , विविदे bfk. — तान्याणु hdbk, तस्याणु $r^1r^4r^6$. — शिर्गंसि बीख्याकिद्त् hdr^3 , शिर्गंसि बीख्यिकिद्त् m^1r , शिर्गंसिवाकि-द्रामुः r^2r^7 , शिर्षंख्याकिद्त प्रमुः f, शिर्षंख्याकिद्राप्तमुः f

^a The expressions used in RV. x. 8. 9 are: avābhinat and trīņi śīrṣā parā vark.

151. The mouth with which he drank Soma became a francoline partridge (kapiñjala); that with which he drank Surā (became) a sparrow (kalavinka); while that with which he ate food became a partridge (tittiri)^a.

सुरापाणम् hdbfk, सुरापानम् m¹r.—The end of the varga is here marked by ३0 in hmbfk, not in d.

^a For similar transformations cp. what became of the skins of Apālā (above, vi. 106) and of the members of Agni (below, vii. 78-80).

31. Deities of RV. x. 9-14.

152. Him (Indra) divine (*brāhmī*) Speech (*vāc*) addressed: 'Thou art a Brahman-slayer, Lord of a hundred powers (*śatakratu*), since thou hast slain Viśvarūpa who sought refuge (*prapanna*) with averted face a.'

ब्राह्मी hm1rbfk, तीव्रा r1r4r6.—यसाद् hm1rbfk, यस्वं r1r4r6.

- a That is, who was defenceless and did not attack.
- 153. Him (Indra) the seer Sindhudvīpa a himself besprinkled, to the accompaniment of the hymn (sūktena) 'O Waters' (āpaḥ: x. 9), for the removal of that unpropitious sin.

ऋषिर् bfkr, सृषिर् Am¹.—°पनुत्यर्थ MSS. and r (ep. various readings of रोगा-पन्ति above, iii. 114).

- ^a Alternative seer of RV. x. 9; see Ārṣānukramaņī x. 3; Sarvānukramaņī on RV. x. 9.
- 154. Yama rejects Yamī who solicits him with a view to sexual intercourse: the dialogue, 'Hither, indeed' (o cit: x. 10), of those two children of Vivasvat is (descriptive of) that.

तदो चिदिति Am¹, श्रो चित्सखायं (the fuller pratīka) B.

155. The two (hymns beginning) 'The bull' (vṛṣā: x. 11, 12) are addressed to Agni. In the hymn (atra) 'I yoke for you' (yuje vām: x. 13) the two oblation carts are praised together. In 'Him who has passed away' (pareyivāṃsam: x. 14) the Middle Yama is praised.

युजे वामन B, युजेशितेन Am^1 (युजति॰ $\mathrm{r}^1\mathrm{r}^3\mathrm{r}^4\mathrm{r}^6$).—परियवांसमित्यन bfkr , परियिवांसमित्यन $\mathrm{hr}^1\mathrm{r}^4\mathrm{r}^6$, ॰श्चेत(त्सूयते) d, परियिवांस सूत्तेऽस्मिन् m^1 .—155 d , 156 abc , and II.

सं in 156^d are omitted in $r^1r^4r^6$ (doubtless because 155^d begins with सूयते and 156^d begins with संस्थानी).

- ^a Cp. Nirukta xi. 18, where Yāska, in commenting on the words madh jamāh pitarah in RV. x. 15. 1, remarks: mādhyamiko yama ity āhus, tasmān mādhyamikān pitīn manyante.
- 156. Then the Atharvans, the Bhrgus, the Angirases, the Fathers are praised together in the sixth (stanza) there (x. 14. 6), as groups of gods (devagana) connected with heaven (dyubhakti).

ज़िरसः पितरः hdm¹ (this is the order in RV. x. 14. 6), पितरोऽज़िरसः br, पितरो पितरः fk.—सह hdm¹ bfk, च ह r.—तच hdkr, खच bfm¹.—The end of the varga is here marked by 39 in hm¹ bf, not in kd.

32. Deities of RV. x. 14 (continued), 15, 16. Three Agnis.

B 157. Yama is frequently seen praised with the Fathers and the Angirases in the formulas; for in the verse 'Vivasvat' (vivasvantam: x. 14. 5°) he (himself appears as) a Father.

संजुतो दृश्चते bfkr, दृश्चते संजुतो m¹.—मन्त्रेषु बङ्गगः पादे bfkr, मंत्रस बङ्गग्रसादे m¹.—157-159^{ab} are found in B and m¹ only.

- B 158. Yama is praised with the Fathers in conjunction with the deceased man who is to be hallowed (saṃskārya). In the three (stanzas) 'Go forth, go forth' (prehi prehi: x. 14. 7-9) prayers for the deceased man are uttered.
- B 159. The god Yama is Lord of the Fathers; therefore he owns the hymn $(s\bar{u}kta-bh\bar{a}j)$.

In the triplet 'Run past' (ati drava: x. 14. 10-12) the two dogs a (are praised). The following (hymn) 'Let them arise' (ud īratām: x. 15) is addressed to the Fathers b.

उदीरताम् Am1, उदीरतम् f, उदीरिताम् b, उदीरितम् kr.

- ^a Cp. Sarvānukramaņī: tṛcaḥ śvabhyām. ^b Cp. Sarvānukramaņī: udīratām . . pitryam.
- A 160. But with the following hymn (the seer) proclaims the rite in the burning ground.

There were three Agnis belonging (respectively) to the Fathers,

the Gods, and the Asuras: the two who bear oblations (havya) and food offerings (kavya) and he who is called Saharakṣas a.

उत्तरिण तु hm^1r^3 , परेणैव r.— 160^{ab} is found in Am^1 only, not in $bfkr^2r^5$ (nor presumably r^7).— च अभ॰ r, च भ॰ hd, चाभ॰ fk, वाभ॰ b.—सहर्चा च नाम यः B, सहर्वाञ्चना सह A, सहर्वञ्चना यमः m^1 .

- ⁿ That is, havyavāhana is the Agni of the gods; kavyavāhana, of the Fathers; and saharakṣas, of the demons.
- 161. Now with regard to these (tatra) the (hymn) 'Not him' (mainam: x. 16) is (in) praise of the bearer of food offerings (kavya). Other (hymns), however, are (in) praise of the divine (Agni), not of this one (connected with the Fathers), nor of the demoniac one (āsura).

लेतलाथवाहनसंखुतिः Λm^1 , खाह काथवाहनमेव तु B (तु bfk, च $r^2r^5r^7$).—दैवस्य hm^1r^3f , दैवस्य br^5 , देवस्य kr.—•मुरस्य च Λm^1 , •मुरस्य तु B.—The end of the varga is here marked by 32 in hm^1bfk , not in d.

33. Story of Saranyū: RV. x. 17.

162. Tvaṣṭṛa had twin children, Saraṇyū as well as Triśiras. He himself gave Saraṇyū in marriage to Vivasvat.

विशिराः सह $hm^1bfks(RV.)$, (॰युस्) विशिराविह n, सदृशी च ह $r^1r^4r^6$, (॰युस्) विशिराञ्च ह $s(\Delta V.)$.—सर्ख् rs(RV.), सर्ख् $hds(\Delta V.)$, सर्ख् bfk.

- a The following story, vi. 162-vii. 6, is quoted in the Nītimaŭjarī on RV. i. 116. 6 and by Sāyaṇa on RV. vii. 72. 2 as well as AV. xviii. 1. 53 (cp., the quotations from the BD. and the Nītimaŭjarī in M. M.'s RV.² vol. iv, p. 5; cp. vol. iii, p. 11). Kuhn prints the text of the passage in Kuhn's Zeitschrift, vol. i, p. 442. It is also translated by Muir, Original Sanskrit Texts, vol. v, p. 228. Cp. Nīrukta xii. 10, 11 on the story of Saraṇyū, and Roth, Erläuterungen, p. 161. Sāyaṇa also gives a prose version of the story in his introduction to RV. x. 17. Cp. Lanman, Sanskrit Reader, notes, p. 381.
- 163. Then Yama and Yamī were begotten on Saraṇyū by Vivasvat. And these two also were twins, but the elder of the two was Yama.

सर्एवां s, सर्एवा br²r⁵r⁷, सर्प्योर् m¹, सर्प्योर् f, सर्प्यू hd, सर्प्यु n.— जज्ञाते hm¹rbfkn (Nirukta xii. 10), जाते ते s.— तो चापुमी hm¹rbfk, तावपुमी s.—यमविव MSS. rs, यमी खातां s (AV.).—यम: hm¹rs, यमी bfk. The last pāda in Sāyaṇa (RV.) reads: ह्यास्तां यस्या च वे यम:.— The end of the varya is here marked by 33 in hfk, not in m¹bd.—The last pāda is repeated in b, not in f.

1. Story of Saranyū (continued).

1. Now Saranyū having created, in the absence of her husband, a female similar (to herself) and having entrusted to her the pair (of children), turned herself into a mare and departed.

स्द्वा m^1rs , स्ष्टा bfk, स्पृक्षा hd, दृक्षा ns (AV.), दृष्टा $r^1r^4r^6$.—सिथुनं MSS. rs, तथुगं $s(\Lambda V.)$.—भूलापचक्रमे bfkrn, भूला प्रचक्रमे s (cp. Nirukta xii. 10: प्रदुद्वाव), भूलोपचक्रमे $hdr^1r^4r^6m^1$.

2. But Vivasvat, in ignorance (of this), begot Manu on that (substitute). He (Manu) became a royal seer, like Vivasvat in brilliance.

तस्यामजनयन् m^1 bfkrns, तस्यां प्रजनयन् hd.— राजर्षिरभवत्सोऽपि Λm^1 , राजर्षिरासीत्स मनुर् Bns.

3. When, however, he (Vivasvat) had become aware that Saraṇyū had departed in the shape of a mare, he quickly went after the daughter of Tvaṣṭṛ, having turned himself into a horse with similar characteristics (to hers).

विज्ञाय m¹br, विज्ञाय hdr³, विज्ञानाय f.— अश्वक्षिणों hbrs (AV.), अश्वसूरणों fk, आत्मक्षिणों s.—वाजी MSS. rs, अश्वो s (AV.).—सलवणः m¹ bfk r¹ r⁴ r⁵ ns, खलवणः hdr³, श्वलवणः r.

4. And Saraṇyū, recognizing Vivasvat in the form of a steed, approached him for sexual intercourse, and he covered her there.

सरखू स्व 1 , सरखू सं 1 Bn, सरखू सु s, सरखु स्व 1 s (AV.).—विदिला 1 h 1 f 1 s.—हयक्पिण्म 1 r f ks, हरक्पिण्म b, हरिक्पिण्म 7 .—मेथुनायोपचक्राम 1 h 1 r, मेथुनायोपचक्राम b, मिथुनायोपचक्राम 2 r 5 r 7 , मिनायोपचक्राम f k.

5. Then in their agitation the semen fell on the ground. And the mare, through desire of offspring, smelt the semen.

विगेन MSS. rs. योगन s (AV.).— मुक्तं fkdrns, मुक्तं hm¹s (AV.), श्वकन् b.—उपा-जिग्नस bfr, उपजिञ्चस hdk, उपजिञ्चति r¹r⁴r⁶s (AV.).— तच्छुकं rns, तक्कं d, तसक्कं b, तकुतं f, तक्क्षं hm¹s (AV.).— The end of the varga is here marked by **9** in bfk, not in hdm¹.

- 2. Story of Saranyū (concluded). Deities of RV. x. 17.
- 6. Now from the semen which had just been smelt there came into being two youths, Nāsatya and Dasra, who are praised as 'Aśvins'a.

आघातमानाच्छुकात्तु rnf (°छु॰ f), ॰मानाङ्कात्तु b, ॰मानाशुक्कात्तु h, ॰मानाशुक्कातु d, ॰मानाङ्कका k, आघाणमानाच्छुकं तत् s.—यौ खुतान् hm^1bs , यौ सुतान् fkr, यौ तु तान् s (AV.), यौ तु तौ $r^1r^4r^6$.—अश्विनान् $hdm^1bfkrns$, नाजिनान् $r^1r^4r^6$.

- $^{\rm a}$ The quotation ends here in Sāyaṇa (RV. and AV.), but the Nītimañjarī quotes 7^{ab} also.
- 7. Yāska regards this as a story of Vivasvat and Tvaṣṭṛ together in the couplet 'Tvaṣṭṛ' (tvaṣṭā: x. 17. 1, 2) which has Saraṇyū for its deity.

दुचे hdm¹rbfk, तृचे r5r7.

- ^a Yāska, who comments on both stanzas 1 and 2 of RV. x. 17, remarks in Nirukta xii. 10: tatretihāsam ācaksate.
- 8. The two verses (beginning) 'Pūṣan' ($p\bar{a}ṣ\bar{a}: x. 17. 3^{ab}$) are addressed to Pūṣan, but the two next (3^{cd}) to Agnia; even the third (3^c) may optionally ($v\bar{a}$) be addressed to Pūṣan; and the other three (stanzas) which follow (4–6) are also b (addressed to him).

द्वावाप्रयाव् $\mathbf{r}^5\mathbf{r}^7$, द्वाचाप्रयाव् \mathbf{fk} , द्वाचाप्रयाव् \mathbf{b} , द्वी लाप्रयाव् \mathbf{r} , द्वी लाप्रया \mathbf{hd} — पीष्णिक्तस्रश्चान्याः परास्तु याः $\mathbf{hm}^1\mathbf{r}$, पीष्ण पीष्णसस्याः परास्त्रियः \mathbf{b} , पीष्ण पीष्णसस्या पर्पस्त्रिचः \mathbf{f} , पीष्णः पीष्णसस्यापरस्त्रचः $\mathbf{r}^2\mathbf{r}^5\mathbf{r}^7$.

- The Sarvānukramaņī says nothing about the last two pādas of x. 17. 3 being addressed to Agni.

 The reading of B is somewhat more explicit: 'The third pāda also may optionally be addressed to Pūṣan; the triplet which follows (para) that (third stanza) is addressed to Pūṣan.'
- 9. But one (stanza) in this hymn (atra), which follows the triplet addressed to Sarasvatī (7-9), is (in) praise of the Waters (10), while in the next triplet, 'The drop' (drapsaḥ: 11-13), Soma is praised indirectly (parokṣa).

ख्रेंपैका hr, तृगवे d, तु तवेका b, तु तखेका 1517, खेका fkr2.

10. But the next (stanza), 'Rich in milk' (payasvati: 14)^a, has the waters for its deities or is a benediction. The (next) four b (stanzas: x. 18. 1-4) are (in) praise of Death and are applicable (klpta) in the funeral (antya) ceremony c.

अब्देवता° hm¹r, अब्देवत्या° bfkr²r⁵r¹.—°वादो वा hm¹r, °वाहः b, °वादः fk.— मृत्योरन्ये m¹, मृत्योर्त्ये hd, मृत्योरन्ते r, मृत्योः चातौ b, मृज्यो भांनौ f.—क्कुप्तास m¹r, क्षुप्तास hd, क्किप्तास्तु br⁵, क्तिःमीसु f.—The end of the varga is here marked by २ in bfk, not in hdm¹.

^a The correct pratīka is payasvatīh.

^b Cp. Sarvānukramaņī: catasro mṛtyudevatāh; AGS. iv. 6. 10.

^c Cp. below, vii. 15: antyakarmaņi.

3. Detailed account of the funeral hymn RV. x. 18.

B 11. The (stanza) 'These' (ime: x. 18. 3) prays for long life for those who have escaped death; 'For the living this' (imam jīvebhyaḥ: 4) again prays (for it) for them in the ceremony with the barrier (paridhi)^a.

श्राशास्ति m¹fk, श्राशास्त br.—इमे ज्योग्r, इमो ज्यो b, इमे यो m¹, इमो ायो (जीवनं) f.—श्राशास्ति m¹kr, ॰स्त f, श्राशास्ताक् b.—तिथः परिधिकर्मणि br, मूक्तिभ्यः परि-कर्मणि fkm¹.—This śloka is found in B and m¹ only.

- * RV. x. 18. 4: imam jîvebhyah paridhim dadhāmi; cp. Sayana; AGS. iv. 6. 9.
- 12. 'As' ($yath\bar{a}$: x. 18. 5) is addressed to Dhātṛ; the next to Tvaṣṭṛ (6), then with another (7), 'These wives' ($im\bar{a}h$), he (the seer) utters a prayer for the women in the ceremony with collyrium $(anjana)^a$.
- तयेवाञ्चनकर्मण B, तया परिधिकर्मण A: the latter reading is probably due to a clerical error repeating the last word of the preceding sloka, which in that case (though occurring in B only) must have been original. The preceding sloka mentions the stanza which refers to the paridhi, the present sloka mentions the one which refers to anjana.—This sloka is wanting in m¹.
 - * Cp. RV. x. 18.7: imā nārīr . . ā anjanena sarpisā sam visantu; AGS. iv. 6. 11, 12.
- 13. With the (stanza) 'Rise up, O woman' (ud īrṣva nāri: x. 18.8) the wife ascends (the funeral pyre) after her dead (husband) a. The younger brother of the departed, repeating (the stanza), prohibits (her).

मृतं पत्यनुरोहित m^1 , मृतं पत्यन्यनुरोहित hd, मृतपत्नी तु रोहिती r, मृतं पत्नी नु रोहित fk, मृतं पत्नीं तु रेहितीं b, मृतमन्वाद्रोहित $r^1r^4r^6$.—िनगद्य m^1 , निगत्वा hdr^3 , निगदात् bfk, निगता $r^1r^4r^6$.

- A Had the MS evidence not been so strongly in favour of anurohati, I should have been inclined to adopt the corrected reading of b: mṛtaṃ patnīṃ tu rohatīṃ, as giving a better construction: 'with RV. x. 18. 8 he prohibits the wife mounting the (funeral pyre of the) dead man'; cp. Rgvidhāna iii. 8. 4: devaro 'nvārurukṣantīm ud īrṣveti nivartayet; and with rohatīm cp. below, vii. 130: sūryām ārohatīṃ patim; AGS. iv. 2. 18.
- B 14. The Hotr ought to perform this rite, should there be no brother-in-law, because a Brāhmaṇa enjoins that (the widow) should not follow the departed (husband) a.

This sloka is not found in A, but in B and m1 only.

- ^a That is, by burning herself with him on the funeral pyre. On the whole history of *Satī* see Jolly, Recht und Sitte, in Bühler and Kielhorn's Encyclopaedia of Indo-Aryan Research, vol. ii, part 8, p. 67 ff.; cp. also Lanman, Sanskrit Reader, notes on RV. x. 18.
- B 15. This law regarding women may or may not apply to the other castes.

In taking the bow (from the hand) of the departed man, one should mutter (the stanza) 'The bow' (dhanuh: x. 18. 9) a for the sake of averting evil. And because these (stanzas) are employed on the burning ground at the funeral ceremony,

The first line of 15 is found in B and m¹ only.—The second line follows the reading of B; the reading of Am¹ is:

भ्रान्यर्थं च जपत्यस्थां धनुरित्युत्तरामृचम् । (जपत्य॰ ${
m r}^1{
m r}^3{
m r}^4{
m r}^6$, जपंत्य॰ ${
m h}$).

I have preferred the former, as it follows the text of the RV. (धनुईस्तादाददानो मृतस्य) and as अस्यां in A seems to make no sense.— यसादेता: (= तृचः) B, यसादेते (= हुचः) Am¹: cp. next śloka.— रमग्राने चान्यकर्मण B, रमग्रानेष्वन्यकर्म सु Am¹ (°ष्वन्य° hd m¹, °ष्वन्त o r¹ r³ r⁴ r⁶).—The end of the varga is here marked by 3 in bfk, not in hd.

^a Cp. AGS. iv. 2. 20.

4. Formulas in which no deity is mentioned.

16. one should state the deity of this triplet (x. 18. 7-9)^a to be Death (*mṛtyu*). For in the formulas (in which it is) not expressly mentioned b, one should state the deity from the ceremony.

तृचस्यास्य r, तृचस्यादौ bfk, हृचस्यास्य Δm^1 .—देवतां मृत्युर् r, देवता मृत्युर् hdm^1 , देवतां मृत्युम् b, देवतां मृत्युम् fk.

- a I have preferred the reading treasya to dvreasya, because, the deity of stanza 6 having been stated (in 12), the next three stanzas (7-9) have been discussed with reference to their contents (in 12-15). The Sarvānukramanī states RV. x. 18. 7-13 to be pitrmedhāh.

 b Cp. note a on i. 20.
- 17. When there is lack (of a deity) from the (evidence of the) formula and the ceremony as well, Prajāpati is (the deity)^a.

Now as to the following four (stanzas: x. 18. 10-13) here, 'Approach' (upa sarpa: 10) is addressed to the Earth.

प्रजापतिरसंभवे hm1rbfk, प्रजापतिरिदं जगी r1r4r6.

- * Cp. Sarvānukramaņī on the last stanza of RV. x. 18: antyā.. prājāpatyā vā sāgniruktā; on which Ṣadguruśiṣya remarks: sā cagniruktā: aprakāśadevatābhidhānā. See his further discussion on the word aniruktā and my explanatory note, p. 183.
- 18, 19. Their application is in the ceremony of collecting the bones of the departed. Now with the last (stanza) 'In the future' (praticine: x. 18. 14) he (the seer) expresses a prayer (in saying), 'As having taken away (my) other days, the Fathers placed (me) in (past) days,
- B (so) they also restored me, about to die (prayantam), to life in days to come 'b.
- 18^{cd} follows the reading of Am¹ (°हानि ऋप॰ r, °हान्यप॰ hdm¹). The reading of B is:

प्रतीचीन ऋचं लेतामपवृज्योत्तरामु तत्। (॰ज्योतरामु bfk).

- 19. बहःसु Am^1 , बहसु $fkr^2r^5r^7$, बहस b.—दधुर् m^1 , दधुर् $r^1r^4r^6$, द्बुर् hdrbfk (RV. x. 18. 14: प्रतीचीने मामहनि . . दधुः).— इत्याशास्ति r, इत्याशास्ति b, इत्याशांस्त f, ब्रम्थाशास्ति Am^1 .—न्ययाशिषः r, त्ययाशिषः b, °त्युपाशिषः f, समाशिषः hdm^1r^3 .—मां rf (RV.), मा m^1bk .—प्रयतः fkr^2 , प्रपतः b, द्रयतः r, प्रेतः m^1 .—समजीवयन् bfr, ॰यत् k.— rg^{cd} is found in B and m^1 only.
- b This is an attempt to interpret the obscure last stanza of RV. x. 18: praticine mām ahani isvāh parņam ivaā dadhuh, &c. If the reading of A is taken by itself, it probably means: 'The Fathers, having as it were (yathā) taken away (my) other (past) days, have placed me in (future) days.' In that case the additional line of B would look like an explanation of this. I have preferred the reading dadhuh because it is the form used in the RV. itself.

20. Now the (hymn) 'Turn back' (ni vartadhvam: x. 19) is (in praise) of Cows; some regard it as (in praise) of the Waters. The latter hemistich of the first (stanza: 1°d) is, however, addressed to Agni-Soma^a.

इतीदं तु A, इतीयं तु m¹, इदं सूक्तं B.— प्रथमायासु A m¹, प्रथमायास् B.—The end of the varga is here marked by 8 in hbfk, not in d.

a Cp. Sarvānukramaņī: āpam gavyam vā .. agnīsomīyo dvitīyo 'rdharcah.

5. Deities of RV. x. 19-27.

21. The sixth (stanza) is addressed to Indra (x. 19. 6), while in the second both the gods^a are incidentally mentioned (2). Now the hymn which contains a line of ten syllables^b (x. 20. 1) is described as intended to avert evil (and) as connected with mind^c ($m\bar{a}nasa$).

सूत्रमुच्यते $A m^1$, सूत्रमुत्तरम् B.

a 'Both the gods' (ubhau devau) is rather vague: the two mentioned in the second stanza are Indra and Agni. The Sarvānukramaņī makes no reference to the deities of RV. x. 19. 2 and 6.

b Meyer, Rgvidhāna, p. xxviii, thinks this line is here regarded as a whole hymn.

c This hymn begins with a single verse instead of a stanza: bhadram no api vātaya manaḥ. The Sarvānukramaṇī remarks: ādyā ekapadā, pāda eva vā sāntyarthaḥ. On this pāda cp. Oldenberg, Prolegomena, p. 511.

21^c = Rgvidhāna iii. 8. 6^a; cp. the whole śloka there:

daśākṣaraṃ tu śāntyarthaṃ bhadraṃ na iti saṃsmaret; nityaṃ japec chucir bhūtvā: mānasaṃ vindate sukham.

22. Now here after two hymns addressed to Agni (x. 20, 21) there follow three addressed to Indra (beginning) 'Where?' (kuha: x. 22-24). Now in the last of the hymns to Indra there is one triplet 'Ye two' (yuvam: x. 24. 4-6) addressed to the Asvins.

ऐन्द्राणाम् Am1b, ऐद्राम् fk, ऐन्द्राप r.

23. 'Happy' (bhadram: x. 25) is addressed to Soma; 'Forth indeed' (pra hi: x. 26) is addressed to Pūṣan. The three following (beginning) 'It shall be' (asat: x. 27-29) are addressed to Indra: with the first (27) of these (Indra), being exhilarated, proclaims his deeds;

पराष्णसत् hm¹ bfk, पराष्णतः r.— मत्तः सन् hm¹ rb, मत्तः स r¹ r⁴ r⁶, मत्तेन k. II. 24. how he moves among beings, how he rains and protects a is told in this hymn with the eight stanzas (beginning) 'Thou becamest' $(abh\bar{u}r\ u: x.\ 27.\ 7-14)^b$.

पाति Am^1 , वाति B.— °िस्सन्नष्टाभिर् B, °िस्सन्नर्धेचे तु Am^1 . — °भूविति Am^1 , °भूरिति B.

- a Cp. above, iv. 34: parūs tu kathayanty agniņ yathā varṣati pāti ca.
 b The details regarding x. 27 given in this and the following ślokas (24-29) are altogether passed over in the Sarvānukramaņī. This indicates that the mention of details in passages peculiar to B cannot be used as an argument to prove that such passages are later additions because unknown to the author of the Sarvānukramanī.
- 25. (The stanza) 'Seven' (sapta: x. 27. 15) praises the Maruts, the next stanza (16) praises the Bolt; (the stanza) 'The fatted ram' (pīvānam meṣam: 17) adores Agni, Indra and Soma:

मक्त स्तीति hdbfk, मक्तः स्तीति r.—स्तीति वज्रम् A, पर्जन्यं स्तीत्यृ॰ B.—The end of the varga is here marked by 4 in f only.

6. RV. x. 27 (continued). RV. x. 28: Dialogue of Indra and Vasukra.

26. (that is) its first hemistich (does so: 17^{ab}), while its second one (adores) Parjanya with Vāyu (17^{cd}). 'Crying aloud' (vi krośanāsaḥ: 18) (praises) Agni, but the next (stanza) Sūrya (19).

र्धचों ऽपरस् B, धंचों त्तरस् Am1. सूर्यमेव तु Am1, सूर्यमर्चति B.

27. 'These two of mine' (etau me: x. 27. 20) and 'This which' (ayam yah: 21)—these two (stanzas) are (in) praise of Indra and the Bolt; and 'To every tree' (vṛkṣe-vṛkṣe: 22) (praises) the Bow of Indra. But (in) 'Of the Gods' (devānām: 23) the three

27^{ab} follows the reading of hm1rbfk; the reading of r1r4r6 is:

एता उभी लेताविति सूचेते वज्रमुत्तरा।

चैन्द्रं bfr, चेन्द्रं k, (धनु) बिंद्रीं hd, चैन्द्रीं r3, चैन्द्री m1r1r4r6.

28. bestowers of cold, heat, and rain, Parjanya, Wind (anila), and Sun $(bh\bar{a}skara)$, and in the last verse $(pada: x. 27. 23^d)$ both Sun and Wind are praised together.

ऋन्त्ये $h m^1 r$, अन्त्यो bfk. — खूयेते च पदे r, खूयते च पदे bfk, पदे संखूयते $h m^1 r^2 r^5 r^7$.

29. In the (stanza) 'This is thy life' (sā te jīvātuḥ: 24) either Indra or Sūrya (is praised). But 'Every other' (viśvo hy anyaḥ: x. 28) is a dialogue of the seer and of Śakra (Indra).

वा सूर्य एव वा hm¹rb, सूर्यश्च एव वा fk.—विश्वो ह्यान्यसु Am¹, विश्वो हीत्यथ bfk, विश्वो हीत्यथ r.—संवाद ऋषे: hm¹r, संवादमूषे f, संवादो मृषे k, संवादं मृषे: b.

- 30. The even (stanzas) are to be recognized as Śakra's, the other stanzas as Vasukra's a.
- B The daughter-in-law of Indra b, seeing the gods had come, but Sakra had not come

30ab follows the reading of B; the reading of Am1 is:

युग्मा एव तु श्रक्तस्य अयुग्मा एव तु त्वृषेः । (॰क्रस्यायु॰ hdm¹).

जुषेन्द्रसा°m¹r, जुषेद्रसा°fk, मुपेन्द्रसा° b(इन्द्रस सुषाS).—°गतान्देवा m¹, °गतां देवी b, °गता देवा fk.—30°d-32 are found in B and m¹ only.—The end of the varga is here marked by & in bfk, not in m¹.

a Cp. Sarvānukramaņī: indrasya yujaḥ, śiṣṭā ṛṣẹḥ; Ārṣānukramaņī x. 12: indro yujām ṛcām ... śiṣṭānāṃ vasukraḥ.
 b Cp. Ārṣānukramaņī x. 11: indrasnuṣā vasukrasya patnī; Sarvānukramaņī: indrasya snuṣā.

7. Deities of RV. x. 30-33.

B 31. to the sacrifice, addressed (him) in the third person (parokṣavat)^a (saying): 'My father-in-law has not come; should he come, he would eat grain and would drink Soma^b.'

यशं m¹bfk, यशे r.

- a Cp. Sarvānukramaņī: indrasya snuṣā parokṣavad indram āha. This is clearly based on 30° and 31°, both found in B only.

 b Cp. RV. x. 28. 1: mama . . śvaśuro nā jagāma: jakṣīyād dhānā uta somaṃ papīyāt.
- B 32. The Bolt-bearer on hearing this speech of hers, came that very moment, and standing on the northern altar (uttarā vedi), said aloud: 'He bellowing loud' (sa roruvat: x. 28. 2).

चणादेख $\mathbf{m}^1 b$, चणादेख k, चणादेख f, चणादेख r.—वेवामुत्तरस्थाम् $\mathbf{m}^1 r$, वेवा-मत्तरस्थाम् f, वेवामुत्तरस्थाम् b.

33. In the praise of Waters (beginning) 'Forth to the gods' (pra devatra: x. 30) the Middle Agni is praised by the name of

'Child of Waters' $(\alpha p\bar{a}m \ n\alpha p\bar{a}t)$ with the third and the fourth (stanza).

तृतीयया hm¹r, तृतीयया b, तृतीययां fk.— चतुर्था hm¹rbf, चतुर्थाः k.— जुतौ hm¹r³B, स्तिः r.

34. Now (the hymn) which (begins) 'Hither' $(\bar{a}: x. 31)$ is addressed to the All-gods; the one next to that, 'Forth' (pra: x. 32), is addressed to Indra. One (stanza) 'Onward me' $(pra m\bar{a}: x. 33. 1)$ is addressed to the All-gods; the following couplet 'Together me' $(sam m\bar{a}: 2, 3)$ is addressed to Indra.

एति hm¹f, एती b, एदी k, प्रति r.—वैश्वदेवं तु Am¹, वैश्वदेवं तत् B.—उत्तरम् Am¹, उत्तमम् B.—सं मेखैन्द्रो hm¹rbfk, तस्यास्वैन्द्रो r¹r⁴r⁵.—वृचः m¹rbfk, द्वृचः hr³.

35. The following two (stanzas) adore Kuruśravana Trāsadasyava (x. 33. 4, 5)^a. On the death of king Mitrātithi, the seer with the following

श्रवितः b, श्रवितः $r^2r^5r^7$, श्रवित fk, श्रवित fk, श्रवित fk, प्राः षट् $r^1r^4r^6$.—वासद्ख्यम् fk, वासद्ख्य fk.—तन्नपातम् fk, तन्नःपातम् fk, तं नपातम् fk

* Cp. Sarvānukramaņī: दे जुन्यवणस्य चासदस्यवस्य दानसुतिः।

8. The hymn of Dice: x. 34. Deities of RV. x. 35-44.

36. four a (stanzas beginning) 'Of whom' (yasya: x. 33. 6-9) consoled his (Mitrātithi's) grandson Upamaśravas b. The hymn which (begins) 'The lively' (prāvepāḥ: x. 34) is called the praise of Dice.

प्रावेपा इति bfkr, प्रावेपा मेति hdm1. The Sarvanukramani has the former pratika.

- a Another instance of caturbhih = catasṛbhiḥ. b Tan-napātam from 35. Cp. RV. x. 33. 7: upamaśravo napān mitrātither ihi. See also Sarvānukramaņī: mṛte mitrātithau rājāi . . ṛṣir upamaśravaṣaṃ putram asya (kuruśravaṇaṣya) vyaśokayat.
- 37. Here the twelfth (stanza) praises the Dice, the ninth, the first, and the seventh (x. 34. 1, 7, 9, 12).

A The thirteenth a praises tillage (13) and admonishes the gambler.

But the remaining (stanzas) blame the Dice b. Two (hymns

beginning) 'They are awake' (abudhram: x. 35, 36) are addressed to the All-gods.

अवाचान् h d m¹s, तवाचान् bfk r^2r^5 ṣ.—37° in Sāyaṇa reads: अव द्वादश्यवान्सीति.— नवस्यावा च h m¹rṣs, °वाच B.—चानुशासित h m¹r, चानुशासित ṣ.—137° ते (वयोदशि &c.) is found in hd m¹rṣs only, not in bfk r^2r^5 .—अचांसु शेषा निन्दिन्त hd m¹, अचांसु शेषानिन्दिन्त r, अचांसु शेषानिन्दिन्त r, अचांसु शेषानिन्दिन्त r, अचांसु शेषानिन्दिन्त r, अचांसु शेषानिन्दिन्त r,

- h The first four pādas of 37 are quoted by Ṣaḍguruśiṣya, while the fifth is expanded by him as follows: śiṣṭābhir navabhis tv akṣāḥ kitavaś caiva nindyante. Sāyaṇa also quotes these lines in his introduction to RV. x. 34; cp. var. lect. in M. M., RV.² vol. iv, p. 11.
 b The Sarvānukramaṇī gives no details as to the deities of RV. x. 34, simply remarking: akṣakṛṣipraśaṃsā cāḥṣakitavanindā ca.
- B 38. Some consider the praise at the end (para), 'Of the great Agni' (maho agneh: x. 36. 12-14), to be addressed to Savitr; the teachers Saunaka, Yāska, and Gālava (consider) the last (14) stanza (to be such)^a.

This śloka is not found in A, but in B and m1 only.

- ^a There is no reference in the Sarvānukramaņī to the last three stanzas of RV. x. 36; nor does the Nirukta mention them.
- 39. 'Obeisance' (namaḥ: x. 37) is addressed to Sūrya, 'In this' (asmin: x. 38) to Indra. But (the deities) who are praised in the sixth (stanza) of the hymn to Sūrya (x. 37. 6) are incidental; at the end of this (atra) hymn there is a couplet addressed to the All-gods (x. 37. 11, 12)^a.

सीर्यमेन्द्रम् m^1kr , सीर्यमिन्द्रम् bhd, सीर्यमन्द्रम् f. — षष्ट्या तु याः खुताः m^1r , षष्ट्या तु या स्नृताः hd, षष्ट्यां तु संखुता h, षष्ट्यां तु संखुता h, षष्ट्यां तु संखुता h. — निपातिनीखाः hdr, निपातिनी ताः m^1 , निपातिनखाः hdr, निपातिनी ताः m^1 , निपातिनखाः hdr, सूक्तान्ते h, सूक्तान्ते h, सूक्तान्ते h, सूक्तान्ते h, सूक्तान्ते h, स्कार्यो hdr. — निश्चदेवो hdr, निश्चदेवो hdr, The form निश्चदेव is extremely common. It may be due here to the end of the preceding word in h: सूक्तान्त्यो.

- ^a There is no reference in the Sarvanukramani to the deities of RV. x. 37. 6, 11, 12.
- 40. Now there are three hymns addressed to the Aśvins (beginning) 'Which' (yah: x. 39-41), and there are (three) addressed to Indra (beginning) 'As the archer far' (asteva su

pra: x. 42-44), but in a hemistich (11^{ab}) of the last stanza of the Indra hymns (42-44)^a Brhaspati^b is praised.

नीण ऐन्द्रा° r, चीखेन्द्रा° hdbfk.— °त्तमायासु सुतोऽर्धर्चे r, °त्तमायासु सतो र्धर्चे k, °त्तमायासु सतोऽर्धर्चे fr⁵ (या: r⁵), °त्तमायासु सतो र्धर्चे b, °त्तमायासु सर्धर्चे तु Am¹ (सर्ध° hdm¹).—40°d and 41 in m¹ come after 48 (at the end of the story of Ghoṣā).— The end of the varga is here marked by ⊏ in bfk, not in hdm¹.

^a That is, in the last stanza of each of these three hymns, that stanza being a refrain.

^b The Sarvānukramaṇī does not mention Bṛhaspati in the refrain of RV. x. 42-44.

9. Deities of RV. x. 45, 46. Story of Ghosa.

41. The two following (hymns), 'From heaven' (divas pari: x. 45, 46), are addressed to Agni, but with the last hemistich of the former (x. 45. 12°d) Heaven and Earth (12°) and the All-(gods: 12^d) are praised in the respective verses (pacchah)^a.

॰त्तमेन तु B, ॰त्तमा तु या Am1.—पक्को Bhm1r3, पञ्चा॰ r.

a The Sarvānukramaņī makes no mention of this hemistich.

B 42. a Ghoṣā, daughter of Kakṣīvat, was disfigured by an evil disease. In the days of old she remained in her father's house for sixty years.

षष्टिं fm¹, पष्टि^o bkrn.—42-48 are not found in A, but in B and m¹ only.

- ^a The following story (42-47) is quoted in the Nītimanjarī on RV. i. 117. 7.—The author here goes back to the Asvin hymns (39-41) mentioned in 40.
- B 43. She fell into great grief (thinking), 'Without son or husband I have reached old age in vain; I (will) therefore resort to the Lords of Light (śubhaspatī).

महतीं चिन्तां fm^1bn , महती चिन्ता r, मही चिंता k.—प्रपदी हं $m^1rn(g)$, प्रपदी ह b, प्रपदी हं fk, प्रपदाहं n.

B 44. Since my father, by propitiating them, obtained youth, long life, health, power, poison for slaying all beings,

यधिती $m^1 rn(g)$, यथितो fk, यथान्ती b, तथिती n.— मामकस्तात $m^1 b f k rn(g)$, मामको तात n.— आराध्यावाप r, आराध्यावाय b, आराध्यावाप fk, आराध्येवय m^1 , आराध्येवाप्त n, आराध्य प्राप n(g).— ॰ भूतहर्नने fkr, ॰ भूतक्ते $m^1 b r^5$. — विषम् $m^1 f k r$, धियम् r^5 , धियम् b.— 44^{cd} (आयुरा॰ &c.) omitted in n.

B 45. I, his daughter, (would obtain) beauty and good fortune, if to me also were revealed formulas in which the Aśvins shall be praised a by me.'

रूपवत्तां च rn, रूपवन्तां च b, रूपता चैव f, रूपता चैव m¹k.—प्रादु: MSS. and r, सिद्धाः n.—ये सोधिते bfkn, यौ सोधिते m¹, यैः सोधिते r.—मयाश्विनौ bfrn(g), ममाश्विनौ kn.—The end of the varga is here marked by **Q** in bfk, not in m¹.

a Owing to the dropping of visarga before st in the MSS. the reading is ambiguous, yai stosyete or yais tosyete; but the future being more appropriate than the present and the verb stu being constantly used with reference to deities, but never tus, I feel no doubt that stosyete is the form intended (cp. 46: stutau . asvinau . prītau).

10. Story of Ghoṣā (concluded).

- B 46, 47. As she reflected thus, she saw the two hymns 'Your encircling' (yo vām pari-: x. 39, 40). The two divine Aśvins being praised, were pleased. Entering her organ (bhaga) they made her ageless, free from disease, and beautiful (subhaga). They gave her a husband and the sage Suhastya as a son.
- 46. सूक्ते दे यो वां परि $m^{1}n$, सूक्तांके दे यो वां परि fk, सूक्तांनि चीणि घोषा r, सूक्तांनि चीणि योधा b.—सगान्तर्म $m^{1}bfkrn(g)$, सगान्तरे n.
- 47. विजरागोगां rn(g), विजरारोगा k, विजरारोगा bf, विजरारोगान् m^1 , विजरारोगं n.—सुमगां m^1rn , त्रुभमात्र् fk, त्रुभमात्र् b.—सुहस्त्यं च सुतं rn, सुहस्त्यं सुतं f, सुहस्त्यं स्वसुतं m^1 , सुहस्त्यं स्वसुतं m0.—सुनिम् m1bfkr, सुने: n, मनो: $r^5n(g)$.
- B 48. What the 'Nāsatyas' by means of their two winged steeds $(suparn\bar{a}bhy\bar{a}m)^a$ gave to Ghoṣā, daughter of Kakṣīvat, is proclaimed by the (stanzas), 'Not of that' (na tasya: x. 40.11) (and) 'Of her that grows old at home' (amājurah: x. 39.3).

द्दतुस्तत् m^1 bfk, द्दतुस्तौ r. — यज्ञासत्येति m^1 br, यं मासत्येति f, ये नासत्येति f k r^2 . — कीर्त्यते m^1 bfk, कीर्तिते r. — काचीवत्ये r, काचीवता fk, कचीवता m^1 b. — म तस्यामानुरो नया f, ने तस्यामानुरो नया m^1 , न तस्यामानुरो नया fthis reading must be a conjecture of Mitra's; for according to his note (p. 197, note f) his A MSS. (f^1 f^3 f^4 f0) do not contain the passage, and his three B MSS. (f^2 f^5 f^7) have the reading f तस्यां मानुरो f f0. This is the only BD. passage in which I have found evidence of a reading in f1 which has no MS. authority.

a This is probably meant to express that the Asvins granted Ghoṣā's prayer at once.

49. There was an Asurī, daughter of Prajāpati, Vikuṇṭhā by name. She, desiring a son like Indra, performed very severe austerities a.

सक्ती hm¹fk, सक्ती r (इक्ती S).—सुमहत्तपः hm¹rk, सुमहत्तपः b.—The end of the varya is here marked by 90 in f only. It would have been more natural after the preceding śloka, but the beginning of a story need not coincide with the beginning of a varya. By this division the tenth and the eleventh varyas contain four ślokas each.

Cp. Sarvānukramaņī: vikuņthā nāmāsurī indratulyam putram ichantī mahat tapas tepe.

11. Story of Indra Vaikuntha.

50. She then obtained from Prajāpati her desires (in the form of) various boons. And Indra himself was born of her a, as he wished to slay the Daityas and Dānavas.

कार्मा होने f, कार्मा होने k, कार्मा होने m^1 , कार्मा होने hd, कार्मा होने hd, कार्मा होने fd, होने fd

- a Cp. Sarvānukramaņī: tasyāh svayam evendrah putro jajne.
- 51. Once he was engaged in battle with the Dānavas. Of them he slew nine nineties a and seven groups of seven.

एकदा दानवै: hdfk, एकदानवै: m¹, एकश्च दानवै: br¹r⁴r⁶: the reading of hdfk is the more probable, because the one दा would easily drop out before the other (as in m¹), and to write एकश्च would be an obvious way of replacing the lacking syllable.— समसञ्चतः b, समसञ्चते fk, समसञ्चतः, समसञ्चति hdm¹.—तेषां hm¹r, चैषां bfk.—सप्तनान् B, सप्तधा Am¹.

- ^a With jaghāna teṣām navatīr nava, cp. RV. i. 84. 13: jaghāna navatīr nava; the latter words recur in Mahābhārata, ii. 24. 19 (see Hopkins, JAOS., xxii, p. 389). Cp. BD. vi. 51, 115.
- 52. Having shattered with the might of his arm their citadels of gold, silver, and iron, (and) having slain all (of them) in their respective spheres (yathāsthānam), as arrayed on earth and in the other (two worlds).

भित्वा r, भित्वा hdm¹b, जित्वा fkr²r⁵r².—खबाइ॰ hm¹r, खबल॰ bfk.—हैम-रीयायसी: Bm¹, हैमवत्यायसी: r¹r⁴r⁶, हैमग्र्यायसी hd.—हत्वा hdrfk, कित्वा b.—पृथिवादिव्युव॰ hdm¹bfk, पृथिवादिव्यव॰ r. Mr. A. B. Keith suggests the very neat correction पृथिव्यां दिव्यव॰ (i. e. diviava॰) owing to पृथिव्यां and दिवि in 53. I have, however, retained the reading given in the text, because no MS. has an anusvāra, because व्यवस्थित is used in an analogous passage (vi. 111, 112), and the distributive sense of यथा in यथास्थानं is well explained by the आदि in पृथिव्यादि॰.—52^{ed} is wanting in r¹r⁴r⁶.

53. On earth he exterminated both the Kālakeyas and the race of Puloma, the archers, and in heaven the notorious $(t\bar{a}n)$ offspring of Prahlāda.

युत्सादयामास hdm¹, युक्का° r, युत्सादयत्सर्वान् b, युक्कादयन्सर्वान् r²r⁵r⁷, युद्यन् सर्वान् fk.—प्रहाद् fkr, प्रहाद् m¹b, प्रहाद् hd.—दिनि Am¹, अपि r, ऋषि b; fk omit two syllables in the last pāda: प्रहाद् तनिय.— This śloka in B comes after 55, but it is evidently in the right place here. Owing to this transposition the end of the varga is marked by 99 in bfk after the next śloka (54); it is not marked at all in hdm¹.

12. Story of Indra Vaikuntha (continued).

54. Having obtained sovereignty among the Daityas (and) puffed up with pride by reason of his might, he began to harass the gods, being infatuated by the craft of the Asuras.

राज्यं प्राप्य hm¹fk, राज्यं प्राप r, राष्ट्रिष्य b. — This and the following sloka are omitted in r¹r³r⁴r⁶.

55. Now while they were being harassed by that same Asura of unlimited power, they fled for succour to Saptagu, most excellent of seers, in order that (the latter) should admonish him (Indra)^a.

बाध्यमानासु $h \, d \, m^1$, वाध्यानासु b, बध्यमानासु r, बिध्यमानासु f, विध्यमानासु k.—तिनापि $b \, f \, k \, r$, ते सर्व m^1 , ते सार्धम् $h \, d$.—तत्प्रबोधाय r, तत्प्रवोधाय b, तत्प्रवोधाय $f \, k$, तत्प्रवाधाय $h \, d \, m^1$.

56. Now the seer called Saptagu was a dear friend of his, and (so) he praised him with the (hymn), 'We have grasped' (jagrbhma: x. 47) a, as he took him by the hand.

स चैनम् hm1r, स एनम् bk, स एतम् f.

^{*} Cp. sa buddhvā caātmānam in 57.

^{*} Cp. Sarvānukramaņī: jagrbhma . . saptagur vaikuņtham indram tustāva.

57. Then he coming to (buddhvā) himself (and) rejoiced at the praise of Saptagu, praised himself with the three a (hymns) 'I was' (aham bhuvam: x. 48-50);

ततः स hm^1rb , ततस्तु $fkr^2r^5r^7$. — बुद्धा r, वुद्धा fk, बुध्वा hdm^1 , वुता b. — तुष्टावाहं hm^1bf , तुष्टाव चाहं $r^2r^5r^7$, तुष्टाव वाहं k.

- ^a Cp. Sarvānukramaņī on RV. x. 47: sa saptagustutisamhrsta ātmānam uttarais tribhis tustāva.
- 58. proclaiming his deeds, which he performed in days of yore, and how he made king Vyamsa of Videha lord of Somaa—

यथाकरोच Am^1 , यथाकरोत्स br, यथाङ्कतित्स fk.—यंसं hdm^1fr , यसं $r^1r^4r^6$, यश् k.—सोमपतिं hm^1r , सोमपतिर् $r^1r^4r^6$, सो उपतिं b, सो उपति (नृप) fk, सौमपतिं r^5 .—The end of the varya is here marked by 92 in bfk, not in hdm^1 .

^a There seems to be no distinct reference to any such myth in these three hymns.

Story of Indra Vaikuntha (concluded). Story of Agni and his brothers: RV. x. 51-53.

59. by the curse of Vasistha he in former days had become king of Videha, and by the favour of Indra he sacrificed with sessions (sattra) on the Sarasvatī and others a—

वैदेहो hm¹, वैदेहं r³, विदेहो bfkr.—ईज च Am¹, ईज स bfkr.—सार्खतादिभिः hm¹rfk, साखतो दितिः b.

- ^a This stanza gives a parenthetical explanation about Vyamsa, the construction running on from 58 to 60. The curse of Vasistha, it appears, relegated Vyamsa to a remote Eastern region (Tirhut) beyond the pale of orthodox Brāhmanism, but the favour of Indra afterwards enabled him to perform sacrifices on the Sarasvatī and so to become a 'lord of Soma,' like himself (somapati being an epithet of Indra).
- B 60. and (praising) his great power and his injury to foes, and his sovereignty among all men and his lordship in the worlds; but in the (stanza) 'Forth to your great' (pra vo mahe: x. 50. 1) his own imperishable might.

श्रक्तिमत्तां r, श्रक्तिमत्वां b, श्रक्तिमत्वा m^1fk .—°प्यपाकियाम् b, ॰प्यपाकिया f, ॰प्यपिकिया m^1 , ॰परिकियाम् r.—pपु सर्वेषु Am^1 , विष्णुलोकेषु fkr, विष्णुलोके b.— श्राद्मशे Am^1 , श्राद्मशे (वा॰) B.—वीर्यमत्त्रयम् hm^1r^3 , श्रवार्पयत्त्रयम् f, ॰वार्पयत्त्रयम् b, ॰वार्पयत् स्वयम् r.

61. ^a When the brothers ^b Vaiśvānara, Agni Gṛhapati and Yaviṣṭha, Pāvaka, and Agni Sahaḥsuta ^c had been shattered by the Vaṣaṭ, call,

धातृष्यपौ b, धातृवर्गी $hdm^1r^3r^2$, धातृवर्गी (ep. v. r. vii. 116: वर्गी: and वापी) fk, धातृवर्ग n, अपौ च rp, अपौ तु r^5r^7 (धातृषु S).—सहःसुते b, स सुते p, सह सुते fk, सह सुतौ $hdm^1r^3r^2$, सहस सुते r^5 , सहसः सुतौ r, •िस्स्रितेश्वेत n.

^a The following passage (61-81^{ab}), as quoted by an old MS. (p) of Sadgurusisya (p. 184) on RV. x. 51, has been published by me in the JRAS., 1894, pp. 11-22. Parts of the story are also quoted by the Nītimanjarī on RV. x. 51. 8. Cp. Sāyaṇa's introduction to RV. x. 51 (with var. lect. in M. M., RV. vol. iv, p. 16). b My expectation, expressed in the JRAS., p. 19, that when more MS. material had been collated, the correct reading of the text of the BD, would prove to be bhrātṛṣv agnau, is here confirmed. Only one letter (s) of that reading is wanting in the MSS., and if we take into consideration the reading of the Sarvānukramanī (which borrows a whole pāda and three syllables without alteration: vasatkāreņa vrkņesu bhrātrsu), not a single letter is wanting. • Judging by the story in TS. ii. 6. 6, one would expect the names of three brothers only; but here we have five: Vaiśvānara, Agni Grhapati, Agni Yavistha, Agni Pāvaka, and Agni Sahasah suta (shortened for the sake of metre to the compound form Sahahsuta). The last four are mentioned together in the Sarvānukramanī on RV. viii. 102: agnih pāvekah, sahasah sutayor vāgnyor grhapati-yavişthayor vā anyatarah; according to Şadgurusisya, Agni Grhapati and Agni Yavistha are sahonāmnah putrau.

62. Agni Saucīka departed from the gods, so a Vedic text (relates). He on departing entered the seasons, the waters a, (and) the trees.

ग्रुपचकाम Bn, श्राभिचकाम Am^1 .— देविभ्यः B, सीचीको Am^1 .— सीचीकोऽपिर् BS, भयादपिर् Am^1p .

- ^a Cp. Sarvānukramaņi: saucīko 'gnir apaḥ pravisya.
- 63. Then the Asuras appeared, when Agni the oblation-bearer had vanished. The gods, having slain the Asuras in fight, looked about in quest of Agni.

मी MSS., ऽस्मिन् n.— वैचन br, वेचन hdm¹, चेचत f, वेचन p.— देवा हला-मुरान् hdfrn, हला सर्वान्सुरान् b.— युधि hrm¹ p, मृधे fbn.— The end of the varga is here marked by **93** in hm¹, after the preceding line in b, not at all in dfk.

14. Story of Agni's flight (continued).

64. Now Yama and Varuna a espied him from afar. Both of them, taking him with them, went to the gods.

वर्णश्चान्वप्रधताम् hm1rf, वर्णश्चैव प्रधताम् n, (यमे मैचा)वर्णौ चान्यपचय-तास b.— उभावेनं Am¹p, उभी चैनं bn.

- ^a On Varuna's powers of vision, cp. above, iii. 134.
- 65. On seeing him the gods said: 'O Agni, bear our oblations, and accept boons a from us; do thou, O brilliantly shining one, attend upon us;

do thou thyself graciously make the paths trodden by the gods easy to traverse.'

दृष्टा देवास्त्वेनं hdrp, दृष्टान्त्वेनं m1, देवाश्चेनम् bn, देवाः चैन fk.—वरं Am1, वरान् np, वरा b, वन् f, (वह)न् k.— चास्मत्तम् hmlnp, चास्मात्तम् b, चात्मानः fk, मत्तस m r.—देवयानान् $m m^1$, देवयानात् f, ॰जानात् k, देवयानां m bn.—सुगान्यथः $m fm^1 n$, सुगा-न्यथ: b.—The third line of 65 is found in bfkmin, but not in hdr.

- ^a The reading varan seems preferable to varan, because several boons are asked by Agni (73, 74), and especially because the expression sarvān eva varān daduh is used in 76.
- 66. Agni then answered them: 'What all ye gods have said to me I will do; but let the five races enjoy my priesthood'a-

॰चाथ तानपिर hrbk, ॰च तदापिस्तान् p.—विश्वे देवा m¹rbfkn, वैश्वानरा॰ r¹r⁴r6, विश्वे ब्रूत hdr^3 , विश्वे क्रूत $\mathrm{p.}$ —यदूच माम् b , यद्थ मा fk , यदाथ माम् m^1 , यदात्थ माम् r, ॰य दातुं मा $r^1r^4r^6$, यथात्त माम् p, यथाक्रमात् hdr^3 , प्रयक्कृत n.—जुषन्तां तु Am¹p, ज़ुषन्तां च B.—होचं hdm¹r³pB, हीचं r.

- a Cp. RV. x. 53. 5: pañca janã mama hotram jusantām.
- 67. now the fire at the entrance of the shed (śālāmukhya), that which is brought forward (pranita)a, the son of the Lord of the House b, the northern and the southern fire, these are held by tradition (smrta) to be the five races.

शानामुख: hdm¹r³bp, शालामुख: fk, शान्यमुख: r. — The end of the varga is here marked by 98 in bfk, not in hdm1.

a That is, the Ahavanīya fire. b That is, the Garhapatya fire.

The meaning of panca janah. **15**.

- 68. Men, Fathers, Gods, Gandharvas, Serpents, Demons a;
 - (or) Gandharvas, Fathers, Gods, Asuras, Yaksas (and) Demons b:

मनुष्याः पितरो hm¹r, मनुष्याः पश्ची bfk.—यचराचसाः m¹bf, (श्रमुरा) राचसा-ख्या p.—68^{cd} is found in m¹bfk, but not in hd, nor is it mentioned in r.

- a The last two are probably meant to form one group so as to make five altogether. b This alternative list represents the opinion of 'some' quoted in Nirukta iii. 8 (on RV. x. 53. 4) except that the Yakṣas are there omitted: gandharvāh pilaro devā asurā rakṣāṃṣi ity ele. (Cp. JRAS., 1894, p. 20.) Here also the last two, Yakṣas and Rākṣasas, are meant to form one group. The two lists in 68^{ab} and 68^{cd} have four classes in common: pitaraḥ, devāḥ, gandharvāḥ, rākṣasāḥ; but for manuṣyāḥ and urayāḥ in the first we have yakṣāḥ and asurāḥ in the second.
- 69. Yāska a and Aupamanyava state these to be the five races. Śākaṭāyana thinks they are the (four) castes with the Niṣādas as a fifth.

यास्तीपमन्यवावितान् $h \, dr$, यास्तीयमन्यवावितान् $r^1 \, r^4 \, r^6 \, m^1$, यास्तीयमनचैवितान् k, यास्तीयमनचैवितान् p, यास्तीयमत् चैवितान् b.

- a In Nirukta iii. 8, Yāska does not give his own opinion, but states the view of some (above, 68, note b) which is practically the same as that of 68^{cd} ; while what he states to be Aupamanyava's opinion is that attributed to Sākatāyana in 69^{cd} . The opinion of the AB. iii. 31. 5 is nearly identical with that given in 68^{ab} (the $r\bar{a}ksas\bar{a}h$ being omitted): $dev\bar{a}h$, manusyāh, yandharvāpsarasah, sarpāh, pitarah; see Roth, Erläuterungen, p. 28.
- 70. Śākapūṇi, however, thinks they are the (four) priests (rtvij) and the institutor of the sacrifice (yajamāna).
- B Those (priests) they call 'Hotr,' 'Adhvaryu,' 'Udgātr,' and 'Brahman.'

यजमानं च b, यजमानञ्च $h \, dm^1 r f k p$.—॰ध्वर्युस्तयोद्गा॰ m^1 , ॰ध्वर्युञ्च उद्गा॰ $f k r^2$, ॰ध्वर्युर्थो॰ b.—ब्रह्मा चेति m^1 , ब्रह्मणे तान् b, ब्राह्मणे तान् $f k r^2$.—वदन्ति तान् m^1 , वदिति तान् b, वदाति तान् $f k r^2$.— 70^{cd} -72 are found in $b f k r^2 m^1$, but not in A.

B 71, 72. Eye, ear, mind, speech, and breath, say the theosophists (ātmavādin). They are stated to be Gandharvas and Apsarases, Gods, Men, Fathers, and Serpents in the sacred text of the Aitareya Brāhmaṇa b—

'and (continued Agni) whatever other terrestrial creatures $(prthiv\bar{\imath}j\bar{a}t\bar{a}h)$ and other divine beings $(dev\bar{a}h)$ there are that receive worship $(yaj\tilde{n}iy\bar{a}h)$.

- 72. ब्राह्मणे चैव b, ब्राह्मणास्थित m¹fkr².— य यज्ञियाः b, य यज्ञियो fkr², प्ययज्ञिकाः m¹ (cp. यज्ञियासः in RV. x. 53. 4).— The end of the varga is here marked by **94** in bfm¹, not in k.
 - ^a See above, 69, note ^a. ^b 67-72^{ab} is a parenthetical explanation of pañca janāḥ.

16. Story of Agni's flight (continued).

73. And let me have long life, and various oblations, and let my elder brothers enjoy safety at every sacrifice a;

श्रुष्वरे $1 \, \mathrm{tm}^{1} \, \mathrm{r}$, श्रुथवरे थरे b, श्रुष्वरे (only) f, एवमध्वरे $k \, \mathrm{r}^{2}$.

- ^a This and the following śloka are based on RV. x. 51. 8.
- 74. and let the preliminary $(pray\bar{a}ja)$ and the final oblations $(anuy\bar{a}ja)$, the ghee, and the victim in the Soma (sacrifice) have me as their divinity, and let the sacrifice (in general) have me as its deity.'

च यः पणुः hdm¹r³bfkr², पयः पणुः r, (सोम) वयः पणून् p. — महैवत्यानि m¹n, महैवत्या नु hdr³, मे दैवत्यानि fkr², महेवत्यानि bpr¹r⁴r⁶.— °देवतोऽसु च m¹krp, °दैवनोऽसु च f, °देवतोऽसु च b, °देवतोऽसु हि n, °देवतस्तृचः hdr³.

75. This was accorded (pratyārdhi) with (the words) 'Thine, O Agni, the sacrifice' (tavāgne yajñaḥ: x. 51.9°); and he (became) Svisṭakṛt (offering right sacrifice), to whom the three thousand, three hundred and nine

द्खेतत्प्रत्यार्धि r^3 , द्खेतत्प्रत्यार्ध h dr b f k, एवं प्रत्यूषु: n.— यस्य $A m^1 r^5$, तस्य $b f k r^2$.— 75^{ab} is found in $h dr^3 f k r^2 r^5 n$, but is wanting in $r^1 r^4 r^6 m^1 p$.

76. and thirty gods^a gave all (these) boons. Then Agni, well-disposed, pleased, honoured by all the gods,

चैव तु hm¹r, चैव p, चैवास्य bf.—सर्वानेव hm¹r, सर्वानेतान् bfp.—देवैः पुरस्कृतः hm¹r, देवैस संसुतः bfkn (**॰सः** f).

- ^a Cp. RV. x. 52.6; see my 'Vodic Mythology,' p. 19 (middle).
- 77. shaking off his limbs, the divine-souled oblation-bearer, pleased in company with his brothers, unweariedly performed the office of Hotr (hotram) at sacrifices.

विध्याङ्गानि r, विध्याङ्गानि b, विध्नमाङ्गानि m¹, विध्याङ्गानि hd, विध्नमानि f, विध्यमानि k.—होत्रम् hdm¹ r³ bk, हीत्रम् fr: होत्र is the word used in RV. x. 51. 4.— दियाता hdr, विश्वाता bfk.—The end of the varga is here marked by 9ई in m¹ bfk, not in hd.

17. Story of Agni's flight (concluded). RV. x. 54-57.

78. His bone became the Devadāru tree; his fat and flesh, bdellium; his sinew, fragrant Tejana grass; his semen, silver and gold;

सुगन्धितेजनं hd, सुगन्धे तेजनं b, सुगंधं तजन (°नत् kr²) fkr².—स्तायु hdm¹p, स्तायु: bfr, प्रायु: kr², सुचु r¹r⁴r6.

- ^a The earliest expression of the notion of parts of the body being united with or turned into something analogous in nature appears in one of the funeral hymns of the RV., x. 16. 3: sūryam cahṣur gachatu vātam ātmā, &c. Cp. BD. vi. 106, 151.
- 79. the hair of his body $(rom\bar{a}ni)$ became Kāśa grass; the hair of his head $(keś\bar{a}h)$, Kuśa grass; and his nails, tortoises; and his entrails also (became) the Avakā a plant; his marrow, sand and gravel;

केशासु hd, केशास bfkr.—नखानि च hm¹rbfk, नखासाथा p.—अन्ताणि hdr, अंचानि fk, आंचाणि b.—चैवाप्यवका bfkp, शैवलास्खेव hdm¹r.—°तशर्कराः hdm¹bf kr²p, °तशार्कराः r³, °तकर्कराः r.

- ^a Between the two readings caivāpy avakā (B) and śaivalās tv eva (A), I have decided in favour of the former, as avakā is the older word (which occurs in the RV.), for which the later word śaivala (identical in meaning) would have been substituted as more familiar, the substitution being probably assisted by the similar beginning (caiva°) of the original reading.
- 80. his blood and bile (became) various minerals, such as red chalk. Thus Agni and the Gods with the three hymns (beginning) 'Great' (mahat: x. 51-53)

विविधा hdm1, विविध fk, विविधं br.

- * Cp. Sarvānukramaņī: agniķ . . . devaiķ samavadad uttarais tribhiķ.
- 81. conversed. Now the two following (hymns) 'That of thee' $(t\bar{a}m \ su \ te : x. 54, 55)^a$ after this are addressed to Indra.

B In the (stanza) 'Who lonely runs' (vidhum dadrāṇam: x. 55. 5) Sun and Moon are praised.

ऐन्द्रे सूत्रेत hm^1r , ऐन्द्रसूति fkp, ऐं सूति b.—तु तां सु ते bkr, नु तां सु ते f, खुतां सु ते

- ^a On the pratīka tām su te see my note in the JRAS., 1894, p. 15, showing the constant confusion in the MSS. between suta and stuta (cp. also the various readings of sahahsute, above, 61).
- B 82. The praise here also appears as of Breath and of Soul a.

The two (hymns) 'This' (idam: x. 56, 57) are addressed to the Allgods. In the second (57) b there is a triplet (3-5) to Mind (manas).

वैश्वदेवे च hm¹r, °देवस्था b, °देवस्थां fk.—द्वितीयेऽर्यमणसृचः hdr³, द्वितीयेऽर्थमणो दृचः r, द्वितीयर्थणो दृचः m¹, द्वितीये गिरिसां सुतिः fkr², द्वितीयेंगिरसां सुतिः b.— The end of the varga is here marked by 9 (instead of 99) in bfk, not at all in hd.

a RV. x. 55. 5 is commented on in this sense also in Nirukta xiv. 18. Cp. BD. vi. 134, 136. b This pada (82^d) in B is identical with 102^d in A and B, and may have been due to its occupying a similar position on the following page in the original of B. In any case there is no mention of the Angirases in the text of RV. x. 57. Nor is there any trace of Aryaman in it. On the other hand manas is invoked to return in x. 57. 3-5: I have accordingly made the emendation **मनस** (cp. 85^b). **चेमण्स** is probably due to **मनस**, by the loss of one **स**, becoming **मनस**, the lacking syllable then being supplied by **चें**, with the consequent change of **न** to **W**.

18. Story of Subandhu: RV. x. 57-59.

83. The first (stanza) is addressed to Indra (x. 57. 1), the second to Agni (2), the last (6) has the Soma (mentioned) in it (tat) for its deity.

B This (hymn) praises the Fathers a also (and) should be recited (in that sense) by priests $(\bar{a}rtvija)^b$. The hymn c (beginning) 'Which' (yat: x. 58), coming next after that,

प्रथमेन्द्रो दितीयापेथ्य् hm¹rbfk, प्रथमा लैन्द्र्यथेन्द्रापी $r^1r^4r^6$. — तत्सोमदेवता hdm¹rfk, चछ्योमदेवता b.— 83^b in $r^1r^4r^6$ appears as आर्खिज्यामपरं तु यत्, which is practically identical with 83^d . This indicates that though 83^{cd} does not occur in A (but in Bm¹ only) it was known to the copyists of some A MSS. — आर्खिजं यत्त् b, आर्खिजं यद् f, आर्खिजं च षड् kr^2 , आर्खिजं वा यद् m^1 .—उत्तरम् bm^1fkr^2 .

RV. x. 57: mahāpitryajāe 'py etad rtvigbhir japyam.

b Cp. Sāyana's introductory remark on RV. x. 57: mahāpitryajāe 'py etad rtvigbhir japyam.

c Sūktam belongs to 84.

B 84. is connected with a story: hear it from me desirous of telling it. When he had lost consciousness from stupefaction, having been struck down by an enemy,

वतुकामस्य m^1 , पञ्चकामस्य fkr^2 , यञ्चकामस्य b.— संमोहान्नवृसंश्वस्य fkr^2 , सांमाहांतष्टसंश्वस्य b, संमोहाञ्च विसंश्वस्य m^1 .— भ्रृतुणाभिहतस्य m^1 , भ्रृतुणाभिहतस्य b, भ्रृतुणां दिभिहतस्य fkr^2 .— तु $bfkr^2$, च m^1 .— This śloka is found in B and m^1 only.

85. Subandhu's life is (here) recalled a ($j\bar{v}a\bar{v}rtti$) or (the hymn) is (in) praise of Mind (manas).

King Asamāti, of the race of Ikṣvāku b, the Rathaproṣṭha c, cast off d (vyudasya) his domestic priests

जीवावृत्तिः hm^1r , जीवाधृत्तिं b, जीवाधृर्ति f, जीवाधृर्त्ति k. — सुबन्धोर्वा hm^1b , सुबन्धोर्था fk, सबन्धोर्वा r. — यदि वा hm^1rb , यद वा f, पाद वा k. — मनसः स्रवः m^1r , मनस स्रवः hdbfk (॰व bfk). — ॰व्हाको hdrbfk, ॰व्हाकुः $r^1r^4r^6$, ॰व्हाके m^1 (cp. v. r. 96). — रथप्रोष्ठः br, रथप्रोष्ठाः f, रथप्रोष्ठाः kr^2 , रथप्रोष्ठान् hr^3 , ॰g। e1.

- a In order to keep 84 (B) separate from 85 I have had to change the construction; literally: 'The hymn x. 58 (in 84) is (meant to be) a recall of the life of Subandhu (85) who had lost consciousness,' &c. (84).

 b Ikṣvāku is mentioned in RV. x. 60. 4; cp. Sarvānukramaṇī: aikṣvāko rājāsamātiķ.

 c Cp. RV. x. 60. 5: asamātiṣu rathaproṣṭheṣu.

 d This word belongs to 86; cp. Sarvānukramaṇī: purohitāṇs tyaktvā.
- 86. Bandhu and the rest who in the Maṇḍala of the Atris (v. 24) are seers of Dvipadās (dvaipadāḥ)a. The two crafty priests named Kirāta and Ākulib

हैंपदा चे hd, दैपदा ने b, दैपदान्ये m^1 , देपदान्ये f, देपदान्ने k.—किराताकुली bkr, किराताकुलि f, किराती कुली hdm^1r^3s , कुली $r^1r^4r^6r^6$.

- ^a Cp. Sarvānukramaņī: uktā rṣayo dvaipade tv atrimaņdale.

 ^b On these two names cp. S'B. i. 1. 4¹⁴ and the Sātyāyanaka in M. M., RV.² vol. iv, p. 167, and var. lect., pp. c-cvii.
- 87. Asamāti made his domestic priests; for he considered them the best^a. These two priests having become pigeons and having gone against the Gaupāyanas,

पुरोधत्त hm¹r, पुरोवंती fk, पुरोवंतः b.—वरिष्ठी hm¹r, वसिष्ठी fk.—गत्वा hdr, युक्ता fk, wanting in b.—गीपायनानिभ hdm¹r, गोपायनानिहि b, नोपायनानिह fk.— None of the MSS. mark the end of the eighteenth varga.

^a Cp. Sarvānukramaņī: māyāvinau śresthatamau matvā purodadhe; cp. Ṣadguruśiṣya, p. 153.

19. Story of Subandhu (continued).

88. fell upon Subandhu with their crafty power and their magical art (yoga). From the pain (caused) by their attack, he swooned and fell.

मायावलाच hm¹r, मायाच यौसाच b, मायात्वयात्वलाच f, मायात्वयात्वलघ k.— सुबन्धुम् hdm¹rfk, वसुधम् b.—°िमपेततुः hdrb, भियेचतुः f, °िभयेवतु k.

89. When they had plucked out (ālucya) his spirit (asu)^a, they went to the king. Then, after Subandhu had fallen lifeless to the ground, the three brothers^b,

स्थासुम् hm^1rb , स्थसम् f, स्थम् k.— त्रानुच्य m^1r , त्रानुच्य hdr^3r^5 , त्रानुप्य r^2 , त्रानुप्य b, त्रासनुप्य fk.—गतासी hdm^1r , भातरि bn, omitted in fk.

- ^a Cp. Sarvānukramaņī: subandhoḥ prāṇān ācikṣipatuḥ.

 b 89^{cd} and 90^{ab} are quoted in the Nītimañjarī on RV. v. 60. 12.
- 90. the Gaupāyanas, all together muttered, as a spell for good luck, (the hymn) 'Not' $(m\bar{a}: x. 57)$; for bringing back his soul $(mana-\bar{a}vartana)$ they had recourse to $(abhi-y\bar{a})$ the hymn 'Which' $(yat: x. 58)^a$.

जेपु: hm^1r , ययु: bfk.— मनश्चावर्तनं तस्य bfk(S), मनश्चावर्त्तनं तस्य r^2 , मनश्चावर्त- यन्ती sस्य hdm^1r .— भय्यु: hm^1rb , भय्यः fk.

- a Cp. Sarvānukramaņī: mā . . . svastyayanam japtvā . . yat . . mana-āvartanam jepuļ.
- A 91. And the following (triplet) which, (beginning) 'Let be prolonged' (pra tāri: x. 59), they muttered with a view to remedies is

the first triplet of the hymn (1-3): it is there meant to drive away (apanodana) Dissolution (nirrti)^a.

भेषजार्थ hd, भैषजार्थ m^1r (ep. RV. x. 59. 9: भेषजा).—तन $hdm^1r^3r^2$, खन r, प्रेति bfk (the pratika of RV. x. 59, because $g1^{ab}$ is wanting in these MSS.).

- a Cp. Sarvānukramaņī: pra tāri . . . nirīter apanodanārtham jepuh.
- 92. Now the three verses 'Not at all' (mo $\mathfrak{s}u: x. 59. 4^{abc}$) are addressed to Soma, the last (4^d) to Nirṛtia: this whole stanza being addressed to Soma and Nirṛti. The following two (stanzas: 5, 6) are (in) praise of Asunīti.

मो जिति तु hm¹r, मो जिल्लाखाः bf, मो कितखाः k.— नैर्च्छती r, निर्च्छती hdr³ bfkr².— ॰ नीतिः जुतिः परे h, ॰ नीतिजुतिः परे d, ॰ नीते जुतिः परा r, ॰ नीतेरतः परे bf, ॰ नीतेरतः परे k.

- ^a The statement of the Sarvānukramaņī is: the first four stanzas they muttered for the purpose of driving away Nirrti, in the fourth they praised Soma also.
- 93. Now in (this) couplet Yāska a thinks the last verse (59. 6^d) is addressed to Anumati.

The end of the varga is here marked by 90 in bfk (not at all in hdm¹) thus giving five and a half ślokas to this varga (if 91^{ab} is included) and leaving five and a half for the next.

* Yāska comments on the preceding stanza (x. 59. 5) in Nirukta x. 39, but says nothing about x. 59. 6^d .

20. Detailed account of RV. x. 59, 60.

Earth, Heaven, Soma and Pūṣan, Air, Pathyā and Svasti

94. are traditionally held (to be the deities) in the stanza 'Again to us' (punar naḥ: x. 59. 7) for the alleviation (śānti) of Subandhu. The triplet 'Blessing' (śam: x. 58. 8-10) is to the Two Worlds (rodasī), while in the stanza 'Together' (sam: x. 59. 10) the (first) hemistich is addressed to Indra.

सोमश्र bkr, मश्र f, सोमज़ hdm1.— च्छचि तु स्नृताः hdr3m1, इति तु स्नृता r, रिचः संजुताः b, च्छच संजुताः f, च्छच संजुताः k.

95. Now they praised the Two Worlds for the destruction of infirmity (rapas): 'infirmity' is stated to be a designation of sin or (bodily) trouble ^a.

वै hdm1r, ते bfk.—लथ hdr, चैव m1, लिन्द्र b, (तुष्ट्रवि) हिस्बद्ध f, त्सिद्ध k.

- * Cp. Nirukta iv. 21: rapo ripram iti pāpanāmanī bhavataķ.
- 96. Then with the four stanzas a 'Hither' (\bar{a} : x. 60. 1-4) they praised the scion of Ikṣvāku, and after praising him they uttered prayers for him with the stanza 'O Indra, dominion' (indra kṣatrā: x. 60. 5).

ऐस्वाक्रम hdr, एरवाक्रस f, ऐरवाक्र k, ऐर्वाक्रम bm1: cp. the various readings above, vii. 85 and v. 14.

- * Here we have rgbhiś catasrbhih, but in vi. 41 rgbhiś caturbhih.
- 97. And their mother a praised the king with (the stanza) 'Of Agastya' (agastyasya: x. 60. 6). The king, having been (thus) praised, went to the Gaupāyanas full of shame.

श्रगस्त्रखेति माता च hdrbfk, श्रगस्त्रख खसा माता n.—सुतः स bm¹rs, सुतः स fk, सुतश्च hd.—सत्रीडस् hdr, त्रीनुस् b, omitted in fk, सुप्रीतस् s, (सुतोऽसमातिः) संहष्टः n.

- ^a Cp. Ārṣānukramaṇī x. 24: svasā agastyasya mātā eṣām.

 ^b The following passage (97^{cd}-101) is quoted in Sāyaṇa on RV. x. 60. 7. Parts of it (97-98^{ab}, 99^{cd}-100^{ab}) are also quoted in the Nītimanjarī on RV. x. 60. 12.
- 98. As among the Atris^a they had also praised Agni with a dvipadā hymn (dvaipada), Agni, on his part, said to them, 'Here within the sacrificial barrier' (antahparidhi) b is the spirit

सूक्तेनाथ $^{\circ}$ bfkn, सूक्तेनाथ $^{\circ}$, सूक्तेनेषां $^{\circ}$ $^{\circ}$ ते $^{\circ}$ ते पदिष यथाविषु $^{\circ}$ hm $^{\circ}$ rfkn (h) s, पदतृषु n, यदतृषु n(m), द्वैपदं यत्तद्विषु $^{\circ}$ ते $^{\circ}$ दे पदं यत्तदंदिषु b.— अपिर्ध्यत्र $^{\circ}$ hdm $^{\circ}$, अपिर्ध्यत्र $^{\circ}$ bfs, अधापिर्धि k.—एतान् $^{\circ}$ हे एनान् $^{\circ}$ ते नेनान् b, चैनाम् fk, देवान् hdr $^{\circ}$.— परिध्यसुः s, पराव्यसुः $^{\circ}$ Am $^{\circ}$ r, परेत्यसु b, परेत्यसून् fkrn.— The end of the varga is here marked by $^{\circ}$ 0 in bfk, not in hdm $^{\circ}$ 1.

^a That is, in RV. v. 24.

^b Cp. Sāyaṇa on RV. x. 60 and his quotation from the Śāṭyāyanaka in M. M., RV.² vol. iv, p. 175.

21. Story of Subandhu (concluded). Deities of RV. x. 61-66.

99. of Subandhu; that of this scion of Ikṣvāku also has been guarded by me desirous of the welfare (of both).' Having given (back) his spirit to Subandhu and saying 'Live,' the Purifier $(p\bar{a}vaka)$,

सुबन्धोरस्य चेन्त्राकोर् $r^1r^4r^6br^2$, सुबन्धोरस्य चेन्त्राको fk, सुबन्धोरस्य चेन्त्राकोर् s, सुबन्धुरस्य चेन्त्राकोर् hdm^1 , सुबन्धुरस्य चेन्त्राको r. — हितार्थिना hm^1rs , हितेषिण् b, हितेषिण् fk. — प्रदायासुं $hm^1r^3r^2s$, ॰ यासु bk, ॰ यात्रु f, ॰ यासु f,

100. having been praised by the Gaupāyanas, went back pleased to heaven. They, rejoicing, summoned the spirit

of Subandhu with (the stanza) 'He as a mother' ($ayam \ m\bar{a}t\bar{a}$: x. 60. 7).

चिद्वं प्रति hm1r, चिद्वं पुन: bfkn.—हृष्टास्ते hdm1r, श्रेषेण bfkr2.

- 101. Pointing to the body of Subandhu prostrate on the ground, they sang the remainder of the hymn for the maintenance of his consciousness (cetas)^a.
- a According to the Sarvānukramaņī, they summoned back his life with stanzas 7-11: parābhih subandhor jīvitam āhvayan.
- 102. And in the (stanza) 'This' (ayam: x. 60. 12) they individually (prthak) touched him with their hands when he had recovered his spirit.

There are six (hymns) addressed to the All-gods (beginning) 'This' (idam: x.61-66). In the second (62) there is praise of the Angirases.

लक्यामुं r, लक्यामुं fk, लक्ष्यामुं hm¹b (लक्यमं ज्ञं S).—इत्यस्यां hm¹r, इत्यृग्भ्यां bfk.—
•सुश्न् hdrk, •सुश्त् b. — •िक्कर्सा सुतिः hdrb, गिरिसा सुतिः k, •िक्कर्सा सुतिः f (cp. 82).

- a Cp. Sarvānukramaņī: tam antyayā labdhasaņjāam aspṛśan.
- 103. (The seer) praises (them), proclaiming (their) birth, and activity, and friendship with Indra^a. 'May he now prosper' (pra $n\bar{u}nam$: x. 62. 8-11)^b and the rest are a praise of Manu, son of Savarṇā ($s\bar{a}varnya$)^c.

संख्यं चेन्द्रेण सह कीर्तयन hdr, दानं च सकां चेन्द्रेण ग्राश्वतम bm^1 , दानं च सखा चेने ग्राश्वतं f.—सावर्णस्य hm^1 fr (=RV. x. 62. 9), सावर्णस्य bk.—103 e^d -106 are omitted in r^1r^4 r^6 .—The end of the varga is here marked by **२9** in bfk, not in hdm^1 .

^a Cp. v. 164. ^b Sāyaṇa on RV. x. 62. 7 quotes a śloka from Śaunaka, and another in his introduction to x. 62. 8: neither comes from the BD. ^c The Sarvānukramaṇī has the metronymic form sāvarṇi. RV. x. 62. 9 has sāvarṇya and 11 sāvarṇi. Cp. BD. vii. 1.

22. Details of RV. x. 63-66. Deities of RV. x. 67-72.

104. And for the sake of long life for him the seer praises the gods: (so) he came upon 'Her that well guards' ($sutr\bar{a}m\bar{a}nam$: x. 63. 10) (and) 'Her that is great' ($mah\bar{\imath}m\ \bar{\imath}\ su$)^a. 'Of Dakṣa' (daksasya: x. 64. 5) is (in) praise of Aditi.

स्तौत्वभ्ययादृषिः hm¹r, सौत्वंभ्ययात्वृषिः bfk (सै॰ bk).—महीमू पु hm¹bf, महीमु पु d, महिमू पु r, महिमूषि kr².

AV. vii. 6. 2; VS. xxi. 5; TS. i. 5. 11⁵; quoted in AB. i. 9. 8; ASS. iv. 3 (cp. Sāyana on RV. x. 63. 10). It does not occur in the Kashmir collection of khilas.

105. 'The goddess of Welfare, indeed' (svastir id dhi: x. 63. 16) is (in praise) of Pathyā svastia; 'Welfare to us' (svastinah: 15) is (in) praise of the Marutsb; for it is stated in the texts of the Adhvaryusc (with regard to it) 'He repeats the stanza addressed to the Maruts.'

पध्याखि b, पध्याखित m¹fkr, पध्याखित hd.— श्राध्यर्वे हि hdm¹r, श्राध्ये वे ऽपि हि b, श्रार्थे वे इि fk.

- ^a Here Pathyā svasti is one goddess; otherwise Pathyā and Svasti are treated as two goddesses, as in Naighaṇṭuka v. 5.

 ^b According to the Sarvānukramaṇī both 15 and 16 are addressed to Pathyā svasti; but the Maruts are mentioned in 15 and the authority of the Yajur-veda is here adduced to show that 15 was ritually applied as a Marut verse.

 ^c This is evidently a passage from a Brāhmaṇa of the Yajur-veda.
- 106. So also in the (stanza) 'The Cow that' (yā gauḥ: x. 65. 6) the Middle Vāc is praised; 'To Mitra' (mitrāya: 5) is addressed to Mitra-Varuṇa; 'Bhujyu from distress' (bhujyum amhasaḥ: 12) is addressed to the Aśvins^a.

मध्यमा तु m1, मध्यमा नु hdrfk, मध्यमात् b.

- a None of these details about 65 are given in the Sarvānukramaņī, where it is simply stated to be vaiśvadeva.
- A 107. He also praises Manu and the Middle Vāc in the couplet containing svasti^a (x. 66. 14, 15).

Then the two (hymns) 'This' ($im\bar{a}m$: x. 67, 68) are addressed to Bṛhaspati; 'The auspicious' ($bhadr\bar{a}h$: x. 69) is addressed to Agni; (then comes) an Āprī hymn (x. 70).

सीत्यापि च r, सीत्या hdm¹.—वाचं च मध्यमाम् m¹r, वाचमध्यमाम् hd.—This line is found in hdr, not in bfk. I assume from this that it is not in Mitra's B MSS. either, though he has no note. The line occurs in m¹ also, not here, however, but between 103^{ab} and 103^{cd}.— अधिमां r, रमां hdm¹bfk (one syllable short).—मद्रा hm¹r, रद्रा bfkr².—आप्रियः hdm¹bf, आप्रियाः kr², आश्रियः r, (अथापेयमथ)।त्रयः r¹r⁴r⁶.

- * svasti dvrca appears to refer to x. 66. 14, 15, as the word svasti occurs in both these stanzas, Vāc is mentioned and Manu might be considered to be alluded to in the words vasisthāh pitrvad vācam akrata (14). Otherwise the reference might be to x. 65. 14, 15 (the latter is identical with 66. 15), but neither svasti nor Vāc occurs in 65. 14, though Manu, on the other hand, does. Possibly both 65. 14, 15 and 66. 14, 15 are meant, as the second stanza is common to both.
- B 108. In the first (hymn) addressed to Brhaspati (67) Brahmaṇaspati (appears) in a hemistich (7^{cd}). In the hymn to the All-gods here (72) Brhaspati is also praised in a hemistich (2^{ab}): (that is) in the one beginning 'Brahmaṇaspati' (72. 2^{ab}) by changing ($vi-k\bar{a}ratah$) the characteristic term ($linga-v\bar{a}kya$)^a.

These three lines are entirely omitted in hdr; m¹ omits the second and third pāda; fk omit the second pāda. Thus b is the only MS, which has the lines complete. ब्रह्मण्यते b (108^b).— लिङ्कवाकानिकार्भः b, लिङ्कवाकाविकार्ते fk, लिङ्कं वाकं विकारते m¹.—The end of the varga is here marked by २२ in bfk.

^a That is, in both hemistichs Bṛhaspati is praised under the substituted alternative name of Brahmaṇaspati. 67. 7^{cd} as well as 72. 2^{ab} begins with brahmaṇaspati.

23. Detailed account of RV. x. 71.

109. That knowledge which is immortal light and by union with which one attains to Brahma, Brhaspati praised next (atha)^a with a hymn (71)^b.

अमृतं hdm1r, अजरं bfk.

- That is, after the one last mentioned, the Apri hymn, in 107.

 b This śloka is quoted by Sadgurusisya on RV. x. 71 and by Sayana on x. 71. 12.
- 110. Now the employment of formulas for the sake of a livelihood is forbidden. There appears here for the most part correct knowledge of the essential meaning of the Veda (as the subject of the hymn).

जीवनार्थं hm1r, ॰नार्थे bk, जीवितार्थे f. — प्रायेणात्र हि hm1r, ॰णात्तत्तु b, ॰णात्तनु f.

111. Some teachers say that there is here praise of those who are wise in speech with some $(\bar{a}bhik)$ stanzas, but with others in this hymn the man who does not know the meaning (of the Veda) is blamed.

स्तवः hm^1r , स्तव k, स्तवम् bf.—यथाभिर्निन्दाते hdm^1r , तथा हि निन्दते b, तथाहिं निन्दते r^2 , तथा हि निन्दिते fk.—चिर्मः b, चिरमः fk, खुरिमः r, च्रिरमः hdm^1 .—न्याभिर् hm^1rfk , (सूत्ते) नाभिर् b.

112. And how the wise found that (speech) when she was located among the seers a, and how they divided her at the sacrifice—all this is here told in the third (stanza: x. 71. 3).

यथैताम् bfk, ये चैताम् hm¹r, ये चैनाम् d.—॰न्विन्द्न m¹r, ॰न्विन्द्ने bfk, ॰न्विन्द्ते ते, च विन्देत d.—विद्वांसर्षिगतां सतीम् bm¹, विद्वांसर्षिगता सतीम् r^2 , विद्वांसर्षिगता संती f, विद्वांसर्पिगतां सतीम् hdr³, विद्वांस म्हाधितां श्चीम् r.—यथा च व्यवजन् fk, यथा च व्यमन् b, तथा च ह्यभजद् hdm¹r.—तद्वोक्तं m^1 r, तदाचोक्तं bfk, तद्शकं hd.

a Cp. RV. x. 71. 3: tām anvavindann ṛṣiṣu praviṣṭām; tām ābhṛtyā vy adadhuḥ purutrā.

113. But in the tenth the wise man is lauded (x. 71. 10), while in the last stanza he (the seer) states the distribution (viniyoga) of the (four) chief priests and of their rites at the sacrifice.

दशस्या hm¹r³f, दशस्यां bkr. — व्चा hm¹r, त्युचा b, तृचा fr²r³. — यज्ञे hm¹r, जिर्, यजीर्, यजीर् b. — The end of the varga is here marked by २३ in hm¹bfk, not in d.

24. Deities of RV. x. 72-84. Khilas.

114. Now in the following (hymn: x. 72) Dakṣa a is praised and also the eight sons of Aditi b: Dhātṛ, Indra, Varuṇa, Mitra, Aṃśa, Sūrya, Aryaman, Bhaga c.

तु खूयते चोत्काष्टी hdm^1 , तु खूयते चोत्का अष्टी r, तु खूयते चास्यत्काष्टी $r^1r^4r^6$, तु खूचान्काष्टी b, तु खूचात्काष्टी f. — चैवादितेः m^1r , चेवादितेः fk, चैवादितेः b, चैवादिस् hd, चादितये $r^1r^4r^6$. — मिनों s सूर्यो s येमा hdm^1r , मिनः सूर्याश्वाशो र्य b, मिनः सूर्यश्वाशो र्यमा f.

The corruption of the text is here probably due to a contraction, by which the MSS. nearly always remove the hiatus between the pādas of a line. The verb, stūyate, indicates that a nominative singular follows. The conjecture dakṣo cannot be said to have palaeographical support, but I could see no other possibility of emendation. Dakṣa is mentioned in the fourth stanza: aditer dakṣo ajāyata, dakṣād v aditiḥ pari; and is invoked in the fifth: aditir hy ajaniṣṭa, dakṣa, yā duhitā tava. The Sarvānukramaṇī throws no light on the passage, the hymn being simply described as daivam.

b Cp. stanza 8: aṣṭau putrāso aditer ye jātāḥ.

c Cp. the enumeration of seven Ādityas in iv. 82 (where five of the above names occur) and the list of twelve (B) in v. 147 (where seven of these names occur). On the names of Ādityas cp. my 'Vedic Mythology,' § 19, p. 43.

- 115. The two hymns (beginning) 'Thou hast been born' ($janisth\bar{a}h$: x. 73, 74) are addressed to Indra; but in (the hymn) which here follows (beginning) 'Let well proclaim' ($pra\ su$: x. 75) the streams (sravantyah) which flow east, and west, and south
- 116. are praised together according to preëminence (pradhā-nataḥ) in seven groups of seven a. 'Hither you' (ā vaḥ: x. 76) is to the pressing stones; the two 'Of the sprinkling of the cloud' (abhrapruṣaḥ: x. 77, 78) are traditionally held to be addressed to the Maruts.

सप्तिर्वर्गीः hm^4r , सप्तिर्वर्षि b, दश्किर्वामे $fkr^3(r^2?)$: cp. v.r. vii. 61. — प्रधानतः hm^4r , बुभक्तयः f, द्विभक्तयः $kr^3(r^2?)$, बुक्तयः b.

- ^a This was doubtless suggested by the words of RV. x. 75. I: pra sapta-sapta tredhā hi cakramuḥ.
- 117. The two (beginning) 'I saw' (apasyam: x. 79, 80) are addressed to Agni; the two 'Who these' (ya imā: x. 81, 82) are addressed to Viśvakarman; the two 'Who to thee' (yas te: 83, 84) are addressed to Manyu. But that which follows, 'In my vow' (mama vrate) a,

मान्यवे r, मान्यवेन् h, मान्यवेन् d, मान्यते bfk.— मम व्रते hm1r, म व्रते bfk.

- RV. x. 84 and 85. It consists of 32 stanzas, chiefly in the anustubh metre, and begins with the line mama vrate hydroyam te dadhāmi. It is thus described in the accompanying Anukramanī: mama: prājāpatyo hydyo, vaišvadevam tu, vivāhārthāsīs tv, ānustubham tu, &c. Cp. LV. vi. 94. 2; Pāraskara GS. i. 8. 8; ii. 2. 6; Sānkhāyana SS. ii. 4. 1.
- 118. consisting for the most part of benedictions, praises the All-gods. That which follows (beginning) 'Out' (ut) a, consisting of eight stanzas, is (the hymn of) Parākadāsa b (and) is addressed to Agni.

पराकदास आपेचे Am¹, पराकदास आपेचं B.—The end of the varga is here marked by २8 in bfk, not in hdm¹.

^a This khila consists of eight anustubh stanzas and is addressed to Λgni. It begins with the line: ut tudainam, grhapate; and is thus described in the Anukramanī: ud: aṣṭau, Parāgadāsaḥ.

^b The hymn being designated by the name of the reputed author, as in the case of the two khilas called Prajāvat and Jīvaputra in v. 92. Cp. Rgvidhāna iii. 21. 4: parākadāsasya vidhim, and iii. 22. 2: parākadāso dveṣyārtham, &c. See Meyer, op. cit., p. xxi, and Oldenberg, Prolegomena, p. 507.

25. The Surya hymn: RV. x. 85. Three forms of Usas.

119. The fourth stanza there is addressed to Mitra-Varuṇa a, while the last but one (x. 85. 7) is addressed to Indra and Agni b. Sāvitrī and Sūryā c are one and the same wife of Vivasvat,

मैत्रावर्ण्यृक् तत्रास्ति hdr, मैत्रावर्ण्यृक् चतुर्थी hm1, मैत्रावर्ण्यश्वतुर्थी f.—चतु-र्थ्यंद्राष्युपोत्तमा r, चतुर्थेन्द्राष्युपोत्तमा hd, पंचम्येंद्राष्युपोत्तमा m1, पंचम्येंद्री ततः पर् bfk.

- a It begins with the pāda: imām me mitrāvaruņau.

 b It begins with the two pādas: anena brahmaņāgne tvam, ayam cendro na īditaḥ. This makes the correction of aindrāny to aindrāny certain.

 c Cp. Sarvānukramaṇī: sāvitrī sūryā. On the three forms of Sūryā see BD. ii. 8-10; cp. M.M., RV. 2 vol. iv, p. 27.
- 120. who is praised as Vṛṣākapāyī and is called Uṣas. This Uṣas having divided herself into three, goes to the Lord of rays $(gopati = s\bar{u}rya)$.

एषा Am1, ह्येषा bfkr.—विभज्य प्रैति hm1r, विभज्याचैति fk, विभक्ताचैति b.

121. Becoming Uṣas before sunrise, Sūryā when midday reigns, and becoming Vṛṣākapāyī at the end of days, she goes down.

चषाः $r^1 r^4 r^6 fk$, उषा $h d m^1 r b$. — पुरोदयात् b (=BD. ii. 9), पुरादया f, पुरोदये $h m^1 r$. — मधंदिने स्थिते $h m^1 r$ (=BD. ii. 9), भूला दिनादिषु b, भूला दिनातिषु fk. — भूला वृषा॰ $h d m^1 r$, खुता वृषा॰ b fk. — ॰ यी च $h m^1 r$, ॰ यीति b fk. — दिनंलै ध्ववगक्रति b, दिनाने ध्वेव गक्रति $f r^2$, दिनांश्वेव गक्रति k, दिनाने ध्वनुकीर्तिनी h r, ॰ कीर्तनी $d m^1$.

122. The first stanza here (x. 85. 1) addressed to Sūryā a is stated to be connected with Satya, Sūrya, Rta and Soma; but with the following three stanzas (2-4) Soma as a plant is spoken of.

॰मूर्यतं॰ hm¹bfk, ॰मूर्यतुं॰ r.—सीर्यावान hd, सीर्यावन r, मूर्यावान bm¹, मूर्या-धान fk.— ह्युगच्यते hd, द्युग्च्यते r, पिहोच्यते bfk.— ल्युग्भिष्चते hdm¹r, खनाच्यते b, खनोच्यते f.— श्रीषधिः hd, श्रीषधिः r³, श्रीषधः r, श्रीषवः b, श्रीषवः fk. I have preferred the reading श्रीषधिः because of RV. x. 85.3: सोमं मन्यते पिपवान् यत्संपिष-स्थोषधिम्.

a The Sarvānukramanī describes this hymn as ātmadaivatam, and Sadgurusisya explains that the deity is Sūryā except where any other deity is specified.

123. But the stanza which comes next to these (5) clearly adores the moon (candramas), while with the eight (stanzas) 'The singer's' (raibhī: x. 85. 6-13) the evolutional section (bhāvavṛttam) for Sūryā is expressed.

The end of the varga is here marked by 24 in bf, not in hm1k.

^a The pāda sūryāyai bhāvavṛttam tu is identical with Rgvidhāna iii. 22. 3^c , where it is stated that a father should recite sūryāyai bhāvavṛttam in order that his daughter may procure a suitable husband. This was, therefore, probably a regular designation of these eight stanzas in the Brāhmaṇa style (as sūryāyai here seems to be $= s\bar{u}ry\bar{a}y\bar{a}h$); cp. Meyer, Rgvidhāna, pp. xi and xxviii.

26. Account of the Surya hymn (continued).

124. The couplet 'When' (yat: x. 85. 14, 15) praises the Aśvins; the following (stanza) adores Sūrya (16); the seventeenth is addressed to the All-gods (17); the following one is addressed to Sun and Moon (18).

द्भुच hdr, omitted in bfk. — सूर्यम् b, सूर्य - म (वोत्रराचित) fk, सूर्य hdm¹r. — सौर्याचान्द्रमसी b, सूर्याचन्द्रमसी hdm¹rfk (this perhaps represents an original सूर्याचान्द्रमसी, with viddhi of the second member only).

125. Of the following (stanza: x. 85. 19) the first two verses are addressed to the Sun (19^{ab}), while the following two (19^{cd}) are to the Moon. Aurnavābha a, however, thinks that in this couplet the Aśvins are praised.

प्रथमी hdm¹r, तु पूर्वी b, तु पूर्वी f.— ऋषिवाभी hdm¹b, ऋषिनाभी r.—125^{cd} (in addition to the preceding word परी and the following सूर्याचन्द्रमसी) is omitted in fk.

- ^a Cp. Nirukta xii. I, where, according to some, the Asvins represent Sun and Moon.
- 126. For those two (Aśvins) are traditionally held to be Sun and Moon, and Prāṇa (outward breath) and Apāna (downward breath); and these two may be Day and Night, (or) these two (may be) the Two Worlds (rodasī)^a.

अहोरावे hdm1r, अहोरावी bfkr2: cp. अहोरावावित्येक, Nirukta xii. 1.

^a The first, third, and fourth of these explanations are given in Nirukta xii. 1.

127. For these two permeate $(a \le nuv\bar{a}te)$ the world with light and moisture; and they fare (caratah), each separately, to the south and the north a.

अभुवाते hdm¹r, खुवाते b, खुसुवाते f. — सोकान् hdm¹, सोकाज् r, सर्वे bfk. — पृथक् पृथक् करतो b, पृथक् पृथक् च वरतो fk, पृथक् पृथके चेरतुर् hdm¹r³, पृथक् पृथक् ते चरतु r.

^a This is evidently a paraphrase of RV. x. 85. 18: pūrvāparam carato māyayā . . etau.

B 128. Sūrya moves (sarati) among beings, or he instigates ($v\bar{i}rayati$) them well (su): apportioning (saṃdadhat) all their functions ($k\bar{a}ry\bar{a}ni$) he goes among them in order to instigate ($\bar{i}ryatv\bar{a}ya$) them well a.

सुवीरयित तानि वा m^1 , सुवीरपिततानिव b, सुवीरः पिततानि वा fkr^2 .— सु ई्यंखाय यात्वेष m^1 , सु द्रयंखा यात्वेष b, सु द्रयंखा पात्वेषु fkr^2 .— संद्धत् m^1 , संवदत् b, स दवत् fk, स वदत् r^2 .—128, 129 are omitted in Λ , but are found in $bfkr^2m^1$.— The end of the varga is here marked by \mathbf{z} in \mathbf{b} in \mathbf{b} fk.

a This śloka is evidently based on Nirukta xii. 12, where sūrya is derived from sarti or suvati or svīryati (sūryaḥ .arter vā suvater vā svīryater vā). The BD. follows the first and the third etymology: sarati = sarti, su vīrayati and su īryatva (condition of one who is to be well instigated) = su īryati. With Yāska's su īryati cp. his etymology (in Nirukta i. 7) of vīra from vīrayati (probably = vi īrayati).

27. Derivation of Candramas. Contents of RV. x. 85. 20-30.

B 129. The Moon ($candram\bar{a}h$) runs (dramati) beautifully ($c\bar{a}ru$) or observing ($c\bar{a}yan$), or (uta) runs as one worthy to be observed ($c\bar{a}yan\bar{i}ya$); (or) the prior (member of the compound comes) from (the verb) cam; or (atha) he (candra) fashions ($nir-m\bar{a}$) the aggregate of beings ($sam-et\bar{a}ui$)^a.

चार द्रमित b, चार द्रवित fkr^2 , चार द्र हित m^1 (चार द्रमित Nirukta xi. 5).— वा चार्यंश् m^1bfk , वा चार्यश् r^2 .— चार्यनी द्रमिप वा चार्यंश्यासी द्रमृत्युत b (the line from वा चार्यंश्या is here repeated), चाचित्रमुख्यते m^1 , वाविनंद्रमुख्यते f, चार्यं f, चार्यं f, चार्यं f, वाविनंद्रमुख्यते f, वाविनंद्रमुख

^a The above five etymologies of candramas are based on Nirukta xi. 5, where six derivations are given: (1) cāyan dramati; (2) cāru dramati; (3) ciraṃ dramati; (4) cam

(dramati): (5) candro mātā: (6) cāndram mānam asya. The BD. adopts four of these (1, 2, 4, 5), adding cāyanīyo dramati which (if my emendation is correct) is only a modification of cāyan dramati. Thus Yāska's ciram dramati (3) and cāndram mānam asya (6) are omitted; the latter, however, is only a modification of candro mātā in a passive sense.

130. Now in the (stanza) 'Bright, with Kimśuka flowers' (su-kimśukam: x. 85. 20) (the seer) praises Sūryā mounting a (the car of) her husband, and in the next distich (21, 22) the Gandharva Viśvāvasu.

•रोहतीं hm1rb, •राहसी f, •राहसी k.—चैव hdm1r, चात्र bfk.

- ^a The fem. from the weak base, ārohatīm, is here perhaps used on account of the metre (cp. v. r. vii. 13).
- 131. With the (stanza) 'Thornless' (anrksarah: x. 85. 23) (the seer) here praises the wedded couple (dampati) who have started ($y\bar{a}tau$)^a, but with the following five (24-28) the wife as she reaches the house (of her husband).

यौ तौ hdm1r, याती b, यात्वी fkr2.

- ^a I have preferred the reading yātau to yau tau, because the latter is almost meaningless and yā° might easily have become yau owing to the influence of the following °tau stau°; yātau, on the other hand, makes a very good sense (= having started for the husband's house'), as contrasted with the following gṛhān prapadyamānām ('reaching her husband's house'); cp. RV. x. 85. 23: anṛkṣarā rjavaḥ santu panthā yebhiḥ sakhāyo yanti no vareyam.
- 132. And (in the next: x. 85. 29) they declare (that) the presentation by the bridegroom (vara-dāna) of (newly-married) wives (is expressed)^a. Then (30) the woman's garment, when indifference prevails (vibhave sati)^b,

वर्दानं hdm^1r , रादार्घ f, परदाप b.—तत स्विया b, ततस्त्रिभर् hdr, तत स्त्रि m^1 , तत स्विदा f.—विरागस्य bm^1d , वर्षरागस्य h, निरागस्य fk.—विभवे hdm^1rfk , विभगे b.—Between the two pādas of 132, fkr (not Am^1b) add the four pādas (thus giving five ślokas to the varga):

यद्ध्य इति वाससः । तबुक्तया तथा साभी निंदते पत्युरेव च । 1 f, निद्धिते [निन्यते]. मामुक्तरा तृतीयस्य 2 2 r, तदीयस्य f.

- —The end of the varga is here marked by \mathfrak{S} in bfk, not in hdm¹.
- ^a Cp. the words of RV. x. 85. 29: parā dehi śālmulyam brahmabhyah. See on this, AGS, i. 8. 12. ^b I am doubtful as to the emendation and interpretation of this line.

28. RV. x. 85. 31-43.

133. (that is), except at the time of intercourse, is forbidden to be taken hold of (haraṇa) by the husband a.

The stanza '(The diseases) which '(ye: x. 85.31) is destructive of consumption (yakşma) b; in the couplet 'May not' ($m\bar{a}: 32, 33$) (the seer) praises the waylayers.

हर्गां hdr, धार्गां m¹, द्वार्गां fk, द्वार्गां b.—प्रतिषिध्यते hdm¹r, प्रतिषिधति bfk.— °नाभिनी hdkS, °नाभिनीं m¹r, °नाभनी bf.—दुचे मा hdm¹r, दुचेन bk, दुचेन f.

- In order to keep 132 and 133 separate in translation, I have changed the construction, the taking hold, by the husband, of the garment, &c.—According to the Sarvānukramanī 29, 30 are applied to release from the guilt of touching the wife's garment: dve vadhūvāsahsamsparšamocanyau (see Ṣaḍguruśiṣya). According to the commentator Jagannātha they censure the touching of the wife's garment: vadhūvāsahsparšanindā. b Cp. Sarvānukramanī: parā yakṣmanāśinī.
- 134. But (the stanza) 'Rough is this' (trstam etat: x. 85. 34) states what sort of man deserves (to receive) the bridal dress a. And various directions b are given to her relations

तृष्टमेतदिति hd, इष्टमेतदिति m¹, विष्ठमतदिति fk, विष्ठमतदिति b, त्र्यप्टमे यदिति (!) r.— आशासे bfkr, आशासि Am¹.— ज्ञातिभया॰ hm¹r, जातिभया॰ b, खानि-भिया॰ f, यानिभिया॰ kr².

- Cp. the text of RV. x. 85. 34: sūryām yo brahmā vidyāt, sa id vādhūyam arhati.
 Cp. the text of RV. x. 85. 35: āśasanam viśasanam atho adhivikartanam.
- 135. by the woman, who is bound^a. And evolution ^b (bhāvavṛttī) is here told, in the following (stanza: x. 85. 35).
- B With the stanza 'I grasp thy' (gṛbhṇāmi te: 36), as he then takes her hand, prayers for wealth

बड़ा hm^1r , वध fk, वश्चं b.—ते ऋचा इस्तं m^1 , त रिवा थो इस्तं $bfkr^2$ (इस्त f).— गृह्ण्यथ धगाशिषः m^1 , गृह्ण्यशाशिषः b, गृह् धनमाशिषः r^2 , गृह् धनशाशिषः fk.— 135^{cd} and 136^{ab} are found in $bfkr^2m^1$ only.

- ^b I have changed the active to the passive construction in order to separate 135 from 134 in translation.

 ^b Cp. the words of the text: sūryāyāḥ paśya rūpāṇi, &c.
- B 136. are uttered (by the husband). In the following (stanza: x. 85. 37) are also prayers for her with the object of union.

With the following (stanzas, the seer) utters prayers for the two both separately and together;

परया m^1 , परयास् $bfkr^2$.— ॰शीस्राशास्ति hdr, ॰शिस्राशास्ति m^1 , ॰शिराशास्ति b, ॰शिश् शास्ति f, ॰शिषःशास्ति kr^2 .— ताभ्यां f, त्याभ्यां f, ताषां r^2 , ताभ्यः f f में f0 में f1 में f2. f3 में f4 में f5 में f5 में f6 में f7 में f8 में f9 में f1 में f2 में f1 में f1 में f2 में f1 में f2 में f2 में f2 में f2 में f2 में f2 में f3 में f2 में f3 में f2 में f3 में f2 में f3 में f4 में f4

B 137. in the triplet 'Having no evil' (aghora-: x. 85. 44-46) for her (alone), in 'Together' (sam: 47) and 'Here' (iha: 42) respectively for both. 'Here for us' (\bar{a} nah: 43) is to Prajāpati; and 'Her here' ($im\bar{a}m$: 45) is addressed to Indra a; the last (47) is to Bṛhaspati b.

This sloka is found in bfkr²m¹ only. The MSS. have the first seven syllables of the second line in common, viz. आ नः प्रजापतेः प्रे, but m¹fkr² complete it with the corresponding part of 138, viz. ॰मानाञ्च यथारूपं विशेषतः (which makes the first pāda end in the middle of a word, and gives the second two syllables too many); b alone completes it differently, viz. (प्रे)मामेद्रावत्या बृहस्पतेः. The variations of the MSS. are: प्रमानाञ्च रूपं विशेषतः m¹, प्रमानाञ्च यथारूपं विशेषतः fk (॰श्रेषः f), प्रमानञ्च यथारूपं विशेषतः r².—प्रमा॰ I take to be the first syllable of the preceding प्रजापतेः repeated by a clerical error and afterwards combined with the pratīka र्माम्.—The end of the varga is here marked by २८ in b, not in f.

a The emendation imām, pratīka of 45, and aindrī seem probable, as Indra is invoked in that stanza.

b I have made the best I could of the last pāda from the reading found in one (b) incorrect MS. alone. Antyā brhaspateh can only be correct if the khila of one stanza beginning dhruvā (which comes between RV. x. 85 and 86 and which forms the last stanza of the longer khila of six stanzas, printed in Aufrecht, p. 682) was regarded by the author of the BD. as the last stanza of x. 85. Cp. Meyer, Rgvidhāna, p. xxii.

29. Remarks on the Surya hymn (concluded).

138. Now these wedding formulas are recited for men also, being connected with the priests $(\bar{a}rtvij\bar{a}h)^a$ and with the institutor of the rite $(y\bar{a}jam\bar{a}n\bar{a}h)$ according to their respective form (and) their peculiarity $(vi\dot{s}esa)$.

निगवने hdr, निमज्यने b.— नृणामिष hdr, नृणामिष्ठ b.— आर्लिज्या hdm¹r, प्रार्लिज्या b.— याजिमानाञ्च b, यजमानाञ्च m¹r, यजमानञ्च hd.— This śloka is omitted in fk excepting the end, मानाञ्च यथारूपं विशेषतः, which, in all the MSS. (m¹fkr²) but b, has been substituted for the corresponding part of 137; ep. critical note on 137, and observe that m¹ (which has these syllables here also) as well as fk has the plural termination omānāh there.

a I have corrected artvijya of the MSS. to artvija, as the former word could only be a neuter noun ('office of priest') while an adjective is necessary to correspond with

yājamānāļi. The adjective ārtvija occurs above, vii. 83, where, it is to be noted, six out of eight MSS. read ārtvijya; cp. critical note on vii. 83.

139. And in those stanzas here in which respectively (pratyream) deities are proclaimed, one should state the one mentioned $(t\bar{a}m)$ to be the deity or should state that (the stanzas) are addressed to Nārāśaṃsa $(n\bar{a}r\bar{a}śaṃs\bar{a})^a$.

प्रतिकीर्छने hdm^1r , परिकीर्छने b, कीर्छित fkr^2 .— देवताश्चह यासु याः hdm^1r , देवता तेषु साँ भवेत् b, देवता तेषु भाववृत्त f, देवता तेषु भाववृत्त f, देवता तेषु भाववृत्त f, देवता तेषु भाववृत्त f, देवता f, चंदतां f, चंदतां f, चंदतां f, चंदतां तासु f, देवतां भु f, देव f त्याशंसीर् f, नराशंसीर् f, नराशंसीर् f, नराशंसीर् f

- a On Nārāsamsī stanzas op. above, iii. 154; op. RV. x. 85. 6: raibhī āsīd anudeyī nārāsamsī nyocanī.
- 140. And they declare that these stanzas addressed to Uṣas a form as a whole $(sarvath\bar{a})$ a (hymn) concerned with evolution $(bh\bar{a}vavrtta)$ b; and in this hymn a verse $(p\bar{a}da)$ is also (thus) characterized with Sūryā c.

श्रीषसी: b, श्रीषसा: f, उषस्थः hm¹r, उषस्थाः d. — सर्वथा चैता hdr, सर्वथा चैषा m¹, सर्व एवैता bf. — भाववृत्तं bfr, °वत्तं h, °वत्यं d. — प्रचत्तते hdm¹r, निगदाते bf. — पाद- स्वाच r, पादास्वाच hdm¹. — The whole of 140 is omitted in k, and 140^{cd} in bf.

- also ii. 79.

 b The eight stanzas x. 85. 6-13 have already been stated to have this character (sūryāyai bhāvavrttam).

 c This seems to mean that both the hymn as a whole and in it in particular a single pāda have this character when Sūryā is mentioned in them. The pāda meant is probably 35°: cp. above, 135, note b.
- 141. 'Away, indeed' (vi hi: x. 86) is a hymn addressed to Vṛṣākapi; for that brown (kapila) bull (vṛṣan) is Indra a and Prajāpati: 'Indra is superior to all'b.

असी हि hdm1bf, असी तु r.—वृषा hdm1r, वृष: bf.—141ab is wanting in k.

- ^a Cp. ii. 67, where Vṛṣūkapi is also explained as *vṛṣū kapilaḥ*, and is stated to be one of the seven names of Sūrya or the celestial form of Agni. Cp. Max Müller, RV.² vol. iv, p. 27 (var. lect. on RV. x. 86).

 ^b The refrain of RV. x. 86, which is also quoted above, ii. 67.
- 142. (The hymn) beginning 'The demon-slayer' (rakṣohaṇam: x. 87) is addressed to Agni. The following one, 'The oblation'

(haviḥ: x. 88), praises the three Agnis, this (terrestrial) one, and the Middle one, and Vaiśvānara a who is that (celestial) one.

°दि चापेयं hdr, °दि चापेयं m^1 , °दि वापेयं $r^1r^4r^6$, °दिरापेयं bfk.—विश्वानरं च hdm^1r , विश्वानर्श bfk.—The end of the varga is here marked by २0 in m^1bf , by २८ in k, not at all in hd.

a Cp. above, i. 67, on Vaiśvānara as the celestial form of Agni.

30. Deities of RV. x. 89-93. Story of Pururavas and Urvasī.

- 143. And after (a hymn: x. 89) addressed to Indra (comes) the Puruṣa hymn (x. 90). With the last (stanza: 16) of (the hymn) addressed to Puruṣa the circumstances (artha) are told in which the Sādhyas divided him for the purpose of sacrifice.
- ऐन्द्रं hd, ऐन्द्र m¹, इन्द्रं r, तथैद्रात् f, तथैन्द्रात् bkr².— तथा has probably been inserted because the pāda had become a syllable short owing to the contraction cāntya.— पुरुषसूत्रं hm¹r, पौर्षं सूत्रं bfkr² (पौर्षं S).—च अन्त्यया r, चान्यया hdbfk.—पौर्ष्य bfk, पुरुषस्थ hm¹r.— अभजन् r, अभजन् hdm¹, व्यभजन् bfk.
- ^a Or, according to A, 'There is (a hymn) addressed to Indra (x. 89) and (then) the Purusa hymn (x. 90).'
- 144. In the stanza addressed to Indra^a, 'He who gives zeal when imbibed' (āpāntamanyuḥ: x. 89. 5), Soma is clearly praised. Soma is praised either because he belongs to the same world or because he is (Indra's) companion.
- ऐन्द्र्यां h, ऐतां k, एतां r^2 , श्रस्यां hm¹r.— सोमोऽन hm¹r³bfkr², सोमसु r.—144^c = i. 19^a; i. 98^a; v. 172^a (cp. Nirukta xi. 5).—144^{cd} and 145^{ab} are omitted in bfk, which have the following single line instead:

र्द्रः प्राधान्यतो चाच स्तुतः सोमो निपातमाक् ।

- ^a I have preferred the reading aindryām to asyām, as the former seems to be supported by the Sarvānukramaṇī, which makes the express statement: pañcamy aindrāsomī.
- 145. Rathītara has said that in this (stanza) Soma is incidental (nipātabhāj); for in (hymns) addressed to Indra there is here (such) incidental mention. In 'Together' (sam: x. 91) Agni is praised by Aruņa.

रथीतरी hdr, राथीतरी m¹. — ऐन्द्रेषु हि निपाती व Am¹, ऐन्द्रो ह्येष निपात्तासु bfkr.

- ^a Cp. v. 142, where Rāthītara (not Rathītara) is quoted as stating certain deities to be $s\bar{u}ktabh\bar{a}j$. The same authority is, therefore, perhaps meant here also, and the reading of m¹ may be the correct one.
- 146. 'Of your sacrifice' (yajñasya vah: x. 92) are two addressed to the All-gods (92, 93); but in that which (comes) next, 'Forth these' (praite: x. 94), Arbuda adores the Pressing-stone as if incarnate;

प्रेत इत्युत्तरं तु यत् hm^1r , प्रेति याञ्णं वदुत्तरम् b, प्रेति याकूतदुत्तरम् f.—तवार्नुदस्तु hm^1r , तवार्युहिस्तु b, तन्नार्नुदिस्ते f.

B 147. and with the two stanzas 'Forth this to Duḥsīma' (pra tad duḥsīme: x. 93. 14, 15) he (the seer) lauds the gift of kings a.

b Now in the days of yore the nymph Urvaśī dwelt with the royal seer Purūravas; and having made a compact (with him), she lived in wedlock with him.

147^{ab} is found in B and m¹ only.—श्र**प्यासूर्वशी पुरा** hm¹r, श्र**प्या उर्वशी परा** b, श्रश्रा उवशी परा f.—The end of the varga is here marked by 30 in hbfk, and by 30 in m¹, not at all in d.

^a There is no reference to this dānastuti in the Sarvānukramaņī.

^b The following passage (147^{cd}-153) is quoted by M.M., RV.² vol. iv, p. 31; cp. Ṣaḍguruśiṣya's version, pp. 155-158, quoted by Sāyaṇa in his introduction to RV. x. 95; Sāyaṇa also quotes the SB. version of the story. The present passage is translated in Vedische Studien, vol. i, p. 256, by Geldner, who treats the whole story historically, pp. 243-284.

31. Story of Purūravas and Urvašī (concluded).

148. And the Chastiser of Pāka (Indra), being jealous of his cohabitation with her and of Brahma's a (paitāmaha) and his (Purūravas') passion (for her) as if he (Purūravas) were Indra b,

संवासम् hm^1r , संवादम् $bfkr^1r^4r^6$.— असूयन् hm^1r , अनिकन् b, अनीकन् fk.— इन्द्रवद्यापि तस्य तु hm^1r , त्विन्द्रवर्चापि $r^1r^2r^4r^6$, इन्द्रन्वोषितानि तु b, इन्द्र्योषितानि तु fk.

^a Cp. Vedische Studien, vol. i, p. 256, note ². ^b By usurping the rights of Indra.

- 149. said to the bolt at his side with a view to separating them: 'Destroy, O bolt, the alliance of these two, if you wish (to do) me a favour.'
- स तयोसु वियोगार्थं m^1r , ॰थें hd, स तयोसु विभागार्थं $r^1r^4r^6$, स तयोर्विप्रयोगार्थं bfk. भिन्धि r, भिंदि m^1 , भिंद r^3 , भिंदि hd, भिध्य b, भिष्यि fk. तयोर् hr^3bfk , (भिन्ध) नयोर् r.— वज्र hr, वज्ञ fk, यज्ञ b.
- 150. 'Very well,' said the bolt, and destroyed their alliance with its craft. Then bereft of her the king wandered about like one distracted.
- महिंत् b, मिंद्ति hdm^1 , मिद्ति r, मेदी fk.— समायया b, ज्यमायया fk, (॰ित) मायया m^1 r, omitted in hd.—॰हीनस्तु hm^1 r, ॰हीनः सः b, ॰हीनं स fk.
- 151. As he wandered, he saw in a lake the beautiful ($abhir\bar{u}p\bar{a}m$) a Urvasī, as it seemed (iva), surrounded by five beautiful a maiden friends at her side.
- श्वामिक्पामिवोर्वशीम् hdm¹r, श्वामिक्पामथोर्वशीम् blk (श्रिधि॰ f).—श्वामिक्पाभिः hdr, श्रामिक्पा b, चामिक्पाभिर् f.—पश्वाभः पार्श्वतो वृताम् hm¹r, वृतां चतस्रमिस्ताः b, वृतां (वृत्तं f) चतस्रभि स्वतः fk, ॰िमः स्वतः r².
- In the light of the older form of the story in the S'B. it seems probable that the original reading in both cases was $\bar{u}ti-r\bar{u}p\bar{u}$, in the form of a swan, and this conjecture is supported by the use of the words sarasi and iva. Geldner has made this emendation, as he translates in Schwanengestalt.
- 152. To her he said, 'Come back.' But she sorrowfully (duḥkhāt) answered the king, 'You cannot now obtain me here; in heaven you will obtain me again.'
- तमाह पुनरेहीति hd, तामाह पुनरेहीति r, तामुपाइयतः प्रीत्या bfk, पुनराइयत प्रीत्या m¹. Mitra combines both readings, adding a third pada, so as to make the following two lines:

तामाह पुनरेहीति नेति सा खत्रवीतृपम् । तामुपाद्भयत प्रीत्या दुःखात्सा खत्रवीतृपम् ॥

— लयाबेह hdr, लया होह m¹, तवेहाथब b, तवेहाब f, तं चेहाब k.— मां पुन: hm¹r, मां नुप b, मां नुपा fk.— The end of the varga is here marked by 39 in hbfk, not in m¹d.

32. Deities of RV. x. 96, 97. Story of Devāpi: x. 98.

153. This reciprocal narrative $(\bar{a}khy\bar{a}na)^a$ in connexion with a summons $(\bar{a}hv\bar{a}na)^b$, Yāska considers a dialogue, but Saunaka a story,

चाखानम् bfkr, चाखातम् Am1.

- a Cp. the example given above, i. 53, for 'narrative': ākhyānam tu haye jāye (x. 95). Geldner translates as if the text had pratyākhyānam ca.

 b The āhvāna meant is probably that contained in the first stanza of x. 95: haye jāye . . vacāmsi miśrā kṛṇavāvahai nu.

 c This view cannot be gathered from Nirukta v. 13; x. 46, 47; xi. 36.
- 154. (that is, the hymn beginning) 'Ho' (haye: x. 95). The following one, 'Forth thy' (pra te: x. 96), is addressed to Indra. 'Which' (yāḥ: x. 97) is (in) praise of Plants.

 B In (its) employment this (hymn) of Bhiṣaj a is applicable to the cure of consumption (yakṣma).

श्रोषधीस्तवः m¹r, श्रोषधीस्तव b, तुधधीस्तव f, श्रोषधीस्तवः hd (श्रोषधिस्तुतिः S).—भिषजस्त्वेतद् m¹, भिष्जस्तेतद् b, भिषजस्तित् fk.—154^{cd} is wanting in hdr, but is found in bfkm¹ (and probably in Mitra's B MSS., though he has no note).

- ^a Cp. Ārṣānukramaņī x. 45: yā oṣadhīs tu sūktasya ṛṣir ātharvaņo bhiṣak; see also Sarvānukramaņī.
- 155. ^a Now Devāpi, son of Rṣṭiṣeṇa, and Śaṃtanu of the race of Kuru were two brothers^b, princes among the Kurus.

॰षेणसु hm^1r , ॰षेणस b, ॰षेणो हि f, ॰षेणे हि k.—कीरव्यसैव hm^1r , कीर्वव्यसैव b, कनीयांसैव fkr^2 .—स्रातरी bkr^2r^5 pn Nirukta, सार्ती Am^1f .

- a The following passage, vii. 155-viii. 9, is quoted in an old MS. of Ṣaḍguruśiṣya and has been printed by me in the JRAS., 1894, pp. 22-24; it is also quoted, down to viii. 7^{ab}, in the Nītimañjarī on RV. x. 98. 8. It has been translated, Sagenstoffe, p. 130, by Sieg, who has examined the whole story of Devāpi in its various versions, pp. 129-142. b As the present passage is clearly based on Nirukta ii. 10 and bhrātarau occurs there, I have preferred this reading to bhāratau.
- 156. Now the elder of these two was Devāpi, and the younger Śaṃtanu; but the (former) prince, the son of Rṣṭiṣeṇa, was afflicted with skin-disease.

कनीयांश्वेव hm¹ rp, यवीयांश्वेव b, वीर्यवांश्व च fk.—तु ऋष्टिषेणसुतो rp, तु ऋष्टिषेणसुतो hdr³m¹, त्वाष्टिषेणसुतो fk, त्वाष्टिषेणसुतो b.

157. When his father had gone to heaven his subjects offered him the sovereignty. Reflecting for but a moment, he replied to his subjects:

राज्येन क्न्द्यामासुः प्रजाः hm¹rp, क्न्द्येयुस्तत्तु राज्यं r¹r⁴r⁶, श्ववक्न्द्न प्रजासं तं तु राज्ये bf, श्रवक् न प्रजासं तु राज्ये k, पर्यवन्द्न प्रजासं तु n.—गते गुरौ h, गते कुरौ m¹pd, गुरौ गते bfk, गुरौ मृते n.—स मुह्नर्तमिव m¹rbfkpn, मुह्नर्तमिव स h, सा d.—प्रत्यभाषत hrbfk, प्रत्यभाषयत् n.—The end of the varga is here marked by ३२ in bfk, not in hd.—The last pāda is repeated in b only.

1. Story of Devapi (continued).

1. 'I am not worthy of the sovereignty: let Samtanu be your ruler.' Assenting to this, his subjects anointed Samtanu king.

The second line is omitted in n.

2. When the scion of Kuru had been anointed, Devāpi retired to the forest. Thereupon Parjanya did not rain in (that) realm for twelve years.

ततोऽभिषिके कौरवे hm¹rfk, अभिषिके तु कौरवे b.—तिसानाष्ट्रे शतं समा: hm¹rb, राज्ये द्वादश् व समा fk, राज्ये द्वादश् व समा: n(h), राज्यं तद्वाससा: समा: n, राज्यं तद्वादश्वी: समा: n(m), राज्ये द्वादश्व वर्षाणि Nirukta. As the present passage is clearly based on Nirukta ii. 10, I have preferred the reading राज्ये द्वादश्व to राष्ट्रे शतं.

- 3. Samtanu accordingly came with his subjects to Devāpi and propitiated him with regard to that dereliction of duty ^a.
 - a That is, in passing him over and anointing his younger brother.
- 4. Then, in company with his subjects, he offered him the sovereignty. To him, as he stood humbly with folded hands a, Devāpi replied:

चैनं राज्येन $hm^{7}rp$, चैनं राज्ये च bfk, चैव राज्यं च $r^{1}r^{4}r^{6}$.— प्रद्वं तु प्राञ्जलिस्थितम् $r^{3}fk$, प्रवणं प्राञ्जलिस्थितम् r^{7} , प्रद्वं तु प्राञ्जलिं स्थितम् b, प्रद्वं प्राञ्जलिसंस्थितम् hdr, प्रवसु प्राञ्जलिः स्थितः $r^{1}r^{4}r^{6}$.

- a Cp. above, v. 76: sthitvā prahvah krtānjalih.
- 5. 'I am not worthy of the sovereignty, my energy being impaired by skin-disease; I will myself officiate, O king, as your priest in a sacrifice for rain.'

The end of the varga is here marked by q in hm1 bfk, not in d.

- 2. Story of Devapi (concluded). Deities of RV. x. 99-101.
- 6. Then Śamtanu appointed him to be his chaplain (puro 'dhatta) and to act as priest (ārtvijyāya). So he (Devāpi) duly performed the rites productive of rain.

स शंतनुः hm1r, स कौर्वः bfkpn.—स चाख चन्ने hm1rp, चनार सोऽस्य bfkr2n.

- 295]
- 7. And he sacrificed to Brhaspati with the stanzas, 'O Brhaspati, to' (brhaspate prati: x. 98. 1-3)a.
- B When with the second (stanza) of this hymn Jātavedas b had informed him (bodhite) c,

प्रतीत्यृग्भिर् bfkrn, प्रतीकङ्किर् p, प्रतीत्येतद् Am^1 . — चैव $hdr^1r^4r^6m^1bfkn$, चैवं r. — बोधिते m^1fr , चाधिते k, वोधितो b. — γ^{cd} and 8^{ab} are found in B and m^1 only.

- The contents of the hymn indicate that the first three stanzas are connected with Brhaspati, while the following four are connected with the gods (cp. below, 9).

 ^b As a messenger of Brhaspati.

 ^a Sieg would read bodhito, agreeing with the subject (Brhaspati) in 8^{ab}: 'I, instructed by Jātavedas, will place,' &c.
- B 8. 'I will place brilliant speech in your mouth a: praise the Gods,'

then he (Bṛhaspati) being pleased bestowed on him (Devāpi) divine Speech; and therewith

श्रास्ते br, श्रस्ते (ति) fkr², श्रस्ते m¹.— बुमतीं m¹, क्षमतिं b, बुमतिर् fr, द्विमतिर् kr².—ततः Am¹p, इति B.—देवीं hm¹rb, दैवीं fkp.—च सः hm¹rp, तु सः bfk.

- ^a The words of RV. x. 98. 2 only slightly modified: dadhāmi te dyumatīm vācam āsan.
- 9. he in four stanzas (x. 98. 4-7) sang (in praise of) the gods with a view to rain only, and Agni with the remainder of the hymn (8-12). The next hymn 'Whom?' (kam: x. 99) is addressed to Indra.

एव तु hm1r, एव च bfk.— अपिं च hdr, अपिं तु bfk.

10. 'O Indra, stand fast' (indra drhya: x. 100) is to the All-(gods); the following one, 'Awake' (ut: x. 101), is (in) praise of the priests a: the application of rites (viniyoga) is here proclaimed by setting forth the powers of these (priests).

परम hm¹r, परा bfk.—•प्रकाश्निषां Am¹bfkr², •प्रकाश्नि तेषां r.—The end of the varga is here marked by ३ in m¹bf, not in hdk.

* Sarvānukramaņī: rtvikstutir vā; the option, according to Şadgurusisya, is owing to the statement of the BD. that this is a rtvikstuti, while the Devatānukramaņī states that it is addressed to the All-gods.

3. Deities of RV. x. 102, 103. The Khila of Nakula.

11. 'Forth' (pra: x. 102), Śākaṭāyana a considers a narrative hymn: Yāska b (thinks) that it is addressed to the Mallet (drughana) or to Indra; but Śaunaka, that it is addressed to the All-gods.

प्रतितिहाससूक्तं तु Λm^1 , इतिहासं प्र ते सूक्तं b, इतिहासं प्रात सूक्तं fk, इतिहासं प्रिति सूक्तं r^2 , सेतिहासं प्रिति सूक्तं r^7 . — यास्को द्रीघणम् hdm^1 , यास्केन्द्री घनम् (!) r, ॰घणम् r^4r^6 , वाचो द्रोघणम् b, वाक्सो द्रीयणम् f, वाक्सो द्रीयणम् f

- ^a Cp. Geldner, Vedische Studien, vol. ii, p. 2. ^b See Nirukta ix. 23, where Yāska comments on RV. x. 102. 9, beginning: druyhano drumayo yhanas: tatretihāsam ācakṣate.
- 12. By this (hymn) Mudgala Bhārmyaśva in a contest overcame Indra and Soma, having yoked a bull and a Mallet belonging to Indra, to his chariot a.

श्राजावनेन hm^1r , भाजावने तु fkr^2 , श्राजीवनं तु r^7 .— भार्म्यथ SNir, भार्म्यथ dm^1 , भार्म्यथ r^7 .— नुषभं $r^1r^4bfkr^2Nir$, स्थमं hdm^1r (ep. स्थमं m^2r).— युक्ता ऐन्द्रं m^2 , युक्तेन्द्रं m^2 , युक्ता चेंद्रं m^2 ,

- ^a Cp. Nirukta ix. 23: mudgalo bhārmyaśva ṛṣir vṛṣabhaṃ ca drughaṇaṃ ca yuktvū saṃgrāme vyavahṛtyaājim jigāṣa; cp. also RV. x. 102. 5: tena mudgalaḥ pradhane jigāya. See Sarvānukramaṇī and Ṣaḍguruśiṣya's metrical version of the story.
- B 13. Apratiratha Aindra desiring victory when fighting in battle sang (the hymn).
- 'The swift' $(\bar{a} \pm u \dot{h} \pm x. 103)$ is addressed to Indra: in the stanza 'Of those' $(am\bar{s}\bar{a}m \pm 12)^a$ the goddess Apvā is praised.
- युध्यन् r, युध्य b, यद्वा k, यस्य m^1 .—जयं kr, जय f, जयत् b.—ऐन्द्रोऽप्रतिरथो S, ऐन्द्रो प्रतिरथं m^1r , श्रीद्रा प्रतिरथं bfk.—श्रघादेवी r, श्रधा देवो ल् $h \, dm^1$, श्रपा देव्य् b, श्रया देव्य् f, श्रया दिव्य् k, (उपान्त्या) श्रप्वादेवी S.— 13^{ab} is found in B and m^1 only.
- ^a This stanza is commented on by Yāska, Nirukta ix. 32, as addressed to Apvā. Cp. Sarvānukramaņī and Ṣaḍguruśiṣya.
- B 14. The fourth (stanza) should be (regarded as) addressed to Bṛhaspati a, as well as (the stanza) 'The great one' $(mah\bar{a}n)$ in the hymn of Nakula b.

Now there is a couplet addressed to the Maruts, 'Advance' (preta: x. 103. 13) c, the (first stanza being) optionally addressed to Indra. (The hymn) which follows (begins) 'Brahma' b.

चतुर्थी बाईसात्या bm^1r (=S), चतुर्था बाईसात्या fk.— ग्रावलप्रसहामिति r, नाकुलेत्यसहामिति b, नाकुलेत्यसहामिति f, नाकुले प्रसहामि च m^1 .— r_4 is found in B and m^1 only.— द्वृचे तु महतः hr^3 , द्वृचेति महतः m^1 , द्वृचेति माहतः d, द्वृचे च महतः r, द्वृचेसु माहतः fkr^2 , द्वाचसु माहतः b.—प्रित ब्रह्मेति hdm^1 , प्रेति प्रश्चेति r, प्रीतित्येद्री व b, प्रीतित्येद्री व fk.— त्रह्म यत्पर्म् bf, त्रह्म व पर्म् k, पर्मं तु यत् hm^1r .

- ^a That ${\bf 14}^{ab}$ is original is indicated by the recurrence of the words $caturth\bar{\imath}$ $b\bar{a}rhas$ b This is the khila of ten stanzas by Nakula which patyā in the Sarvānukramanī. immediately precedes RV. x. 104. It is thus described in the Anukramani of the Kashmir collection: brahma; daśa; vāmadevyo nakulas; saurī, gharmastutir, bārhaspatyā, sāvitrī (astir): gharmaparā etās; sauryas cāndramasasyaš ca šesā, jagatyah. The first stanza: brahma jajñānam prathamam purastāt is quoted in AB. i. 19 and elsewhere (see Aufrecht's ed., p. 421). The third stanza, beginning mahān mahī, which mentions the name of Brhaspati, is also quoted in AB. i. 19 and ASS. iv. 6. 3; it occurs in TS. ii. 3. 146. There can be little doubt that the pratīka $mah\bar{u}u$ is the original of the corruptions in ^o By this couplet must be meant the last stanza of RV. x. 103, and the the MSS. first of the khila of two stanzas, beginning asau yā senā marutah which immediately RV. x. 103. 13 is described in the Sarvānukramanī as antyā[aindrī] mārutī vā. The stanza asau me occurs in the SV. and the AV., and in VS. xvii. 47 it immediately follows preta (RV. x. 103. 13).
- 15. In it, at the beginning of the hymn, where no deity is specified (anirukta) a, one stanza (1) adores the Sun, that which (begins) 'Unto' (abhi: 4) b, Savitr, while the (first) four are closely connected with the Caldron (gharma-parāḥ) c.

तवानिक्तस्त्रादावृगेका hm¹r, तवानिक्त्रवैद्यदेखृचेका b, तवानिक्ते वैद्यद्रखृचेका f.—घर्मपराञ्च° r, धर्मपराञ्च° fkr²r³, घर्म परा च m¹, घर्म पराञ्च° hdb.—ग्रभीति या hdrb, ग्रभीतय: fk.—The end of the varga is here marked by \$ in bfk, not in hdm¹.

a In AB. i. 19. I brahma in this mantra is explained as Bṛhaspati. This stanza = AV. iv. 1. 1. The second stanza (iyaṃ vai pitre) is described in the Anukramaṇī of the khila collection as gharmastutiḥ; it is = AV. iv. 1. 2. The third stanza (mahūn mahū = TS. ii. 3. 14⁶) has already been stated to be addressed to Bṛhaspati and is so described in the khila Anukramaṇī.

b This stanza (abhi tyaṃ devaṃ savitāraṃ) = AV. vii. 14. 1; VS. iv. 25; TS. i. 2.6¹; SV. i. 464, is in the aṣṭi metre and is referred to in S'B. xiii. v. 1¹¹ as an atichandas verse.

c This agrees with the statement of the Anukramaṇī (gharmaparā etāḥ); it is also borne out by AB. i. 19. 1-4 and AS'S. iv. 6. 3, where all

these four stanzas are quoted, in the same order in which they occur in the khila collection, as mantras to be repeated in the Pravargya ceremony (in which the gharma vessel is used).

4. Deities of RV. x. 104, 105. Bhūtāmśa Kāśyapa: RV. x. 106.

16. The six stanzas of the rest of the hymn (adore) Sun and Moon together a.

Now with the (hymn) which comes after this (beginning) 'It has been pressed' (asāvi: x. 104) Astaka b praised Indra.

मुक्तग्रेषस्य hm1r, शोषस्य bfk.—सूर्याचन्द्रमसी सह hm1r, सूर्याचन्द्रमसी सुति: bfk.

- With regard to this khila, on the form and contents of which we can now speak with certainty, cp. Meyer, Rgvidhana, p. xxii, and Oldenberg, Prolegomena, p. 364 f. b On Astaka cp. Sadgurusisya on RV. x. 104.
- 17. The descendant of Kutsa, by name Durmitra a, (saw) the hymn 'When, Glorious One?' ($kad\bar{a}\ vaso: x.\ 105$). Sumitra may also be his name, (while) the other word (Durmitra) would express an attribute (guna) b.

कौत्सः hm^1r , चौत्सः fk, कोत्सं b. — कदा वसोः hm^1r , कदा वसोत् bfk. — सुमि- चश्चैव नाम स्थाद् $hdm^1r^1r^4r^6$, सुमिच इति नामास्य bfkr. — इतर्त्यद्म् bfk, ॰रं पद्म् hdm^1r (ep. ii. 73).

- As to Durmitra cp. Ṣadgurusisya on RV. x. 105, and Oertel, The Jaiminīya version of the Dīrghajihvī Legend, in the Transactions of the Oriental Congress of Paris, Section Aryenne, p. 229.

 b Cp. Sarvānukramanī: kautso durmitro nāmnā sumitro guņataķ sumitro vā nāmnā durmitro guņataķ.
- 18. Now Bhūtāmśa Kāśyapa , being desirous of offspring, in days of old performed rites; for this most excellent of sages had not obtained any children.

प्रजाः काञ्चित् hdm1r, प्रजां वै स bf, प्रवै स k.

- * It is somewhat strange that Yāska in Nirukta xii. 40, on RV. x. 106, should have the identical words, bhūtāṃśaḥ kāśyapa āśvinam, which are used in the Sarvānukramaṇī to describe that hymn. This looks as if some sort of Anukramaṇī had already existed in Yāska's time.
- 19. His wife said to Bhūtāmśa: 'I will bear as many sons as you wish: (only) praise the gods in pairs.'

इक्सि hdm¹fk, इक्सि b, इक्सि r.—दन्द्रभ खुहि hdm¹b, दन्द्रभखु हि r, दन्द्र खुहि fk.

20. Now all pairs came to him from desire of praise. Observing them he did so (praise them in x. 106): the Asvins own the hymn $(s\bar{u}ktabh\bar{a}gin)$.

तमभ्ययुद्ध hdr, °यंद्ध bf.—सर्वाणि दन्दानि hdm¹r, दन्दानि सर्वाणि bfk.—तान्य-विच्याथ तस्रके hm¹r, जातान्यवेच्य संचके fkr², जातान्यवेच संचके b.— The end of the varga is here marked by 8 in hbfk, not in m¹d.

5. RV. x. 107. Story of Saramā and the Panis: RV. x. 108.

21. This same hymn (x. 106) is stated to be addressed to the Asvins because of (their) occurrence $(bh\bar{a}v\bar{a}t)$ at the end. For in this hymn the characteristic (name) of the deity does not appear till the last verse (pada).

भावाद् hm^1rfk , भाव्यद् b.— न ह्य॰ hm^1rb , न त्व॰ fk.— प्रागन्त्याद् f, प्रागन्त्ये k, प्रागत्या b, प्रायेणात्र hm^1r .— दृश्यते पदात् b, दृश्यते पदात् fk, हि दृश्यते hm^1r .

- ^a Cp. Nirukta xii. 40 (with Roth's Erläuterungen), where Yāska states that in this hymn the name of the deity is mentioned only once (ekalinga).
- 22. Now with the hymn here following, 'There has appeared' (āvir abhūt: x. 107), Dakṣiṇā Prājāpatyā praised herself.

पूर्व तुष्टाव hm1r, अभितृष्टाव bfk.—प्राजापत्याथ hm1r, प्राजापत्याच bfkr2.

23. Some, however, say that the givers of sacrificial fees are here praised; and that, because they are the givers of sacrificial fees, liberal donors $(bhoj\bar{a}h)$ are praised with four (stanzas) a.

दिवणानां च hm1r, दिवणानां हि bfk.

- ^a That is, in RV. x. 107. 8-11 where the rewards of the *bhoja* are described. The option as to the deity expressed by the Sarvānukramaņi with the words dakṣiṇām taddātṛ̃n vāstaut is doubtless owing to the opinion of eke here stated.
- 24. There were demons called Panis who dwelt on the farther bank of the Rasā. These carried off the cows of Indra and hid them away carefully 4.

रसापारनिवासिनः hm^1r , सिन्धुपारनिवासिनः $bfkr^2$. — न्यगूहंस fkr, न्यगृहंस b, निगृद्धंस hdm^1 , निगृहस्स $r^1r^4r^6$.

- a Cp. Sarvānukramanī: panibhir asurair nigūļhā gāh.
- 25. Bṛhaspati saw (it was) thus; and having seen it he reported it to Indra. Then the Chastiser of Pāka (Indra) dispatched Saramā a thither on a message.

तथापश्चद् fkm¹r, ताथ पश्च b, तथा पश्चाद् hd.—दूलें ध्य hdm¹r³fkr², दूतीं तु r, दूता b.—The end of the varga is here marked by u in bf, not in hdm¹.

a Cp. Sarvānukramaņī: anvestum saramām devasunīm indreņa prahitām.

6. Story of Saramā and the Panis (continued).

26. In the (hymn) 'What?' (kim: x. 108) the Pani demons interrogated her with the uneven stanzasa, (saying) 'Whence (do you come)? To whom do you belong, fair one? Or what is your business here?'

किमित्यवायुजाभिस्तां $\mathbf{m}^1\mathbf{fr}$, किमित्यवाभिस्तां hd, किमन्यवायुताभिस्ता b.— पणयो ऽसुराः $\mathbf{hm}^1\mathbf{r}$, पण्यः सह \mathbf{bfk} .

- a Cp. Sarvānukramaņī: ayugbhih paņayo mitrīyantah procuh.
- 27. Then Saramā addressed them: 'I wander about as the messenger of Indra, seeking you and (your) stall and the kine of Indra who is asking for them.'

श्रथात्रवीत्तान् hdm¹, °त्तां r, तानत्रवीत्तु b, सानत्रवीतु fk.—दूखिन्द्री विचराम्यहम् hm¹r, दूतीन्द्रस्य चराम्यहम् bf (cp. RV. x. 108. 2: दृन्द्रस्य दूतिर् . चरामि).—त्रजं चा° hdm¹fk, त्रजाश्चा° r.—न्विधन्ती hm¹r, न्विक्नी bfk.—गाश्चैवेन्द्रस्य पुक्तः f, गावैवें-द्रस्य पद्यति k, गाश्च तेंद्रस्य पुक्तः b, चैन्द्रीर्गाश्चैव पुक्ताः hdm¹, ऐन्द्रीर्गाश्चैव पुक्ति r.

28. On learning that she was the messenger of Indra, the wicked demons said: 'Do not depart', Saramā; be our sister here b.

दूतीं ताम hdm1r, तां दूतीम bfk.

With the words mā gās tvam, cp. iv. 73: mā apagās tvam.

b Cp. Oldenberg's remarks, ZDMG., 1898, p. 414 f., on Oertel, JAOS., vol. xix, part ii, pp. 97-103, who deals

with this legend from the BD. in connexion with the Jaiminīya Brāhmaņa.—The wording of 28^{cd} and 29^a is based on RV. x. 108. 9: svasāram tvā kṛṇavai, mā punar gā, apa te gavām subhage bhajāma.

B 29. Let us divide our share of the cows; be not unfriendly $(ahit\bar{a})$ henceforth again.'

And with the last stanza of this hymn (x. 108.11), as well as with the even ones throughout a,

गवां m^1 , नवां b, गनवां fk. — माहिता ह m^1 , मोहिता ह fk, मोहिताहे b. — 29^{ab} is found in $bfkm^1$, not hdr. — मूक्तस्यास्थान्यया चर्चा b, मूक्तस्यात्यया चर्चा fk, सूक्तस्य चान्यया चर्चा hm^1r , सूक्तस्यान्तपञ्चर्या $r^1r^4r^6$. — युग्माभिस्त्वेव hm^1r , ॰ भिश्चेव bf, ॰ भिश्चेव k.

- ^a Cp. Sarvānukramaņī: sā tān yugmāntyābhir.. pratyācaste.
- 30. she said, 'I do not desire either sisterhood (with you) or (your) wealth; but I should like to drink the milk of those cows which you are hiding there a.'

पिनेयं hm¹rbf, पिनामि r¹r⁴r⁶.— तु पयस् hm¹r, पयसस् fk, पयस् b.—The end of the varga is here marked by ई in b, by 9ई in fk, not at all in hdm¹.

^a Oldenberg (loc. cit.) would read $y\bar{a}s$ te, 'which (cows) you here,' but all the MSS. have $y\bar{a}s$ $t\bar{a}$; and even though the cows are hidden, the $t\bar{a}h$ might have a vaguely demonstrative sense = 'which you have hidden over there.'

7. Story of Sarama and the Panis (concluded).

31. The demons saying 'yes' to her, then brought her the milk. She having, from natural taste and greed, drunk the demons' milk—

पयस्ततः hm1rb, पर्स्ततः fk.

32. excellent, charming, delightful, stimulating strength—then again crossed the Rasā which extended a hundred leagues,

परं bm¹, पयः hdr³, वरं r, पर्॰ bfk.—संवननं hdm¹b, ॰मं वचनं fk.—ततः hm¹r, च यत् bfk.—32^{ab} is repeated in b.—•विस्ताराम् hm¹r, विस्तीर्णाम् bfk.

33. on the farther a bank of which was their impregnable stronghold. And Indra asked Saramā, 'You have seen the cows, I hope?'

मुदुर्जयम् hdb, च दुर्जयम् r.—•न्द्रश्च hm1r, •न्द्रोऽघ bfk.

- * That is, regarded from where Indra was.
- 34. But she, under the influence of the demons' (milk'), replied 'no' to Indra. He, enraged, struck her with his foot. She then, vomiting the milk,

त्रासुरस्य hdm¹r, त्रासुरस्य bfk.—तु Am¹, हि B.—कुद्धः b, कुद्ध hdm¹r, कुद्धं fk.

35. went, trembling with fear, back again to the Panis. The Lord of bay Steeds a (Indra) on his car, by the track which followed her steps b,

सा भयोदिया hm^1r , च भयादिया fk, भावयादिया b.—पदानुसारिपङ्खा hdm^1 , पयसन्तस्य तदान्या fkb, पयसन्तस्य पङ्खा r.— हरिवाहनः hm^1r , सुखमञ्जसा fk, मुखमञ्जसा b.—The end of the varga is here marked by o in b, not in hdm^1fk .

^a Or, according to B, 'easily and quickly.'

b Or, according to B, 'by her vomiting of the milk,' which made a track.

3. Deities of RV. x. 109-120.

36. went and smote the Panis and brought back the cows.

Now Brahmajāyā Juhū sang n (the hymn) 'They spoke' (te 'vadan: x. 109) addressed to the All-gods.

जधान च पणीन् hm¹rb, जधान पाणींस्तांस् fk.—गास ताः hdr, तास गाः bfk.—॰देवं तु hm¹r, ॰देवं स्थात् br², ॰देवं स्था fk.—जामदग्यस्तथाप्रियः hdr, ब्रह्मजाया जुह-र्जगी m¹bfkr² (जुङ्गर्ज॰ r²).

^a This is the reading of B; cp. \bar{A} rṣānukramanī: te 'vadann iti sūktasya brahmajāyū juhūr munih. A's reading of the last pāda (37^{ab} being here omitted) means: '(then come) also the \bar{A} prī stanzas of Jamadagni' (x. 110). This reading has the appearance of an abridgement of 37^{ab}.

B 37,38. After it follows the Aprī hymn of Jamadagni, 'Kindled to-day' (samiddho'dya: x. 110).

The Vairūpa seers simultaneously with the three hymns (x. 111-113) 'Ye Wise Ones' (manīṣiṇah: x. 111. 1) sang to Indra as he set out against the Paṇis. The following hymn 'Two caldrons' (gharmā: x. 114) is addressed to the All-gods. Some, however, think a that here are praised

- 37. जामदियं b, यामदिय fkr², जामदियः m¹.—°को बाप्री° m¹, °को बान्री° b, °को ज्यो प्री° f, °काज्योप्रिय° kr².—37^{ab} is found in bfkr²m¹, not in hdr.— युगपदे व्रजनं तं hm¹r, व्रजंत युगपत्सेंचें fkr², व्रजंत युगमपत्सेंचें b.— वैक्ष्पा ऋषयस्त्रिभः hdm¹, विक्षा ऋषयस्त्रिभः r, वैक्षा संविभः परैः fkr².
 - 38. मनीषिण: bfkr2, जिगीषिणं hdm1r.—स्तुतान hdr, स्तुतं b, स्तुवं fk.
 - a This word is taken from the next line.
- 39. the Gods and Indra, the Metres, and the Middle Agni. The seer Upastuta uttered (the hymn) 'Wondrous' (citraḥ: x. 115) which is addressed to Agni.

जगाद्धिर् hm1r, ददर्श्षिर् bfk.

40. 'Drink' (piba: x. 116) praises Indra; 'Not' (na: x. 117), Food. The next (x. 118) is demon-slaying (and) addressed to Agni. 'So, indeed' (iti vai: x. 119) is addressed to Labaa. 'That' (tat: x. 120) is addressed to Indra: the Āptyas are incidentally mentioned in the sixth (stanza).

a 40° is quoted by Ṣaḍguruśiṣya on RV. x. 119; cp. Ārṣānukramaṇī x. 53° d also quoted by Ṣaḍguruśiṣya, whose reading differs from that of the published text.

9. Deities of RV. x. 121-129. Three khilas.

41. Then (comes a hymn) addressed to Prajāpati (x. 121), one to Agni (x. 122), one to Vena (x. 123) in succession. 'To this our' (imam nah: x. 124) is (in) praise of Varuṇa, Indra, Agni, Soma a.

संस्तवः hm1r3bfkr2, संस्तृतिः r.—वर्णेन्द्रापिसोमानाम् hm1rbfk, सोमापिवर्णानां तु r1r4r6.—इमं न hm1r, त्वमं तु fk, त्विम तु b.

- * Cp. Sarvānukramaņī: agni-varuņa-somānām ... aindry uttamā.
- 42. Now the four stanzas here at the beginning of the hymn (x. 124. 1-4), Agni sang in praise of himself a; but Soma is

[304

(9abc).

praised with the sixth (6) and with the ninth in three verses

चतसस्वन hm1r, चतस्र इति bfk.—सोमस् hm1r, सोमस्य fk, सौम्यस्य b.—षष्या च hm1r, षष्ट्यां तु bfk.—नवस्या hm1r3, नवस्यां bfkr2, नवस्याण् r.

- According to this, Agni is seer and deity of RV. x. 124. 1-4, while, according to the Sarvānukramanī, Varuņa and Soma are seers of I as well as Agni.
- 43. But the remaining three (x. 124. 5, 7, 8) are addressed to Varuna^a, while the last verse (9^d) is addressed to Indra alone ^b. 'I' (aham: x. 125) is a hymn to Vāc. To Aryaman, Mitra, and Varuna belongs

तिस्र m1 br, तिस्त fk, तच hdr3.—ऐन्ट्रमेवोत्तमं पदम् hdm1, इन्द्रमेवोत्तमं पदम् r, इन्ह्रमेवोत्तमो जगौ bfkr3(r2?).

- * The Sarvānukramanī makes no specific statements about RV. x. 124. 5-8, simply b According to the Sarvānukramaņī the whole of o remarking: śistā yathānipātam. is addressed to Indra: aindry uttamā.
- 44. 'Not him' (na tam: x. 126) a. The following hymn is to Rātrī (x. 127). That which (begins) 'To me' (mama: x. 128) is addressed to the All-gods. The hymn addressed to Lightning 'Obeisance to thee' (namas te) is a benediction. But that which follows.

राज्याः hm1r, राचं bfk. — वेदातं hdr, वेदातं b, वेदाते fk. — त्राशीवादः bfk, त्वा-श्रीवीदः hm1r.—यत् hm1bfkr2, तत् r.

a According to the Sarvānukramaņī this hymn is addressed to the All-gods, but as the three names Aryaman, Mitra, Varuna occur in all the stanzas of the hymn but the b The two khilas which come at the last, the statement of the BD. is more exact. beginning of the fourth adhyāya in the Kashmir collection, and precode RV. x. 128, are here passed over. The first consists of one stanza only, beginning a yasmin devavitage. The second consists of four stanzas, beginning a ratri parthivam, and corresponds to the first four stanzas in Aufrecht's xix. After RV. x. 128 comes a third, which consists of a single stanza, beginning arvāncam indram amuto havāmahe, and corresponds to the first stanza of Aufrecht's xx. Then comes the Lightning hymn of four stanzas, beginning namas te astu vidyute, referred to above. Next follows a long khila of forty stanzas, beginning yām kalpayanti no 'rayah and described in the accompanying Anukramani with the words: yām: catvārimsat, pratyan-krityā-nāsanam, āsīh; panktyantam. It is mentioned by its pratīka yām kalpayanti in Rgvidhāna iv. 6. 3 and described there, iv. 8.4, as krtyā-sūktam; quoted also in Kausika Sūtra xxxix. 7 (cp. Bloomfield, Atharva-veda, SBE., xlii, p. 602, on AV. x. 1). Cp. Meyer, Rgvidhāna, pp. xxii, xxv; Oldenberg, Prolegomena, p. 506 f.

45. '(The spell) which our foes prepare' (yām kalpayanti no 'rayaḥ), is destructive of sorcery a. 'Bestowing length of life' (āyuṣyam) b is (in) praise of gold for oneself c. 'Neither non-being' (nāsat: x. 129) is to Paramesthin.

नोऽर्यः hdm^1r , न र्ति b, नितं f, नितं k.— क्रत्या॰ m^1r , क्रत्यां hd, क्रत्या bfk.— नाम्यमात्मातः hdm^1r , दैवतमुच्यते bfk.— नाम्यत् hdr, नाम्यत् f, नाम्य f, निति यत् $r^1r^4r^6$, नाम्यत् f.—The end of the varga is here marked by f0 in f1, not in f1.

a The same description, kṛtyānāśanam, in the Anukramaṇī of the khila collection. In AV. Pariśiṣṭa 34. 2, this and other hymns of the same character form the kṛtyāgaṇa, and are described as counteracting sorcery, kṛtyāpratiharaṇāni.

b This khila immediately follows yāṃ kalpayanti in the Kashmir collection. It is described in the accompanying Anukramaṇī as āyuṣyaṃ: daśa; dākṣāyaṇāḥ...hiraṇyātmastutiḥ. Its ten stanzas (there is a lacuna in the first) agree with Aufrecht's xx. 2-11; cp. Oldenberg, Prolegomena, p. 506, note ¹. This khila is also mentioned in the Rgvidhāna iv. 9. 1: āyuṣyam āyurvarcasyaṃ sūktaṃ dākṣāyaṇam; cp. Meyer, p. xxiii.

c The expression used in the khila Anukramaṇī, hiraṇyātmastutiḥ, seems to mean 'self-praise in connexion with gold.'

10. Deities of RV. x. 130-137.

46. They call this (hymn) evolutional (bhāvavṛtta); also the nexta, 'The sacrifice which' (yo yajñaḥ: x. 130). 'Away' (apa: x. 131) is addressed to Indra; here, however, the fourth and the fifth (stanzas: 4, 5) are traditionally held to be addressed to the Asvins.

स्रुते hdm¹r, च या bfkr².

h Cp. Rgvidhana iv. 9. 2: bhavavette pare sakte.

47. 'The sacrificer' $(\bar{\imath}j\bar{a}n\alpha m: x. 132)$ is addressed to Mitra-Varuṇa; in the first stanza Heaven and Earth are praised in the (first) hemistich (1^{ab}) , and the Aśvins in the next (1^{cd}) .

भूमिस hm¹r, पूषा च bfkr². — श्रश्विनी चोत्तरे ततः Am¹, श्रश्विना उत्तरेख तु

48. 'Forth, well' (pro şu: x. 133. 1) are two (hymns) addressed to Indra (133, 134); but the stanza 'Never, O Gods, do we transgress' (nakir devā minīmasi: x. 134. 7) is addressed to the All-gods 4. In the (hymn) 'Under which tree' (yasmin vṛkṣe: x. 135) the celestial Yama is praised.

प्रो जिन्हें hbf, प्रो जिन्हें m¹r.— °देवृक् तु hm¹r, °देवृक्सात् b, °देवृस्सात् fk.— वृस्थान: m¹, बुस्थान hdbf, °स्थाने kr.

- a The Sarvānukramaņī has no statement about this stanza.
- 49. The hymn 'The Hairy One (bears) Agni' (keśy agnim: x. 136) is addressed to the Hairy Ones a; in that which follows, 'And, O Gods' (uta devāḥ: x. 137) b, the first stanza (1) should be (regarded as) to the Gods; the following triplet (2-4) has Vāta as its god.
- केश्विपं r, केश्विपं hd, केश्वापं b, केश्वापं f.—केश्विणं bfk, केश्विणः hdm¹r (केश्विणं S).—उत bf, उद k, ह्युत hdr, द्युत m¹.—देवानामच चाद्या स्थाद् A, च्रुगाद्या तच देवानां B.—वातदेवस्तृचः परः B, वायव्यसृच उत्तरः A. As the text of the RV. names Vāta in these stanzas, not Vāyu, and the author of the BD. is likely to have followed that text, I have preferred the reading of B.
- The reading keśinah would mean, 'is addressed to the Hairy One'; but as the Sarvānukramanī has kaiśinam and Sāyaṇa (on x. 137. 1) has the explanation agnisūrya-vāyudevatākam, I have preferred to read kaiśinam as referring to the 'Three Hairy Ones' (cp. above, i. 95).

 b. The Sarvānukramanī gives no details about this hymn, describing it simply as vaiśvadevam.
- 50. The stanza 'May they protect' (trāyantām: x. 137. 5) is addressed to the All-gods; but the remainder (of the hymn) that follows (6, 7) has the waters as its divinity. This (hymn) may be considered as containing universal remedies or as destructive of infirmity.

°देखृक् तु hdr, °देख्तु m^1 , °देखृक् स्याच् b, °देखस्या (स्रेग्न्) f.— °दैवतः hm^1 b, °देवतः r, °देवत fk.— परः hm^1 r, स्मृतः br^2 , स्द्रतः fk.— स्यादेतद् hr^3m^1 , स्यादे तद् r, सूक्तं स्याद् bf.— विश्वभैषज्यं hdbr, विभैषज्यं fk, विश्वभैषज्यं m^1 .— रपसो वा विनाश्चम् hm^1 r, रपसञ्चापनोद्नम् $bfkr^2$.— The end of the varga is here marked by 90 in b, by 9 in fk, not at all in dm^1 .

11. The khila 'Bhumih.' Deities of RV. x. 138-142.

51. The following hymn, 'The Earth' (bhūmiḥ) a, is addressed to Lākṣā b. The next hymn, 'Of thee' (tava: x. 138), is addressed to Indra. In the (hymn) 'Sun-rayed' (sūryaraśmiḥ: x. 139) the first triplet (1-3) is addressed to Savitr.

बाचं bfk, बाचा hdm1r.—विसन् hm1r, वस्र b, वस्रा fk.

- a This khila, consisting of seven stanzas and beginning bhūmir mātā, nabhaḥ pitā, aryamā te pitāmahaḥ, follows yāṃ kalpayanti in the Kashmir collection. The pratīka of RV. x. 138 immediately following its last stanza indicates that its position is between RV. x. 137 and 138.

 b Lākṣā has been mentioned twice before, i. 129 and ii. 84. The reading lākṣam, not lākṣā, must be the correct one, as the BD. never mentions the deity in the nominative case.
- 52. Now his own self is indirectly (parokṣa) a praised by Gandharva in the next triplet (x. 139. 4-6): he is spoken of incidentally either as Indra or Sūrya b.

परोचसु hm1r, परोचं तु bfkr2.—वैष hm1r, वैव b, चैव fkr2.

- ^a That is, in the third person.

 ^b Indra is mentioned in 4 and 6, and Sūrya in 4. The Sarvānukramaņī has no reference to these two deities.
- B 53. In this hymn (x. 139) these three deities only are celebrated a. Now 'O Agni, thine' (agne tava: x. 140) is addressed to Agni; that which follows, 'O Agni, to (us)' (agne acha: x. 141)b,

प्रकीर्तिताः bfkr. तु कीर्तिताः m¹.— तवे खपे bfkr, तवत्यपे m¹.— यत्परम् m¹f, तत्परम् b, यत्पराम् kr.—This śloka is found in B and m¹ only.

- That is, Savity, Indra, Sūrya. This line, which seems redundant even here, occurs twice again in B (after 59 and 79^{ab}); but this is the only position in which it might be genuine.

 This line, as giving the pratīkas of x. 140, 141, which seem almost necessary, may be original; in that case the beginning of the next line, agreyam vaisvadevam ca, must have a different sense from that required in A. See note a on 54.
- 54. is addressed to Agni and to the All-gods a. Now in the (hymn) 'This' (ayam: x. 142), the four Śārngas, as seers of couplets ($dvrc\bar{a}h$), adored Agni severally b.

च स्थम m¹r, चायम hd, वायम b, (वैश्वदे) वायं fk. — तु हुचा: m¹r, तु ह्यूचा: r³, उद्युचा: hd, तु यह्यचा: b, तु यह्यचा: f (हुचा: S). — श्रिम r, पिम MSS. — The end of the varga is here marked by 99 in bfk, not in hd m¹.

a If 53^{cd} is not genuine, these words would mean: 'There is then a (hymn) addressed to Agni (140) and one to the All-gods (141)': cp. BD. vii. 143, note a. This would be in agreement with the Sarvānukramaņī which describes 141 simply as vaiśvadevam. On the other hand, as a matter of fact, Agni alone is mentioned in the first and the last

stanzas of this hymn, and many gods in 2-5. b That is, each with a couplet. Cp. Sarvānukramaņī: ayam: aṣṭau; dvṛcāḥ śārngāḥ ...āgneyam; and see Ṣaḍguruśiṣya's explanation of dvṛca as 'seer of two stanzas.'

12. Deities of RV. x. 143-154. Khila: Medhasukta.

55. The (hymn) 'Him indeed' (tyaṃ cit: x. 143) is addressed to the Aśvins. 'This' (ayam: x. 144), following after that, is addressed to Indra. 'This (plant) I dig' (imāṃ khanāmi: x. 145), the hymn which Indrāṇī herself sang,

ततः पर्म् hm1r, श्रतः पर्म् bfk.—यत्स्वयम् bm1r, यस्त्वयम् hdfk.

- 56. they declare to be an esoteric (aupaniṣada) evolutional (bhāvavṛtta) hymn of six stanzas.
- B Now in (this) hymn she (the seer) praises the potent herb $p\bar{a}th\bar{a}$ b with its extended leaves c.

सूत्रं hm^1r , षट्टं fk, षड्रं b.—प्रचचते hm^1r , वदन्ति तु bfk.—उत्तानपर्ण पाठा तु m^1 , उत्तानपर्णा पागम b, उत्तरानपर्भी पाठां तु fkr^2 .—महीषधिम् bkr^2 , महोषधिं f, महोषधिम् m^1 .— 56^{cd} is found in B and m^1 only.

- A Cp. above, ii. 120, 121; v.87 &c. The term seems to be applied to this hymn as it contains spells connected with wives. Otherwise the expression is used of hymns which are more directly evolutional, that is, connected with birth or cosmogony. The Sarvānukramaṇī has no reference to this, but speaks of the hymn as upaniṣat (Ṣaḍguruśiṣya: upaniṣat-samjāam).

 b As the name of a plant the word pāṭhā seems hitherto to have been noted by the lexicographers only. But the Rgvidhāna, in referring to this hymn, has three times (iv. 11. 3; 12. 1, 4) the form pāṭā, which also occurs in AV. ii. 27. 4; and this was perhaps the original form here.

 c The word uttānaparṇā, as an attribute of the herb, occurs in RV. x. 145. 2.
- B 57. Now the last stanza (x. 145.6) is intended to win the love of a husband, while the rest are meant to repel a rival wife a.
- 'O Araṇyānī' (araṇyāni: x. 146) is (in) praise of Araṇyānī. The next two (beginning) 'Faith' (śrat: x. 147, 148) are addressed to Indra.

पतिसंवननी b, पितसंवनंनी fk, पितसंवननी r^2 , पितं संवननी m^1 .—खन्धान्धाः b, खंन्धान्धाः fk. खं पान्धाः r^2 , खं यान्धा m^1 .—सपत्यपनोदिका m^1b , सपत्यपनोदिकाम् fr^2 , सपत्यपनोदिकाम् k.—श्रदुत्तरे h, श्रदुत्तरे d, तदुत्तरे m^1r , सुदुत्तरे bfk.

The Sarvānukramanī has sapatnībādhanam, with which expression cp. Rgvidhāna iv. 12. 3: sapatnīm bādhate tena.

58. 'Savitṛ with bonds' (savitā yantraiḥ: x. 147) is addressed to Savitṛ. 'Enkindled even thou art fanned' (samiddhaś cit sam idhyase: x. 150) is addressed to Agni. 'With faith' (śraddhayā: x. 151) is addressed to Śraddhā. After that follows the hymn of Wisdom (medhā-sūkta) a.

मेधासूक्तमतः परम् bfkr, मेधां मेधोत्तरं तु यत् hdm1.

- ^a This is the khila which in the Kashmir collection comes next after bhūmiḥ. It is there identical in form with Aufrecht's xxii, except that the last two stanzas are in inverted order. It is mentioned in the Rgwidhāna, iv. 14. 1, by the name of medhāsūktam. Cp. Meyer, p. xxii, and Oldenberg, Prolegomena, p. 507.
- 59. The (hymn) 'May the Father come' (ā sūr etu) a is addressed to Agni. Then follow two (152, 153) addressed to Indra (beginning) 'A ruler' (śāsaḥ: x. 152. 1). The (hymn) 'Soma for some' (soma ekebhyaḥ: x. 154) they declare to be evolutional.

अपियमासुरित्यस्माच् hdm¹r, आपेयं त्वासुरेत्वेते k, अपे त्वासुरेत्वेत॰ bf.— इत्तस MSS. and r.— प्रचिते hm¹r, वदन्ति तु bfkr².— $59^d=56^b$.—The end of the varga is here marked by 92 in bfk, not in hdm¹.

This is the khila which in the Kashmir collection immediately follows the Medhāsūkta. Its position immediately before RV. x. 152 is indicated by the pratīka of that hymn being added after the last stanza. Consisting of seven stanzas composed in the last seven atichandas metres, it is thus described in the accompanying Anukramanī: ā sūs: sapta; ātharvaṇas subheṣajaḥ; āgneyaṃ; prakṛtiḥ, kṛtir, ākṛtir, vikṛtis, saṃkṛtir, abhikṛtir, utkṛtayaḥ [utkṛtiḥ]. The RV. Prātisākhya remarks (xvi. 25) that these seven metres are founḍ, not in the RV., but only in Subheṣaja (explained by Uvaṭa as the name of a seer). On this Weber, Indische Studien, vol. viii, p. 132, observes: 'Welcher Text damit gemeint sein mag, ist einstweilen nicht klar, da die dafür angeführten Belegstellen als solche nicht nachweisbar sind.' There is no longer any doubt as to what text is meant. The Gopatha Brāhmaṇa, v. 23, refers to these seven metres as saubheṣaja, 'derived from Subheṣaja,' that is the seer who composed these seven khila stanzas. Both the khila text (ā sūr etu parā-vdtaḥ) and the Anukramaṇī (ā sūs) have ū, which appears as u in all the MSS., probably in part owing to the metre, and in part to misunderstanding of the form. Sūḥ is used of Agni in RV. i. 146. 5.

Deities of RV. x. 155-159.

60. 'O Arāyī' (arāyi: x. 155) is destructive of bad lucka: in the couplet there 'Driven away' (catto: x. 155.2,3) Brahmaṇaspati is praised either as the chief deity or incidentally;

तन hm¹r, चन fk, वन b.— इति द्वे hdr, इति तु द्वे m¹, इति खूचे bfk.—Before 60, bfkm¹r insert the following sloka:

शौनको वैश्वदेवं तु मन्यते शाकटायनः। सुक्तेऽसिन्देवतासिस्र एता एव प्रकीर्तिताः॥

The second line has already occurred as viii. 53^{ab} , where it is appropriate, while here there is nothing to which 'these three deities' can refer. It occurs over again after 79^{ab} in several, if not all, the B MSS. With the first line cp. viii. 11^{cd} .

- ^a The Sarvānukramaņī has the same expression, alakṣmīghnam; cp. Rgvidhāna iv. 15. 2: alakṣmīnāśanārtham.
- 61. and Indra (is praised) in the (stanza) 'When' (yat: x. 155. 4), the All-gods in the stanza 'Around' (pari: 5). And the (hymn) 'Agni' (agnim: x. 156) is addressed to Agni. 'Now these indeed' (imā nu kam: x. 157) is addressed to the All-gods.

इन्द्रश्चैव hdm1r, इन्द्रं चैव bfk.—चापिम् hdr, खिपम् bfkr2.

62. Indra a is, however, here predominantly praised along with the All-gods, and the Ādityas and the Maruts. For (the hymn) evidently has this character b.

प्राधान्यतस्त्वच hdm¹r, प्राधान्यतो वाच b, प्रधानतो वाच fkr².—सह स्तुतः hm¹r, च संस्तुतः bfk.—मक्तिच hdlek, महत्तिच r.

- ^a The Sarvānukramaņī simply describes x. 157 as vaišvadevam without any reference to Indra.

 ^b This pāda occurs in four previous passages: iii. 76; iv. 18; v. 87; vi. 94.
- 63. Now 'May us the Sun' (sūryo naḥ: x. 158) is addressed to Sūrya; but as to the (hymn) 'Aloft that' (ud asau: x. 159), Paulomī in it lauds her own virtues and (those) of her co-wives.

सौर्य तु hr, सूर्य तु m¹, सौर्य खाइ b, सौर्य खा fk.— यत्त्वेतड् m¹r, यत्वेतड् hfb, य त्वतड् k.— खान्गुणांस m¹r, खां गु॰ hd, खगुणां bfk.— तच hfb, त्वच r.—च भ्रांसित hm¹bfk, प्रभंसित r.—The end of the varga is here marked by 93 in bfk, not in hd m¹.

14. Deities of RV. x. 160-164. The seer Kapota Nairrta.

64. 'Of the potent' (tīvrasya: x. 160) is addressed to Indra. 'I release' (muñcāmi: x. 161) is a remedy destructive of consumption (yakṣma). This hymn of Prājāpatya's a is spoken of as destroying 'royal consumption' (rāja-yakṣma) b.

भेषज्यं hm1r, भेषजं fk, omitted in b.— राजयद्महणं m1, ॰हनं hdbfkr.

- a The seer of this hymn is stated by the Ārṣānukramaṇī and the Sarvānukramaṇī to be Prājāpatya Yakṣmanāśana.

 b The hymn is described in the Sarvānukramaṇī as rājayakṣħaghnam.
- 65. Yāska considers that the hymn is addressed to Indra-Agni; some, that it is addressed to the divinities expressed by name a. Now as to the (hymn) 'With the prayer' (brahmaṇā: x. 162), it is said to be demon-slaying and addressed to Agni b.

खिङ्गोत्तदैवतम् hm^1rbs , °देवतम् fk. — राचोघ्वांपैयमिखुत्तं f, राजोघ्वायमिखुत्तं b, रचोघ्वापेयमिखुत्तं $hm^1r^3r^2k$ (cp. v.r. on viii. 40), गर्भसंखवसंयुत्तं r. — यन्वेतद् m^1f , यस्वेतद् hrk, यस्वेति b (cp. v.r. on viii. 63). — °ह्यागिति तु hm^1r , °ह्यागिति च bk, °ह्योति च f.

- a 65^{ab} is quoted by Sadgurusisya on RV. x. 161. b Cp. above, viii. 40.
- 66. This is also recognized (drstam) as a consecrating prayer for children issuing from the womb $(sravat\bar{a}m)$. 'Vena saw that' $(venas\ tat\ pasyat)^a$ is addressed to Vena. 'From the eyes' $(aks\bar{\imath}bhy\bar{a}m: x.\ 163)$ is destructive of consumption $(yaks\bar{\imath}ma)^b$.
- $66^{ab} = v. 87^{cd}$. चैतद् m^1 , चैनं b, चैनं fk. वैन्यं तु वेनस्तत् प्रस्रत् $h \, dr$, भाववृत्तं परं चैतद् Bm^1 (चैतद् m^1 , चैनं kr^2 , चैनं b).
- a This is the khila of three stanzas which comes before RV. x. 163. It is described thus in the Anukramanī: venas: tream; veno; bhāvavṛttam tu. The reading of B refors to this khila less definitely by the latter description.

 b Cp. yakṣmaghnam in the Sarvēnukramanī.
- 67. 'Depart' (apchi: x. 164) is destructive of evil dreams: Indra and Agnia are incidental.

There was a seer, Kapota Nairrta by name, who practised prolonged austerity.

सिरेव च bfk, सिरेव तु hm^1r .—दीर्घतपाः m^1r , ॰तपा b, दीप्ततपाः $r^1r^4r^6$, दीर्घ-तमाः hd, ॰तमा fk.

- a There is no mention of Indra and Agni here in the Sarvanukramani.
- 68. A pigeon, we are told, placed its foot on his fire-receptacle in the forest *a: the seer praised the pigeon, in words propitious to himself,

सकरोत् hdm¹r¹r⁴r⁴r6, चके bfr, चक k. Though the reading akarot gives the pāda one syllable too many, I have retained it as an irregularity which is probably original, since there are other cases in the BD.—°पिधाने bfkr, °पेधाने hd, °भिधाने m¹.—स तम् m¹r, श्रतम् bfkr², सुतम् hdr³.—कपोतं सुतवानृषिः bfkr, कपोतो नेर्झतस्त्र Ám¹.—The end of the varga is here marked by 98 in f, by 94 in b, not at all in hdm¹k.

a Cp. the words of RV. x. 165. 3: astryām padam krņute agnidhāne.

15. Deities of RV. x. 165-174.

69. with the hymn 'O gods' $(dev\bar{a}h: x. 165)$: it is stated to have the object of expiation a. '(Make) me a bull' $(r;abham m\bar{a}: x. 166)$ is destructive of rivals. 'By which this' $(yenedam)^b$ is addressed to Mind $(m\bar{a}nasa)$.

In bfk, which read देवा (देवा न f, देवान k, देवा ति b) सोमो बृहस्पति:, there is a lacuna between the first two words of 69 and the last two of 70.

- a Cp. Sarvānukramaņī: prāyascittam idam, adding vaisvadevam, of which nothing is said here.

 b This is a khila of thirteen stanzas which precedes RV. x. 167 and which begins yenedam bhūtam bhuvanam bhavisyat. Each of its stanzas (excepting 6 and possibly 9, where there is a lacuna) begins with a form of the relative pronoun, and each ends with the refrain tan me manah sivasamkalpam astu. The first six stanzas are identical with VS. xxxiv. 1-6, except that the first and the fourth appear in inverted order in the VS. It is described thus in the Anukramanī: yena: saptonā; mānavah (mānasah?) sivasamkalpo; mānasam. From the reputed author the khila is called sivasamkalpa and regarded as an Upanisad (see Indische Studien, ii. 51 ff.); it is quoted under this name in Manu xi. 251. The Rgvidhāna, iv. 20. 3, quotes this khila by its pratīka (yenedam); cp. Meyer, p. xxv f.; Oldenberg, Prolegomena, p. 507.
- 70. The two seers Gāthina (Viśvāmitra) and Bhārgava (Jamadagni) a saw (the hymn) addressed to Indra (beginning) 'To thee' (tubhya: x. 167). Varuṇa, Vidhātṛ, Anumati b, Dhātṛ, Soma, Bṛhaspati—

विधातानुमतिर् hdr, विधातामति m¹, lacuna in bfk, ep. critical note on 69.

- a Cp. Ārṣānukramaṇī x. 86: viśvāmitrajamadagnī (\equiv Sarvānukramaṇī) rṣir [rṣī] gāthinabhārgavau.

 b 70^c has one syllable too many; cp. 68^a .
- 71. these six deities are there praised in the third stanza $(x. 167. 3)^a$. With the following (hymn) 'Of Vāta' ($v\bar{a}tasya$: x. 168) Anila praised his father b.

तव hbfk, त्वव m¹r.—नृतीयायामृचि खुताः hm¹r, नृतीयामिचि खुता b, नृतीया-. मिति संजुतः fk.—परेणाखीद hm¹r, परेणीखीद bfk.—श्रनिज b, श्रानिज hdm¹rfk.

- * Saryānukramaņī: tṛtīyā lingoktadevatā; ep. Ṣadguruśiṣya. b Cp. Ārṣūnukramaņī x. 87: vātāyano munih sūktam vātasyety unilo jagau.
- 72. The seer Śabara a saw the hymn which (begins) 'Refreshing' (mayobhūḥ: x. 169). Now various kinds of milch kine are there praised b.

यत्मूत्राम् hm^1r , तत्मूत्राम् bfk.—इवर् ऋषिः r, इंबरो ऋषिः hdm^1 , इभर् $r^1r^4r^6$, स्वभरा ऋषिः fk, स्वभरा रिषिः b.—तत्र तु hm^1r , तत्र च bfk.— 72^0 =v. 92^0 .

- ^a The name of the seer is Sabara in the Ārṣānukramaṇī and the Sarvānukramaṇī.

 ^b The Sarvānukramaṇī simply describes this hymn as gavyam.
- 73. 'Far-shining' ($vibhr\bar{a}t$: x. 170) is addressed to Sūrya; 'Thou this' ($tvam\ tyam$: x. 171) is addressed to Indra; 'Come hither' ($\bar{a}\ y\bar{a}hi$: x. 172) is (in) praise of Dawn; and 'Hither thee' ($\bar{a}\ tv\bar{a}$: x. 173. 1) are two hymns (173, 174) for consecrating a king a who has been anointed b.

भा याही॰ b, श्रा याहि॰ fk, त्वा याही॰ m^1r , न्वा याहि॰ h, चा याहि॰ d.—॰स स्तुति: hd, ॰स: स्तुति: m^1r , ॰स स्तवः b, (॰ष) संस्तवः fk.—¹राज्ञेऽभिषिक्ताय hm^1r s, राज्ञो ऽभिषिक्तस्य $bfk\,r^2$.— चानुमन्त्रणे hm^1r , चाभिमन्त्रणे bfk, श्रीभमन्त्रणे s.— The end of the varga is here marked by $\mathbf{9}\mathbf{4}$ in hbfk, not in m^1d .

^a The Sarvānukramanī describes these two hymns as $r\bar{a}j\bar{n}a$ stutih; cp. Rgvidhāna iv. 22. 4. b 73^{cd} is quoted by Ṣaḍguruśiṣya on RV. x. 173.

Deities of RV. x. 175-181.

74. Ārbudia saw the next (hymn) 'Forth you' (pra vaḥ: x. 175) as (in) praise of the Pressing Stones. Now that which follows this (x. 176) is addressed to Agni: there the stanza 'Forth the sons' (pra sūnavaḥ: x. 176. 1) is addressed to the Rbhus.

याञ्णां hd, याञ्णा bfk, याञ्णं r.— ॰ बुंदि: hm¹fr, ॰ वृंदि: b, ॰ बुंद: k, ॰ बुंद: r². यत्वत: hm¹bfkr, यतत: r¹r⁴r⁶.— ॰ भेयक् प्र hm¹r, ॰ भेवा प्र fk, ॰ भेयाष्णु b.

^{*} Cp. Sarvānukramaņī: pra vaļ. . . ārbudir grāvņo 'staut.

75. Now the seer Patamga sang the hymn which follows, 'The Bird' (patamgam: x. 177); some regard this as addressed to Sūrya, while others (think that it is) destructive of sorcery (māyābheda a).

पतंगसु hdbr, पतंसु m1, --- fk.—तथापरे hm1r, अथापरे b, अथायरे fk.

- The Sarvānukramanī uses the same word to describe this hymn; cp. Rgvidhāna iv. 22. 5: māyābhedanam etat.
- B 76. In (this hymn) destructive of sorcery, Śaunaka says that in the second (stanza: x. 177. 2) is praised Vāc, the goddess who cherishes in her heart a the speech which is well known (viditām) b.

मायाभेदे $m^1 fkr$, मायाभेद° b.— खुतेत्याह m^1 , सूतेत्याह bfkr.— देवी विभर्ति m^1 , देवी विभक्ति f, °अमित f, °अमित f, पा f, पा f, पा f, पा f, वाचं विदितां सतीम् f, वाचं विदितां सती f, वाचा विदितां सती f.—This sloka is found in B and f0 only.

- ^b This perhaps alludes to the four kinds of speech spoken of in liV. i. 164. 45: tāni vidur brāhmaṇāḥ... turīyaṃ pāco manuṣyā vadanti.
- 77. The hymn 'Forthwith this' (tyam \bar{u} $\pm u$: x. 178), which has Tārkṣya for its deity, they regard as a charm for good luck (svastyayana). 'Up' (ut: x. 179) are two (hymns) addressed to Indra (179, 180), while that which follows, 'Both extension' (prathaś ca: x. 181), is addressed to the All-gods.

त्यमू षु तार्च्य दैवत्यं m¹fkr² (ताच° kr²), त्यमू षु तार्च्य देवत्यं b, त्यमूष्विति तु सीपर्णे hdr. The reading of the B MSS. is favoured by the Sarvānukramaņī, which describes the hymn as तार्च्यम.—उदैन्द्रे hd, उदेंद्रे m¹, उद्देंद्रे f, उदितेंद्रे b, उदैन्द्रं r.—वैश्वदेवं तु hdm¹r, वैश्वदेवं स्थात् bfk.—चेति च hm¹r, चेति तु b, no particle in fk.

- a Cp. Rgvidhāna iv. 23. 2: tyam ū sv iti svastyayanam.
- 78. In it the first three seers a have declared their own power: how the Rathamtara chant (stotra) and how the Brhat chant,

°चब्युस् hm¹r, °चनुस् b, °चनस् fk.—तवाद्या hrb, तवद्या fk.—च्छवयस्त्रयः hdr, च्छवयस्त्रयः b.—The end of the varga is here marked by १६ in bfk, not in hdm¹.

^a That is, Dhātr, Savitr, Visnu, mentioned in the third pāda of each of the three stanzas of this hymn, as the source from which others (Vasistha, Bharadvāja) derived the Rathamtara, the Brhat, and the Gharma.

17. Deities of RV. x. 182-184.

79. and how the Gharma came into being from Savitra is implied. Now in the hymn 'Brhaspati' (brhaspatih: x. 182) Brhaspati is praised.

संभूतो hd, संभूत: m¹, संभृतो br, संभृता (घर्मा:) fk.— चोपलस्वते hrbfk, चाप-लस्वते m¹, (वादश्व) वाच दृश्वते r¹r⁴r⁶.—Instead of 79^{cd}, given in the text according to the reading of hdr, m¹ bfkr² have substituted a line which has already occurred twice before in B MSS.:

मूक्तेऽसिन्देवतासिस एता एव प्रकीर्तिताः । (तु कीर्तिताः m1)

b alone further adds the line-

असीत्परेण सूक्तेन तपुर्मूधी बृहस्पतिम्।

- * Cp. RV. x. 181. 3: ā sūryād abharan gharmam etc.
- 80. Some consider this praise (of Brhaspati) to be prayers for the institutor of the sacrifice $(yajam\bar{a}na)^n$.

The hymn of Prajāvat Prājāpatya, which (begins) 'I saw thee' (apaśyaṃ tvā: x. 183) b,

यजमानस्य hm^1r , यजमानार्थाः b.—केचिदेतां सुतिं विदुः hm^1r , केचिदेव वदिन्त ताः b.— 80^{ab} is omitted in fkr^2 .

- a The word yajamāna occurs in the refrain of the three stanzas of this hymn: athā karad yajamānāya sam yoh.

 b 80^{ed}=Ārṣānukramaṇī x. 95^{ed}, except that the reading there is sūktam tat for yat sūktam.
- 81. praises in each stanza the deities here indicated by their characteristics (linga): that is, the first (stanza) utters prayers for the man desiring a son a, then

देवता MSS. and r.— लिङ्गेरेवाच सचिताः bf, लिङ्गेरेवार्थलचिताः kr^2 , लिङ्गेरेवाच देवताः hdr.— प्रथमा हि वद्त्यथ hm^1r , प्रथमायामृचि जुताः b, प्रथमायामृचि जताः f.—This sloka is omitted in $r^1r^4r^6$.

a The respective deities for the three stanzas are the Yajamāna, his wife, and the Hotr; cp. Sarvānukramaņī: anvīcaṃ yajamānapatnīhotrāśiṣaḥ.

82. the second for the woman desiring a son, while the third (expresses) self-praise of the seer. Now the hymn which (begins) 'Viṣṇu' (viṣṇuḥ: x. 184) they declare to be addressed to the All-gods a.

॰सवं खुषे: hdm¹r³, ॰सावस्कृषे: r, ॰सावखृषे: bfk.—सूक्तं तु hm¹r, यत्सूक्तं bfk.—प्रचर्तते hm¹r, तद्क्यते bfk.

- a The Sarvānukramanī describes this hymn as lingoktadaivata.
- 83. In it the seer utters prayers with a view to his wife's (obtaining) offspring a. Now the following (hymn) is 'O Nejameṣa' (nejameṣa) b. It is stated to be optionally (applicable: $v\bar{a}$) c with a view to offspring.

स्वदार hm¹r, स्वदार bfk.—परं hm¹rb, परे kr².— नेजमेषेति hm¹r³kr², मर्जमेषेति b, नेजमेषं हि r.—गर्भाणं वा तदुच्यते hdm¹r¹r⁴r⁶, गर्भाणं तावदुच्यते r, गर्भाण्रीरव वोच्यते b, गर्भाण्यारेव वोच्यते fk.—The end of the varga is here marked by 90 in bk, by २० after 83^{ab} in f, not at all in hdm¹. Owing to the transposition of 84, 85, the figures indicating the end of vargas 17, 18, 19 have got shifted, but come right again at 20.

a Cp. Sarvānukramaņī: garbhārthāsīḥ.

b This khila of three stanzas, coming before RV. x. 185 in the Kashmir collection, is identical with Aufrecht's xxiii. Between yenedam and this, the Kashmir collection has one of two stanzas beginning yāsām ūdhaś caturbilam and coming before RV. x. 170.

c I am uncertain as to the exact sense of vā here. Perhaps it means that the hymn is addressed to Nejameṣa, but may be ceremonially applied for the purpose of obtaining offspring. Its three stanzas are prescribed, along with five others, in the ritual during pregnancy, by the Grhya Sūtras; e.g. AGS. i. 14. 3: cp. Stenzler, pp. 35-37. This khila is also mentioned in Rgvidhāna iv. 23. 3; cp. Me, er, p. xxiii. It is translated and examined with reference to its deity, Nejameṣa, by Winternitz, JRAS., 1895, pp. 149-155.

18. The khila 'Nejameṣa.' Deities of RV. x. 185-188.

84. 'To this (wife) of mine longing for a son do thou grant offspring which (shall be) male 'a—with (this) half of the whole (first) stanza he b means this whole combination (yoga) of prayer c:

असी pm^1 , ससी pm^1 , these two and the following three syllables (मे पुत्र॰) omitted in pm^1 pm^2 , पुत्रकामाय pm^2 , जामाय pm^2 , जामाय pm^2 , जामाय pm^2 , स्वाः गर्धन pm^2 , स्वाः pm^2 ,

- गोर्थन m¹r¹r⁴r⁶, गो वनु fk, गोर्बनु r², पाँ वनु b.— मन्यते all MSS. and r.— m¹ is the only MS. that has this and the following śloka in the present position, which is obviously the proper one. The others (bfk r²r¹r⁴r⁶) have them between 130 and 131, where they are absolutely out of place. hd omit them altogether.
- The second and part of the fourth pada of 84 are so corrupt that I have little confidence in my restoration. I have made two assumptions: firstly, that the second pada is a corruption of the second half of the khila line; secondly, that this corruption is partly due to five syllables (sarvargardhena) of the fourth pada having been by mistake copied into the second. The meaning of the whole śloka would then be: 'this line (asyai me &c.) may be taken to represent the whole khila of three stanzas.'

 b That is, Māthara, whose view, in connexion with the Bāṣkala school, is stated in the next śloka.

 According to the rule of ASS. i. I, if one pāda is quoted the whole stanza is meant; if the incomplete first pāda of a hymn is quoted the whole hymn is meant; if more than one pāda is quoted, three stanzas are meant. Cp. Stenzler, AGS., p. 49, note to § 9.
- 85. the traditional teaching of Māṭhara is that in the name (Nejameṣa) the letter e^a is intended to (arouse) compassion; while the Bāṣkalas (say) that in the verb $(\bar{a}dadhe)^b$ the two e's (ay-oh) have the meaning of a past tense $(bh\bar{u}takarana)$ in (the sense of) au $(\bar{a}v-i)^c$.

॰कम्पार्थे m^1kr , ॰काम्पार्थो b.—नाम्नि m^1r f, नास्ति k, नात्ति b.—माठरः r, मांवरः m^1bfk .— श्राख्याते m^1bfkr^2 , श्राख्याते r.—वाष्ट्राक्ता b, वाष्ट्राक्ता r, वाष्ट्राक्ता k, वात्सस्या m^1 .—श्राव्ययोदिति b, भश्राव्ययोदिति f, भश्राव्ययोदिति k, स्त्रीव्ययोद्दत r, स्त्रीव्ययोद्दत m^1 .

- That is, in Nejamesa instead of the regular Naijamesa; this sloka containing remarks on the use of e in both noun and verb in this khila.

 This remark refers to the verb used in the second stanza: yatheyam pṛthivī.. garbham ādadhe and to its interpretation by the Bāskalas as the 3rd pers. sing. perfect, not present. For, according to them, when there are two personal endings -e, that is, ādadh-e, I. sing., and ādadh-e 3. sing., the latter form can be perfect only, not present, where we should have ādhat-te, 3rd pers., beside ādadh-e, Ist pers.

 That is, ādadh-e is here = ādadh-au. This interpretation is very likely wrong, but I can suggest nothing better.
- 86. The Māhitra (hymn) which (begins) 'The great (aid) of the three' (mahi trīṇām: x. 185) they regard as praise of the Ādityas, Varuṇa a, Aryaman, Mitra. Now in very few b other (hymns) addressed to the Ādityas,

माहिनं hm^1r , माहिन b, माहिन fk.—मूर्यवक्णमिनाणाम् hdm^1r , पक्णार्थमिनिन्द्र् b, मूर्णामिमिनेष्ठा॰ fk.—•तरेषु तु hm^1rk , •तरेषु च bf.— 86^{bc} is omitted in $r^1r^4r^6$.

- ^a I have preferred this reading because Varuṇa, and not Sūrya, is mentioned in RV. x. 185; and this identical pāda (varuṇāryamamitrāṇām) has occurred twice before; iii. 108^a and v. 50^c.

 ^b 'Very few' is taken over from the next line.
- 87. except in this, are these three gods only praised. This hymn, according to sacred authority (śrutam), is intended for prosperity (śāntyartham) and is also purifying.
- B It is recognized (drsta) as also benedictory in the valediction of travellers a $(y\bar{a}t\bar{a}m)$.

देवाः m^1 , देवा $h\,b\,fk$, वाता r.—वै श्रुतम् $h\,d\,m^1$, विश्रुतम् $b\,r$, विश्रुतम् fk.—यातयि b, यातमि f, पातमि $m^1k\,r$.

- A The emendation yātām is supported by the use of adhvasu in RV. x. 185. 2 and by the words of the Rgvidhāna iv. 23. 3: mahi trīnām avo 'stv iti svastyayane japet. Cp. RV. viii. 83. 6: kṣiyanto yānto adhvann ā devā vṛdhāya hūmahe. This hymn is described as svastyayanam in the Sarvānukramaṇī also.
- 88. (Then) Ula praised his father Vāta in (in) 'May Vāta' (vātaḥ: x. 186). The next (hymn) is addressed to Agni (x. 187). But in the ten books (of the Rg-veda) the (hymn which begins) 'Forth' (pra: x. 188) is the one (which is) clearly addressed to Jātavedas b.

वात आयेयमृत्तरम् hdm¹, आयेयं प्रायचे परम् bfkr.— दाश्वतयीषु hdm¹r, दास-तयीषु r², दावतयीषु b, दाश्पीषु f.—तु hm¹rfk, च b.—The end of the varga is marked at the end of the next śloka in bf, not at all in hdm¹k. See note at the end of the preceding varga.

^a Cp. above, 71. ^b Because Jätavedas is the only name here mentioned; this hymn is described as jātavedasyam in the Sarvānukramanī also.

19. RV. x. 189, 190. The khila 'Samjñānam.'

89. Whatever elsewhere is spoken of as addressed to Jātavedas^a is (really) addressed to Agni. As to the hymn 'Hither this bull' (āyaṃ gauḥ: x. 189), Sārparājñī sang of herself (in it) b.

°द्न्यवापेयं hdm1r3bfkr2, °देव लापेयम् r.—ख्यं जगौ Am1, जगौ खयम् B.

A In i. 67 Jātavedas is explained as the Middle Agni. Besides x. 189, the Sarvānukramaņī describes only one hymn, i. 99, as jātavedasyam; and the BD. also i. 58. 94; ii. 2.
B Cp. Sarvānukramaņī: sārparājāi; ātmadaivatam sauryam vā.

90. Therefore she is the deity in it; some declare Sūrya (to be the deity). Mudgala, Śākapūṇi, and the teacher Śākaṭāyana,

तस्रात्सा देवता तत्र hm¹r, तस्र स्थाइवता सैव b, तस्र स्था देवता स्थव f.—सूर्यम् hm¹rfk, सौर्यम् b. The Sarvānukramaņī has सौर्यम्, but this does not appear to be sufficient, in the present case, to decide against the prevailing reading of the MSS.—
च श्राचार्यः m¹rbfk, चाचार्यः hd.—श्राकटायनः hdm¹r³bkr², रथीतरः r.

91. consider that Vāc, as occupying the three spheres, is (here) praised in every stanza. Next Aghamarṣaṇa saw the following evolutional (bhāvavṛtta) hymn (x. 190) b

दर्शायाघमर्षणः hm1r, दर्शायघमर्षणः h, दर्शाधर्मर्षणः f.

^a Cp. Sarvānukramaņī: aghamarṣaṇo; bhāvavṛttam.

b With reference to this hymn, h has on the margin the following lines:

त्रापिये घघमर्षणमूत्रके ॥ देवता भाववृत्तसु ऋषिश्वेवाघमर्षणः । छन्दस्त्वानुषुभं तस्य भाववृत्तो हरिः स्नृतः ॥

92. to which no superior exists either for prosperity or purification a. As the horse sacrifice is the chief of offerings, removing every infirmity b,

यसाच् m1, पसा यसा f, यसा hdbk, तसा r.—92°d, 93°d are wanting in r1r4r6.

- a Cp. Rgvidhāna iv. 23. 5: pavitrāṇām pavitram tu japed evāghamarṣaṇam. b 92^{cd} and 93^{ab} appear with slight variations of reading in Rgvidhāna iv. 24. 2, being there introduced with the words evam tad ṛṣir abravīt; cp. BD. vol. i, p. 147.
- 93. so the sin-effacing (agha-marṣaṇa) prayer (brahma) removes every infirmity. As to (iti) the (hymns) which follow it (x. 190), that which (comes) next (beginning) 'Unanimity' (saṃjñānam) a is (in) praise of knowledge.

This is the first khila in the fifth adhyāya of the Kashmir collection. It is identical with Aufrecht's xxv. It is separated from nejameşa (83) by one khila of one stanza, anīkavantam, coming before RV. x. 188 and identical with Aufrecht's xxiv.

20. Two khilas. RV. x. 191. Mahānāmnī stanzas.

94. Now as to the fourth (hymn) 'Of the handless fiends' (nairhastyam), it is destructive of rivals a. 'Together, together, indeed' (sam-sam it: x. 191. 1) and 'Forth, of sacrifices' (praadhvarāṇām) b are traditionally held to be two (stanzas) addressed to Agni c.

चतुर्थं यत्तु m^1 f, चतुर्थं य तु k, चतुर्थं यत्तु hd, चतुर्थं यसु b, चतुर्थस् (तैईस्त्यम्) $r^1r^4r^6$.—चेत्यापेये एव ते hdm^1r , खापेज्यावेते b, खापेष्वावेते f.—सृते hdm^1frb , सृता k, उमे तचापिदेवते $r^1r^4r^6$.

- a This is the khila which in the Kashmir collection comes after samjäänam. It consists of three stanzas, and begins nairhastyam senādaraņam. It is thus described in the Anukramaņī: nairhastyam; trcam; nirhastyaḥ (nirahastya MS.); sapatnaghnam senādaranam; anustubham brhatimadhyam. I assume that caturtham means it is the fourth, counting from x. 190: (1) aghamarsana, (2) sam-sam it, (3) samjñānam, (4) nairhastyam. RV. x. 191. I (sam-sam it) is mentioned out of the order of the hymn of which it is the first stanza, so that it may be coupled with prādhvarāṇām as addressed to Agni. The order in which the Ravidhana mentions these four khilas is: (1) aghamarsana, (2) nairhastyam, (3) samsam it, (4) samjñānam. Cp. Meyer, Rgvidhāna, p. xxvi; Oldenberg, Prolegomena, p. 507. b This khila of seven stanzas, beginning prädhvarāņām pate vaso, follows nairhastyam and is thus described in the Anukramanī: pra; sapta; kašyapo jamadagnir; uttamā šamyur; ādyā āgneyī gāyatrī, dvitīyā upot amā āśīh pānktam, trtīyā akşarastutis sā anustup; caturthī saumī, pañcamī saurī. The last stanza is identical with the last of samjñānam (tac cham yor ā vṛṇāmahe, &c.), and is at the same time the concluding stanza of the RV. according c Agneyyau must be to the Bāskala recension; cp. Oldenberg, Prolegomena, p. 495. the right reading, as from the above statement of the khila Anukramanī and from that of the Sarvānukramaņī on RV. x. 191: ādyāgneyī, only the first stanza of each of these hymns, not the whole of both hymns (agneye), is addressed to Agni.
- 95. Now in the first a (stanza) of 'Unanimity,' Uśanā, Varuņa, Indra, Agni, and Savitr are praised, then in the second, the Asvins.
- संज्ञाने b, संज्ञानं hm 1 r, संवज्ञानि fk.— ज्ञायाश्वनौ hm 1 r, तथाश्विनौ bfk.—95 is wanting in $r^1r^4r^6$.
- ^a The irregularity of declension in prathamasyām is probably due to the following tṛtīyasyām.
- 96. The third and the last two (3, 4, 5) express prayers. Indra (and) Pūṣan are praised in the second stanza of (the hymn) destructive of rivals a.

आशिषीऽभिवदन्ति ताः hm^1rbfk , स त्याशीर्वाद उच्यते $r^1r^4r^6$.— 96^{cd} and 97 are wanting in $r^1r^4r^6$.

- That is, of nairhastyam; cp. 94. These two deities are mentioned in the second stanza of that khila.
- 97. And the other (stanzas) which are chiefly concerned with benedictions are pronounced to be (addressed) to the Gods. They regard 'Together, together' (sam-sam: x. 191) and 'Unanimity' (samjñānam) to be the best (charm for) conciliation a.
- संवननं f, ग्रेवननं r², संवर्त्तनं b, संसवनं hd, संहननं m¹. The name of the reputed seer in Ārṣānukramaṇī x. 99 and in the Sarvānukramaṇī is Saṃvanana.
- a In Rgvidhāna iv. 24. 4, 5 sam-sam is described as saubhrātrkaranam mahat, and samjñānam as sandhikaram.
- 98. The Mahānāmnī stanzas are mystical (guhya) and they are addressed to Indra: whosoever repeats (them) obtains a day of Brahma which lasts for a thousand years a.

महानाम्य ऋची hdr, माहानाम्यं ऋचा f, महानाग्यं रिवां b.—गृह्यास m¹r, गृह्यां bf, गृह्या hdk.—ऐन्द्रासेव यो वदेत् hm¹r, ऐन्द्रास्त स्व वेद b, (ता) टेट्रासास यो वेद् f.—सो ही ब्राह्मः r¹r⁴r⁶, सो हं ब्रह्म hm¹r, सो ह ब्राह्मं b, सा ह ब्राह्मं r², सा ह ब्राह्मं f, Ṣaḍguruśiṣya, who (p. 169, śloka 9) quotes nearly the whole line, has ऋहंब्राह्मं.—स राध्यते hdm¹r, स्वराध्यते r¹r⁴r⁶, स्वरध्यास्तो b, स्वरध्यास्ते f, स्वर्ध्यास्ते kr².—In m¹ this śloka comes after 101.—The end of the varga is here marked by २0 in bfk, by ३0 in h, not at all in m¹d.

- ^a Cp. Bhagavadgītā viii. 17: sahasrayugaparyantam ahar yad brahmaņo viduḥ, which appears in Nirukta xiv. 4 with the slight variation yugasahasraparyantam. It occurs again in Manu i. 73 in the somewhat modified form:
 - · tad vai yugasahasrantam brahmam punyam ahar viduh.

21. Mahānāmnī stanzas: what constitutes a hymn.

B 99. The ritualists $(y\bar{a}j\tilde{n}ika)$ say that a hymn $(s\bar{u}kta)$ has a minimum of three stanzas a. The deities which appear in praise b therein, own the hymn $(s\bar{u}ktabh\bar{a}j)$ c. It has, as is well known, been stated by Saunaka that the deities which own the hymn are always the chief object (of praise).

तृचाधमं m^1b , विचाधमं f, विचाधमं kr^2 . — सूक्तमाइस् fb, सूक्तानाहस् kr^2 . — तिस्रं m^1b , तिस्रान् fr^2 . — सुतौ m^1 , सुतो $bfkr^2$. — दृश्यन्ते याः सूक्तमावः m^1 , दृश्यते यः सूक्तमावा fkr^2 , दृश्यते यः संस्कृतमाव b. — प्रधानमुक्तम् $bfkm^1$, प्रधानमुक्तम् r^2 .

^a According to this RV. i. 99 would not be a $s\bar{u}hta$.

^b Cp. iv. 143: stutau yasyeha drśyate; see also vi. 16.

^c 99^b has one syllable too many.

B 100. Now one should know that the Mahānāmnīs a are stanzas addressed to Indra, for such is the statement that appears (drstam) in a Brāhmaṇa b. The term hymn does not appear (applied to them); the expression $(v\bar{a}da)$ hymn $(s\bar{u}kta)$ is (used) in connexion with the Nivids c, as one applies $(\bar{a}ha)$ the designation of hymn to the Praiṣas d.

ऐस्ट्रीर्म्शचा b, ऐंद्री ऋचो m^1 f, ऐंद्रा ऋचो kr^2 . — विद्यात् m^1 , विद्या $bfkr^2$. — दृष्टं m^1bfkr^2 . — त्राह्मण् b, त्राह्मण् fkr^2 , त्रह्मण्: m^1 . — सूक्तवादो निवित्सु m^1 b, सूक्तप्रब्दो निवित्सु fkr^2 . — प्रेषेष्याहा fkr^2 , प्रेषेष्याह m^1 , प्रेषेष्याह b.

These stanzas (= Ait. Ār. iv) form the khila which follows prādhvarāṇām in the Kashmir collection. They begin vidā magha(va)n vidā gātum anušamšiṣo dišaḥ, and are thus described in the Anukramaṇī: vidā: daśa; ... aindram pāvamānam ānuṣṭubham, &c. They are described in the Rgvidhāna, iv. 25, as constituting the end of the Rg-veda Saṃhitā. Cp. Oldenberg, Prolegojnena, p. 509 f.

b Cp. AB. v. 7. 2: indro vā etābhir mahān ātmānam niramimīta, tasmān mahānāmnyaḥ; cp. also KB. xxiii. 2.

c That is, the Nivid-sūktas are so called as the principal hymns which at the midday libation have the Nivid inserted in the middle, or at the third libation before the last verse of the Sastra. Thus the Dūrohaṇa hymn to Indra-Varuṇa is treated as a Nivid (AB. vi. 25. 7).

d That is, the praiṣikaṃ sūktam, which consists of twelve Praiṣas; see above, ii. 152, 154.

B 101. One should understand that these a constitute (in reality only) single parts of (what is technically called) a hymn, as well as other stanzas which belong to the Kuntāpa (kuntyā) b and are separated by pādas c, as the Aitasa (pralāpa) d and the verses technically called Devanītha, &c.; for in the Kuntāpa (section) all that constitutes one hymn c.

सूत्रैकदेशा $m^1 fk r^2$, सूत्रेकदेशा b.—कुंत्याः m^1 , कुन्याः b, कुन्याः $fk r^2$.—िशासाः b, निसान्ताः f, निशान्ताः k, निशन्ताः r^2 , नितांताः m^1 .—यथैतशो m^1 , यथैतसो $fk r^2$, यथैसो b.—देविनिपादिसंज्ञा $fk r^2$, देवतयादिसंज्ञा m^1 , देवनीयादिशंज्ञा b.—कुनापे b, तुंतापे fk, कुन्तापे r^2 , कुत्यापे r^2

- a That is the Nivids in the Nivid-sūktas and the Praisas in the praisikam sūktam. b The word kuntyā, which is not found elsewhere, must mean 'a stanza belonging to the Kuntāpa section.' The latter is defined as a hymn containing thirty stanzas (kuntāpanāmakam trmśadrcam sūktam) by Sāyana on AB. vi. 33. 1 (cp. ASS. viii. 3. 12, 13). He enumerates the constituent parts in his commentary on AB. vi. 32. 3-25. On the Kuntapa section (AV. xx. 127-136) cp. Bloomfield, SBE., vol. xlii, pp. 688 ff. C The AB. states that the Aitasa pralapa (vi. 33. 14, 15) and the Devanitha (vi. 35. 22) are recited (sums), like a Nivid, by padas with om after each. As the MSS, all have the prefix ni and practically all ā in the verb, I have retained the reading nisāstāh, 'separated' (see St. Petersburg Dictionary under \(\sigma \sigma \alpha \sigma is \), though greatly tempted to make the correction vi-sastāh, 'separately recited'; cp. AB. iii. 19.8: trir nividā sūktam visamset. d In the Kuntapa hymn Sāyaṇa also takes to be included the (AV. xx. 129-132) Aitaśa pralāpa (which he states to consist of an aggregate of seventy padas: comm. on AB. vi. 33. 1; cp. 6 and ASS. viii. 3. 14) and the Devanītha (AV. xx. 135. 6-10) which he states to consist of seventeen padas (cp. AS'S. viii. 3. 25) in his commentary on AB. vi. 34. 1. agrees with Sayana's statement that the (whole) Kuntapa hymn includes the Aitasa pralapa, the Devanitha, and other groups of padas.
- 102. Now the first supplementary passage (puriṣa-pada) a of these (Mahānāmnī stanzas) should be (regarded as belonging) to Prajāpati, (then) one is addressed to Agni, one to Indra, one to Viṣṇu, and the fifth to Pūsan.

श्रासां तु hm²r, श्रासां खात् fbk.—खात्प्रजापतेः hm²r, खिपदैवतम् bfkr².— श्रापेयमेन्द्रं विष्ण्यं hdr, ऐन्द्रं च विष्ण्वं चैव b, विद्रं ला विष्ण्वा चैव fk, विन्द्रं ला विष्ण्वं चैव r².—पौष्णं चैव तु पश्चमम् hdm², पौष्णं दैवन्तु पञ्चमम् r, पौष्णं चैवमतः पर्म् b, पौष्णं चैवमनः पर्म् fr², पौध्मं चैवमनः पर्म् k.

- These are supplementary pieces used to fill up (like rubble, purīṣa) in the recitation of the Mahānāmnī stanzas. According to the reading of B, there would only be four of these, Prajāpati being omitted. According to the Kauṣītaki Brāhmaṇa (xxiii. 2), there are, however, five (connected with Prajāpati, Agni, Indra, Pūṣan, Devāḥ): etāni paācapadāni purīṣam iti śasyante. According to the Anukramaṇī of the khila collection also there are five: purīṣa-padāny āgneya-vaiṣṇava aindra-pauṣṇa-daivāni; omitting Prajāpati, but adding Viṣṇu, like the BD., which omits the Devāḥ; Mitra's reading, having both Prajāpati and Devāḥ, includes six deities. On the Purīṣa-padas see further Pañcaviṃśa Brāhmaṇa xiii. 4. 12, 13; ASS. vii. 12; Lāṭyāyana iv. 10. 18, &c.
- 103. To Agni belong the Prayājas and the Anuyājas, the Praisas and the oblations. Now whatever may be the divinity of the oblations, must also be the divinity of the Praisas.

प्रेषा ये च hdr, प्रेषा ये च b, प्रेषां ये च fk, प्रेषा एष m¹.— हविसु खात् hm¹r, हिवर्यसात् b, हिवर्यसा fk.— °दैवता म् hdm¹, °देवता म् bfk, °देवता स् r.— च ते hbfkr², च ये m¹, तु ये r.— The end of the varga is here marked by २9 in hbfk, not in m¹d. The fact that h marks the end of the previous varga after 98 and of the present one here, though the twenty-first varga would thus contain only two ślokas, is an indication that 99-101 belonged to the original text; a conclusion corroborated by these lines being composed in the trisṭubh metre.

22. Deities of Nivids, Nigadas, and metres.

104. The deities of the Nivids and of the Nigadas a (can be ascertained) by their respective characteristic names b; and those stanzas are recited with a Nigada which are (thus employed) in conformity with the ceremonial.

खिङ्गेश्व देवताः $h dm^1 r bfk$, खिङ्गोक्तदेवताः $r^1 r^4 r^6$. — निगदेन $h dm^1 r$, निगदेषु $bfkr^2$. — कल्पानुगा $hm^1 r$, कल्पाण्या k, कल्पाण् f, कल्पाण् b.

- ^a See St. Petersburg Dictionary, sub voce.

 ^b That is, by the name of the deity occurring in the formulas employed as Nivids or Nigadas.
- 105. Now to Agni are traditionally held to belong the Gāyatrīs, to Savitṛ the Uṣṇihs, to Soma the Anuṣṭubhs, to Bṛhaspati the Bṛhatīs a.

उष्णिहः m1bfr, उष्णिहा hdr3, उष्णिकः kr2.

- a On this and the following ślokas (102-109) are based the statements regarding the deities of metres in Kātyāyana's Sarvānukramaņī of the White Yajur-veda (Weber's ed. p. lv): gāyatryā agniḥ, uṣṇihaḥ savitā, anuṣṭubhaḥ somaḥ, bṛhatyā bṛhaspatiḥ. Ep. BD. vol. i, p. 153.
- 106. The Panktis and the Tristubhs, one should know, belong entirely to Indra^a; and all Jagatīs^b whatsoever belong to the All-gods.

एन्ब्रय hr, ऐब्रय d, ऐट्रख f, ऐन्ट्रस k, एंट्रस b.—यासु hm1r, यश्व fk, याश्व b.

- ^a According to the VS. Anukramanī the Panktis belong to Varuna and the Tristubhs to Indra: pankter varunas tristubha indrah.

 ^b VS. Anukramanī: jagatyā višve devāh.
- 107. The Virājes belong to Mitra, the Svarājes to Varuṇa a. The Nicṛts are declared to be Indra's, and the Bhurijes are traditionally held to be Vāyu's b:

खराजो br, खराजा fk, स राश्चो hdm¹.— इन्द्रख निचृतः hdm¹, निवृतः b, इन्द्रखा-तिधृतिः r, इन्द्रखतिधृतिः fk.— सुरिज hdm¹, सूरिज bfkr.—107^{cd} is omitted in r¹ r⁴ r⁶.

^a Cp. VS. Anukramanī: virājo mitraķ, svarājo varuņaķ.
^b No statement, VS. Anuk.

A 108. or these two a may belong (to the god) in whose sphere b (they are), or they may (both) have Vāyu for their deity c.

But all the Atichandas metres have Prajāpati for their deity d.

प्रजापतिदेवताः hm¹rfk, प्रजापतिदेवताः b.—108 b =122 d .—The end of the varga is here marked by २२ in bfk, not in hdm¹.

a That is, nicrt and bhurij each taken as a singular.

b That is, each of these would belong to Indra or Vāyu according as the stanzas composed in these metrical forms happened to be connected with the one or the other.

c This line (108^{ab}) is found in A and m¹ only. It has this position in m¹, but comes after 107^{ab} in A. I have placed it here because it seems much more naturally connected with 108^{ab}, as adding an alternative referring to the same two deities (Indra and Vāyu), than with 107^{ab}; and because we may infer from the silence of the VS. Anukramaṇī about both, that the two lines are thus connected. If the alternative in 108^{ab} had any reference to 107^{ab}, it would probably have been mentioned in the VS. Anukramaṇī, which makes the same statement about the virāj and svarāj as the BD. in 107^{ab}.

d Cp. YS. Anukramaṇī: atichandasaḥ prajāpatiḥ.

23. Deities of metres, Vedas, Vaṣaṭkāra, Svāhākṛtis. The Svaras.

A 109. But formulas consisting of various metres (vichandas) belong to Vāyu. As for those which are measured by pādas,

all Dvipadās are sacred to Puruṣa, Ekapadās are traditionally held to be sacred to Brahmā a.

पौर्षो दिपदा सर्वा b, पौर्ष दिपदाः सर्वा d, पौर्षा दिपदाः सर्वा m^1r , दिपदा पौर्षं इन्द्रो $bfkr^2$.— ब्राह्म एक॰ hm^1r , ब्राह्मी त्वेक॰ $bfkr^2$.— 1009^{ab} is found in A and m^1 only.

- a Cp. VS. Anukramanī: vichandaso vāyur, dvipadāyāh purusa, ekapadāyā brahmā.
- 110. All stanzas of the Rg-veda (rc) are sacred to Agnia, sacrificial formulas (yajus) are sacred to Vāyu, all chants (sāman) and Brāhmaṇas are sacred to Sūrya b.

समस्ता ऋष $h m^1 r$, समस्त ऋच fk, समस्तसृच b.— श्रापेव्यो $h m^1 r$, श्रापेया b f k.— चैव $h m^1 r$, खेव fk, खव b.—सामानि $m^1 f k r$, नामानि h d, मामानि b.

^a Cp. VS. Anukramaņī: sarvā rea āgneyyaḥ. ^b Cp. ibid.: sāmāni saurāņi sarvāņi brāhmanāni ca.

111. The call 'Vaṣaṭ' is sacred to the All-gods, (and) the sound 'him' (himkāra) a. (The Āgur formula) 'We who sacrifice' (ye yajāmahe) b is a form of the thunderbolt which is preceded by speech. The call 'Svāhā' has Agni as its deity.

रूपं hdm¹r, त्तपं b, षयं fk.— वाकपूर्व hm¹r, वा पूर्व bfk.— °पिदेवतः hdbr, °पिदेवताः f, °पिदेवतः m¹.

- ^a Himkāra is mentioned with vaṣaṭkāra in AB. iii. 23. 4. ^b The formula used at the beginning of the yājyā. See Haug, Aitareya Brāhmaṇa, vol. ii, p. 133, note. ^c Cp. AB. ii. 28. 5: āgūr vajraḥ.
- 112. To the Gods and the Fathers belong obeisance and oblation ($svadh\bar{a}$).

The shrill (kruṣṭa) tone (svara) is to be recognized as in the head a; the first tone belongs to the palate b.

स्वधैव hm^1r , स्ववैव b, तथैव fkr^2 . — तालव्यः hm^1rb , तालवाः f. — प्रथमः hm^1fr , प्रथम bkd.

- a Cp. below, 116. b Cp. below, 117. See VS. Prātisākhya viii. 47.
- 113. But the second belongs to the centre of the brows a, the third has its place (saṃśrita) in the ear b, the fourth should be (regarded as) in the tip of the nose c, the low (tone) is stated to belong to the chest d; one pronounces the Atisvāra c as formed by a protraction (karṣaṇa) of the low (tone).

॰संश्रितः hdm¹r, ॰संस्तः b, ॰संमृतः fk.—॰सो मन्द्र उच्यते hm¹br, ॰सोमंडू - " -च्यते fk.—मन्द्र कर्षणसंयुक्तम् hdr, मन्द्रं कर्षणसंयुक्तम् m¹, मन्त्रकर्षणसंगम् b, मंत्रकर्षणसं-सक्तम् fk.—श्रतिस्वारं hdb, श्रतिस्कृरं f.—प्रश्ंसित hm¹r, त तं विदुः B.—The end of the varga is here marked by २३ in m¹, after 115^{ab} in fk, also in b, but by ३३, not at all in hd.

a Cp. below, 117. b Cp. below, 118. c Cp. below, 118. d Cp. below, 119. This form of the name, used also in 116, is not otherwise found; the usual form of the name, atisvārya, is used below, 120; cp. the definition given there: vikarṣeṇa mandrasya yuktaḥ.

24. Deities of the tones.

114. The Gods speak in (vadanti) the shrill (kruṣṭa) tone, men in the first, all beasts in the second, Gandharvas and Apsarases in the (next) tone.

कुष्टं hm¹rb, सर्वा k, omitted in f.— मनुष्याः प्रथमं खर्म hm¹r², मनुष्याः प्रथमखर्म् fk, मनुष्यः प्रथमः खर्म् b, मनुष्यास्थितरेस्त्रिभिः r.— पश्चः hdm¹r³bfkr², वसवः r.— This and the following two ślokas (114-116) come before 113 in bfkr².

115. Egg-born creatures, birds, serpents, employ the fourth; Piśācas, Rakṣases, and Asuras employ the low tone (mandra).

उपभुजते hdr, (॰ऋ) रिप्रभुंजते f, चीपभंजते b, चीपभुज्ञते r², तूपभुजते m¹, तूपभुज्यते r¹r⁴r6.—मन्द्रं b, मन्द्रा fk, मन्द्रा; hm¹r.—115° is omitted in r¹r⁴r6.

116. But the Atisvāra is peculiar to everything that moves or is stationary.

The shrill (krusta) tone, which permanently resides in the head, is sacred to the All-gods.

चित्रं क्षित क्षेत्रं क्षित क्षेत्रं क्षित क्षेत्रं क्षित क्षेत्रं क्षित क्षेत्रं क्षेत्रं

117. The first tone, belonging to the palate (and) peculiar to the Sāmans, has the Ādityas for its divinities. The second tone, which has its location in the region of the brows, is connected with the Sādhyas.

श्रादित्यदैवतः $h\,m^1r$, श्रादित्यदेवतः $b\,f\,k$, चेह्न्त्य एव तु $r^1r^4r^6$.—शुवोदेशं समाश्रितः $h\,d\,m^1r^3f\,k\,r^2$, सुवोहेश्समाश्रितः b, शुवोदेशिश्रितस्य यः r.

118. But the third tone here, which has its location in the ears, is sacred to the Aśvins; but the fourth tone here, which is nasal, is stated to be sacred to Vāyu.

भाश्चिनसु hm¹rbfk, श्रापेयसु r¹r⁴r⁶.— कर्णी hdb, कर्णी fk, कर्ण r.— त्वच hm¹r, त्वच b, त्वच fk, त्वेषु r¹r⁴r⁶.— The end of the varga is here marked by २४ in bfk, not in hdm¹.

25. Deities of the tones (concluded). Deities of the Prastāva, Udgītha, Upadrava, Pratihāra, Nidhana.

119. But the fifth tone, which is related to the eyes, is declared to have Sūrya as its divinity. But the sixth Sāman tone the low (mandra) is stated to be sacred to Soma.

चाबुषः h d r, चाबुवः m^1 , चबुश्च b, चबुश्च f, चबुश्च g, h.—सूर्यदेवतः h d, सूर्यदेवतः h d r, g is omitted in $r^1 r^4 r^6$.—उच्चते $h d m^1 r$, श्रीरसः b, श्रीजसः f k.

120. But that which is formed with the protraction of the low (tone) is called Atisvārya: it is to be known as sacred to Mitra-Varuṇa. It is located a in the position of the low (tone).

विकर्षेण तु bm^1r^3 , विष्कर्षेण तु hd, विकर्णिन तु $fk\,r^2$, कर्षणेनैव $r^1r^4r^6$. — युक्तोऽतिस्वार्य m^1r , युक्तो निस्वार्य hd, स्वरो तिस्वार्य f, स्वरो तिस्वार्य b. — स मैत्रावर्षणो hm^1fr , स मैन्द्रावर्षणो k, सा मेद्रवर्षणो b. — मन्द्रस्थानसमाहितः $r^1r^4r^6$, मन्द्रस्थानसमानि षट् hdm^1r^3 , मन्द्रस्थानि समानि षट् bfk.

- a Samāhitah being used in much the same sense as samāśritah in 117^d and 118^b. The reading samāni sat seems to be a corruption due perhaps to the following saptānām.
- 121. These have here been stated to be the gods of the seven Sāman tones. But (the gods) of the other three a are the three Lords of the World b.

सामखराणां hm^1rbfk , द्ति खराणां $r^1r^4r^6$. — एते देवा द्द्होदिताः hdm^1rbfk , उत्ताः सामसु देवताः $r^1r^4r^6$.

- ^a That is, of the three tones of the Rg-veda.

 ^b That is, the three forms of Agni, spoken of in i. 73 as the three chief lords of the world, lokādipatayas trayah.
- 122. The Prastāva in the Sāmans has Vāc as its deity, or is sacred to Agni; the Udgītha and the Upadrava are sacred to Indra, or they may have Vāyu for their deity.

वाग्देवत्यो hdb, वाग्दैवत्यो $m^1 fk r$.—थवागेयः $hm^1 r$, थवाधेन्द्रः b, थवापेंदेः fk— प्रस्तावस्थैव $hm^1 r$, प्रस्तावः सर्च b, प्रस्तावः सर्व f.—उद्गीथोपद्रवावेन्द्र्यौ hd (॰थौप॰ d), उद्गीथापद्रवावेन्द्र्यौ r, उद्गीथोपद्रवावेद्र्या m^1 , उद्गीथोपद्रवा चद्रौ b, उद्गीथोपद्रवाचद्रो f.—वा वायुदेवते $hdm^1 r$, वोभयदेवते b, चोभयदेवते fk. The feminine dual ॰देवते is perhaps due to a mochanical repetition of the pada स्थातां वा वायुदेवते occurring above, 167^d .

123. Now the Response (pratihāra) should be (regarded as) sacred to Sūrya, the Finale (nidhana) to the All-gods, by pronouncing them with the sound 'him' and with the sacred syllable a Om (praṇava) at the beginning b.

निधनं hm¹r, निवनं fk, निवन b.—कीर्तनात् hm¹r, कीर्तितम् b.—123^{ed} is omitted in fk.—The end of the varga is here marked by २५ in b, not in hdm¹ (nor in fk as 123^{ed} is wanting).

* In the Brāhmaņa account of the division of the Sāmans into five parts all the above forms, (1) om and him, (2) udgītha, (3) pratihāra, (4) upadrava, (5) nidhana, are included; see AB. iii. 23. 4; Haug, vol. ii, p. 198, note ³⁹; cp. Sāyaṇa on AB. iii. 23. 4: hiṃkārādayaḥ pañca sāmāṃśā vaiśvadevāvayavāḥ.

* Cp. Sāyaṇa, l. c.: udgātrā paṭhitavyaḥ sānona ādau him ity evaṃ śabdo hiṃkāraḥ.

26. Various deities incidental in Vaisvadeva hymns.

124. Thus he who knows the deities (of the Rg-veda) should here consider the divinity of the individual and the collective formulas in (their) application to all rites.

व्यसमस्तानां hm^1r , व्यवसामस्तानां b.— r_{24}^{ab} is omitted in fk.—देवताविद्वेचेत hm^1r , देवता तदुपेचेत f, देवता तदपेचेते k, देवता तिदुपेचेत b.

125. The Seven Seers a, the Vasus, the Gods, the Atharvans, the Bhṛgus, Soma, Sūrya, and Sūryā b, Pathyā svasti, the Two Worlds for whom formulas are stated c, Kuhū, Guṅgū, Aditi, Dhenu, Aghnyā;

सप्तर्षयो वसवशापि देवा m¹r, सप्तर्षयो ऋषयशापि, देवाः hd, सप्तर्षयो देवशापि देवा fk, सर्व ऋषयो देवाशापि देवाः b.— अथर्वाणो m¹r, अथर्वणो bk, अर्थर्वणो f, अथर्वा hd.—सोमसूर्याः hdm¹rfk, सोमसूर्या b, अंशोऽर्यमा r¹r⁴r⁶.—खस्ती br, ख्रिति hdm¹fk.—चोक्तमन्त्रे hdm¹r, भोक्तमन्त्रे fk.—गुंगुर् hd. kr, गुग्र् b.

- with the names enumerated in this and the following three ślokas (125-128) cp. those contained in i. 125-129.

 b As all the other names in the line are in the plural, and the MS. evidence strongly favours it, I have adopted the reading somasūryāḥ, assuming that it is intended for a condensed compound = Soma and Sūryau, Moon and Sun and Sūryā (cp. RV. x. 85).

 c I take this dual to be added to Rodasī in order to distinguish the dual name ródasī from the singular rodasī. All the other names in the line are, however, in the singular, and Rodasī in i. 129 is also meant to be singular; moreover one stanza of the RV. (vi. 50. 5) is stated in the BD. to be raudasī (v. 117), where the goddess is doubtless meant, the name in the text of the RV. being distinctly singular and being mentioned with the Maruts; cp. above, ii. 143.
- 126. Asunīti and Iļā, the Āptyas, Vidhātr, Anumatic, together with the Angirases,—these should be (regarded as) deities for whom formulas are stated.

श्रमुनीतिरिका hdm¹, श्रमुनीतिरिला r, प्रमुनातिरेला b, पशुनांतिरेला k, प्रशुनातिरेला f.—वा स्याद् hdm¹ r³ r², वा स्थात् f, वा स्था k, वा भी: r, चाप्ना b.—°तानुमितर्द्द्या r,

°त्वनुमितद्वया hd, °तानुमितद्वया m¹, °नानुमितद्वया k, °तानुमितद्वता b, °नानुमितद्वया f.—श्रिक्करोभिः सहैताः खुर् hm¹rb, श्रिक्कराः सहिता खुर् k, श्रंगिराः सहैता खुर् f.

- ^a Cp. Nirukta xi. 48. ^b Cp. i. 128. ^c The correction ha yā is supported by the same collocation, ha yo, lower down (130). ^d The meaning of this enumeration seems to be that, though these are deities of rare occurrence, they all have formulas addressed to them, and are found, with those that follow, in Vaiśvadeva hymns.
- 127. Vaisvānara, Suparņa, Vivasvat, Prajāpati, Dyaus, Sudhanvan, Nagohya^a, Apām napāt, Aryaman, Vātajūti^b, Iļaspati, and Rathaspati;

॰पतिर्गीः $h \, dm^1 f \, kr^2$, ॰पतिर्गी b, ॰पति। गीः f, ॰पतिर्घीः $r^1 r^3 r^4 r^6$. — सुधन्वा नगोमहाः b, सुधन्वा नं गोदाः f, सुधन्वा नं न गोधः k, सुधन्वा न गोधः $r^1 r^4 r^6$, सुधन्वा ननदः $h \, dm^1 r^3$. — ॰र्घमा वातजूतिर् $h \, dm^1 r$, ॰र्घम चेतपक्षर् b, ॰र्घम चो तयसुर् f, ॰र्घम यो तपसु ॥ र् k. — ॰पतिश्वापि $h \, dm^1 r^3 r^2$, ॰पतिश्वेव r, ॰पति श्वापि $b \, f \, k$.

- ^a That is, Agohya, the form nayohya being used probably to svoid coalescence with sudhanvā. Saudhanvana and Agohya are commented on in Nirukta xi. 16. ^b This seems to be a corruption, as there is no deity of this name anywhere; it may stand for the epithet of some deity, like tuvijāta as the name of an Āditya in BD. iv. 82; see note there.
- 128. the Rbhus, Parianya, Mountains, and the Females (gnāḥ); Dakṣa, Bhaga, the Wives of the Gods, the Regions (diśaḥ); the Ādityas, the Rudras, the Fathers, and the Sādhyas—all (these) are incidental in hymns addressed to the All-gods a.

पर्वता पास पत्नी hdm¹bfk, पर्वता पास पत्नीर् r, वा गावस पत्नीर् r¹r⁴r⁶. I Have omitted पत्नीर् in the text because it makes the line redundant by two syllables; it probably crept into the text as a gloss on पा:. Besides, देवपत्नीर् occurs in the next line.—देवपत्नीर्द्शस hr, देवी पत्नी दिशस m¹, देवपत्न्यो दितिस b, देवपत्न्यो दिति f, देवपत्न्यो दिति: k.—The end of the varga is here marked by २६ in bfk, not in hdm¹.

a Cp. above, ii. 130, on the character of Vaiśvadeva hymns.

27. Remarks about deities and knowledge of them.

129. The deities which own hymns and own oblations have (thus) been stated in succession, in both cases together with (those which occur in) incidental mention. Whether (this) be

so in both ways a or in the other way b, no formula is directly known (pratyakṣa) to any one who is not a seer c.

चनुकान्ता hm¹r, चनुकात्ता b, ऋनुकांत्तां fk.—°न्यथा hm¹r, °नाथा b, °नथो fk.— चनुषेर् hm²r, चनुपेर् bfk.— मन्त्रम् hm¹, यंत्रं d, मन्त्रे bfk, मन्त्र: r.

- That is, whether the gods here indexed own both hymns and oblations. Cp. Nirukta vii. 13; x. 42.

 b That is, whether they are incidental.

 c That is, knowledge of the deities of a formula can only rest on sacred tradition.
- 130. These deities are altogether to be adored with concentration, assiduity, self-control, intelligence, deep learning, austerity, and by injunctions (to others). He who knows the stanzas (of the Rg-veda) knows the gods.

A He who knows the sacrificial formulas (yajus) knows the sacrifices. He who knows the chants $(s\bar{a}man)$ knows the truth (tattva).

दाच्चेण hm¹fr, दाचेण bk.—बुद्धा r, बुध्धा hm¹bfk.—बाङ शुखेन hrbfk, बङ शुखेन m¹.—नियोगे: hdr, भियोगे: bkr², मि॰ f.—उधास्थासाः hm¹r³bfkr², उपास्तव्याः r.—देवता या hdbfk, देवतस्य r¹r⁴r⁶.—या च्छचो b, याः च्छचो fk, यास्त्वृचो hdm¹, यास्त्वृचो r.—The words वेद स वेद देवान् are omitted in fk (the lacuna being indicated by seven horizontal strokes in f, and by a space in k).—The third line of 130 is not found in bfk, but in hdm¹r only.

131. Of him who knowing the deities of the formulas a, at any time employs a rite, the deities taste the oblation, but not that of him who is ignorant of (those) deities b.

कर्म hdm¹r, मर्म bk.—जुषने hm¹r, जुष्यने b, जप्यते fk.—देवतास्तस्य A, तस्य देव-तास्य bfk, तस्य देवासो m¹.—हविनी॰ hdm¹r¹r³r⁴r⁶, हविवी r, च्यिवी॰ bfkr².

- ^a Cp. Sarvānukramaņī, introduction, § 1: mantrāņām ārķeyachandodaivatavit. ^b Cp. VS. Anukramaņī, loc. cit.: devatām avijāāya yo juhoti, devatās tasya havir na juṣante.
- 132. For an oblation assigned (pradista) without correct knowledge a divinity would not desire (theta).

Therefore one should offer an oblation (only) after carefully committing (samnyasya) the deity to mind a.

खिकान hdr, खिक्कात bfkm¹r¹r⁴r6.—हिवनैंव हि hd, हिवनेंव न m¹, हिवनैं-

वेन fk, हविनेवित b, हविनाञ्चल्त r.—देवतम् m¹k, देवतम् hdbf, देवताः r.—मनसि संन्यस्य m¹dr, मनसि स न्यस्य h, मध्यः सन्यस्य f, मनुसैष संपस्य b.—देवतां hdm¹, देवता bfkr.—I have conjecturally placed २७ here as the end of the varga, because that figure in bfk comes after 85, which occupies the position of 132 in those MSS.

^a Cp. VS. Anukramaņī, loc. cit.: samnyasya manasi devatām havir hūyate.

28. Importance of knowing the deities.

133. ^a He who knowing the divinities of the formulas, being pure, also devotes himself to study, is, like one seated at a sacrificial session in heaven, lauded even by those who are engaged in such a session ^b.

स्वाध्यायमपि m^1 bfk, also h (but corrected on margin to °मेव), °धमेव d, °यमुत $r^1r^4r^6$.—•िवकुचि: hm^1r , °वित्कृवि: b, °विद्ववि: fk, °विक्कृते: g.—स सवसदिव r, स तवसदिव: bfk, असवसदिप hdm^1r^3 , स तव दिवस g (w^1).—सवसद्भिरपोद्धाते hm^1g (w^1), °पोध्यते $r^1r^4r^6$, °पोज्यते r, स्वर्गसद्भिर्दाते h, स्वर्गसद्भिर्दाते h.

- ^a This śloka is quoted by Sadgurusisya, with a few slight variations, p. 167, 10, 11. ^b That is, by the gods: cp. VS. Anukramanī, loc. cit.: svādhyāyam api yo 'dhīte mantradaivatajňah, so 'muşmin loke devair apīdyate.
- A 134. In muttered prayer and in offering an oblation this is a necessity—the seer, the metre, and the divinity a; and applying them wrongly one is here deprived of their fruit b.

श्वाधिकक्दो hd, श्वाधिकक्दो m¹r.—तत्पालाच् r, तत्पालं hdm¹.—This and the following four ślokas (134-138) are found in Am¹ only.

- a Cp. the adaptation of 135^{ab} in Şadgurusisya, p. 166: rsichandodaivatādi vijāānam phalam ucyate.
 b Cp. Sarvānukramaņī, introduction, § 1.
- A 135. As to the knowledge of the seer, the metre, the divinity, and the rest^a, acquired (śrutam) at sacrifices and the like, it should be understood that by resorting to it, the faculty of seeing the Spirit ($pr\bar{a}na$) is here established ($vihit\bar{a}$).

ऋषिक्ष-कोदैवतादि rs, 'देवतादि hdm'.--प्राण्दृष्टिर्वि' hdr, प्राण्दृष्टि वि' m'.

^{* 135}ª is quoted by Sadgurusisya, p. 166, sloka 2.

A 136. He who without knowing the seer, the metre, the divinity, and the application $(yoga)^a$, should teach or even mutter (a formula), will fare the worse $(p\bar{a}p\bar{i}y\bar{a}nj\bar{a}yate)^b$.

चविदित्वा hdm1 r.—ऋषिं hd, ऋषि॰ m1 r.—योऽधापयेज r, याध्यापयेज् hd.

- ^a Yoga appears to be used here in the sense of prayoga.

 ^b This śloka is quoted by Ṣaḍguruśiṣya, p. 57 (bottom), and by Ṣāyaṇa in his introduction, M. M., RV.² vol. i, p. 23 (middle). Cp. also Sarvānukramaṇī, introduction, § 1: pāpīyān bhavati; ŚB. xiii. 1. 5⁴.
- A 137. In olden times the seers, desirous of wealth, resorted with metres to the deities a: it is for this reason (iti) that the great seers mention metre in the middle.
- This śloka was known to the author of the Sarvānukramaņī as most of it has been incorporated in the introduction, § ii. 7: arthepsava ṛṣayo devatāś chandobhir abhyā-dhāvan; cp. Ṣaḍguruśiṣya, p. 60.
- A 138. Now one should first state the seer, next the metre, and then the deity of the formulas in regard to the rites in this order (evam), so says a sacred text.
- 139. Distinguishing the Self in his self as the receptacle a ($\bar{a}dh\bar{a}ra$) and at the same time not the receptacle (of all things), one who knows the divinities should recite (the formulas) having an eye to both—the euphonic combination (samdhi) (and) the stanzas (themselves).
- " प्रार् चानाप्तारं b, आप्तार वायनाधारं f, आतारं वायनाधारं k, आतानं वायनधारं r², आतानं सायनाधारं r³, आतानं खायनाधारं hm¹, आतानं खात्यनाधारं d, आप्तय वा अनाप्तय r.—विविच्या॰ hm¹rfk, विचित्या॰ b.—॰तानि hm¹rb, ॰तानो fk.—ईचमाणो hdr, ईच्छमाणो m¹, वोचमाणो b, वच्छमाणो fk.—ह्म्भी hm¹r, खुतो bfk.—संधम् hm¹r, संधि fk, संधि (रिचो) b.—दैवतवित्पठेत् hdbr, देवतवित्पठेत् m¹, दैवत्य छत् f, दैवत्य छते k.
- ^a Cp. Vedāntasāra, 1: ātmānam akhilādhāram āśraye; Bhagavadgītā iv. 13: tasya kartāram api mām viddhy akartāram avyayam.
 - 140. Such an one enters into the Brahma, the immortal, the

infinite, the permanent source of that which is and is not, both vast and minute, the lord of all, the light supreme.

OXFORD, ENGLAND: HORACE HART, M.A. PRINTER TO THE UNIVERSITY

Books for the Study of Indo-Iranian Languages (Sanskrit, Prākrit, Pāli, Avestan),

Literatures, Religions, and Antiquities.

PUBLISHED BY Messrs. GINN AND COMPANY, BOSTON, NEW YORK, CHICAGO, AND LONDON.

Whitney's Sanskrit Grammar.

A Sanskrit Grammar, including both the classical language, and the older dialects, of Veda and Brahmana. By WILLIAM DWIGHT WHITNEY, [late] Professor of Sanskrit and Comparative Philology in Yale University. Third (reprinted from the second, revised and extended) edition. 1896. 8vo. xxvi+552 pages. Cloth: Mailing price, \$3.20. Paper: \$2.90.

Supplement to Whitney's Sanskrit Grammar.

The Roots, Verb-forms, and primary Derivatives of the Sanskrit Language. A Supplement to his Sanskrit Grammar, by William Dwight Whitney. 1885. 8vo. xiv+250 pages. Paper: Mailing price \$2.00.

The fact that the roots are briefly and clearly defined, and the forms conveniently given, makes this work useful even in the early stages of Sanskrit study.

Cappeller's Sanskrit-English Dictionary.

A Sanskrit-English Dictionary. Based upon the St. Petersburg Lexicons. By CARL CAPPELLER, Professor at the University of Jena. Royal 8vo. Cloth. viii + 672 pages. By mail, \$6.25.

Lanman's Sanskrit Reader.

A Sanskrit Reader: with Vocabulary and Notes. By CHARLES ROCK-WELL LANMAN, Professor of Sanskrit in Harvard University. For use in colleges and for private study. Royal 8vo. Complete: Text, Notes, and Vocabulary, xxiv+405 pages. Cloth: Mailing price, \$2.00. Text alone, for use in examinations. 106 pages. Cloth: Mailing price, 85 cents. Notes alone, viii+109 pages. Cloth: Mailing price, 85 cents.

This Reader is constructed with special reference to the needs of those who have to use it without a teacher. The text is in Oriental characters. The selections are from the Mahā-bhārata, Hitopadeça, Kathā-sarit-sāgara, Laws of Manu, the Rigveda, the Brahmanas, and the Sūtras. The Sanskrit words of the Notes and Vocabulary are in English letters. The Notes render ample assistance in the interpretation of difficult passages.

Sanskrit Text in English Letters.

Parts of Nala and Hitopadeça in English Letters. Prepared by Charles R. Lanman. Royal 8vo. Paper. vi+44 pages. Mailing price, 30 cents.

The Sanskrit text of the first forty-four pages of Lanman's Reader, reprinted in English characters.

Perry's Sanskrit Primer.

A Sanskrit Primer: based on the Leitfaden für den Elementarcursus des Sanskrit of Prof. Georg Bühler of Vienna. By EDWARD DELAVAN PERRY, Professor of Greek in Columbia University, New York. 1885. 8vo. xii + 230 pages. Mailing price, \$1.60.

Kaegi's Rigveda.

The Rigveda: the oldest literature of the Indians. By ADOLF KAEGI, Professor in the University of Zürich. Authorized translation [from the German], with additions to the notes, by ROBERT ARROWSMITH, Ph.D. 1886. 8vo. Cloth. viii + 198 pages. Mailing price, \$1.65.

Hopkins's Religions of India.

The Religions of India. By EDWARD WASHBURN HOPKINS, Professor of Sanskrit in Yale University: 1895. 12mo. Cloth. xvi+612 pages. Mailing price, \$2.00.

This is the first of Professor Morris Jastrow's Series of Handbooks on the History of Religions. The book gives an account of the religions of India in the chronological order of their development. Extracts are given from Vedic, Brahmanic, Jain, Buddhistic, and later sectarian literatures.

Jackson's Avesta Grammar.

An Avesta Grammar in comparison with Sanskrit. By A. V. WILLIAMS JACKSON, Professor of Indo-Iranian Languages in Columbia University, New York City. Part I: Phonology, Inflection, Word-Formation. With an introduction on the Avesta. 1892. 8vo. Cloth. xlviii + 273 pages. Mailing price, \$2.20.

The introduction gives a lucid account of the Avesta and of Avestan studies, of the contents and character of the Avesta, of the religion of Zoroaster, etc. In the treatment of the language, constant reference is made to the Sanskrit and to Whitney's grammar.

Jackson's Avesta Reader.

Avesta Reader: First Series. Easier texts, notes, and vocabulary. By A. V. WILLIAMS JACKSON. 1893. 8vo. Cloth. viii + 112 pages. Mailing price, \$1.85.

The selections include passages from Yasna, Visparad, Yashts, and Vendidad, and the text is based on Geldner's edition. The book is intended for beginners.

Harvard Oriental Series.

EDITED, WITH THE COÖPERATION OF VARIOUS SCHOLARS, BY

CHARLES ROCKWELL LANMAN.

PROFESSOR OF SANSKRIT IN HARVARD UNIVERSITY.

Published by Harvard University, Cambridge, Massachusetts, United States of America.

, A copy of any one of these volumes, postage paid, may be obtained directly anywhere within the limits of the Universal Postal Union by sending a Postal Order for the price as given below, to The Publication Agent of Harvard University, Cambridge, Massachusetts, United States of America.

VOLUME I.—The Jātaka-mālā: or Bodhisattvāvadāna-mālā, by Āryaçūra; edited by Dr. HENDRIK KERN, Professor in the University of Leiden. Netherlands, 1891. Royal 8vo. Cloth. xiv + 254 pages.

This is the editio princeps of a collection of Buddhist stories in Sanskrit. The text is printed in Nāgari characters. An English translation of this work, by Professor Speyer, has been published in Professor Max Müller's Swered Books of the Buddhists, London, Henry Frowde, 1895.

The price of Volume 1 is one dollar and fifty cents (\$1.50)=6 shillings and 2 pence =6 marks and 25 pfennigs=7 francs or lire and 70 centimes=5 kroner and 55 ore= 3 florins and 65 cents Netherlandish.

VOLUME II.—The Sāmkhya-pravacana-bhāsya: or Commentary on the exposition of the Sānkhya philosophy, by Vijñānabhiksu: edited by RICHARD GARBE, Professor in the University of Tübingen. 1895.

Royal 8vo. Cloth. xiv + 196 pages.

This volume contains the original Sanskrit text of the Sānkhya Aphorisms and of Vijñāna's Commentary, all printed in Roman letters. A German translation of the whole work was published by Professor Garbe in the Abhandlungen für die Kunde des Morgenlandes, vol. ix, Leipzig, Brockhaus, 1889. 'In spite of all the false assumptions and the errors of which Vijnanabhiksu is undoubtedly guilty, his Commentary . . . is after all the one and only work which instructs us concerning many particulars of the doctrines of what is, in my estimation, the most significant system of philosophy that India has produced.' - Editor's Preface.

The price of Volume II is the same as that of Volume 1.

VOLUME III.—Buddhism in Translations. By HENRY CLARKE WARREN. 1896. 8vo. xx + 520 pages.

This is a series of extracts from Pāli writings, done into English, and so arranged as to give a general idea of Ceylonese Buddhism. The work consists of over a hundred selections, comprised in five chapters of about one hundred pages each. Of these, chapters ii, iii, and iv are on Buddhist doctrine, and concern themselves respectively

with the philosophical conceptions that underlie the Buddhist religious system, with the doctrine of Karma and rebirth, and with the scheme of salvation from misery. Chapter i gives the account of the previous existences of Gotama Buddha and of his life in the last existence up to the attainment of Buddhaship; while the sections of chapter v are about Buddhist monastic life.

The price of Volume III is one dollar and twenty cents (\$1.20)=4 shillings and 11 pence=5 marks=6 francs or lire and 20 centimes=4 kroner and 44 öre=2 florins and 91 cents Netherlandish.

VOLUME IV.—Rāja-çekhara's Karpūra-mañjarī, a drama by the Indian poet Rāja-çekhara (about 900 A.D.): critically edited in the original Prākrit, with a glossarial index and an essay on the life and writings of the poet, by Dr. Sten Konow, of the University of Christiania, Norway; and translated into English with notes by Professor Lanman. 1901. Royal 8vo. Cloth. xxviii+289 pages.

Here for the first time in the history of Indian philology we have the text of a Prākrit play presented to us in strictly correct Prākrit. Dr. Konow is a pupil of Professor Pischel of Berlin, whose Prākrit grammar has made his authority upon this subject of the very highest. The proofs have had the benefit of Professor Pischel's revision. The importance of the play is primarily linguistic rather than literary.

The price of Volume IV is the same as that of Volume I.

VOLUMES V AND VI.—The Brhad-Devatā, attributed to Çāunaka, a summary of the deities and myths of the Rig-Veda: critically edited in the original Sanskrit with an introduction and seven appendices, and translated into English with critical and illustrative notes, by ARTHUR A. MACDONELL, Boden Professor of Sanskrit in the University of Oxford, and Fellow of Balliol College. 1904. Royal 8vo. Cloth.

Volume V (or Part I) contains the introduction and text and appendices. Volume VI (or Part II) contains the translation and notes.

The price of each Volume is the same as that of Volume 1.

VOLUMES VII AND VIII.—Atharva-Veda Samhitā, translated, with a critical and exegetical commentary, by WILLIAM DWIGHT WHITNEY, late Professor of Sanskrit in Yale University. Revised and brought nearer to completion and edited by CHARLES ROCKWELL LANMAN, Professor of Sanskrit in Harvard University. 1904. Royal 8vo. Cloth. About cx + 1050 pages.

This work includes, in the first place, critical notes upon the text, giving the various readings of the manuscripts, and not alone of those collated by Whitney in Europe, but also of those of the apparatus used by S. P. Pandit in the great Bombay edition. Second, the readings of the Paippalada or Cashmere version, furnished by the late Professor Roth. Further, notice of the corresponding passages in all the other Vedic texts, with report of the various readings. Further, the data of the Hindu scholiast respecting authorship, divinity, and meter of each verse. Also, references to the ancillary literature, especially to the well-edited Kauçika and Vaitana Sutras, with account of the ritualistic use therein made of the hymns or parts of hymns, so far as this appears to cast any light upon their meaning. Also, extracts from the printed commentary. And, finally, a simple literal translation, with introduction and indices.